Hiralal Ank
CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh
Entered 18/4/36

हैहय-क्षत्रिय-मित्र

जनवरी-फ़रवरी

१९३६

हीरालाल अंक

Provincial Museum, Lucknow.

प्रकाशक

हैहय-क्षत्रिय-सभा, प्रयाग

४३० मुट्ठीगंज

वार्षिक मूल्य २॥)] [इस अंक का १)

T
36

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैहय-क्षत्रिय-मित्र, जनवरी-फ़रवरी, १९३६

हीरालाल अंक

इस अंक के संपादक
गोरखप्रसाद
डी० एस-सी०

स्थाई संपादक
श्यामसुंदर जायसवाल
बी० ए०, एल-एल० बी०

विषय-सूची

	पृष्ठ
१—दुर्लभ रत्न—श्री मैथिली शरण गुप्त	१
२—पूर्वज—श्रीमती पार्वती बाई राय	२
३—स्मृति—श्री रामकुमार वर्मा	३
४—संक्षिप्त जीवनी, १८९१ तक—पं० बाबूराम बित्थारिया ...	४
५—पुण्य स्मरण—श्री अयोध्या सिंह उपध्याय 'हरिऔध' ...	७
६—संक्षिप्त जीवनी १८९१-१९००—श्री बैजनाथसिंह 'विनोद' ...	८
७—स्मृति में—महामहोपाध्याय डाक्टर गंगानाथ झा, डी० लिट० ...	१२
८—संक्षिप्त जीवनी, १८९९-१९११—पं० लोचनप्रसाद पांडेय, ...	१३
९—पुण्य स्मृति में—श्री कृष्णसिंह "कृष्ण" विशारद ...	१६
१०—संक्षिप्त जीवनी १९११ से अंत तक—संकलित	१७
११—श्रद्धांजलि—रायबहादुर साहित्याचार्य श्री जगन्नाथप्रसाद भानु ...	२४
१२—स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल साहब—श्री काशीप्रसाद जायसवाल ...	२५
१३—विज्ञ हीरालाल—श्री गिरधर शर्मा 'नवरत्न'	२६
१४—नागपुर में एक्स्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर—डा० हीरानंद शास्त्री ...	२७
१५—आजीवन परिचय—रायसाहब पं० गौरीशंकर अग्निहोत्री ...	३३
१६—मधुर स्मृति—महापंडित राहुल सांकृत्यायन	४१
१७—मेरे संस्मरण—पं० कामताप्रसाद गुरु	४३
१८—हीरालाल जी के प्रति—श्री आनंदिप्रसाद श्रीवास्तव	४६
१९—एक राष्ट्रीय क्षति—श्री जयचंद्र विद्यालंकार	४७
२०—वियोग में—श्री सुंदरलाल वर्मा	४९
२१—मेरे संस्मरण—रायबहादुर पं० लज्जाशंकर झा, ...	५०
२२—हीरालालजी और 'बुंदेल-वैभव'—पं० गौरीशंकरद्विवेदी 'शंकर' ...	५६
२३—डाक्टर हीरालाल—श्री शिवदयाल जायसवाल "शिवकवि" ...	५८
२४—देश का दोष—ठाकुर लक्ष्मण सिंह भानुवंशी, ...	५९
२५—कुछ संस्मरण—श्री बलदेव प्रसाद मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०,	६१

(शेष कवर के तीसरे पृष्ठ पर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

STATE MUSEUM, LUCKNOW
LIBRARY

Acc. No. _____

Book No. _____

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी
(१९३० का चित्र)

T/36
CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैहय-क्षत्रिय-मित्र

अखिल भारतवर्षीय हैहय-क्षत्रिय-महासभा तथा हैहय-क्षत्रिय-सभा, प्रयाग, का सचित्र मासिक मुख-पत्र

हीरालाल अंक

भाग ३२ | जनवरी १९३६ | अंक १

दुर्लभ रत्न

[श्री मैथिली शरण गुप्त]

अयि अतीत, तेरे ढेले भी
दुर्लभ-रत्न-तुल्य चिरकाल,
पर तेरा तत्वज्ञ स्वयं भी
एक रत्न था हीरालाल !

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पूर्वज

[श्रीमती पार्वती बाई राय, कटनी]

भारतवर्ष के ठीक केंद्र पर मुड़वारा नामक पुर जबलपुर ज़िले में है। यही स्वर्गीय राय बहादुर डाक्टर हीरालाल जी के पिता श्री ईश्वरदास का जन्म संवत् १९०५ में हुआ था। वे साधु संतों के बड़े भक्त थे। रामायण पर उनकी विशेष प्रीति थी और कई वर्षों तक घर का काम छोड़ उसी के अध्ययन में लवलीन हो गए थे। उन में यह विशेषता थी कि जिस काम को हाथ में लेते उसको पूरा ही करके छोड़ते थे, चाहे उसमें कितना ही परिश्रम या क्लेश क्यों न पड़े।

इनके पूर्वज महोबा के निकट सूपा ग्राम में रहते थे। वहाँ से बिरादरी के प्रायः दो सौ घर व्यापार के लिए बिलहरी (प्राचीन पुष्पावती नगरी) में आ बसे। उन्हीं के साथ इनके प्रपितामह कालू राम भी आये, परन्तु कालू राम के पुत्र नारायन दास बिलहरी से ९ मील पर मुड़वारा ग्राम में आ बसे। नारायन दास बड़े रामायणी थे। मुड़वारा में रामायण का अर्थ बतलाने वाला उनकी समता का दूसरा नहीं था, इसलिए कलार होने पर भी उनको सब लोग पाठक कहते थे। यद्यपि कलार हैहय वंशियों की शाखा कलचुरि से उत्पन्न हैं, तथापि क्षत्रियों को भी पाठक पदवी उपलब्ध नहीं थी। वह केवल ब्राह्मणों के लिये उपयोग में लाई जाती थी। इसी से स्पष्ट हो जायगा कि नारायन दास की विद्वता किस श्रेणी की थी।

उनके पुत्र मनबोध राम हुए। ये भी रामायण के बड़े भक्त थे और कई रामायणों को निज हाथ से लिख कर पुण्य कर दिया। उनके समय में छापा नहीं था, इस लिए पुस्तकों का दान बड़े महत्त्व का समझा जाता था, क्योंकि इसका दान वही कर सकते थे जो स्वयं पढ़े लिखे रहते थे। मनबोध राम अपने पिता के समान विद्वान् तो नहीं थे, परन्तु उनसे धनवान अवश्य थे। वे साहूकारी करते थे, इसलिए उन्हें पुस्तकें पढ़ने लिखने के लिये औरों की अपेक्षा अधिक समय मिलता था। इनके कई लड़के बड़े हो होकर मर गए, अंत में एक बचा। स्वभावतः उस पर विशेष लाड़ होने के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कारण उसकी पढ़ाई लिखाई पर ध्यान नहीं दिया गया, बारहखड़ी तक सिखा कर छोड़ दिया। यही राय बहादुर साहेब के पिता ईश्वरदास थे। इन्होंने अपनी ही शक्ति से स्वयं शिक्षा कर ली और जब इनके लड़के बाले हुए तो उनको ख़ूब पढ़ाया। ईश्वरदास का परलोक संवत् १९६९ में हुआ। वे दो लड़के छोड़ गये, अर्थात् राय बहादुर हीरालाल और गोकुल प्रसाद। गोकुल प्रसाद जी इनकम टैक्स आफ़िसर थे। रायबहादुर का जन्म १९२४ में और उनके अनुज का १९३३ में हुआ था। अपने माता पिता पर दोनों भाइयों को बड़ी भक्ति थी। एक जगह इन्होंने कहा है—

सुमिरि जस मन न समाय हुलास।
शुभ श्री कमला मातु हमारी, पितु श्री ईश्वरदास।
कटनी तट सोहै अति सुंदर, मुड़वारा रह वास।
दोउन को दोऊ कर जोरे, प्रणमत दोऊ दास॥

स्मृति

[श्री रामकुमार वर्मा]

पुरातत्व का तत्व जिन्होंने था दिखलाया।
हिंदी का हित सदा हृदय में जिनके भाया॥
संस्कृति का ही गान कंठ में जिनके जागा।
इस गौरव के लिए जिन्होंने सब कुछ त्यागा॥
है उनके ही निधन से—
श्री हत भाषा-भाल की।
कैसे स्मृति भूले हमें,
श्रीयुत हीरालाल की!!

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त जीवनी, १८९१ तक*

बाल्य-काल, विद्यार्थी जीवन और शिक्षक-पद पर नियुक्ति

[साहित्यरत्न पं० बाबूराम बिस्थारिया]

राय बहादुर डाक्टर हीरालाल जी का जन्म आश्विन शुक्ल चतुर्थी सं० १९२४ विक्रमीय (पहली अक्टूबर, सन् १८६७ ई०) दिन मंगलवार को मुरवाड़ा में हुआ था। सब से प्रथम संतति होने के कारण इनके माता-पिता ने उनका पालन-पोषण बड़े लाड़-प्यार से किया। मुड़वारा उस समय एक छोटा सा ग्राम था। डाक्टर साहेब का वर्तमान घर पुराने मकान का ही प्रवर्द्धित रूप है। उस समय पास में ही एक सघन झाड़ी थी जहाँ कभी कभी बाघ भी आ जाया करते थे। पड़ोस में गड़रियों के मकान थे, इसलिए भेड़िए आदि हिंसक पशुओं का आ जाना कोई आश्चर्य की बात न थी। पास ही रहने वाले एक वृद्ध गड़रिया बाबा, जब वे अपनी भेड़-बकरियों को चरा कर जंगल से लौटते थे तो हीरालाल तथा उनके समवयस्क अन्य सखा उनको बड़े प्रेम से घेर लेते थे और प्रेमोपहार में थोड़ा बहुत पके जंगली बेर आदि पाकर स्वर्गीय आनंद का अनुभव करते थे। गड़रिया बाबा बेर बाँटने के साथ ही यह भी कहते थे कि बेर खाते जाओ और घर भागते जाओ। देर करना ठीक नहीं, जंगली जानवरों का डर है।

हीरालाल जी बालकपन से ही तीव्र बुद्धि के और वाकपटु थे—होनहार बिरवान के होत चीकने पात। मुरवाड़ा ऐंग्लो वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल में भरती होने के

---

* इस जीवन चरित्र के लिखने में हमें अपने चरित्र-नायक के अनुज स्व० बाबू गोकुल प्रसाद जी द्वारा एकत्रित सामग्री से पूर्णरूपेण सहायता मिली है। उनका विचार था कि वे स्वयं अपने अग्रज की जीवनी लिखें, और इसीलिए उनका यह परिश्रम था, परंतु उनके अकाल काल-कवलित हो जाने के कारण उनकी इस सदेच्छा की पूर्ति न हो सकी —लेखक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थोड़े समय के भीतर ही इतनी उन्नति की कि सब चकित हो गए। कक्षा के अध्यापक ने उनकी कुशाग्र बुद्धि की प्रशंसा हृदय खोल कर प्रधानाध्यापक से की। उन्होंने बालक हीरालाल को बुला भेजा। परीक्षा लेने पर बोल बैठे, "बालक अवश्य घर पर पढ़ कर भरती हुआ है"। यह सुनते ही हीरालाल ने तुरंत निर्भीकता से उत्तर दिया, "नहीं, बालक घर पर पढ़ कर नहीं भरती हुआ है"। दोनों अध्यापक हँस पड़े।

हीरालाल अपनी कक्षा में सदा प्रथम रहा करते थे, परंतु जब वे द्वितीय कक्षा में थे उस समय एक दिन डिप्टी साहेब आए और इनसे कई एक टेढ़े प्रश्न पूछे। एक प्रश्न का उत्तर हीरालाल ठीक न दे सके। दूसरे नंबर के विद्यार्थी ने उत्तर अधिक संतोष-जनक देकर उस दिन कक्षा में प्रथम नंबर प्राप्त कर लिया। इससे हीरालाल के कोमल चित्त पर प्रबल आघात पहुँचा और उनके नेत्रों से अश्रुधारा बह चली। जब अध्यापक से डिप्टी साहेब को पता लगा कि यह बालक सर्वदा ही प्रथम रहता है और केवल आज इसे द्वितीय स्थान मिला है तब उन्होंने अन्य प्रश्न दोनों बालकों से किए और अंत में हीरालाल को ही प्रथम स्थान मिला। इस घटना से डिप्टी साहेब के हृदय पर स्थायी प्रभाव पड़ा और वे इस श्रेष्ठ विद्यार्थी का उदाहरण देकर प्रायः अपने पुत्रों तथा मित्रों को उपदेश दिया करते थे*।

सन् १८८१ ई० में हीरालाल ने मिडिल स्कूल परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया। उस समय तक कोई लड़का मुड़वारा स्कूल से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ ही नहीं था, अतएव स्कूल के सभी छात्रों और अध्यापकों ने मिल कर बड़ा हर्ष मनाया। हीरालाल को सरकारी छात्रवृत्ति भी मिली। फलतः कई शुभचिंतक सज्जन उन्हें जबलपूर जाकर हाई स्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए उनके पिता से आग्रह किया। परंतु उस समय छुआ-छूत का इतना ख़्याल था कि यह बड़ी कठिन समस्या आ पड़ी कि जबलपूर में रसोई का प्रबंध कैसे होगा। अंत में यही निर्णय हुआ कि हीरालाल जबलपूर अध्ययन के लिए जायँ, परंतु अपने हाथ से रसोई बनाया करें। अस्तु

---

*इन डिप्टी साहेब के सुपुत्र ठाकुर दिलीप सिंह कृत "कृषक से राव साहेब" देखिए (पृ० २४)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हीरालाल को दो-चार दिन में माता द्वारा पाक शास्त्र की टूटी फूटी शिक्षा मिली और वे जबलपूर जाकर गवर्मेंट हाई स्कूल में भरती हुए। सभी इनके अध्ययन और व्यवहार से प्रसन्न थे, परंतु भोजन कला के नव-शिक्षित विद्यार्थी हीरालाल कच्ची पक्की या जली-भुनी रोटी खाकर अपने पठन में जुटा करते थे। फलतः शीघ्र रोगी होकर घर आना पड़ा। स्वस्थ होने पर फिर जबलपूर पहुँचे, परंतु अब रसोई अच्छी बनाने पर भी ध्यान रहता था।

दो वर्ष में इंट्रस पास करके गवर्मेंट कालेज में भरती हुए। स्वभाव के अच्छे और व्यवहार के सच्चे होने के कारण, साथ ही पढ़ने लिखने में अत्यंत तीव्र-बुद्धि होने के कारण उनके सहपाठी तथा अध्यापक उनको हृदय से चाहने लगे। उनकी योग्यता की धाक समस्त कालेज पर जम गई।

१८८८ में उन्होंने बी० ए० की डिगरी प्राप्त की।

यह तो हम पहले ही लिख चुके हैं, कि उनके सुंदर-स्वभाव, कार्य्य-क्षमता तथा अन्य गुणों के कारण, उनके प्रोफ़ेसर तथा प्रिंसिपल, सभी उनसे प्रसन्न रहते थे। इसका फल यह हुआ कि बी० ए० की डिग्री प्राप्त करते ही, गवर्मेंट कौलेजिएट हाई स्कूल में एक अध्यापक के पद पर अस्थाई रूप से नियुक्ति हो गई। फिर, लगभग ६ मास पश्चात् ही, आप मिडिल स्कूलों और हाईस्कूलों के मास्टरों को "पदार्थ-विज्ञान" पढ़ाने के लिए नियुक्त हुए। उस समय यह विषय पहले ही पहल स्कूलों में प्रचलित हुआ था। औरों को इसे पढ़ाने में बड़ी कठिनाई पड़ती, परंतु इस कार्य को आपने बड़ी योग्यता के साथ सम्पन्न किया। अफ़सर लोग उन से अत्यन्त संतुष्ट रहे। तत्कालीन इंस्पेक्टर जनरल आफ़ ऐज्यूकेशन (सी० पी०)—एलेक्ज़ैंडर मनरो—ने इनकी बड़ी प्रशंसा की।

इन दिनों की एक विशेषता उल्लेखनीय है वह यह कि जिनको आप पढ़ाया करते थे उन में कुछ इनके शिक्षक भी रह चुके थे। इन पुराने शिक्षकों को, जो अब उनके शिष्य आ बने थे, वे पहले ही जैसा सम्मान करते थे। एक ने इन से कहा भी कि अब तो आप गुरु हैं और मैं शिष्य हूँ। अब क्यों मेरे आने पर आप खड़े हो जाते है और आदरपूर्वक प्रणाम करते हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि जो एक बार मेरा परम पूजनीय गुरु हुआ, वह सदा ही मेरा पूजनीय रहेगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस पद पर रह कर आपने स्थानिक कारीगरों द्वारा सरल वैज्ञानिक-यंत्र बनवाने का प्रबल-प्रयत्न किया। जो यंत्र स्थानिक कारीगरों द्वारा नही बन सकते थे उन्हें विदेश से मँगाने के बदले पंजाब की वैज्ञानिक संस्था से मँगवा कर उस संस्था को इस कार्य्य में पूर्ण रूप से उत्साहित किया। केवल इतना ही नहीं; शिक्षा-विभाग के डाइरेक्टर से अनुरोध कर यह नियम प्रचलित कर दिया कि विज्ञान की समस्त आवश्यक सामग्री, यथासंभव स्वदेशी संस्थाओं से मँगाई जाय।

पुण्य स्मरण

[श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय, हरिऔध]

छप्पै

श्रीयुत हीरालाल मातृभाषा-हितरत थे।
उसके सेवक रहे सदा उसके अनुगत थे॥
मध्यप्रांत में कलित कीर्ति की ध्वजा उड़ाई।
मानस-मंदिर मध्य मूर्ति उसकी पधराई॥
अपनी भाषा के लिए उनके उर में त्याग था।
हिंदी के पग कमल में उनका बहु अनुराग था॥१॥

दोहा

बात देश की जाति की जिनके यत्नों से बने।
भारत-माता बहु सुअन इनके जैसे ही जने॥२॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त जीवनी १८९१-१९००

शिक्षा-विभाग में इंसपेक्टर

[श्री बैजनाथ सिंह 'विनोद', सम्पादक "जायसवाल युवक"]

१७ जनवरी १८९१ ई० को हीरालाल जी सागर ज़िले के डिप्टी इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स के पद पर नियुक्त हुए और इस पद पर पाँच वर्ष रहे।

इस पद पर आकर आप को देश की शिक्षा-संस्थाओं की अवस्था का सच्चा ज्ञान हुआ, और आप को इस बात से बहुत दुख हुआ कि सरकारी अफ़सर लोगों ने स्कूलों को अपने दौरे का अड्डा मुकर्रर कर लिया था। वे वहाँ टिक कर ग़रीब ग्रामीणों से बेगार करवाते, तथा ख़ुशहाल लोगों से अपने पेट पालन और भोग-विलास का सामान मँगाते। यही कारण था कि प्रायः ग्रामीण जनता स्कूल को एक बला के रूप में देखती थी। उन स्कूलों में प्रत्येक विद्यार्थी को शिक्षक के लिए हर महीने दो सीधा और दो आना पैसा देना पड़ता था। इस तरह ग्रामीणों के लिए शिक्षा महँगा सौदा हो गया था। उन्होंने ग्रामों का दौरा कर तहसीलदार आदि ग्रामीण अधिकारियों से मिल कर इस बात का प्रबंध किया कि अफ़सरों का डेरा यथासंभव स्कूलवाले ग्रामों में न पड़ें, और रईसों, और ज़मींदारों से मिल कर उनको स्कूल खोलने के लिये उत्साहित किया। आप के इस प्रयत्न से ग्रामों की उदासीनता दूर हो गई और एक-ब-एक शिक्षा का श्रोत बह चला। पचासों नये स्कूल खुल गये। यह काम तो आप ने उनके लिये किया जो अछूत नहीं कहे जाते। इसके बाद आप का ध्यान अछूत कहे जाने वाली क़ौमों की ओर गया। आप का उदार हृदय मनुष्यमात्र के लिए खुला था। आप शिक्षा का महत्व-समझते थे और देश को विकसित करने के लिए शिक्षा का द्वार मानवमात्र के लिए खोलना अपना कर्त्तव्य भी समझते थे। आप अपने उद्देश्य की ओर जुट गए। फलतः एक चमार स्कूल की स्थापना हुई। जब शिक्षक की समस्या सामने आई आपने फ़ौरन उसे भी सुलझाया और खोज ढूंढ़ कर चमार मास्टर भी नियुक्त किया। किंतु बिना उच्च वर्णों की सहानुभूति के सफलतापूर्वक स्कूल का चलना

गोकुल-दरवाज़ा

हीरालाल जी के मकान का प्रवेश-द्वार। अपने स्वर्गीय भाई के नाम पर इसका नाम आपने गोकुल-दरवाज़ा रक्खा था। दाहने हाथ के कोठे पर अध्ययन-कक्ष है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अध्ययन-कक्ष

यहीं हीरालाल जी पढ़ा-लिखा करते थे। दीवार पर ओरियंटल कानफ़रेंस के सभापतियों के तैल चित्र लगे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संभव न था। अतएव इसके लिए उच्च वर्णवालों की एक सलाहकारी समिति भी संगठित हुई जिसके मेंबर रायबहादुर सेठ मोहनलाल सरीखे वर्णवाले धनी व्यक्ति भी बनाए गए। जब चमार स्कूल मज़े में चलने लगा और स्कूल के प्रति उच्च वर्णवालों की सहानुभूति भी हो गई, तब आपने जंगली क़ौमों की शिक्षा का विचार किया, और एक गोंड स्कूल भी खोला।

आपने सागर ज़िले की शिक्षण-पद्धति ही की उन्नति नहीं की, किंतु बहुत से नये स्कूल भी जारी किए, जिनमें से कन्या-शालाएं विशेष उल्लेखनीय हैं। इसका परिणाम यह हुआ है कि आज भी सागर ज़िले में मध्यप्रदेश के अन्य ज़िलों की अपेक्षा कन्या-शालाओं की संख्या अधिक है। आपने लड़के-लड़कियों के एक साथ पढ़ने का नियम सर्वप्रथम प्रचलित किया था। इसी नियम से उन शहरों और ग्रामों में, जहां कन्या-शालाएं नहीं थीं, लड़कों के स्कूलों में ही लड़कियाँ भरती कर ली गईं; जिससे शिक्षा का बहुत विस्तार हुआ। आप बहरों और गूंगों के लिए पाठशालाएं खोलने के प्रयत्न में थे। इसी बीच में आपकी बदली हो गई। सागर ज़िले में आपने शुद्ध हिंदी लिखने की शैली प्रचलित की और स्कूल मास्टरों को फ़ारसी-मिश्रित हिंदी न लिखने को बाध्य किया। आपने कविता की उन्नति पर विशेष ध्यान दिया। स्कूल कानफरेंसों के समय, मास्टरों के लिए जो विषय निर्वाचित किए जाते थे, उनमें से प्रायः आधे विषयों में कविता की प्रधानता रहती थी। कन्या-शालाओं की विद्यार्थिनियाँ भी आपके समय में कविता लिखा करती थीं।

इस तरह आप सागर ज़िले में शिक्षानुराग पैदा कर के, बदली होने पर रियासतों के इंसपेक्टर होकर छत्तीसगढ़ चल गए। छत्तीसगढ़ कमिश्नरी में चौदह रजवाड़े हैं। इन रजवाड़ों में शिक्षा की अवस्था सागर से भी गई गुज़री थी—चार छः कोस में कहीं एक स्कूल था भी तो न होने के बराबर। इसलिए सी०पी० सरकार ने आप को एजेंसी इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स बनाकर रियासतों में शिक्षा-सुधार करने के लिए भेजा। आप ने उन चौदहों रियासतों का दौरा किया। वहाँ के स्कूलों का निरीक्षण किया और अध्यापकों की वेतनवृद्धि करा कर इतनी मुस्तैदी से स्कूलों की देख-भाल की कि देखते-ही-देखते विद्यार्थियों की संख्या में हज़ारों की वृद्धि हो गई; राजाओं की भी मनोवृत्ति शिक्षा के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाश की ओर हुई और वे ख़ुद स्कूलों में जा-जा कर मुआयना करने लगे। फिर तो अनेक नए स्कूल खुले*।

---

*एजेंसी इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स के पद पर नियुक्ति में एक रहस्य था। उस समय हीरालाल जी डिप्टी इंस्पेक्टरों में सब से अधिक जूनियर थे; परंतु सब को लांघ कर वे इस उच्चतम पद पर आसीन हो गए। इस बात का स्पष्टीकरण करते हुए पं० लोचन प्रसाद जी पांडे ने मुझे लिखा कि "यू० पी० और बंगाल के प्रवासी शिक्षित समुदाय के कारण मध्यप्रदेश-निवासियों को उच्च सरकारी नौकरी पाने में जो कठिनाइयाँ और बाधाएँ थीं, संभवतः उन्ही के कारण हीरालाल जैसे प्रतिभाशाली ग्रेजुएट को एक्स्ट्रा-असिस्टैंट कमिश्नर का पद कालेज से निकलते ही प्राप्त न हो सका, और उन्हें शिक्षा-विभाग में शिक्षक का पद ग्रहण करने को बाध्य होना पड़ा। यहाँ भी गुटबंदी के कारण उनकी उन्नति का मार्ग कंटकाकीर्ण हो चला था। ठीक ऐसे समय में टामसन साहब, जो उन दिनों मध्यप्रदेश के शिक्षा-विभागीय इंसपेक्टर जनरल के पद पर नए नए आए हुए थे, इनकी योग्यता देख कर चकित और खेदित हुए। उनके इस आश्चर्य और खेद का फल यह हुआ कि हमारे प्रिय हीरालाल अपने से १० या १२ सीनियर डिप्टी इंसपेक्टरों के रहते हुए भी छत्तीसगढ़ विभाग के अंतर्गत देशी राज्य-समूह के शिक्षा-विभाग के निरीक्षक के नव-निर्मित पद के लिए चुने गए। तब उनकी उम्र केवल अट्ठाइस वर्ष की थी। उनके पद का नाम था "एजेंसी इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स, छत्तीसगढ़ फ़्यूडेटरी स्टेट्स, सी० पी०"। सैकड़ों क्यों, हज़ारों मीलों तक फैले हुए विस्तृत भूखंड में—जहां के घोर आरण्य और गोंड, भील, कोरवा, माड़ियों का 'बन-मानुष' दल हृदय को हिला देने वाला था—शिक्षा-प्रचार की दीक्षा लेकर एक अट्ठाइस वर्ष का प्रतिभाशाली युवक अवतीर्ण हुआ। एक ओर तो पोलिटिकल एजेंट और कमिश्नर और दूसरी ओर १४ रजवाड़ों के भिन्न भिन्न रुचि व स्वभाव के और नाना सभ्यतानुयायी शासकों का मंडल! इन में से कितने तो शिक्षा को समाज के लिए विष समझते थे। उनकी धारणा थी कि पढ़ाई से धूर्तता बढ़ती है!! कितना कठिन कार्य था। इन १४ रजवाड़ों में बस्तर के समान जंगल-पहाड़ों से भरा हुआ विशाल राज्य; पटना, काला-हंडी, सोनपुर, रेड़ाखोल और बामंडा जैसे उड़िया भाषी रजवाड़े—कठिनाइयों का अंत न था—परंतु हीरालाल जी ने अपने अदम्य उत्साह और मधुर स्वभाव से एक ओर तो रजवाड़ों को मुग्ध कर लिया और दूसरी ओर उच्चतम सरकारी कर्मचारियों से भी प्रशंसा पाई। इन्हीं उड़ियाभाषी राज्यों में हीरालाल साहब ने उड़िया भाषा का अध्ययन किया और उच्चातिउच्च श्रेणी के साहित्य की परीक्षा स्वयं लेने की योग्यता प्राप्त कर ली।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार १८ महीने में उन चौदह देशी रियासतों का शिक्षाक्रम दुरुस्त कर लेने पर आप फिर इंसपेक्टर आफ़ स्कूलस के पद पर (छत्तीसगढ़ कमिश्नरी में) आगए। उन दिनों छत्तीसगढ़ कमिश्नरी के स्कूलों की अवस्था बड़ी दयनीय हो रही थी। बीसों स्कूल ऐसे थे, जहाँ शिक्षाविभाग का कोई भी अफ़सर २५, ३० साल से नहीं गया था और ऐसे स्थान तो पचासों थे जहाँ चार, पाँच वर्ष से कोई नहीं गया था; कारण यह था कि ये स्थान ऊबड़-खाबड़ जंगलों में थे या उन जंगलों से होकर जाने वाले रास्तों पर थे। गाड़ी का मार्ग न था, इसीलिये पहले के अफ़सरों ने वहां जाने में अकसर आनाकानी की थी। लेकिन हीरालाल जी तो अपने धुन के पक्के थे, उन्हें सिर्फ़ अपने कर्त्तव्यों का ध्यान था, और वे अपने पवित्र कर्त्तव्य के आगे विशाल पर्वतशृङ्गों और कठिन मार्गों को तुच्छ गिनते थे। इसलिए उन्होंने कमिश्नरी भर के पूरे स्कूलों का दौरा किया। इस दौरे में आप को प्रायः पैदल और बैलगाड़ी पर जाना पड़ा। इस तरह के दौरे से आप को शिक्षा-क्षेत्र की अनेक बुराइयों का ज्ञान हुआ। आप ने देखा कि जब तक शिक्षकों को साधारण रूप से परिवार-पोषण के लिए पर्याप्त वेतन नहीं मिलेगा तब तक शिक्षा-क्षेत्र में उन्नति होना असंभव है। साधारण मास्टरों से लेकर हेडमास्टर तक को ६) महीने वेतन की साम्यवादी व्यवस्था से काम न चलेगा। यह सोचकर आपने सी० पी० सरकार से अध्यापकों की वेतनवृद्धि के लिए ज़ोर दिया और अंत में अध्यापकों का वेतन बढ़वा ही दिया। फिर क्या था। इधर आप की मुस्तैदी और उधर वेतन की वृद्धि—शिक्षा-क्षेत्र की सारी शिथिलता दूर हो गई। इसी बीच में सन् १८९७ ईस्वी का अकाल पड़ा। चारों ओर त्राहि त्राहि मच गई। अपने निजी कार्य के अतिरिक्त हीरालाल जी ने इस अकाल में फ़ैमिन रिलीफ़ ऑफ़िसर का काम किया। अकालपीड़ित क्षेत्रों में सेवा के लिए जितने आदमियों की ज़रूरत थी, उतने आदमियों की नियुक्ति इस काम के लिए न हो सकी। अतः आप को तीन आदमियों का काम अकेले करना पड़ा। इस काम में आप की चारों ओर से बड़ी तारीफ़ हुई और मध्य प्रदेश

उड़िया भाषा की कविता उन्हें ख़ूब रुचती थी। पाठ्य पुस्तकों में सन्निवेशित कई एक देशभक्तिपूर्ण गीत उन्हें कंठस्थ थे।"—संपादक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के तत्कालीन चीफ़ कमिश्नर ने भी दुर्भिक्ष पीड़तों को बचा लेने के लिए आप की मुक्तकंठ से प्रशंसा की ।

अट्ठारह महीने तक आप इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स के पद पर रहे । यह वही पद था जिस पर आप के बाद मिस्टर (अब सर हेनरी) शार्प की नियुक्ति हुई ।

स्मृति में

[महामहोपाध्याय डाक्टर गंगानाथ झा, डी० लिट०]

राय बहादुर डा० हीरालाल जी से मेरा परिचय पहले पहल इलाहाबाद के ओरियंटल कानफरेंस में हुआ । उस अवसर पर उनकी विद्वत्ता, दृढ़ता तथा बुद्धिमत्ता उज्ज्वल रूप से प्रकट थी । मध्यप्रदेशस्थ पुस्तकों का सूचीपत्र जो उन्हों ने लिखा वह भी प्रशंसनीय था । उनके ऐतिहासिक लेख उनके प्रखर गवेष्णाबुद्धि के उदाहरण वर्तमान हैं । खेद है कि पेंशन लेने के बाद अधिक दिन जीवित न रहे जिससे उनके परिणत पांडित्य से और अधिक उपकार नहीं हो सका । पर कार्य्य के प्रति जैसी उत्सुकता उनकी थी उसके प्रभाव से वे शीघ ही जन्म लेकर अपना कार्य पूरा करेंगे, ऐसी आशा की जा सकती है । कर्तव्य को अधूरा छोड़ना ऐसे जीवों का काम नहीं है ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त जीवनी, १८९९-१९११

एकस्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर

[पं० लोचन प्रसाद पांडेय, एम० आर० ए० एस०]

हीरालाल जी अभी इंस्पेक्टर के पद पर ही नियुक्त थे जब सन् १८९९ में एक भीषण अकाल फिर आ पड़ा। आप ने प्रथम अकाल में अत्यंत प्रशंसनीय कार्य किया था। इसलिए आप फिर दुर्भिक्षपीड़ितों की सहायता के लिए नियुक्त किए गए। इस अकाल से बालाघाट ज़िला बहुत पीड़ित था। अतः आपको फ़ैमिन रिलीफ़ ऑफ़िसर होकर वहां जाना पड़ा। परंतु इस ज़िले के छत्तीसगढ़ कमिश्नरी के बाहर होने के कारण, आप दोनों कार्य एक साथ ही न चला सकते थे। अतएव आपको शिक्षा-विभाग के पद का परित्याग करना पड़ा। इसलिए आप माल-विभाग के एकस्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर नियुक्त कर दिए गए। अकाल का आपने ऐसा अच्छा प्रबंध किया कि यहां भी आपकी बड़ी प्रशंसा हुई। मूसलाधार वृष्टि के ज़माने में आप बैहर तहसील में पहुँचे जो मैलेरिया के लिए बदनाम है। वहाँ के जलवायु से आप के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा, परंतु तो भी आप ने वहाँ का कार्य पूर्ण-रूपेण ही संपन्न किया। आप ने ऐसे ऐसे जंगलों के भीतर घुस कर भूखे मरतों की जान बचाई जहाँ कभी भी कोई अफ़सर पहले नहीं पहुँचा था। वहाँ के जंगली मनुष्यों की धारणा यह थी कि सरकारी मदद केवल सभ्य ग्राम-निवासियों के लिए ही है। कुछ जंगली जातियां तो आत्माभिमान के कारण सरकारी सहायता स्वीकार करना ही नहीं चाहती थीं, परंतु आप के मधुर स्वभाव और कार्य-चातुर्य से सब ने सहायता ग्रहण की और मृत्यु से हज़ारों की रक्षा हुई।

अकाल का कार्य अच्छी तरह समाप्त भी न हो पाया था कि सन् १९०१ की मनुष्य-गणना आ पहुँची। छत्तीसगढ़ कमिश्नरी के कमिश्नर ने आप को विशेष रूप से रायपुर ज़िले की मनुष्य-गणना के लिए बुला लिया। इस ज़िले का विस्तार बारह हज़ार वर्गमील है और यह एक ऐसा ज़िला है जहाँ मनुष्य-गणना का प्रबंध करना एक साधारण अफ़सर के लिए बहुत कठिन था। मनुष्य-गणना का प्रबंध पूरा कर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेने पर आपकी बदली फिर बालाघाट हुई, क्योंकि वहाँ के डिप्टी कमिश्नर इनसे इतने प्रसन्न थे कि वे इनको कहीं दूसरी जगह जाने देना न चाहते थे। परंतु एक सप्ताह के बाद गज़ट में छपा कि आप मध्य प्रदेश की मनुष्य-गणना के असिस्टैंट सुपरिंटेंडेंट बनाए गए। इसका कारण यही था कि आप हिंदुस्तान की कई एक भाषा के ज्ञाता थे। आपको मध्यप्रदेश की भाषाओं, जातियों तथा विविध धर्मों का भी ख़ासा ज्ञान था। आपने दो वर्ष तक इस पद पर रह कर मनुष्य-गणना का सब काम पूरा किया।

इसी समय आपने "इथनोग्राफ़िक सरवे" के लिए मनुष्यजाति एवं मानव-विज्ञान-विषयक सामग्री एकत्रित की। लगभग तीन महीने तक आप मनुष्य-गणना और इथनोग्राफ़ी विभाग के सर्वोच्च पदाधिकारी (सुपरिंटेंडेंट) के पद पर भी रहे। आपको गज़ेटियर और इथनोग्राफ़ी के काम के लिए रखने का प्रस्ताव किया गया था; पर माल-विभाग में यथेष्ट कर्मचारी न होने के कारण, आप फिर एक्स्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर के पद पर बिलासपुर बदल दिए गए। वहाँ अपने मामूली काम के सिवा, आपको उसी ज़िले के सरसींवाँ इलाक़े के अकाल के प्रबंध का भार सौंपा गया। वहाँ आपको अत्यधिक काम करना पड़ा और इसलिए छुट्टी की आवश्यकता पड़ी। इस बीच में सरकार ने देखा कि आपके बिना गज़ेटियर और इथनोग्राफ़ी के काम में बाधा पड़ने की संभावना है। अतः आप उस विभाग के असिस्टैंट सुपरिंटेंडेंट नियुक्त किए गए। इस प्रकार आपने मध्य प्रदेश के बाइसों ज़िलों में गज़ेटियर-निर्माण में एक मुख्य भाग लिया। इतिहास और पुरातत्व के अध्यायों में जो कुछ नई बातें पाई जाती हैं, वे सब आपही के श्रम, गवेषणा-पूर्ण अनुसंधान और खोज के फल हैं।

गज़ेटियर छपने के पहिले, मध्य प्रदेश के प्रारंभिक इतिहास के विषय में किसी को कुछ पता न था; पर आपने अनेक शिला-लेखों का स्पष्टीकरण करके, इस प्रांत के पुरातन-इतिवृत्त का सूत्रपात किया। आपने "एपिग्रैफ़िया इंडिका" में जितने लेख लिखे हैं उतने किसी अन्य भारतीय विद्वान ने उस पत्र के जन्म-दिन से पचास वर्षों के भीतर नहीं लिखा। आपके इन लेखों की समालोचना यूरुप के कई पूर्वीय-भाषा-विशारदों ने की थी। गज़ेटियर के कार्य के साथ-साथ, आपने इथनोग्राफ़ी अर्थात् मनुष्य-विज्ञान-विषयक बहुत सी सामग्री इकट्ठी की और भिन्न-भिन्न जातियों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर बहुत से लेख लिखे। उन्हीं की सामग्री और लेखों के आधार पर "मध्य प्रदेश के भिन्न-भिन्न लोग और जातियाँ" नामक पुस्तक लिखी गई है, जिसका विद्वानों में खूब आदर है। पाँच वर्ष तक आप गज़ेटियर के काम पर रहे। इस बीच में दस महीने तक आप सुपरिंटेंडेंट के पद पर रहे।

गज़ेटियर का काम पूर्ण होने पर आपके उत्तम कार्योपलक्ष में सरकार ने आपको "रायबहादुर" की उपाधि प्रदान की। इसके बाद आप एक्स्ट्रा-असिस्टैंट कमिश्नर के पद पर बैतूल बदल दिए गए। वहाँ आपने "को-आपरेटिव-सोसाइटी" के कार्य में योग दिया। बैतूल से आपकी बदली जबलपूर हुई, परंतु वहाँ आप ४ महीने भी न रह पाए थे कि मध्य प्रदेश और बरार की १९११ की मनुष्य-गणना के काम में फिर आपसे मदद ली गई। सेंसस-रिपोर्ट में आपके उत्तम कार्य का उल्लेख सेंसस के सुपरिंटेंडेंट ने उच्च प्रशंसा के साथ किया है❀।

रायबहादुर का गार्हस्थ्य-जीवन दुःख-पूर्ण होने पर भी बड़ा उच्च और पवित्र था। जब आपकी अवस्था केवल ३२ वर्ष की थी तब आपकी सहधर्मिणी का परलोक-वास हुआ। वह साध्वी अपने पतिदेव के चरणों में दो शिशु धरोहरतुल्य रख कर, अमरपुरवासिनी हुई। उन्हें क्या ज्ञात था कि उनके पतिदेव उनके प्रति अपने अपूर्व-प्रेम का परिचय देते हुए अन्य स्त्री का पाणि-ग्रहण न करके, भारत की इस पतितावस्था में भी, मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र के "एकपत्नीव्रत" का आदर्श उपस्थित करेंगे? वे क्या जानती थीं कि इन हृदय-रत्नों को कुटिल और निर्दय काल असमय में ही आपसे खींच कर आपको गंभीर शोक-सागर में मग्न करा देगा? उन्हें क्या पता था कि आपके गार्हस्थ्य-जीवन की सुखद सुंदर बाटिका एक दिन मरुभूमि में परिणत हो जायगी? उन्हें क्या विदित था कि शिवि, दधीचि, तथा हरिचंद के समान आपके धर्म, आपके त्याग तथा आपके मनुष्यत्व की परीक्षा करने के लिए, ईश्वर आपके जीवन-पथ में एक के पीछे एक घोर संकट उपस्थित करता जायगा?

आपके आचरण में स्वर्गीय पवित्रता भरी हुई थी। आप मिष्टभाषी, नम्र और

❀ १९११ के बाद का जीवनचरित्र आगामी लेख में मिलेगा—संपादक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उदार थे। आप पत्रोत्तर देने में ज़रा भी देर न करते थे और छोटे-छोटे मनुष्यों से भी पत्र-व्यवहार रखते थे। दीन, दुखी तथा रोगियों की सहायता करना आप अपना परम धर्म समझते थे। कर्त्तव्य और कर्त्तव्य-पालन का ज्ञान जैसा आप को था वैसा बहुत कम लोगों में देखने में आता है।

पुण्य स्मृति में

[श्री कृष्णसिंह वर्मा "कृष्ण" विशारद, अलवर]

विविधि-उपाधि-पद-भूषित समाज-सेवी,
साहित्य-सुज्ञाता सत्य-नीति-धर्म-पाल थे।
पुरातत्वज्ञ अरु सुविज्ञ देश-जाति-नेता,
लब्ध-प्रतिष्ठ सुकवि-लेखक-विशाल थे।
शील-गुण-निधि अति-पूजित-आबाल-वृद्ध,
कहाँ तक बखानें भरे कितने कमाल थे।
हिंदुओं के हीरा, भारत-माता के लाल, हाय !
कुसमय के "कृष्ण" वे हमारे हीरा-लाल थे॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संक्षिप्त जीवनी, १९११ से अंत तक

डिप्टी कमिश्नरी और पेंशन

[संकलित*]

१९११ की मनुष्य-गणना का कार्य समाप्त होते ही शिला-लेख और हस्त-लिखित संस्कृत पुस्तकों की खोज के लिए रायबहादुर हीरालाल का नाम गज़ट में प्रकाशित हुआ, परंतु हैज़े के आक्रमण के कारण आप को ६ महीने की छुट्टी लेनी पड़ी। रोग से मुक्त होते ही घर पर बैठे रहने के बदले आप ने देशाटन आरंभ किया और पूरे भारत का परिभ्रमण किया। पुरातत्व की दृष्टि से जितने भी स्थान दृष्टव्य थे सब को और भारत के प्रायः सभी प्रसिद्ध संस्कृत और प्राच्य-विद्या के पुस्तकालयों को आपने देखा और इस प्रकार अपने नवीन कार्य के लिए यथेष्ट सामग्री प्रस्तुत कर ली। छुट्टी व्यतीत होते ही आप इस कार्य पर आ जुटे और केवल ५ महीने में "मध्यप्रांत और बरार के शिला और ताम्र लेखों की वर्णनामक सूची" तैयार कर डाली, जिसकी विद्वानों ने बड़ी प्रशंसा की। वह सरकार की ओर से छपी। इस विशेष कार्य से छुट्टी पाने पर आप की बदली छिंदवाड़ा को हुई। वहाँ आपने ही सर्व प्रथम कोआपरेटिव सोसाइटियाँ खोलीं। आपने इनका ऐसा पक्का प्रबंध किया कि आप के छिंदवाड़ा छोड़ने के पहले ही वे दृढ़ हो गईं और उनका काम अच्छी तरह चल निकला।

छिंदवाड़े से आप की बदली दमोह को हुई। यहीं आप को पहले-पहल डिप्टी कमिश्नर के पद पर कार्य करने का अवसर मिला। यहाँ उन्होंने "दुर्गा-मेला" का

---

*बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसाइटी जरनल (१९३५), नर्बदा (राबर्टसन कालेज) मैगज़ीन (१९२२), तथा इंडियन हिस्टॉरिकल क्वार्टरली (१९३५) में प्रकाशित लेखों से सामग्री चुन कर यह लेख तैयार किया गया है। एक दो बातें यहाँ रायबहादुर साहेब के छोटे भाई स्वर्गीय श्री गोकुल प्रसाद जी के नोट-बुक से भी दी गई हैं—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री गणेश किया, जिसको जनता ने ख़ूब पसंद किया। यहाँ उन्होंने विद्यार्थियों की एक संस्था "लीग आफ़ हॉनर" भी स्थापित की, जिससे विद्यार्थियों का विशेष लाभ हुआ।

यहाँ से उनकी बदली जबलपुर को हुई। यहाँ फिर आप "स्पेशल ड्यूटी" (विशेष कार्य) पर नियुक्त किए गए। बात यह थी कि आप में विलक्षण बुद्धि और अदम्य उत्साह था, साथ ही आपका स्वभाव भी मधुर था। इसके अतिरिक्त आप को अनेक भाषाओं का ज्ञान था। आप अंग्रेज़ी, संस्कृत, हिंदी, मराठी, गुजराती, बँगला, प्राकृत, उड़िया और उर्दू के अतिरिक्त गोंडो, कोरकू, गडवा, हलवा इत्यादि आदिमनिवासियों की भाषाएँ भी जानते थे। इन गुणों के कारण नवीन कार्यों के करने के लिए इनके समान कोई दूसरा व्यक्ति नहीं मिल सकता था। काम का ढर्रा निकल चलने पर तो सभी उसे चला सकते हैं।

अस्तु। अब की बार आपको मध्यप्रांत और बरार की जंगली बोलियों को ग्रामोफ़ोन के रेकार्डों में भरने का कार्य सौंपा गया। यह काम उस बृहत योजना का एक अंग था जिससे भारत की सभी भाषाओं का सरवे होने वाला था। आपने इस कठिन कार्य को केवल डेढ़ महीने में कर डाला और मज़ा यह कि इसमें निपट जंगली जातियों से पाला पड़ा। कुछ को तो हथकड़ी-बेड़ी में जकड़ कर लाना पड़ा था। केवल ग्रामोफ़ोन के रेकार्डों में बोली ही नहीं भरनी थी। उनको लिपिबद्ध करना और उनका अक्षरशः अनुवाद भी करना था। लग भग १७ या १८ बोलियाँ थीं और एक से एक विचित्र—तूरी, छत्तीसगढ़ी, कोरवा, कोडकू, गोंडी, परजा, मरिया, मुड़िया, हलवी, गडवा, कोलमी, नहली, बुंदेली, निमारी, बघेली इत्यादि इत्यादि।

परंतु इन सब कठिनाईयों के होते हुए और केवल डेढ़ महीने में काम समाप्त होने पर भी कार्य इतने अच्छे ढंग से संपादित हुआ कि इस योजना के जन्मदाता सर जार्ज ग्रियरसन ने उसकी मुक्त-कंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि अन्य प्रांतों से जो सामग्री मिलेगी उसके लिए आप का अपूर्व संग्रह उत्कृष्ट आदर्श होगा। लिपिकरण और अनुवाद की स्पष्टता और प्रामाणिकता की बड़ी प्रशंसा की और ग्रामोफ़ोन रेकार्डों की भी। लंडन, इटली, फ़्रांस और अमरीका की प्राच्य परिषदों की एक सम्मिलित बैठक लंदन में हुई थी। वहाँ पर एकत्र विद्वानों ने उन रेकार्डों की उत्तमता को स्वीकार किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९१८ में इन्फ्लुएंज़ा का भयानक प्रकोप हुआ । दमोह में तो इस महामारी से प्रलय-सा हो गया । प्रायः सभी कर्मचारी रोगग्रस्त हो गए । सब काम-काज अस्त-व्यस्त हो गया । ऐसी भयानक परिस्थिति में आप तीन महीने तक प्रायः अकेले ही इस प्रलयकारी रोग के दमन में लगे रहे । अपने कठिन परिश्रम से हज़ारों की जान बचाई । कोटवारों और पाठशालाओं के अध्यापकों को सुसंगठित करके शीघ्र औषध सब जगह बँटवाई और निर्धनों को काम दिला कर हज़ारों को भूखों मरने से बचाया ।

इसके पश्चात् आपकी बदली वर्धा को हुई । वहाँ आप ढाई वर्ष तक डिप्टी कमिश्नर का कार्य करते रहे । तब ६ महीने की छुट्टी ली । उसकी समाप्ति पर आप नरसिंहपुर भेजे गये । वहीं से आप ने पेंशन ली ।

जब आप वर्धा में थे तब १९२१ में असहयोग-आंदोलन ज़ोरों से उठा । सेठ जमनालाल बजाज के कारण वर्धा उसका केंद्र था । परंतु आप ने इस विकट परिस्थिति में बड़ी समझ और सहृदयता से काम किया और अपना कर्त्तव्य निबाहते हुए इस बात का ध्यान रक्खा कि असहयोगियों को व्यर्थ कष्ट न पहुँचे ।

पेंशन लेने के बाद आप ने मध्यप्रांत की संस्कृत और प्राकृत की हस्तलिखित पुस्तकों की सूची तैयार की और इस प्रकार आपने लगभग १०,००० हस्तलिखित ग्रंथों का पता लगाया । जिनके अस्तित्व का पता इसके पूर्व किसी को नहीं था । यह पुस्तक छप भी गई है । भारतीय इतिहास के कई अंधकारमय युगों पर इस से बहुत प्रकाश पड़ा है, विशेष रूप से जैन मत पर । इस सूची की कई पुस्तकें जैन अपभ्रंश में हैं, जो केवल जैन साहित्य के इतिहास के ही लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, किंतु पश्चिमीय देशी भाषाओं के इतिहास के लिए भी ।

नागपुर विश्वविद्यालय के जन्म से ही आपका उससे घनिष्ट संबंध था । यह संबंध आपके मृत्युकाल तक बना रहा । उसके साहित्य परिषद् को जन्म देने में आप का बिशेष हाथ था और आप ने ही बी० ए० और एम० ए० में हिंदी को स्थान दिलाया । आपको उक्त विश्वविद्यालय की वाइसचैंसलरी देने की बात चली, परंतु आप कटनी छोड़कर अन्यत्र जाने को राज़ी न हुए । पीछे आप जबलपुर में भी एक विश्वविद्यालय स्थापित कराने की चेष्टा में थे, परंतु प्रांत के आर्थिक संकट के कारण यह बात पूरी न हो पाई । नागपुर विश्वविद्यालय की आप ने अनेक महत्त्वपूर्ण सेवाएँ कीं ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्वविद्यालय ने भी इसके उपलक्ष में १९३३ में आप को डी० लिट० की पदवी प्रदान की।

प्राच्य विद्या के आप ऐसे पारंगत विद्वान गिने जाते थे कि आप १९३२ में अखिल भारतवर्षीय ओरियंटल कानफ़रेंस के पटना वाले अधिवेशन के सभापति चुने गये। सभापति के आसन से उस समय आपने जो भाषण दिया था उसमें आप ने प्राच्य विद्या के प्रायः प्रत्येक अंग पर प्रकाश डाला था, यहां तक कि भारतीय भाषाओं को भी नहीं छोड़ा था। नागपुर में जब सायंस कांग्रेस हुआ तब आपने नृवंशविद्या संबंधी एक अति उत्तम प्रदर्शिनी का प्रबंध किया था और मदरास में सायंस कांग्रेस का जो अधिवेशन हुआ उसमें आप नृवंशविद्या विभाग के सभापति रहे।

आप अपने स्वजातीय सभा पर भी बड़ी कृपा रखते थे। पंचम अधिवेशन (जबलपुर) में आप स्वागताध्यक्ष और षष्ठम अधिवेशन (कलकत्ता) में आप सभापति थे।

आपने अनेक विषयों का अच्छा स्वाध्याय किया था। इससे, यद्यपि आप केवल सायंस में बी० ए० थे, आप अनेक विश्वविद्यालयों में—उदाहरणतः कलकत्ता, पंजाब, बनारस, नागपुर, इलाहाबाद और आगरा में—केवल बी० ए० और एम० ए० के ही नहीं, डाक्टर की डिगरी के भी परीक्षक हुआ करते थे।

प्राचीन इतिहास आप का विशेष विषय था। इंडियन ऐंटिक्वैरी, एपिग्रैफ़िया इंडिका, और रॉयल एशियाटिक सोसायटी, बिहार और उड़ीसा रिसर्च सोसायटी आदि की पत्रिकाओं में आप के लेख अकसर छपते थे*। आप सरकार के पुरातत्व विभाग के आनरेरी कारेसपांडेंट थे। यह उच्च सम्मान भारत में आपके अतिरिक्त केवल चार व्यक्तियों को

---

* स्वर्गीय श्री गोकुल प्रसाद जी के नोटबुक में उन पत्रिकाओं की सूची है जिनमें रायबहादुर साहब के लेख छपे हैं वह इस प्रकार है—

Epigraphia Indica, Indian Antiquary, Indian Historical Quarterly, Man in India, Annals of the Bhandarkar Oriental Institute, Vizianagram College Magzaine, Morris College Magazine, Spence Training College Magazine and Behar & Orissa Research Society Journal.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही प्राप्त था । इस सम्मान के भागी केवल वे ही होते हैं जिनका प्राच्य विषयों का पांडित्य अगाध होता है । आप कई एक सभा-सोसाइटियों के सदस्य थे और काशी की नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति वर्षों तक थे ।

आप हिंदी के अच्छे लेखक थे । आप की रचनाओं की बड़ी प्रशंसा हुई है । आप की मुख्य हिंदी रचनाएँ ये हैं—

सागर भूगोल, शालाबाग, भौगोलिक नामार्थ परिचय, दमोह-दीपक, जबलपूर-ज्योति, सागर-सरोज, मंडला-मयूख, वैराग्य-लहरी और हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों की खोज की चार रिपोर्टें ।

आप हिंदी में अकसर लेख लिखते थे । प्रायः सभी प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में आपके लेख छपा करते थे* ।

आप का जीवन अत्यंत सरल था । भोजन थोड़ा ही करते थे । रात को जल्द सोते थे और बड़े तड़के उठते थे । सवेरे दूर तक टहलने निकल जाया करते थे । जवानी में आप कोसों पैदल चलते थे । अच्छे सवार भी थे और तैरना ख़ूब जानते थे । पीछे बागवानी से आपको विशेष प्रेम हो गया था । अपने हाथ से भी काम किया करते थे । आप का छोटा सा बाग—हीरा बाटिका—सदा हरा भरा रहता था । आप का अध्ययनकक्ष तथा पुस्तकालय इसी बाटिका में कोठे पर था । सीढ़ी चढ़ने में जब कुछ कष्ट होने लगा तब आप ने एक ढालू सड़क कोठे से बाटिका तक बनवा ली थी, जिससे उनकी बाटिका में पहाड़ी सड़कों की झलक आगई थी । आपका अधिकांश समय अध्ययनकक्ष में ही व्यतीत होता था । आप का स्वास्थ्य यूरोप-यात्रा के पूर्व बहुत अच्छा था । ५० वर्ष की आयु में आपको कोई ३५ से अधिक आयु का नहीं आँकता था ।

---

* गोकुल प्रसाद जी के नोट-बुक में उन पत्रिकाओं की सूची यह है—

माधुरी, मनोरमा, विद्यार्थी, चाँद, विकास, हिंदू पंच, इंदु, शिक्षामृत, नागरी प्रचारिणी पत्रिका, साहित्य सम्मेलन पत्रिका, हैहय-क्षत्रिय-मित्र, हैहय-क्षत्रिय, कलवार-केसरी, मोहिनी छत्तीसगढ़, श्री व्यंकटेश्वर समाचार, परवार-बंधु, श्री शारदा, सुधा, वीणा, शुभचिंतक, राम ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आप अपने पिता के बड़े भक्त थे । पिता का देहांत सन् १९१२ में हो गया । उस वर्ष आप पर अनेक विपत्तियाँ आईं । आप का एकमात्र पुत्र केदारनाथ राय का उसी वर्ष देहांत हुआ । ये बैरिस्टरी परीक्षा के लिए विलायत गए थे परंतु वहाँ से क्षय-रोग से अक्रांत होकर अपने पिता के पास आ गए थे । अनेक प्रकार की चिकित्सा की गई, पर सब व्यर्थ हुआ । इसके बाद ही जबलपुर में आप के परिवार के कई प्राणी हैज़े से बीमार पड़े और इसी में आप के पूज्य पिता और प्रिय पुत्री उमाबाई का देहांत हो गया । आप स्वयं हैज़े से बीमार पड़ गए । आप की दशा शोचनीय हो रही थी । आप किसी को सूचना भी न दे सके, किंतु मिस्टर लो (आई० सी० एस०) को किसी भाँति इसकी ख़बर लग गई और उन्हीं की हार्दिक सहायता से आप का प्राण बचा ।

आप की कोई संतान नहीं रही, परंतु आप अपने भतीजों को पुत्रवत् मानते रहे हैं । आप के बड़े भतीजे श्री० चंद्रभानु राय सी० पी० प्राविंशियल सरविस में डाक्टर हैं, दूसरे भतीजे मालगुज़ार हैं, तीसरे वकील और चौथे अभी काशी विश्वविद्यालय के इंजिनियरिंग कालेज में विद्यार्थी हैं ।

आप का मकान रायबाड़ा के नाम से कटनी में प्रसिद्ध है । वहाँ आप ने एक पुस्तकालय "राय ग्रंथालय" के नाम से स्थापित किया है जिसमें इतिहास और पुरातत्व की बहुत सी पुस्तकें हैं । यह ग्रंथालय केवल शोधप्रेमी विद्वानों के लिए है । परंतु इसके साथ साधारण जनता के लिए एक वाचनालय भी है जिसमें उपन्यास, साहित्य, इतिहास विज्ञान आदि के ग्रंथ हैं । यहाँ प्रायः दो दर्जन समाचार पत्र और सामयिक पत्रिकाएँ आती हैं ।

रायबहादुर साहब शिक्षा-प्रचार के कार्य पर बहुत ध्यान देते थे । आप कई पुरस्कार और छात्र-वृत्तियाँ भी दिया करते थे, यथा मनरो प्राइज़ (ऐग्रिकलचरल कालेज, नागपुर); केदारनाथ रौप्य पदक; उमाबाई प्राइज़ (पुत्रीशाला, मुरवाड़ा), आदि । पुस्तक-रचना या विश्वविद्यालयों से परीक्षा-संबंधी कार्य का जो पारिश्रमिक मिलता था उसे आप राय-ग्रंथालय को दे देते थे । एपिग्रैफ़िया इंडिका नामक पत्रिका अपने विभाग के कर्मचारियों को छोड़ अन्य सब लेखकों को पुरस्कार देती थी । आप के कई लेख इस में छपे थे और यदि आप पुरस्कार लेना अस्वीकार न किए होते तो आप को इस से लगभग १००० रुपये मिलते, परंतु आप उदारतापूर्वक आरंभ से ही अपने लेखों के

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिए पुरस्कार नहीं लेते थे—पहले लेख के लिए जो पुरस्कार आया उसे आप ने तुरंत लौटा दिया, क्योंकि आप विद्या की उन्नति के लिए लिखते थे, न कि धन कमाने के लिए।

आप अपने छोटे भाई गोकुल प्रसाद जी को बहुत चाहते थे। ये इनकमटैक्स के असिस्टैंट कमिश्नर थे। इन्होंने रायबहादुर साहेब की प्रेरणा से "सिवनी-सरोजिनी" नामक पुस्तक लिखी थी। दुर्भाग्य से इनका देहांत सन् १९२६ में ही हो गया। इस से रायबहादुर साहब को बड़ा धक्का लगा। पत्नी, पुत्र और पुत्री के बिछोह के समय आप युवा थे और दिन-रात कार्य में व्यस्त रहा करते थे। इससे इन विपत्तियों को किसी प्रकार धैर्यपूर्वक आपने सह लिया। पुत्रवियोग के समय आप ने केवल यही कह कर संतोष किया कि—

ईशहि किमि हम कहिय कृपाला।
न्यायी बरुक कहत बनि आवै, नाहिन दीन दयाला॥
कितने दिन सो दीन रहे हम, नाहिन कीन्ह खियाला।
जो कुछ बिगरयो बन्यो पुरबले, सो सब माथे डाला॥

परंतु भाई के देहांत से आप को जो धक्का लगा उससे कदाचित् आप अंत तक नहीं सँभले। उसी साल आप को लू लग गई जिससे आप मरते मरते बचे। तभी से आप का वह वज्र सा स्वास्थ्य भी लुप्त हो गया। आतप और शीत की वह उपेक्षाशक्ति और कठिन परिश्रम करने की वह क्षमता जाती रही। डाक्टरों की आज्ञा हुई कि आप प्रत्येक वर्ष गरमी के दिनों में पहाड़ पर चले जाया करें, नहीं तो कभी धोखा हो जायगा।

इसीलिए आप गरमियों में पहाड़ पर चले जाया करते थे। कश्मीर, शिमला, मंसूरी, दार्जिलिंग, नीलगिरि इत्यादि पहाड़ों पर आप हो आए थे। कई बार इच्छा हुई कि एक गरमी यूरोप-भ्रमण में बिताएँ। आपकी यह इच्छा १९३३ में पूरी हुई। इस वर्ष भ्रमण के साथ साथ आप भारतवर्ष के प्रतिनिधि स्वरूप पुरातत्व सम्मेलन की उस बैठक में भी सम्मिलित हो सके थे जो लंदन में हुई थी। निरामिष भोजी होने के कारण आप को वह आराम वहाँ न मिल सका जो ६५ वर्ष की आयु के व्यक्ति के लिए आवश्यक था। साथ ही आप की प्रबल ज्ञानपिपासा और अदम्य उत्साह ने—आपने यूरोप जाने के पहले इस उम्र में भी जरमन सीख डाली!—आप को बहुत दौड़-धूप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

करने के लिए वाध्य किया। परिणाम यह हुआ कि आप का स्वास्थ्य बिगड़ गया और भारतवर्ष लौट आने तक आप का १३ सेर वज़न घट गया। पेंचिश की भी शिकायत हो गई। धीरे धीरे आप अच्छे हुए, परंतु पुराना स्वास्थ्य फिर लौटा नहीं १९३४ की गरमी में आप शिमला गए। वहाँ भी स्वास्थ्य अच्छा न रहा। कटनी लौटते ही आप बीमार पड़े। इलाज के लिए आप नागपुर भी गए, पर कोई लाभ न हुआ। लोग आपको तब बंबई ले गए, परंतु ख़ून की एक नली के फट जाने से एकाएक आप संज्ञा-शून्य हो गए। बड़े बड़े डाक्टरों के उपचार से भी कुछ लाभ न हुआ, और १९ अगस्त १९३४ को बड़े सवेरे आप का देहांत हो गया। शव कटनी लाया गया और वहीं अंतिम संस्कार हुआ।

रायबहादुर साहब अपने बसीयतनामे द्वारा दस हज़ार रुपया राबर्टसन कालेज (जबलपुर) को, एक हज़ार रुपया हैहय-क्षत्रिय-महासभा को और दो हज़ार रुपया अन्य संस्थाओं को छोड़ गए।

आप के लिखे अशोक और मध्यप्रदेश का इतिहास नामक ग्रंथ अभी अप्रकाशित हैं, परंतु उनकी पांडुलिपियाँ कदाचित् अधूरी ही हैं।

श्रद्धांजलि

[रायबहादुर, साहित्याचार्य श्री जगन्नाथ प्रसाद भानु]

स्वर्गीय राय बहादुर डाक्टर हीरालाल जी के संबंध में मैं अवश्य कुछ लिख भेजता, परंतु आजकल मैं अत्यंत अस्वस्थ हूँ। उनके प्रति मेरा अत्यंत पूज्य भाव था। भारत में उनकी सत्कीर्ति सदा अमर रहेगी। अधिक क्या लिखूँ।

हीरा मध्यप्रदेश के भारत के प्रिय लाल।
कीर्ति तुम्हारी अमर है पंडित हीरालाल॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल साहब

[श्री काशीप्रसाद जायसवाल, पटना]

डाक्टर हीरालाल जी हिंदी-जगत् में, ऐतिहासिक पंडित-मंडली में, और स्वजाति-प्रेम-प्रांगण में, अग्रगण्य रत्न थे। मेरे मित्र पंडितवर डाक्टर हीरानंद शास्त्री उन्हें कोह-इ-नूर कहा करते थे। हीरालाल साहब वस्तुतः प्रकाशनिधि, ज्ञाननिधि, थे। उनके पास बैठने से बुद्धि और मन दोनों शुद्ध होते थे। किसी से बैर-भाव नहीं, हँसमुख, न्यायतत्पर, कृपामय जीवन उनका निरंतर रहा। गुण से वह रीझते थे। मध्य-प्रदेश में जनतामात्र और बाहर जो उन्हें जानता था, हृदय से उनका आदर करता था, और उनके नाम और काम का आदर बहुत दिनों तक होता रहेगा।

इतिहास की कितनी ही नई सामग्री, तामपत्र और शिलालेखों से उन्होंने २५।३० वर्ष तक अँग्रेज़ी ऐतिहासिक पत्रों को अपने लेखों द्वारा सुशोभित किया, एवं देश-भाषाओं के कितने ही नए रहस्य उद्धारित किए, तथा भारतीय मनुजशास्त्र को डाक्टर साहब ने बहुत ही प्रकाशयुक्त किया जिसे उन विषयों के पंडित भली भाँति जानते हैं। डाक्टर हीरालाल का नाम इन विद्याओं के क्षेत्र में बहुत दिन तक चिरायु रहेगा। उन की विद्वत्ता के सत्कार में पंडितों ने उन्हें अखिल भारतीय ओरियंटल कान-फरेंस का सभापति (सन् १९३० में) चुना और नागपुर युनिवर्सिटी ने उन्हें 'डाक्टर' की पदवी से अलकृंत किया। हिंदी ऐसी निछक्की लिखते थे कि उनकी शैली को पं० पद्मसिंह ने जीवित लेखकों में प्रथम स्थान दिया। इन विद्या-गुणों के भी ऊपर बहुत बड़ा गुण रायबहादुर हीरालाल जी में यह था कि उनकी सरलता, हृदय और व्यवहार-ऋजुता अलौकिक थी; दया और प्रेम के सागर थे। जिसे अपना लिया उसे अपना कुटुंबी समझा। मित्र उनके स्वजन थे। डाक्टर साहब को आदमी की बड़ी पहचान थी। उनकी पहचान कभी कच्ची नहीं उतरी। मरने को तो सभी मरता है। राम और कृष्ण तक मृत्यु से नहीं बचे। पर कुछ लोग ऐसे हैं जो देह त्यागने पर भी जीते रहते हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनके जीवन का असर उनकी मृत्यु के बाद बना रहता है। हमारे श्रद्धेय हीरालाल साहब ऐसे ही पुण्य सुजनों में हैं।

उनके उठ जाने से बिरादरी का हिमायती गया और हिंदी का चिराग फीका पड़ गया; नागरी प्रचारिणी सभा का पोषक सरताज लुट गया। भारतीय इतिहास का एक व्यास चला गया। पर उनके चरणों के चिन्ह नहीं मिटेंगे। वे देश को रास्ता दिखाते रहेंगे। उनकी आत्मा से यही प्रार्थना है कि वह इस देश को उत्तरोत्तर सुखी, सज्ञान और सुपौरुष देखे। उनकी आत्मा का साथ हमसे बराबर बना रहे।

विज्ञ हीरालाल

[श्री गिरधर शर्मा 'नवरत्न']

श्रम कर दिन रात जिसने पढ़ी थी विद्या,
करके गवेषणाएँ सुयश कमाया था।
इतिहास पुरातत्व पारंगत पंडित था,
निज योग्यता से उच्च उच्च पद पाया था।
'नवरत्न' उर खेद ऐसे व्यक्ति को न देखा,
जिसकी प्रभा ने सारी मही को दिपाया था।
विज्ञ हीरालाल सा पवित्र पुत्र 'ईश्वर' का,
भक्त था सरस्वती का 'कमला' का जाया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नागपुर में एक्स्ट्रा-असिस्टैंट कमिश्नर

तथा अन्य संस्मरण

[डा० हीरानंद शास्त्री, एम० ए०, डी० लिट्०]

अगस्त १९३४ में निर्दय मृत्युने हमसे एक प्रकांड विद्वान एवं सज्जन रत्न छीन लिया, जिसका स्थान भारतवर्ष में चिरकाल तक सूना रहेगा।

रायबहादुर डा० हीरालाल से मेरा परिचय पहले-पहल इस शताब्दी के आरंभ में ही हुआ था। उस समय वे नागपुर में एक्स्ट्रा-असिस्टैंट कमिश्नर की हैसियत से रसेल साहब की अध्यक्षता में मध्य-प्रदेश के गैज़ेटियर के लेखन और संशोधन का कार्य कर रहे थे। इस कार्य का संपादन उन्होंने ऐसी योग्यता से किया कि रसेल साहब ने मुक्तकंठ से उनकी प्रशंसा की। यदि उनका साहाय्य उस समय प्राप्य न होता, तो इस प्रदेश के गैज़ेटियर इतने पूर्ण, निर्दोष और प्रामाणिक शायद ही बन पाते। इन गैज़ेटियरों में ऐतिहासिक विषय तो प्रायः सब-के-सब उन्हीं की बलवती लेखनी की ही कृति हैं, और जनज्ञान, नृवंशज्ञान और जातितत्त्व-संबंधी अन्वेषणों का महत्कार्य भी मुख्यतया उन्हीं की तीव्र बुद्धि से ही संपन्न हुआ। उनके विचारों को लोगों ने मुकद्दमों में प्रमाण-रूप में पेश करके जीत भी प्राप्त की थी!

किंतु इससे पहले कि मैं उनके द्वारा संपादित विभिन्न कार्यों का संक्षिप्त वर्णन करूँ, मैं उस घटना का वर्णन करना चाहता हूँ, जिसके द्वारा मेरा उन से पहले-पहल परिचय हुआ था, और जो 'उदारचरितानान्तु वसुधैव कुटुम्बकम्' वाली उक्ति को चरितार्थ करती है। हम दोनों हमनाम भी थे—मेरा नाम पहले हीरालाल ही था, पीछे मैंने बदल लिया था; अब भी वृद्धजन मुझे हीरालाल ही कहा करते हैं—और फिर 'समानशीलव्यसनेषु सख्यम्'! इस नामसाम्य के कारण कभी-कभी बड़ी मनोरंजक परिस्थिति आ खड़ी होती थी, जिसका उल्लेख मैं परिचय की घटना के वर्णन के बाद करूँगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सन् १९०६ की बात है। मैं नागपुर-म्यूज़ियम में पुरातत्त्व-विभाग के सहकारी के पद पर नियुक्त होकर लाहौर से आ रहा था। नागपुर में मेरी किसी से जान-पहचान तो थी ही नहीं, अतः जब मैं एक नौकर को साथ लिए नागपुर स्टेशन पर उतरा, तो मैंने पी० डब्ल्यू० डी० के एक भद्र व्यक्ति से अपना हाल कहा और ठहरने लायक किसी अच्छे स्थान का पता पूछा। उन्होंने अपने समीप ही एक बारिक मास्टर के मकान में ठहर जाने की अनुमति दी, और इस ख़याल से कि मैं वहाँ ठहर कर अपने लिए कोई अच्छा मकान खोज लूँगा, मुझे अपने साथ ही वहाँ ले गए। मेरी नियुक्ति और पहुँच का समाचार हीरालाल जी को मिला, तो वे दौड़े हुए नागपुर-म्यूज़ियम में मुझ से मिलने के लिए पहुँचे। संयोग-वश मैं उस समय वहाँ नहीं था, अतः क्लर्क से मेरा ठिकाना पूछ कर वे वहाँ गए, जहाँ मैं ठहरा हुआ था; किन्तु उस समय मैं वहाँ भी उपस्थित नहीं था। हीरालाल जी ने मेरा जो कुछ सामान वहाँ पड़ा पाया, ताँगे में लादा और अपने साथ इस अभिप्राय से ले गए कि मैं उनके पास ही ठहरूँ; किंतु इस बीच में एक घटना भी हो चुकी थी। राय-बहादुर मनसुखराय जी, जो नागपुर में जंगलात के महकमे के एक उच्चपदस्थ पंजाबी सज्जन थे, मेरे आने का समाचार पाकर, बिना पूर्वपरिचय के ही, मेरे डेरे पर आए थे, और जितना सामान टाँगे में जा सकता था, लेकर और मेरे नौकर से यह कह कर कि वे मेरे लिए भी टाँगा भेजते हैं, चले गए थे। मैं जब घूम-घाम कर वहाँ पहुँचा, तो डेरा खाली था—नौकर भी वहीं रायबहादुर साहब के डेरे पर चला गया था! इधर-उधर पूछताछ करने पर मुझे दोनों सज्जनों के विज़िटिंग कार्ड दिए गए, जिन्हें देख कर मैं और भी चकित हो गया। मैं खड़े-खड़े सोच ही रहा था कि क्या करूँ कि रायबहादुर साहब का टाँगा आ पहुँचा, और मुझसे उनके बँगले पर चलने के लिए कहा गया। वहाँ पहुँचने पर वे मुझे हीरालाल जी के तंबू में * ले गए कि मैं उनसे अपना बाक़ी सामान लेकर बँगले पर ले आऊँ। हीरालाल जी अकेले ही थे। उन्होंने मुझे अपने ही पास

---

* उन दिनों नागपुर में प्लेग का प्रकोप था और अफ़सर लोग तंबुओं में रहते थे—उसी स्थान पर जहाँ अब क्रैडक टाउन है। यह स्थान रायबहादुर मनसुख-राय के बँगले से कुछ ही दूर पर था —ले०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ठहराने के लिए बहुत ज़ोर लगाया, और बोले कि जब तक मैं उनके पास ही न ठहरूँगा, तब तक वे मेरा सामान नहीं देंगे। रायबहादुर इन्हें अप्रसन्न करना नहीं चाहते थे, अतः गोटी डालने की नौबत आ गई! पर अन्यान्य सज्जनों के कहने पर हीरालाल जी ने बड़ी मुश्किल से मुझे जाने दिया।

पंजाबी परिवार में अधिक आराम मिलेगा, यह समझ कर मैं मनसुखराय जी के डेरे पर चला तो गया; पर समय मेरा हीरालाल जी के साथ ही व्यतीत होता। महामारी की शांति के बाद हीरालाल जी ने अपने साथ का मकान मुझे ले दिया, और हम लोग प्रायः इकट्ठे ही रहने लगे। मैं आर्क्योलाजिकल असिस्टैंट की हैसियत से और हीरालाल जी गैज़ेटियर के संबंध में हम दोनों साथ-साथ पुरातत्त्व की खोज किया करते और बहुधा दौरे पर भी इकट्ठे हो जाते। इन दौरों पर कई बार बड़ी दिलचस्प घटनाएँ भी हुईं, जिनका मुझे अभी तक स्मरण है। एक बार हम दोनों एक बैलगाड़ी में बैठे हुए जंगल में जा रहे थे, और सदा की भाँति अपने-अपने सिद्धांत के समर्थन में झगड़ा कर रहे थे। मैंने एक अकाट्य युक्ति प्रस्तुत की, और कहा कि जैसे 'म्यूनिसिपैलिटी' का शब्द बिगड़ कर 'मोरपार्टी' बन गया, वैसे ही अन्यान्य विकृत शब्द बन गए हैं, जो किसी उच्चारण-संबंधी नियम के बंधन में नहीं आते। इसका उत्तर आप सोच ही रहे थे कि थोड़ी दूर पर एक शेर निकल आया। हमारी गाड़ी के बैल रुक गए और भय के मारे काँपने लगे। हम लोग इधर-उधर देखने लगे कि कारण क्या है, तो सामने रास्ते की एक ओर शेर को खड़ा देखा। हम लोग अभी किंकर्तव्यविमूढ़ बैठे ही थे कि 'सिंह महात्मा' सिंहावलोकन करके जंगल में चले गए! अवश्य ही उन्होंने मन में सोचा होगा कि ये पंडित तो जंगल में भी 'यन्नैवं तन्नैवं' में लगे हैं, इन्हें क्यों तंग करें; नहीं तो हमारी आर्क्योलाजी, फ़िलोलाजी, एथ्नोलाजी—सब छिंदवाड़े के जंगलों में ही रह जाती!

इसी प्रकार एक बार और हम दोनों रेल से जा रहे थे। जिस डिब्बे में हम बैठे थे, वहाँ पहले और कोई न था; पर फिर एक बैरिस्टर साहब आकर बैठ गए। एक स्टेशन पर गाड़ी खड़ी होने पर वे प्लैटफ़ार्म पर टहलने चले गए। इतने में हीरालाल से मिलने के लिए एक सज्जन आए, और मुझ से पूछने लगे—"हीरालाल साहब यहाँ हैं?" हम दोनों हँसने लगे। मैंने कहा—"यहाँ तो दो हीरालाल हैं।" इतने में बैरि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टर साहब भी आ गए—उनका नाम भी हीरालाल ही था। फिर तो उस डिब्बे में हीरालालों की ही धूम मच गई !

बहुधा परामर्शों में हम लोग आधी-आधी रात बिता दिया करते थे ; किंतु इतनी रात जागते रहने पर भी उनकी दिनचर्या में कोई विघ्न नहीं होने पाता था। वे नित्यप्रति चार बजे उठते और आवश्यक कृत्यों से निपट कर बराबर कुछ-न-कुछ लिखते। वर्ष-भर मैं उनके साथ नागपुर रहा। उस वर्ष मैंने उनके सरल और प्रशंसनीय जीवन और उनकी संयमशील प्रवृत्तियों को भली भाँति देख लिया। उसके बाद भी जब-जब मैं नागपुर या कटनी में उनके पास ठहरा, या वे लखनऊ, नीलगिरि या अन्यत्र मेरे पास आए, मैंने उनका यही क्रम देखा। अभी पिछले साल ही दिसंबर में हमारा मिलन बरौदा और द्वारकापुरी में हुआ, तब भी—सत्तर साल की आयु में भी !—वे उसी नियम का पालन कर रहे थे।

रायबहादुर हीरालाल एक बड़े योग्य एक्ज़ेक्यूटिव अफ़सर थे। उनके कार्य-नैपुण्य की प्रशंसा प्रान्तीय गवर्नरों ने मुक्तकंठ से की थी। उनकी विद्वत्ता और गवेषणा की तारीफ़ तो यूरोप और अमेरिका तक के विद्वानों ने की है। उनका विद्या-प्रेम भी उच्चकोटि का था। उन्होंने अनेक छात्रों की धन से सहायता की, और इसके लिए कभी मन में आत्मश्लाघा का भाव नहीं आने दिया। वे स्कूल इंस्पेक्टरों की भाँति कह दिया करते थे कि 'यदि इतना पढ़ जाओ, तो हम पारितोषिक बढ़ा दें'। एक मदरासी ब्राह्मण को, जो नागपुर में छात्रवृत्ति ढूँढ़ता आ निकला था, इन्होंने वज़ीफ़ा देना स्वीकार किया। एक दिन बैठे-बैठे उससे कहने लगे कि यदि तुम शास्त्री पास कर लो, तो 'तम्बूलद्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात्' की तरह हम भी तुम्हारा मान द्विगुणित कर देंगे। यह मदरासी छात्र काफ़ी तेज़ था। हीरालाल जी की सहायता से उसने कई एक परीक्षाएँ पास कीं। परंतु हीरालाल जी ने इस सहायता के बारे में किसी को पता नहीं दिया—मुझे भी यह बात वर्षों बाद तब मालूम हुई जब, ढाई वर्ष हुए, वे मेरे पास नीलगिरि में ठहरे थे। उनकी उदारता के ऐसे ही और अनेक दृष्टांत हैं।

उनके विद्या-प्रेम का एक और ज्वलंत प्रमाण उनके द्वारा स्थापित कटनी का 'राय-ग्रंथालय' है। इसके उद्घाटन में उन्होंने काफ़ी व्यय किया था। अब कटनी-निवासी इससे बहुत लाभ उठा रहे हैं। इस पुस्तकालय के उद्घाटन का शुभ कार्य उन्होंने मुझ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से कराया था। वह घटना भी उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती है, अतः उसका उल्लेख अप्रासंगिक नहीं होगा। मैं छुट्टी पर था, और उनसे मिलने के लिये नागपुर गया था। उन्होंने मुझ से तो कुछ कहा नहीं ; मगर चाँदी का ताला और चाबी बनवाने के लिए उत्सुक दीख पड़े। उनके साथ ही मैं नागपुर से कटनी गया। मार्ग में जबलपुर से चाँदी का ताला साथ लेते आए। दूसरे दिन कटनी में जलसा हुआ, सब प्रतिष्ठित लोग एकत्र हुए, लोगों को मिठाई बाँटी गई और उसी समय मुझे ज्ञात हुआ कि 'राय ग्रंथालय' के उद्घाटन का कार्य मेरे ही सिपुर्द किया गया है ! शुभकार्य किया जाय, तो इसी तरह बिना किसी आडंबर के !

उनकी असाधारण प्रखर बुद्धि के भी अनेक उदाहरण दिए जा सकते हैं। कई वर्ष हुए, वे पूना की संस्कृत-लायब्रेरी देख रहे थे। वहाँ उन्हें एक 'सब से प्राचीन' हस्त-लिखित पुस्तक का उल्लेख सूचीपत्र में दिखाया गया। इन्होंने तत्काल कह दिया कि यह ग्रंथ इतना प्राचीन नहीं होगा—अवश्य ही संवत् पढ़ने में भूल हुई है। वे संवत् पढ़ने वाले भारत के अद्वितीय विद्वान थे। पुस्तक की दोबारा परीक्षा करने पर हीरालाल जी का अनुमान ठीक निकला, और भूल का संशोधन हो गया।

रायबहादुर हीरालाल से प्रथम परिचय के समय से ही मेरा उनका सौहार्द्य भाइयों का-सा रहा। मैं उन्हें बराबर बड़े भाई के समान मानता रहा, और उनका स्नेह भी मेरे प्रति वैसा ही रहा। उनके प्रकांड पांडित्य और प्रखर बुद्धि, निष्कलंक चरित्र और संयमशील सौम्य स्वभाव, 'अकारण' मैत्री और सहज उदारता का विचार करते-करते एकाएक ध्यान हो आता है कि यह विच्छेद व्यक्तिगत क्षति ही नहीं, देशमात्र की है। मैं उस दोहे का स्मरण करता हूँ, जो हीरालालजी ने, मेरे नागपुर से चले आने पर, खिन्न होकर एक पत्र में लिख भेजा था, और मुझे जान पड़ता है कि आज वह मेरे व्यक्तिगत संबंध के लिए नहीं, हम सभी के बारे में सच हो रहा है—हम सभी के आंतरिक दुख का द्योतक है। वह दोहा था—

"हीरा हीरा को मिल्यो, भयो अतिहि आनंद ;
पर विधि ने बिछुरन कियो, भाग्य हमारो मंद !"

सच है, 'कालो हि दुरतिक्रमः' ! [विशाल भारत से

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

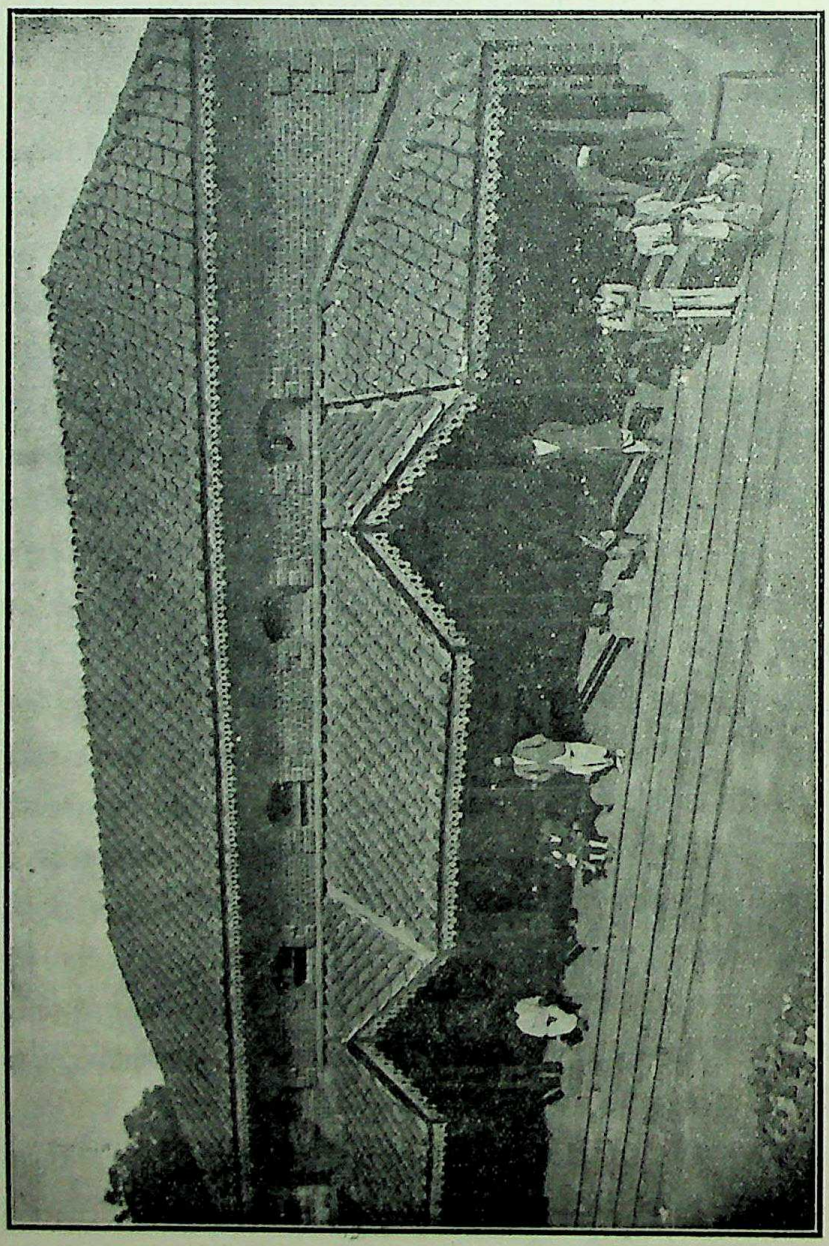

इस बठक को रायबहादुर डा० हीरालाल जी ने हाल ही में बनवाया था

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय रायबहादुर साहब से मेरा आजीवन परिचय

[राय साहब पं० गौरीशंकर अग्निहोत्री, नागपुर]

स्वर्गीय रायबहादुर डा० हीरालाल अपने आजन्म मित्र रायबहादुर पंडा बैजनाथ (रिटायर्ड ई० ए० सी०) के साथ जब जबलपुर में बी० ए० कक्षा में पढ़ते थे, तब गवरमेंट कालेज मिलोनीगंज के निकटवर्ती बँधैयापुर में था । इन दोनों विद्यार्थियों की चर्चा उस समय बहुत ही आदरपूर्वक हुआ करती थी ऐसा मुझे भली भाँति स्मरण है*। हम लोग भी तब मिलोनीगंज में रहते थे और उक्त दोनों सज्जन मेरे मकान के पास ही रहा करते थे । यह घटना लगभग ४८ वर्ष पूर्व की है । लगभग उसी समय रायबहादुर साहब के छोटे भाई तथा मेरे आजन्म हार्दिक मित्र स्वर्गीय गोकुलप्रसाद जी अँगरेज़ी मिडिल पास करके कटनी से जबलपुर पढ़ने को आए। मैंने भी उसी वर्ष अँगरेज़ी मिडिल पास किया था । अतएव हम दोनों सहपाठी होकर पास ही पास रहते थे । इसी प्रकार इस आदर्श कुटुंब से मेरा प्रथम परिचय हुआ । इसके पश्चात प्रिय भाई गोकुलप्रसाद जी का और मेरा विद्यार्थीजीवन-काल में अनेक वर्षों तक साथ रहा । लगभग एक वर्ष आगरे में हम दोनों एक ही कालेज में पढ़े और एक ही बोर्डिंग हाउस में साथ रहे । इसी प्रकार हम दोनों ने प्रायः एक ही साथ नायब-तहसीलदारी से सर्विस आरंभ की, यद्यपि भाई गोकुलप्रसाद जी मुझ से कुछ सीनियर रहे । इस प्रकार दोनों कुटुंबों में परिचय तथा प्रेम बढ़ता ही गया। समय समय पर भाई गोकुलप्रसाद जी के कारण रायबहादुर साहब के दर्शन मुझे हुआ करते थे और मैं उन्हें बहुत ही आदर की दृष्टि से देखा करता था। परंतु रायबहादुर साहब से घनिष्ठ परिचय का सौभाग्य मुझे सन् १९०९ में प्राप्त हुआ, जब कि मैं बैतूल तहसील में तहसीलदार था और रायबहादुर साहब मेरे सब डिविज़नल

---

* स्वर्गीय राय देवीप्रसाद जी "पूर्ण कवि" (कानपुर) भी इनके सहपाठी थे । पंडित लोचनप्रसाद जी पांडे ने मुझे बतलाया है कि इन छात्रों के कारण इनके अँग्रेज़ प्रिंसपल कहा करते थे कि 'I have never seen such a Brilliant Class'—सं० ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आफ़ीसर होकर वहीं पर नियुक्त हुए । वहां पर हम दोनों लगभग एक वर्ष तक साथ रहे और मेरे ऊपर उनकी विशेष कृपा रही । १९११ में जब रायबहादुर साहब असिसटैंट-सुपुरिंटेंडेंट-सेंसस नियुक्त हुए तब मैं उन्ही की कृपा से डिपुटी-सुपुरिंटेंडेंट-सेंसस मुक़र्रर हुआ । हम दोनों एक ही साथ एक ही मकान में रहते थे और एक ही चौके में भोजन करते थे । ऐसी परिस्थिति में हम दोनों के बीच में और भी विशेष प्रेम हो गया। सेंसस-दफ़्तर में मेरा कार्य पूर्ण होने पर मैं सोहागपुर तहसील में तहसीलदारी पर नियुक्त हुआ तथा रायबहादुर साहब सेंसस का काम कुछ काल तक और करते रहे। इसी समय उनको बड़े ज़ोर से हैज़े की बीमारी हो गई और बड़े कठिन परिश्रम से उनकी प्राणरक्षा हुई । रोग से मुक्त होते ही वे छुट्टी लेकर कई महीने मेरे पास सोहागपुर में रहे; कारण कि सोहागपुर का पवनपानी अच्छा समझा जाता है तथा मेरी सेवा-सुश्रूषा में उन्हें श्रद्धा थी ।

सन् १९२७ में रायबहादुर साहब के साथ मैं मंसूरी गया और वहाँ लगभग दो मास एक ही साथ रहना, उठना, बैठना खाना-पीना होता रहा । तदनंतर जब मैं पेंशन लेकर नागपुर में रहने लगा तब रायबहादुर साहब नागपुर युनिवर्सिटी के कार्यों के संबंध में जब जब नागपुर आते थे तब तब उनका निवास मेरी रामकुटी में ही होता था । अंत में जब रायबहादुर साहब बहुत बीमार हो गए और उन्हें इलाज के लिए बंबई ले जाने की आवश्यकता हुई उस समय मैं उनके साथ बंबई गया और वहीं पर मेरे परम पूज्य महर्षि-स्वरूप रायबहादुर साहब ने अपने नश्वर शरीर को छोड़ कर सदा के लिए श्री राम जी की गोद का आश्रय लिया ।

उनकी असाधारण विद्वता

स्वर्गीय रायबहादुर साहब की विद्वता के विषय में मेरे लिए कुछ कहना असंभव है । हां, उनके साथ विशेष सत्संग होने के कारण कभी कभी उन्हीं के श्रीमुख से अनेक आश्चर्ययुक्त बातें सुनने में आ जाती थीं । बहुधा प्रेमवश वे मुझे अनेक स्वतः शोधन किए हुए शिलालेखों के गूढ़ तत्व समझाया करते थे । एपिग्रैफ़िया इंडिका में जो उनके अद्भुत लेख निकलते थे और उन लेखों पर अन्य विद्वानों की समालोचनायें जो प्रकाशित होती थीं सो भी वे बड़े प्रेम के साथ मुझे हँस हँस कर सुनाया करते थे । इसके अतिरिक्त एक बात जो मुझे सदैव दृष्टिगोचर होती थी वह यह है कि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जहाँ कहीं भी वे रहते थे स्थानीय विद्वानों और विशेष करके नृवंशविद्या के प्रेमी विद्वानों के साथ उनका संभाषण सदैव हुआ करता था और ऐसे अवसरों पर सब विद्वान सज्जन रायबहादुर साहब की भोली भोली बातें सुन कर मंत्र-मुग्ध हो जाया करते थे। मुझे ऐसे भी अवसर प्राप्त हुए कि मैं देखूं कि वे किसी विषय पर अपना लेख कैसे लिखते थे। इन अवसरों पर मैंने देखा कि उनकी लेखनी सपाटे के साथ शीट के शीट रँगती चली जाती थी और रायबहादुर साहब की विचार-धारा अटूट बहती जाती थी।

उनमें विद्योपार्जन की लालसा इतनी बढ़ी-चढ़ी थी कि जहाँ कहीं भी उनको कोई नई विद्या सीखने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने उससे लाभ उठाने में कभी कसर नहीं रक्खी। जब हम दोनों कुछ समय के लिए मंसूरी में थे तब 'हिमालयन क्लब' में एक ही स्थान में रहने के कारण रायबहादुर साहब का प्रथम परिचय डा० प्राणनाथ से हुआ। ये महाशय जरमन भाषा के ज्ञाता थे। बस, रायबहादुर साहब ने उनसे जरमन भाषा सीखना आरंभ कर दिया और मंसूरी से चलने के पहिले उस भाषा का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया।

सरल जीवन

अँग्रेज़ी में जो कहावत है कि 'plain living and high thinking' रायबहादुर साहब उस कहावत की जीती जागती मूर्ति ही थे। अपनी इस ६३ वर्ष की अवस्था में उनके सदृश सरल जीवन किसी अन्य व्यक्ति में मैंने देखा ही नहीं। अनेक बार एक ही साथ रहने के कारण और उनका मेरे ऊपर वात्सल्य प्रेम होने के कारण उनके जीवन की कोई भी बात मुझसे छिपी नहीं रहती थी। उनका रहन-सहन बिल्कुल सरल था, उनकी पोशाक बिल्कुल सरल, उनकी भोजन-व्यवस्था अत्यंत सरल। उनके पवित्र जीवन को जिस ओर से मैंने देखा सरलता ही दिखलाई पड़ी। साधारण से साधारण जो कुछ भी भोजन उनके सामने आ जाता बिना किसी टीका-टिप्पणी के वे उसे प्रेम के साथ ग्रहण कर लेते थे। कोई बाहर का फ़ैशनवाला मेहमान एक दो दिन के लिए घर में आ जाता है तो कुटुंब के प्रत्येक व्यक्ति को सचेत होकर उसकी सेवा सुश्रूषा करनी पड़ती है और कभी कभी तो ऐसे मेहमान अखरने लगते हैं। रायबहदुर साहब ने मेरी सुदामा कुटी में महीनों निवास किया लेकिन वे एक कुटुंबी के समान इस प्रकार रहते

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे कि किसी भी व्यक्ति को यह नहीं मालूम होता था कि घर में कोई मेहमान ठहरा है। उनके जीवन की आवश्यक वस्तुएँ इतनी थोड़ी होती थीं कि एक छोटे से हैंड बैग में उनकी पूर्ण गृहस्थी आ जाया करती थी। अभी पीछे अवस्था बढ़ने पर उनके दाँतो में कुछ कमज़ोरी सी मालूम होने लगी थी और दातुन को दातों से न चबा सकते थे। इस कठिनाई को हल करने के लिए उन्होंने कैसा अच्छा प्रबंध किया था! अपने हैंडबैग में आधपाव के वज़न का वे एक छोटा-सा गोल पत्थर का टुकड़ा रखते थे और उसी के अनुकूल एक छोटी-सी हथौड़ी। बस, हथौड़ी से उसी पत्थर के टुकड़े पर दातुन रख कर उसकी कूची बना लिया करते थे। सरलता का यह क्या ही अच्छा नमूना था।

सदैव वे हँसमुख रहते; उनके बात करने में मानों फूल झरते थे। जिससे भी मिलते थे हृदय खोलकर मिलते थे, चाहे अन्य लोग उन्हें ठग ही क्यों न लेवें। उनकी कमीज़ में एक जेब ज़रूर रहता था जिसमें उनकी कुंजियों का एक छोटा-सा गुच्छा रहता था। जब वे ख़ास कटनी में रहते थे तब एक सीटी भी उसमें रहा करती थी। अपनी लाइब्रेरी में जो कोठे पर थी जब कभी सेवक को बुलाना होता तो वे सीटी बजाते और सेवक तुरंत दौड़ कर आ जाता। उनकी सरलता का कहाँ तक उल्लेख किया जाय, वह तो उनके रोम रोम में भिगी हुई थी। इन्हीं सब बातों को देख कर मैं उन्हें बहुधा महर्षि कह के संबोधन किया करता था। हाय रे कराल काल! हाय रे अनित्य संसार! ऐसे ऋषिस्वरूप पूज्य व्यक्ति भी कुसमय ही में उठ जाते हैं!

सरविस में रहने पर सरकारी काम में उत्साह

रायबहादुर साहब के श्रीमुख से जो कुछ मैंने सुना है तथा जो मुझे स्वतः दृष्टिगोचर हुआ है उन सब से यही परिणाम निकला है कि अपने कर्तव्यपालन में वे ज़रूरत से ज़्यादा सचेत रहा करते थे। कहावत है कि "आज का काम कल को न रख"; इसकी पूर्ति मैंने पूर्ण रूप से उन्हीं में देखी। जब बैतूल ज़िले में वे मेरे एस० डी० ओ० थे तब उनके साथ दौरे में रहने का मुझे अवसर मिलता था। प्रातःकाल बिछौने से उठ कर मैं देखता था कि साहब नित्य क्रिया से निवृत्त होकर डेरे के बाहर टहल रहे हैं। इतना ही नहीं, उनकी फ़ाइल में जो कुछ भी काग़ज़ात

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहते थे सब का निबटारा रात्रि को लगभग ४ बजे से उठ कर प्रातःकाल होने के प्रथम ही कर देते थे। उनके पास कभी भी किसी क़िस्म का काग़ज़ बक़ाया में न रहने पाता था।

सरविस के आरंभ में जब वे सागर ज़िले में डिप्टी इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स नियुक्त हुए उस समय की घटनाएँ वे मुझे सुनाया करते थे। उन दिनों वे अपनी सवारी के लिए एक घोड़ा तथा दौरे का सब सामान लादने के लिए एक टट्टू रखते थे। प्रातःकाल उठते ही अपने चपरासी तथा रसोइया को कुल सामान के साथ आगे किसी निश्चित स्थान को भेज देते थे। फिर आप अकेले दो तीन पाठशालाओं का अवलोकन करते हुए उस निश्चित स्थान के स्कूल का अवलोकन करते थे। उनका कहना था कि कार्य समाप्त होते ही वे दौड़ते हुए अपने डेरे में जाते थे। उस समय उनका भोजन तैयार रहता था। बस, जैसे ही स्नान करने के लिए तैयार हुए कि उन्होंने अपने सवारी के घोड़े को कसने को आज्ञा दी। फिर भोजनोपरांत तुरंत कपड़े पहिन कर घोड़े पर सवार होकर अन्य पाठशालाओं के अवलोकन के लिए निकल जाया करते थे। उसके पश्चात उनका चपरासी व रसोइया भोजन करके कुल सामान टट्टू पर लादकर सायं-काल के निश्चित स्थान को सीधे चले जाते थे। इस प्रकार अनेक पाठशालाओं का निरीक्षण वे एक दिन में कर लेते थे और पाठशालाओं के जिन विज़िटर-बुकों को वे दिन में न लिख पाते थे उनको रात्रि के समय लिख कर दूसरे दिन का कार्य आरंभ होने के प्रथम रवाना कर देते थे। परिणाम कुछ काल तक यह हुआ कि प्रांतीय डाइरेक्टर आफ़ पबलिक इंसट्रक्शन को रायबहादुर साहब की मासिक रिपोर्टें पहुँचने पर विश्वास न होता था कि एक डिप्टी इंसपेक्टर इतनी अधिक पाठशालाओं का मुआइना प्रति दिन कर सकता है*। कुछ समय के पश्चात् जब इंसपेक्टर आफ़

---

* इस बात को रायबहादुर साहब ने मुझे भी बताया था। इसी सिलसिले में मुझे यह भी पता चला कि एक बार जाड़े का दिन था। बदली कुछ कुछ हो रही थी। लोगों ने आप को आगे जाने से मना किया। कार्य-क्रम में बाधा न पड़े इस ख़्याल से आप ने पानी आने की परवा न की। थोड़ी दूर जाने पर पानी आ गया। जंगली रास्ता था। कुछ अंधेरा हो जाने के कारण अगले स्कूल तक पहुँचने में आप को बड़ी देर लग गई। रात हो गई। जाड़े का दिन, गाँव वाले अधिकांश सो गए थे। आप के चपरासी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्कूल्स तथा डाइरेक्टर साहब ने स्वतः जाँच करके यथार्थ बात मालूम कर ली तब सालाना रिपोर्ट में रायबहादुर साहब की विशेष प्रसंशा की। फलस्वरूप वे आगे चल कर इस प्रांत की रियासतों के एजेंसी इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स नियुक्त हुए और उसके पश्चात कुछ काल तक वे इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स भी रहे। एजेंसी इंसपेक्टर आफ़ स्कूल्स के समय की घटनाएँ बताया करते थे जिनसे पता चलता है कि योग्यता मालूम होने पर अनेक रियासतों के राजा उनका किस प्रकार आदरपूर्वक स्वागत किया करते थे।

उचित प्रकार से कार्य संपादन करने में रायबहादुर साहब को अपनी प्राणरक्षा का भी कुछ विशेष ध्यान न रहता था। बस्तर राज्य में दौरा करते समय दो एक भयंकर घटनाएँ हो गईं। वे कहते थे कि बस्तर राज्य के जंगली स्थानों में दौरा करते समय एक बार उन्हें शेर का सामना करना पड़ा। वे अपने साधारण नियम के अनुसार कुछ बेगारी साथ लिए घोड़े पर सवार चले जा रहे थे। एक बड़े नाले के निकट जब उनकी पार्टी पहुँची तो अचानक उनका घोड़ा चमका, और साथ ही उन बेगारियों ने ज़ोर से आवाज़ दी "साहब! शेर है"। परंतु साहब को उन बेगारियों की यह आवाज़ सुनने का भी अवकाश नहीं मिला; कारण कि घोड़ा पीछे फिर कर बेतहाशा ज़ोर से भागा और कई मील जाने पर मुश्किल से रुका। उस समय उस घोर जंगल में रायबहादुर साहब कुछ समय के लिए अकेले पड़ गए और बहुत देर के बाद बेगारी लोग इनसे आकर मिले; किंतु इस दुर्घटना में भी भगवान ने उनकी पूर्ण रक्षा की।

उसी बस्तर राज्य के दौरे में एक बार इसी प्रकार की एक दूसरी दुर्घटना हुई।

पानी पड़ता देख कर एक गाँव पीछे ही टिक गए। उनको यही विश्वास था कि पानी के कारण डिप्टी साहब भी लौट आएँगे। परंतु आप ने तो पानी की परवा की नहीं। परिणाम यह हुआ कि उस जाड़े के दिन में भीगे कपड़े पहने अनजान गाँव में वे जा पहुँचे। मुशकिल से एक गाँव वाले से स्कूल का पता लगाया। वहीं जाकर आग जलाई और किसी प्रकार रात काटी। स्कूल के मास्टरों को यह विश्वास ही नहीं हुआ कि डिप्टी साहब पानी में ही चले आए हैं। दूसरे दिन सवेरे जब सच्ची बात का पता चला तब भले ही उन्होंने बहुत माफ़ी माँगी। परंतु हीरालाल जी को कष्ट की क्या परवा; उन्हें तो काम पूरा होने से मतलब था। —सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उस समय उनके साथ डेरा वग़ैरह बहुत सा सामान रहता था और उनका सामान गाड़ियों में चलता था। किंतु वे केवल बेगारियों के साथ पाठशालाओं का निरीक्षण करते हुए अपने निश्चित स्थान को जाते थे। उनके डेरे की गाड़ियां सीधे रास्ते से जाया करती थीं। एक बार ऐसा हुआ कि साहब तो अपने निश्चित स्थान पर पहुँच गए, किंतु उनका सामान व डेरे की गाड़ियाँ एक या दो दिन तक (मुझे ठीक स्मरण नहीं है) नहीं पहुँची। इतने पर भी उनके असाधारण सरल जीवन के कारण उन्हें किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई; अथवा यह कहा जाय कि उन्होंने किसी प्रकार की असुविधा नहीं मानी।

इन सब बातों से मालूम होता है कि वे किस कोटि के कर्तव्य-परायण व्यक्ति थे।

उनके धार्मिक विचार तथा संसारिक बंधनों से मुक्ति

चिरकाल के सहवास में मैंने देखा कि स्वर्गीय रायबहादुर साहब जिस प्रकार महान गंभीर विद्वान थे उसी प्रकार धार्मिक विचारों में वे "गुप्त योगी" थे। पूजापाठ का बाहरी आडंबर उन्होंने कभी नहीं किया, किंतु जब कभी उनका और मेरा अध्यात्मिक विषयों पर संभाषण होता था तब उनके हृदय के गूढ़ भाव मुझे प्रत्यक्ष होते थे। बहुधा मेरे देखने में यह आया कि भक्ति का प्रसंग छिड़ने पर उनके शरीर में रोमांच हो जाया करता था और नेत्रों से टप-टप आँसू गिरने लगते थे। जब कभी मेरी कुटी में कोई रामायणी आ जाते अथवा अन्य किसी प्रकार की कोई भगवत कथा चलती तो वे उसमें बड़े प्रेम के साथ भाग लेते। लगभग ५ वर्ष से नागपुर में एक महान त्यागी संयासी पूज्यपाद विद्यानंद जी महाराज हर साल दो तीन मास गीता का प्रवचन करने आया करते हैं। स्वामी जी का प्रवचन इतना मार्मिक तथा आकर्षक होता है कि प्रायः आठ, दस हज़ार स्त्री पुरुष नित्य नियम से उनका प्रवचन सुनने के लिए एकत्रित हुआ करते हैं। रायबहादुर साहब को जब कभी ऐसे समय में नागपुर रहने का अवसर मिलता वे नियम के साथ स्वामी जी का गीता-प्रवचन सुनने के लिए जाया करते थे। अपने स्वर्गवास के लगभग दो वर्ष पूर्व से उन्होंने आयुर्वेदोजी आदि विद्या-संबंधी संस्थाओं से एक प्रकार का त्यागपत्र दे दिया था और अपना विशेष समय गीता के अध्ययन में लगाया करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुकूल समय प्राप्त होते ही रायबहादुर साहब संसारिक बंधनों को तृण के समान तोड़ कर फेंक देते थे। जिस समय उनकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हुआ उस समय वे पूर्ण युवावस्था में थे, किंतु अपने परम पूज्य पिता तथा अनेक मित्रों के अनुरोध करने पर भी उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया और अपना शेष जीवन पूर्ण ब्रह्मचर्य से व्यतीत किया। उस समय उनका कहना था कि गृहस्थ आश्रम में प्रवेश एकमात्र वंशवृद्धि के निमित्त होता है, सो उस समय उनको श्रीरामजी ने एक पुत्र-रत्न तथा एक कन्या-रत्न दिया था। किंतु उनके ये दोनों रत्न उनके समीप थोड़े ही दिनों के मेहमान रहे। इस करुणायुक्त विषय पर मैं अधिक लिखने का साहस नहीं कर सकता। जिस समय उनके प्रिय पुत्र बाबू केदारनाथ का स्वर्गवास हुआ उसके दो दिन पहिले मैं पचमढ़ी में उनके पास था और उनकी मानसिक स्थिति का अनुभव कर सका था। उस दुर्घटना के थोड़े ही दिन बाद जब मैं फिर रायबहादुर साहब से मिला तब भी मैंने उन्हें उनकी साधारण प्रकृति के अनुसार शांत-चित्त पाया। कहा जाता है कि संसार में पुत्र शोक से बढ़ कर मनुष्य के लिए कोई अन्य दुर्घटना नहीं हो सकती, किंतु रायबहादुर साहब की पवित्र आत्मा कुछ विलक्षण ही थी।

जिस समय उनके लघुभ्राता और मेरे हार्पिक प्रिय मित्र गोकुलप्रसाद जी संसार में वर्तमान थे उस समय उन दोनों भाइयों के बीच जो अगाध प्रेम था उसे देख कर लोग उन दोनों को राम-लक्ष्मण की जोड़ी कह कर संबोधित किया करते थे। जब उस युगुल जोड़ी का अंतिम बिछोह होने को था तब स्वर्गीय प्रिय भाई गोकुलप्रसाद जी ने मुझ तुच्छ सेवक का स्मरण किया था। किंतु रायबहादुर साहब ने इस संबंध में जो पत्र मुझे भेजा वह मुझे समय पर नहीं मिला—कारण यह था कि ठीक उसी समय किसी कार्यवश मैं बंबई में था और उनके प्रिय ज्येष्ठ पुत्र वर्तमान डा० चंद्रभानु राय से उनके मेडिकल कालेज के होस्टल में बातचीत कर रहा था। इस महान दुर्घटना को भी रायबहादुर साहब ने ईश्वरेच्छा समझ कर शांति से ग्रहण किया। ऐसे परम धार्मिक तथा त्यागी मनुष्य वर्तमान संसार में क्वचित ही देखने में आते हैं।

श्री राम जी उनकी महान पवित्र आत्मा को परम शांति प्रदान करें।

हरिः ॐ तत्सत्, हरिः ॐ तत्सत्, हरिः ॐ तत्सत्।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर हीरालाल की मधुर स्मृति

[महापंडित राहुल सांकृत्यायन त्रिपिटिकाचार्य]

रायबहादुर हीरालाल जी की विद्वत्ता के बारे में कुछ कहना अनावश्यक है, क्योंकि भारतीय इतिहास, पुरातत्त्व, मानवतत्त्व, पुरालिपि आदि के विषय में उनके विशाल ज्ञान का सम्मान भारत ही नहीं, यूरोप और अमेरिका तक के विशेषज्ञ भी करते थे। पिछले दिसंबर में बड़ौदा में हम लोगों का साथ हुआ था। बड़ौदा से लेकर चित्तौड़ तक हम लोगों का बराबर साथ रहा। हमारी मंडली में उनके अतिरिक्त श्रद्धेय जायसवाल जी भी थे, और उस समय हम लोगों की नाना विषयों पर बातचीत होती थी। अन्य विषयों के विद्वान तो हीरालालजी थे ही, किंतु वे कलचुरि-इतिहास का ऐसा ज्ञान रखते थे जैसा इस समय तक भारत में किसी को नहीं है। आगे भी उस तरह का ज्ञाता कब कोई हो सकेगा नहीं कहा जा सकता। उनकी आयु और स्वास्थ्य को देख कर हम लोगों को बहुत डर लग रहा था कि कहीं हमारे देश को इस ज्ञान-राशि से वंचित न हो जाना पड़े। हमने बहुत तरह से कहा था—'आप कलचुरि-काल के इतिहास को शीघ्र लिखवा दीजिए। वे भी इसके महत्व को समझते थे और तै हुआ था कि साथ में एक लेखक रख कर वे इतिहास लिखवा देंगे। पिछली गर्मियों में ल्हासा में रहते समय मेरी यह धारणा थी कि कलचुरि इतिहास तैयार हो रहा होगा। परंतु उसी समय रायबहादुर के निधन की सूचना पत्रों-द्वारा मिली। किसी अपने कुटुंबी या वैयक्तिक स्नेही के देहांत या सदा के बिछोह से दुःख अवश्य होता है, लेकिन उसकी चोट दिल पर थोड़े दिनों तक ही रहती है; दुःख के मिटाने में समय बहुत मदद करता है। लेकिन यदि किसी व्यक्ति के बिछोह से अनमोल ज्ञानराशि के लुप्त होने की बात हो, तो वह ऐसी चीज़ नहीं है जिसे समय भुला सके। जब-जब ख़्याल आता है कि कलचुरि-इतिहास का लेखक चला गया और अब हमको उस योग्यता का कलचुरि-इतिहास लिखने वाला नहीं मिलेगा तो बहुत खेद होता है। यदि कोई आदमी प्रतिभा-शाली और बहुश्रुत हो तो वह अपनी जवानी में भी बहुत कुछ कर सकता है। तो भी इतिहास एक ऐसा विषय है जो मननशील और अध्ययनशील व्यक्ति की आयुवृद्धि के साथ अधिक परिपक्व होता जाता है। और उस परिपक्व ज्ञान वाला व्यक्ति यदि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक मामूली पुस्तक भी लिख दे तो उसका महत्व बहुत अधिक होगा, क्योंकि उसमें उसके अतुल ज्ञान का प्रभाव रहेगा।

श्रद्धेय जायसवाल जी, स्व० रखालदास बनर्जी, और स्व० हीरालाल जी भारतीय इतिहास के उन विद्वानों में हैं जिनका सानी बहुत जल्द नहीं पैदा हुआ करता, लेकिन हमारे देश में लोगों की रुचि और राष्ट्रीय-संगठन इस तरह का है कि इतनी तपस्या से उपार्जित संपत्ति को लोग यों ही बर्बाद होने देते हैं। आज कितने ही वर्षों से जायसवाल जी भारतीय दृष्टि-कोण से हिंदू भारत का इतिहास लिखने की बात कर रहे हैं, लेकिन अस्सी पचासी हज़ार रुपयों के बिना यह काम नहीं हो सकता। यह निश्चय ही है कि जायसवाल जी के बाद इस काम के लायक आदमी जल्द पैदा न हो सकेगा, तो भी हम कुछ कर नहीं रहे हैं। रुपये वाले यह नहीं समझ रहे हैं कि इससे बढ़ कर उनके रुपयों का सद्व्यय क्या हो सकता है। स्व० रायबहादुर का इतिहास-अनुशीलन भी जायसवाल जी की तरह ही व्यवसाय से नहीं, प्रेम और भक्ति से संबंध रखता था। मैं समझता हूँ कि अगर प्रकाशन आदि का पूरा प्रबंध कर कोई योग्य व्यक्ति लिखने के लिए उनकी सेवा में पहुँच गया होता, तो भारतवर्ष को उनके अद्भुत ज्ञान से बहुत लाभ हुआ होता।

वैयक्तिक रूप से रायबहादुर हीरालाल बड़े ही आकर्षक पुरुष थे। हर एक महा पुरुष में अपनी अपनी विशेषता होती है। रायबहादुर में मैंने जो सब से बड़ी बात देखी, वह थी उनका लड़कों की तरह से हँसमुख निःसंकोच बर्ताव। अगर किसी आदमी को पहले से मालूम न रहता और बात में कहीं इतिहास का गंभीर विषय न छिड़ जाता तो मैं समझता हूँ कि दिनों साथ में रह कर भी वह यह नहीं समझ सकता कि रायबहादुर इतने बड़े विद्वान हैं, और वे इतने ऊँचे राज-कर्मचारी रह चुके हैं।

मनुष्य का स्वभाव ही है कि ऐसे पुरुषों के वियोग से चित्त को बहुत दुःख हो, लेकिन इस संसार की तो बनावट ऐसी है कि संयोग-वियोग यहां रात-दिन लगा रहता है। बुद्ध के बचन के अनुसार—"तं कुतोत्थ लब्भा" (वह कहां से मिल सकता है), हम चाहते हैं कि मित्रों से हमारा वियोग न हो; हम सब अनंत काल तक साथ बने रहें। लेकिन यह कहां हो सकता है!

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रा० ब० डा० हीरालाल के विषय में मेरे संस्मरण

[पंडित कामता प्रसाद गुरु, जबलपुर]

रायबहादुर डाक्टर (उस समय के बाबू) हीरालाल १८९२-९३ के लगभग सागर में विज्ञान-शिक्षक की हैसियत से दौरा करते हुए आए थे। उस समय मैं सागर हाईस्कूल में प्रवेशिका कक्षा का विद्यार्थी था। बाबू साहब हाईस्कूल की प्रयोगशाला में कई दिन सरल विज्ञान पर प्रयोगों-द्वारा व्याख्यान देते रहे। यह विषय मिडिल स्कूलों में नया नया प्रचलित होनेवाला था और शिक्षक लोग स्वयं इसे नहीं जानते थे। उन-शिक्षकों की एक कक्षा बनाई गई थी और बाबू हीरालाल उन लोगों के लिए हिंदी में व्याख्यान देते थे, क्योंकि अधिकांश शिक्षक अंगरेज़ी से अनभिज्ञ थे। बाबू साहब का डील ऊँचा था और आवाज़ गहरी थी, इसलिए दूर से भी लोग उन्हें देख सकते थे और उनका व्याख्यान सुन सकते थे। उन दिनों मध्यप्रदेश में शिक्षा-पद्धति की शिक्षा का आरंभ ही हुआ था, पर बाबू साहब की शिक्षा "ट्रेंड" शिक्षकों से किसी प्रकार कम न थी। वे अपने शिक्षक-विद्यार्थियों को अपने पास बुला कर उनसे विज्ञान के प्रयोग करवाते थे। यह सब मैं अपने अवकाश के घंटों में दूर से देखा और सुना करता था।

एक दिन कौतूहलवश मैं भी उनकी कक्षा में जा बैठा और ध्यान से उनका व्याख्यान सुनता रहा। उन दिनों बोलचाल में साहित्यिक हिंदी का विशेष प्रचार नहीं था, पर बाबू साहब की भाषा उस समय भी साधारण से कुछ अधिक साहित्यिक रहती थी और मुझे वह बड़ी मनोहर लगती थी। उस दिन एक सभ्य विनोद हो गया। व्याख्यान के बाद जब विद्यार्थियों की हाज़िरी पुकारी गई तब वहाँ मेरे एक सहपाठी ने, जो उस कक्षा में मेरे पहले से उपस्थित था, अपने पिता का नाम पुकारे जाने पर "उप-स्थित" कहा, क्योंकि उसके पिता उस दिन उपस्थित नहीं था और उन्होंने अपने बदले अपने पुत्र को व्याख्यान सुनने को भेजा था। बाबू साहब एक सच्चे शिक्षक के समान अपने प्रत्येक विद्यार्थी का नाम और रूप जानते थे; इसलिए अनुपस्थित मास्टर के नाम

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पर किसी दूसरे को "उपस्थित" कहते सुन उन्होंने मेरे उस सहपाठी से पूछा कि आप कौन हैं ? उसने कहा कि मैं अमुक मास्टर साहब का पुत्र हूँ और उनकी आज्ञा से उनके बदले व्याख्यान सुनने आया हूँ । इस पर बाबू साहब ने कहा कि इससे क्या लाभ होगा ? मेरे उस सहपाठी ने उत्तर दिया कि इससे एक तो मेरे पिता ग़ैरहाज़िर न समझे जावेंगे और दूसरे मैं उन्हें व्याख्यान और प्रयोगों का सार समझा दूंगा । इस पर सब हँस पड़े ।

रायबहादुर हीरालाल साहब से मेरा प्रथम परिचय उस समय हुआ था जब वे १८९३-९४ के लगभग सागर में स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर थे । मैं उस समय प्रवेशिका परीक्षा पास कर सागर हाईस्कूल में शिक्षक हो गया था । मैं अपने एक कटनी-निवासी मित्र के साथ बाबू हीरालाल के यहां गया । मैंने उनका व्यवहार बड़ाही श्रेष्ठ पाया । उन्हें शिक्षा, साहित्य और पुरातत्व के विषयों पर बातचीत करने में बड़ा आनंद आता था । १८९५ में मेरी बदली रायपुर हो गई । फिर कुछ ऐसा संयोग हुआ कि एक ही दो वर्ष में १८९६-१८९७ के लगभग वे रायपुर में पदोन्नति पाकर रियासतों के एजेंसी इंस्पेक्टर के पद पर आये । वहाँ उन से मैं बहुधा मिला करता था, क्योंकि उनका मकान मेरे घर से थोड़ी ही दूरी पर था । उन दिनों हिंदी की पुरानी रीडरों का परिवर्तन हो रहा था, और उनमें शिक्षाविभाग के आग्रह से संस्कृत शब्दों के बदले उर्दू या हिंदुस्तानी के शब्दों को स्थान दिया जा रहा था । एक दिन इसी भाषा के संबंध में मेरी-उनकी बात चीत हुई । उन्होंने बताया कि प्राथमिक पाठशालाओं के विद्यार्थियों को साधारण साहित्यिक भाषा सिखाना चाहिए, जिसमें पाठशाला छोड़ने पर वे अपने विचार सरल भाषा में स्पष्टतापूर्वक प्रकट कर सकें । रायबहादुर ने स्वयं अपनी सब हिंदी पुस्तकें इसी प्रकार की भाषा में लिखी हैं । कहीं कहीं तो वे ठेठ ग्रामीण शब्दों का उपयोग कर देते थे ।

एक बार रायपुर में हिंदी के प्रसिद्ध कवि और शतावधानी स्व० पं० अंबिकादत्त व्यास 'सुकवि' आए थे । उनके शतावधान की परीक्षा के लिए गणित आदि के प्रश्नों के साथ हिंदी कविता की समस्या भी दी गई थी जिसे रायबहादुर बाबू हीरालाल ने रचा था । वह समस्या यों थी—

"मुरझानी लता फिर से उलही"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

व्यास जी ने तुरंत ही पूर्ति करके एक सवैया सुनाया जो मुझे अभी तक याद है—

मुरली हरि की बन मांहि बजी, सब दौरि चलीं ब्रज की दुलही।
कवि अंबिकादत्त जू कौन कहे, उनके हिय जो कछु प्रीति लही॥
घर-बाहर भूलि गईं सिगरो, तजि गेह को कुंज की गैल गही।
तब भूमिहुँ कोमल होय गई, मुरझानी लता फिर से उलही॥"

इस पूर्ति पर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए।

डा० हीरालाल साहब की पदोन्नति बहुत जल्दी-जल्दी हुई। तीन-चार वर्ष एजेंसी-इंस्पेक्टर रह कर वे इंस्पेक्टर आफ् स्कूल्स बना दिए गए। उस समय वे मेरे अफ़सर थे, पर मेरे साथ तथा औरों के साथ भी इनका व्यवहार पूर्ववत् रहा।

१९०५-६ के लगभग मैं किसी काम से नागपुर गया। उन दिनों वहाँ प्लेग था, और रायबहादुर शहर के बाहर डेरों में रहते थे। मैंने उन्हें सूचना भेज दी थी; इसलिए रात को नौ बजे उन्होंने स्टेशन पर ताँगा भेज दिया और उनके यहाँ पहुंचने पर मैं एक अलग डेरे में, जहाँ सब प्रकार का सुभीता था, ठहराया गया। मैं रात को आराम से सोया। सूर्योदय के कुछ पहले मुझे कुछ जाड़ा लगा और इसी समय मेरे पास किसी ने आकर पूछा कि कैसी तबियत है? मैंने विनोद में आखें बंद किए ही उत्तर दे दिया कि ठंड के मारे मैं जीता ही जम गया हूँ। इसके बाद फिर मेरी आँख लग गई। जब मैं सात बजे सबेरे जगा तब मैंने एक परिचित सज्जन को अपने पास बैठा हुआ पाया। उन्होंने भी मुझसे पूछा कि कैसी तबियत है? मैंने कहा, 'ठीक है; क्यों?' उन्होने उत्तर दिया कि अभी दो घंटे पहले आपने कहला भेजा था कि आपको बहुत ही ठंढ लग रही है; इसलिए रायबहादुर साहब सबेरे यहां आए थे और आप को आराम से सोता देख चले गए। फिर उन्होंने आपको कंबल उढ़ाने के लिए और आपके पास बैठने के लिए मुझे भेजा। मैंने उठ कर देखा कि मेरी रज़ाई पर एक क़ीमती गरम कंबल पड़ा हुआ है। तब मुझे अपने विनोद पर खेद और रायबहादुर साहब की शिष्टता पर हर्ष हुआ।

रायबहादुर साहब से मेरा परिचय बहुत घनिष्ठता का था, क्योंकि मैं कुछ साहित्यिक कार्य करता रहता था। इससे उन्हें प्रसन्नता होती थी और मुझे उनसे मिलने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का अनेक बार संयोग आ जाता था। इसके सिवा उनके छोटे भाई स्व० बाबू गोकुल प्रसाद मेरे सहपाठी, और उनके पुत्र स्व० बाबू केदारनाथ एक समय मेरे शिष्य थे।

पिछले दिनों में तो मैं उनसे जबलपुर और कटनी में बहुत बार मिला। खेद है कि मैं उनसे उनकी अंतिम बीमारी के समय न मिल सका; क्योंकि मुझे कोई सूचना नहीं मिली। इनका देहांत अचानक हो गया और हम लोगों की यह अभिलाषा पूरी न हुई कि वे नागपुर-विश्वविद्यालय के वाइस-चांसलर होते।

स्वर्गीय रायबहादुर डा० हीरालाल जी के प्रति

[श्री आनंदि प्रसाद श्रीवास्तव]

हीरा द्युतिमय मध्यप्रांत के।
हिंदी के उद्भट विद्वान,
डाली तुमने मध्यप्रांत के
साहित्यिक जीवन में जान।
लहर उठा इतिहास-खोज की
दिखलाया नूतन संसार,
सदा रहेगा हिंदी-जग में
तुम से कृत नव प्रभा-प्रसार।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक राष्ट्रीय क्षति

[श्री जयचंद्र विद्यालंकार]

रायबहादुर डा० हीरालाल जी की अचानक मृत्यु से हमारे देश का एक रत्न खो गया और हमारी बड़ी राष्ट्रीय क्षति हो गई। मृत्यु के समय डा० हीरालाल की आयु ६७ बरस की थी, और मरने से पहले उन्होंने कोई लंबी बीमारी भी नहीं झेली। बड़ी आयु में बिना बीमारी का कष्ट झेले चल बसना सौभाग्य की बात होती है। डा० हीरालाल स्वयं इसमें भाग्यशाली रहे हों, पर उनका देश इसमें अभागा है, क्योंकि वे उसे अपने ज्ञान की विरासत से बंचित कर गये।

डा० हीरालाल से मेरा परिचय बहुत नया था। सन् १९३१ में मेरी "भारत-भूमि" की प्रस्तावना उन्होंने लिखी। उसी से हमारे परिचय का आरंभ हुआ। सन् १९३२ में प्रयाग में मैंने पहले पहल उस सौजन्य-मूर्त्ति के दर्शन पाये। तभी मैंने उन से प्रस्ताव किया कि जिस प्रकार महामहोपाध्याय पं० गौरीशंकर हीराचंद ओझा राजपूताना का इतिहास लिख रहे हैं, उसी प्रकार वे चेदि का इतिहास लिख डालें। 'चेदि' शब्द हमारे नव-शिक्षित पाठकों को खटकेगा, इस लिये यहां उसकी व्याख्या कर देना आवश्यक है।

रायबहादुर हीरालाल "सी० पी०" के रहने वाले थे। लेकिन "सी० पी०" और "यू० पी०" हमारी जनता के लिये निरर्थक शब्द हैं, और जिन रेखाओं से उन इलाकों की हद-बंदी हुई है वे भी अकस्मात् खिंची हुई अस्वाभाविक लकीरें हैं। हमारे इतिहास के अनुसार तथा हमारी जातियों और भाषाओं की स्थिति के अनुसार हमारे देश के जो स्वाभाविक परंपरागत विभाग हैं, उनका स्वरूप समझने और पहचानने का प्रयत्न मैं सन् १९२० से १९३० तक बराबर करता रहा, और अपने उस अध्ययन का परिणाम मैंने 'भारत-भूमि' में रक्खा। भारतवर्ष के स्वाभाविक प्रांतों को मैंने जातीय भूमियां कहा। रायबहादुर हीरालाल जी ने मेरी निश्चित की हुई जातीय भूमियों की सीमाओं और संज्ञाओं को केवल एक संशोधन के साथ स्वीकार किया और वह संशोधन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनकी अपनी भूमि के नाम का था। हीरालाल जी स्वयं जिस जातीय भूमि के थे उसमें मैंने बुँदेलखंड, बघेलखंड, और छत्तीसगढ़ को सम्मिलित किया, और उसे चेदि-कोशल नाम दिया था। उन्होंने यह सुझाया कि उसका नाम केवल चेदि होना चाहिए। संशोधन को मैंने स्वीकार कर लिया, और "भारतीय इतिहास की रूपरेखा" में मैंने उस भूमि का नाम चेदि ही रक्खा है।

चेदि की भूमि, जातियों, बोलियों और इतिहास का जैसा ज्ञान रायबहादुर हीरालाल को था, हमारे ज़माने में वैसा और किसी को नहीं है। उन्होंने अपनी उम्र उसी के अध्ययन में लगा दी थी। इसीलिए मैंने उनसे प्रार्थना की कि वे अपने ज्ञान को अपने पीछे आनेवालों के लिए भी छोड़ जायँ। मेरी प्रार्थना पर पहले तो उन्होंने कहा कि वे सब प्रकार के मेहनत के काम से निवृत्ति हो चुके हैं, पर सन् १९३३ में उन्होंने आख़िर वह प्रार्थना मान ली। उस संबंध में उन्होंने एक पिछली घटना भी बताई।

भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग ने चेदि-अभिलेखों के संपादन का काम रायबहादुर हीरालाल को सौंपा था। तब उन्होंने चेदि-इतिहास लिखने की पूरी तैयारी कर ली थी। उस ग्रंथ के लिये उन्हें १०) प्रति पृष्ठ के हिसाब से पारिश्रमिक देने को कहा गया। उन्हीं दिनों डा० स्टाइन कोनौ को खरोजी अभिलेखों के संपादन का काम सौंपा गया, और उन्हें एक गिनी प्रतिपृष्ठ परिश्रमिक देना तै हुआ था। हीरालाल जी ने कहा कि वे या तो एक गिनी प्रति पृष्ठ ही लेंगे, और नहीं तो उस ग्रंथ को मुफ़्त में प्रस्तुत कर देंगे। दूसरी दशा में केवल उनके एक सहकारी का ख़र्चा सरकार को देना होगा। सरकार इस काम के लिये ५०००) ख़र्च करने को तैयार थी; डायरेक्टर जनरल आफ़ आर्क्योलाजी को डर लगा कि कहीं हीरालाल जी के सहकारी का ख़र्च ५ हज़ार से अधिक न बढ़ जाय। इसलिए वह प्रस्ताव पड़ा ही रह गया। सन् १९३३ में डा० हीरालाल ने उस समय के टले हुये कार्य को कर डालने का इरादा किया। एक एम० ए० पास सज्जन को अपना सहकारी नियत कर वे ग्रंथ की सामग्री जुटाने लगे। लेकिन उन्हें जिस किस्म की सहायता की ज़रूरत थी वह उन्हें मिल नहीं सकी।

बड़ौदा की ओरियंटल कानफरेंस के बाद जनवरी १९३४ में हम लोग इकट्ठे उदयपुर की यात्रा को गए। वहां यह निश्चय हुआ कि मैं गुरुकुल के किसी अच्छे स्नातक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

को डा० हीरालाल के पास भेज दूं। अप्रैल तक मैंने आदमी ठीक किया, डा० हीरालाल तब शिमला चले गए थे। मैं भी मंसूरी में था। उन्होंने लिखा कि जुलाई के अंत तक वे कटनी लौटेंगे, तभी वे सज्जन वहां पहुँच जाँय। शुरू जुलाई में डाक्टर साहेब के प्रस्तावित सहकारी मेरे पास दिल्ली आकर उनके आदेश की राह देखने लगे। बड़ी बाट जोहने के बाद नागपुर से पत्र आया कि डा० हीरालाल अस्पताल में हैं। कुछ दिन बाद युनाइटेड प्रेस ने सूचना दी कि वे चल बसे!

और उनके साथ चेदि के इतिहास का परिपक्व ज्ञान भी जाता रहा!

स्वर्गीय श्रीमान् डा० हीरालाल जी के वियोग में

[श्री सुंदर लाल वर्मा, पिपरई (ग्वालियर)]

जातिजननि के परम प्रशंसित पूत दुलारे।
हैहय-क्षत्रिय-बंश जाति के उज्वल तारे॥
हाय शोक चल बसा प्रेममय सुहृद हमारा।
डाक्टर हीरालाल नाम था सब को प्यारा॥
जातिरतन लुट गया गया सब ही का प्यारा।
गई धर्म की मूर्ति जाति का गया सहारा॥
हा पंडित! हा मित्र! श्रेष्ठ हा! जाति दुलारे!
हैहय-क्षत्रिय-महासभा जिन काज सँवारे॥
करो कृपा जगदीश विनय मानों यह मेरी।
मृतक-आत्मा लहे स्वर्ग-सुख-शांति घनेरी॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल के विषय में मेरे संस्मरण

[रायबहादुर पं० लज्जाशंकर झा, रिटायर्ड आई० ई० एस०, काशी विश्वविद्यालय]

इस अंक के लेखकों में से बहुत कम ऐसे मिलेंगे जिनका संबंध स्वर्गवासी डा० हीरालाल से इतना पुराना रहा हो जितना कि मेरा रहा। परमेश्वर को अनेक धन्यवाद है, कि उसने कृपा कर ऐसे अमूल्य मनुष्यरत्न से बार बार मिलने का मौक़ा मुझे दिया और प्रायः ४७,४८ वर्ष तक उन से घनिष्ट संबंध रखने का अवकाश दिया। मनुष्य-स्वभाव में एक ऐसी विचित्रता है कि जिन पुरुषों के बारे में युवा-अवस्था में पूज्य बुद्धि रहती है, वेही बरसों के उपरांत अधिक अनुभवपूर्ण दृष्टि डालने पर उतना मान के योग्य नहीं जँचते। अनेक व्यक्तियों के बारे में समय के फेर से मेरी श्रद्धा कम हो गई, परंतु डा० हीरालाल साहब के बारे में मेरा प्रेम और भक्ति बराबर बढ़ती ही गई।

सन् १८८८ ई० में मुझे पहले-पहल डा० साहब को देखने का मौक़ा मिला, वे जबलपुर कालेज से सायंस में बी० ए० पास होकर निकले थे और शिक्षा-विभाग ने उन्हें सायंस के भ्रमणकारी शिक्षक बना कर प्रदेश के हिंदी ज़िलों के सदर मुक़ामों में अंग्रेज़ी स्कूल के शिक्षकों को साइंस की शिक्षा देने का काम सौंपा था। वे इसी पद पर सागर में आए, जहाँ के हाईस्कूल में मैं विद्यार्थी था और मेरे पिता वहां डिप्टी इंसपेक्टर मदारिस थे। मैं उनसे मिलने के योग्य नहीं था, परंतु पितासे मिलने वे बहुधा आते थे और इस कारण मेरा भी परिचय उनसे हो गया। आजकल के ज़माने में ऐसे किसी भी व्यक्ति का मिलना कठिन होगा जो यह कहने की हिम्मत करे कि साइंस का जानना आवश्यक नहीं है, क्योंकि उसके ज्ञान के बिना काम चल ही नहीं सकता। पर ज़माने की ख़ूबी थी कि जब सन् १८८७ ई० में शिक्षा-विभाग के अधिकारियों ने मध्य-प्रदेश में साइंस और ड्राइंग का प्रचार करना चाहा, तब जनता तथा शिक्षावर्ग के लोगों में घोर विरोध उत्पन्न हुआ। लोग कहते थे कि अंग्रेज़ क़ौम बड़ी धूर्त है। स्कूलों में रामायण, गुलिस्तां, बोस्तां आदि मान्य पुस्तकें तो पढ़ाने नहीं देती, करती क्या है? यह सिखलाना चाहती है कि हवा में दबाव है, पानी समतल रहता है, स्वर कंपायमान पदार्थों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

से पैदा होता है। इन ख़ुराफ़ात बातों के पढ़ाने से फ़ायदा ? कोई कहता था कि ड्राइंग पढ़ा कर बालकों के मन में ख़ुदाई का हवा पैदा करना चाहती है। श्रीयुत आनंदराव टालपड़े ड्राइंग मास्टर होकर एक साल पहले आए थे। उनका हर तरह विरोध, अपमान और तिरस्कार हुआ—यहां तक कि उन्हें पीटने तक की व्यवस्था की गई। पर कुछ सज्जनों ने मदद देकर उन्हें बचाया। जब हीरालाल साहब के आने की ख़बर हुई, तब फिर उत्तेजना बढ़ी। शिक्षकगण तथा जनता उनका विरोध करने को तैयार हुई। विचारे कालेज से निकले अनुभव रहित नवयुवक गाड़ियों में साइंस का सामान लिए हुए आए। उन दिनों रेलें थीं नहीं, सड़कें ख़राब थीं, कुछ यंत्र बिगड़ जाना स्वाभाविक था। समय पर यंत्र काम न देते और टीका करनेवालों की कमी न थी। परंतु हीरालाल साहब की सज्जनता तथा सहनशीलता ने विरोधियों का प्रत्यक्ष विरोध यद्यपि दबा दिया, तो भी विज्ञान सीखने की इच्छा बहुत कम शिक्षकों में देखने को आई। मेरा घर शालागृह के पास होने के कारण, तथा तमाशा देखने की लालच से, मैं भी साइंस क्लास में पीछे जा बैठा करता था। शिक्षकों को विज्ञान में रुचि आई कि नहीं, यह कहना कठिन है; पर मुझे साइंस से जो प्रेम हो गया वह अभी तक नहीं गया।

उस समय हमारे नायक कैसे दिखते थे उसका स्पष्ट चित्र अभी तक मेरे मन पर अंकित है—छः फ़ुट के क़रीब ऊंचे, गोल चेहरा, परंतु लंबी उठी हुई यूनानी ढंग की नाक, एकहरा सुगठित बदन, हर एक अंग समानुपात से बना हुआ, साँवला रंग, किश्तीनुमा कश्मीरी टोपी, लंबा अंगा, पाजामा जो न चूड़ीदार रहती, न औरेबी। उनके पास आते ही दर्शक के मन में भरोसा तथा सद्भाव पैदा होता था।

इस कार्य के समाप्त होते ही वे सन् १८८९ में मेरे पिता के स्थान पर डिप्टी इंसपेक्टर होकर आए और इस कारण दोनों परिवारों में विशेष प्रेम हो गया। सागर ज़िला उन दिनों प्राथमिक शिक्षा की उत्तमता के लिए प्रसिद्ध था और अधिकारीगण तक उनकी नियुक्ति पर आक्षेप करने लगे, कि इस नावाक़िफ़ से काम कैसे चलेगा। पर हमारे नायक ने इतनी मिहनत की और इतने उत्साह से काम किया कि किसी को शिकायत न रही। वे घर पर तीन चार महीने में २,३ दिन से अधिक न रहते थे। अधिकांश समय निरीक्षण में लगाते थे, जिसे वे बड़ी बारीकी तथा फुर्ती से करते थे। पांच छः साल ऐसा घोर परिश्रम किया कि अफ़सर लोग मुग्ध हो गए। फिर सरकार ने उन्हें मध्य प्रदेशों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की देशी रियासतों का इंसपेक्टर बना कर भेजा। सन् १९०० के लगभग वे एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर हुए और पेंशन लेने के पहिले कई साल डिप्टी कमिश्नर भी रहे। इन सब का विस्तारपूर्वक वर्णन करना इस लेख का उद्देश नहीं है। केवल यह बतलाना काफ़ी है कि वे मामूली घर के पले हुए थे और उन्होंने केवल ८०) पर नौकरी आरंभ की थी। न कोई उनका वसीला था, न कोई मददगार; पर १६००) माहवार पर वे कलेक्टरी तक पहुँच गए। उन्होंने केवल योग्यता और मिहनत के भरोसे ऊँचे से ऊँचा स्थान पाया। हिंदुस्तानियों की तक़दीर ओछी है, उन्नति के अनेक मार्ग रुके हैं (उनके सर्विसकाल में तो और बंधन थे), नहीं तो डा० हीरालाल को न जाने कितना ऊंचा स्थान मिलता। परंतु इतना तो निश्चय है कि मध्यप्रदेश के १३ हिंदी ज़िलों में जो मान इनको मिलता था, वह कदाचित ही किसी दूसरे सज्जन को मिलता रहा होगा। कहावत है कि 'जातपाँत पूछे नहिं कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।' हमारे नायक अपने गुणों के कारण सब के प्रियपात्र हुए; जातपाँत का भेद किसी ने न माना। मुझे अनेक अँग्रेज़ अफसरों के मुंह से हीरालाल साहब की तारीफ़ सुनने का मौक़ा मिला। वे लोग भी उनको आदर की दृष्टि से देखते थे।

तुलसीदास जी ने कहा है कि 'प्रभुता पाय काहि मद नाहीं' यह कथन हमारे चरित्र-नायक पर कभी घटित न हो सका। ईश्वर की कृपा से वे हर तरह बढ़े पर अपने पुराने निवासस्थान कटनीमुरवाड़ा से बड़ा प्रेम रखते थे और पेंशन लेने पर वहीं जा बसे। यही हाल उनके पुराने मित्रों के साथ रहा। वे उनसे भेदभाव कभी न रखते। उनसे पुराना व्यवहार रखते। डिप्टी कमिश्नर की बू उनमें कभी न आई। जनता के साथ उनका व्यवहार हमेशा उत्तम रहा।

दूसरा प्रबल गुण जो उनमें देखने में आया वह विद्याव्यसन का था। कालेज से निकलने पर वे साधारण ग्रैजुएट के समान ही थे। परंतु कुछ-कुछ अध्ययन वे अंत समय तक करते रहे। एथनोग्राफी, आर्क्योलाजी, हिंदी साहित्य, भिन्न भिन्न जातियों के आचार-विचार, गैज़ेटीयर आदि अनेक विषय थे जिन पर वार्तालाप करते समय उनकी ज्ञान-निधि का अंदाज लगता था। मुझे उनसे इन विषयों पर संभाषण करने में जो आनंद प्राप्त होता था, उसका वर्णन करना कठिन है। उस समय उनसे ऊटपटांग सवाल करने पर भी वे क्रोधित न होते। शांतिपूर्वक उत्तर देते। यद्यपि वे एक्स्ट्रा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

असिस्टैंट तथा डिप्टीकमिश्नर के आसनों पर बहुत समय तक रहे, तथापि उनका मन वैज्ञानिक विषयों पर विशेष लगता था। इसी कारण जब सरकार को खोज के लिए अफ़सर ढूँढ़ना पड़ता, तो अनायास इन्हीं पर निगाह पड़ती। मर्दुमशुमारी की रिपोर्ट लिखने, मध्यप्रदेश की भिन्न भिन्न जातियों की रीति-रिवाज या रहन-सहन की रिपोर्ट तैयार करने, आर्क्योलाजिकल सर्वे आदि कामों पर वे बरसों नियुक्त रहे और प्रत्येक काम को वे बड़े प्रेम तथा योग्यता से करते रहे। मामूली माल या फ़ौजदारी के काम में ऐसे विद्वान को डालना मानों उस्तरे का उपयोग तरकारी छीलने के काम में लाने के बराबर था। खेद है कि ऐसे विद्वान को शिक्षाखाते में उत्तम वेतन न मिल सका और उन्हें माल और फ़ौजदारी के कचरे में रहना पड़ा।

एक समय जब वह डिप्टीकमिश्नर प्रायः पक्के नियत हो गए थे, तब भेंट होने पर मैंने उनसे कहा कि आप को मुबारकबादी दूँ या दिलोजान से हमदर्दी बताऊँ। उन्होंने हँस कर पूछा कि हमदर्दी का कारण क्या है। मैंने उपरोक्त भाव कह सुनाए। कुछ सोच कर उन्होंने इधर-उधर देखा और जब किसी को निकट न देखा तब अपने पुराने मित्र के सामने अपने दिल का अरमान निकाला और निम्नलिखित कथा कही जिससे ऊँचे दर्जे के हिन्दुस्तानी अफ़सरों की कठिनाइयों का पता चलता है।

जिस ज़िले में वे डिप्टीकमिश्नर थे वहां एक अँग्रेज़ पुलिस का कप्तान था और उसको इजाज़त थी कि हर शनिश्चर की शाम को नागपुर जाय और सोमवार को लौट आए। वह वहां जा कर बड़े अफ़सरों को अपनी राम कहानी सुना आया करता था और वे लोग भी कप्तान साहेब की बातों में आ जाया करते थे। नतीजा यह हुआ कि कप्तान साहेब मातहत हो कर भी एक तरह से डिप्टीकमिश्नर की कार्रवाइयों के निरक्षीक बन गए थे। उस समय राजनैतिक आंदोलन प्रबल था और रायबहादुर हीरालाल साहब व्यर्थ की सख़्ती न करना चाहते थे।

उस ज़िले में एक रईस थे, जो उच्च आदर्श वाले और उदार थे। उन्हें सरकार ने ख़िताब भी दे रक्खी थी। वे तब तक राजनैतिक हलचल से दूर रहते थे। उनके यहाँ एक नामी सज्जन मेहमान होकर आए, जो पुलिस की निगाह में बड़े कुटिल आंदोलनकारी थे। मेहमान होने के कारण रईस महोदय ने उनकी खूब ख़ातिर की और उनके साथ कई जगह गए भी। पुलिस ने रिपोर्ट की और हीरालाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साहब ने उन रईस को बुला कर कैफ़ियत माँगी। रईस महोदय ने उत्तर दिया कि "आप हिंदू हैं, मेरी स्थिति समझ सकते हैं। यदि कोई दुश्मन भी मेहमान होकर आवे तो मैं क्या उसका तिरस्कार कर सकता हूँ? मतभेद होने से क्या कोई हिंदू अतिथि सत्कार में चूकेगा? रहा साथ जाने की शिकायत—सो यदि मेहमान आग्रह करे तो साथ जाने से मैं इन्कार कैसे कर सकता था?" हीरालाल साहब को उनकी बात ठीक जँची और उन्होंने पुलिस की रिपोर्ट को दाख़िल दफ़्तर कर दिया।

पर पुलिस का कप्तान नागपुर पहुँचा और वहाँ आग लगा दी कि ज़िलाधीश हिंदू है और वह हिंदू रईस पर सख़्ती नहीं करना चाहता। वहाँ से फ़ौरन कमिश्नर साहब को हुक्म हुआ कि जाकर ख़िताबधारी रईस की अक़्ल दुरुस्त करो। कमिश्नर बड़ा तेज़-तर्रार था। ज़िले में आया और हीरालाल साहब से बिना पूछ-ताँछ किए ही रईस महोदय को बुला कर उन्हें फटकार देनी शुरू की, और यह भी कह डाला कि तुम्हारा ख़िताब वापिस लिया जा सकता है। रईस महोदय ज़िन्दादिल थे, फटकार सुन कर आग बबूला हो गए और जेब से सनद, तमग़ा निकाल कर कमिश्नर साहब के सामने फेंक दिया और कहा कि ले लीजिए वापिस अपनी चपरास। यह कह कर रईस महोदय घर चले गए। कमिश्नर साहब उनकी उद्दंडतापर चकित हो गए, पर उन्हें अपना दोष न सूझा—सरकार को यही दिखाया गया कि ऐसे द्वेषी को ज़िलाधीश बचाते थे। इधर नतीजा यह हुआ कि वह रईस जो सरकार का बड़ा भक्त था, कमिश्नर साहब की नासमझी से विचलित हो गया और महात्मा गांधी का अनन्य भक्त हो गया। इस घटना को बीते बरसों हो गए, संभव है कि छोटी मोटी बातों में न्यूनाधिक कुछ हो गया हो। पर सार में यह वही है जैसा कि हीरालाल साहब के मुखसे मैंने सुना था। वे रईस ईश्वर की दया से अभी भी कुशल हैं; इसलिए मैंने उनका तथा कमिश्नर साहब का नाम, सन तथा ज़िले का नाम नहीं लिया।

क़रीब २४ साल की बात है कि उनका पुत्र, जो इंगलिस्तान गया था, थाइसिस से पीड़ित होकर लौटा और बिचारा कालग्रस्त हुआ। उसी समय उनकी एक लड़की हैज़े में जाती रही। अपना सब कुछ खोने पर भी इन उदार चित्त महानुभाव ने अपने छोटे भाई श्रीयुत गोकुलप्रसाद और उनके पुत्रों पर अपना पूरा प्रेम दिखाया। आठ दस साल हुए जब इनके भाई भी काल ग्रस्त हुए। तभी मैंने उन्हें विचलित होते देखा; नहीं तो

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनेक दुखों को बड़े धैर्य से उन्होंने सहा। श्रीयुत गोकुलप्रसाद के चार लड़कों को वे पुत्रववत् मानते रहे और आशा है कि ये अपने काका के यश को बनाए रक्खेंगे।

सन् १९२४ ई० में जब नागपुर यूनिवर्सिटी खुली तब हिंदी ज़िलों के प्रतिनिधि स्वरूप उन्हें सभी प्रमुख समितियों में स्थान मिला और विश्वविद्यालय का जो काम उनको दिया गया उसे वे प्रसन्नता पूर्वक करते रहे। वाइसचैंसलर होना उनके लिए कठिन न था। हम लोग सब चाहते थे कि किसी समय उन्हें उस आसन पर देखें। परन्तु हमारे चरित्र नायक बड़े संकोची थे, आगे बढ़ते नहीं थे। किसी प्रतिद्वंदी को खड़ा होते देख वे हट जाते थे। एक समय की बात है कि वर्नाक्यूलर डिपार्टमेंट का हेड चुनने का अवसर आया। इस डिपार्टमेंट को हिंदू, मरहठी आदि भाषाओं की देख रेख करनी पड़ती थी। इस स्थान के लिए रायबहादुर हीरालाल से बढ़ कर योग्य पुरुष कोई था नहीं और उनकी इच्छा भी थी कि यह काम उन्हें सौंपा जाय। पर जब कमेटी बैठी तब मैं न जा सका और किसी सज्जन ने मेरा नाम पेश कर दिया। बस फिर क्या था! हीरालाल साहब तुरंत हट गए और अपना नाम पेश न होने दिया। मुझे समाचार मिलने पर बड़ा दुख हुआ। मैंने हटना चाहा, पर वे राज़ी न हुए। मेरे चले आने पर दूसरों को उस स्थान पर जाने दिया, पर स्वतः वे इसके लिए आगे न आए। हर्ष की बात है कि नागपुर युनिवर्सिटी ने उन्हें डी० लिट०की डिगरी प्रदान की। इससे उसने उन को मान नही दिया वरन् स्वयं अपना मान बढ़ाया।

मध्यप्रदेश का गौरव है कि वहाँ हमारे चरित्र-नायक सरीखे आदर्श विद्वान पैदा हुए। धन्य है मुरवाड़ा-कटनी, जहाँ उनका जन्म हुआ और धन्य है हिंदी समाज जिसमें ऐसा मनुष्य रत्न हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सदैव सुख मिले। इति।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्व० डा० हीरालाल जी और 'बुंदेल-वैभव'

[श्री पंडित गौरीशंकर द्विवेदी 'शङ्कर', टीकमगढ़]

हैहय-क्षत्रिय-मित्र के संचालकों ने एक 'हीरालाल अंक' प्रकाशित करने की व्यवस्था करके प्रशंसनीय कार्य किया है। यह केवल उनका ही नहीं वरन् हिंदी-भाषा-भाषी और हिन्दूमात्र के लिए आदर और अभिमान की एक वस्तु होगी।

स्व० डाक्टर साहब के जीवन चरित्र या उनके पुरातत्व संबंधी कार्यों के लेख तो इसी अंक में पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे। इस लेख में उनकी सहृदयता का एक उदाहरण दिया जाता है। मैंने 'बुंदेल-वैभव*' अथवा बुंदेल खंड के हिंदी कवियों का सांगोपांग इतिहास'पर जब आप को 'दो शब्द' लिख देने के लिए अनुरोध किया तो आपने किन विनम्र शब्दों में अपने वे 'दो शब्द' भेजे थे! देखिए आप अपने ३।४।३४ के पत्र में किस प्रकार लिखते हैं—

कटनी

३। ४। ३४

सुकवि द्विवेदी जी

आप का २७। ३। ३४ का पत्र तथा उसके पश्चात् याददाश्तस्वरुप एक कार्ड मिला। आप की इच्छानुसार 'दो शब्द' भेजता हूँ जो होना तो चाहिए था केवल 'उत्तम संग्रह', परंतु वे फूल कर प्रायः दो पन्ने के बराबर हो गए हैं।

यद्यपि उस 'दो शब्द' का यहाँ उद्धृत करना आवश्यक नहीं था किंतु उन में हीरे का रूपक जिस सुंदरता से डाक्टर साहब ने बर्णन किया है वह देखते ही बनता है। किसे पता था कि उनका यह 'हीरे' का रूपक कुछ ही समय पश्चात् उनके ही

---

* 'बुंदेल-वैभव' का प्रथम भाग 'बुंदेल-वैभव ग्रंथमाला' टीकमगढ़, से २॥) में मिल सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'हीरांक' में दिया जायगा। अतएव इच्छा न होते हुए भी उसे यहाँ देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर सका। वह इस प्रकार है:—

> मुझ से इस पुस्तक पर दो शब्द लिख देने का आग्रह किया गया है, परंतु जिस ग्रंथ की भूमिका में रचयिता ने स्वयं उसका नख से शिख तक दर्शन करा दिया हो और जिसको रायबहादुर रावराजा श्याम बिहारी मिश्र के समान सुलेखक ने अपनी प्राक्कथनरूपी शानदार साड़ी पहना दी हो, उसके लिए इधर उधर के दो शब्दों की क्या आवश्यकता है? बात समझ में नहीं आई। मैं क्षण-भर असमंजस में पड़ गया, परंतु ज्यों ही स्मरण हुआ कि केशव-लीला-भूमि में यह बुंदेल-वैभवरूपी नायिका भूमि-नायक बुंदेला-वीर से परिणत होने वाली है, त्योंही भ्रम-निवारण हो गया। ऐसे अवसरों में अक्षत डालने वाले चाहने पड़ते हैं, इस कार्य के लिए मैं सहर्ष उद्यत हूँ और हृदय से चाहता हूँ कि कार्य सफल व मंगलप्रद हो।
>
> ग्रंथ के पढ़ने से आँखें खुल जाती हैं कि इसी एक अंचल में हिंदी साहित्य का कितना बड़ा भंडार भरा पड़ा है, जिसके शोध की कितनी बड़ी आवश्यकता है। बुंदेल खंड के नरेश प्राचीन काल से कविता-रसिक और कवि-भक्त रहे हैं। वे कविता की सेवा में सर्वस्व अर्पण करने के लिए उद्यत रहते थे। छत्रसाल ने तो शिवा जी द्वारा सम्मानित भूषण कवि को उनसे अधिक संपत्ति प्रदान करने की सामर्थ्य न देख उस कवि-शिरोमणि की पालकी कंधे पर रख अपनी गुण-ग्राहकता का परिचय दिया था, तो क्या उन्हीं के वंशज इस बृद्धिगत साहित्यिक काल में प्राचीन कवियों की उत्तम रचनाओं के उद्धार की चेष्टा न करेंगे? जिस प्रकार प्राणनाथ जी ने पत्थरों के रत्नों को प्राप्त करने का मार्ग बतला दिया था जिसके अनुसरण करने से अनेक देदीप्यमान हीरे हाथ लगे थे, उसी प्रकार पंडित गौरीशंकर के इंगित करने पर यदि यथोचित उद्योग किया जाय तो अनेक साहित्यिक हीरे मिलने की बड़ी संभावना है।

स्वर्गीय डाक्टर साहब ने हिंदी की जो चिरस्मरणीय सेवा की है वह कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। सरकारी कार्यों के अतिरिक्त वे अपना सब ही समय इस ओर दे देते थे, जीवन पर्यंत उन्होंने अपने समय का सदुपयोग किया है।

डा० साहब बड़ी ही लगन के व्यक्ति थे, जो कार्य उन्होंने उठाया उसे पूरा करके ही छोड़ा। जिस पद का उन्होंने ग्रहण किया उस पर तत्परता से कार्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। भारतवर्ष में तो आप का मान है ही किंतु विदेशों तक के विद्वानों ने अनेक बार आप की कृतियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और पुरस्कार आदि देकर आप का यथोचित सम्मान किया है। 'बुंदेल-वैभव' के लिए भी आप बहुत कुछ करने वाले थे, किंतु आप की अकस्मात मृत्यु हो जाने के कारण मन की बात मन ही में रह गई। मेरी आंतरिक अभिलाषा है कि उनकी पवित्र आत्मा को शांति और परम पद प्राप्त हो। स्व० डाक्टर साहब हम सब ही के लिए एक ऐसा आदर्श छोड़ गए हैं जिससे हम सब बहुत कुछ लाभ उठा सकते हैं। उनके बतलाए हुए मार्ग पर चलने ही से हम बहुत कुछ कार्य कर सकते हैं।

डाक्टर हीरालाल

[शिवदयाल जायसवाल "शिव कवि", प्रयाग]

थे स्वजाति के प्राण, त्राण थे निर्धन जन के,
दीन हीन के बंधु, सुदृढ़ थे धुरी धरम के,
मातृभूमि के रत्न, मुकुट कटनी नगरी के,
साथ छांड़ि चलि बस्यो स्वर्ग अब पास हरी के,
कुटिल काल की कुटिलता, कुटिल दिखाई चाल, हा !
हैहय-कुल के मुकुट-मणि छीनी हीरालाल, हा !

कर्णधार थे रायबहादुर राय वर्ग-के,
जाति-जगत करि दुखी बने मेहमान स्वर्ग के,
कुसमय में चलि बसे घाव करि गयो खर्ग के,
राय रह्यो संसार, वर्ग अरु जे अवर्ग के,
मातृभूमि का लाल वह सब का हीरालाल, हा !
गयो कहाँ ढूंढौ कहाँ कहाँ लै गयो काल, हा !

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

देश का हीरा

[ठाकुर लक्ष्मण सिंह भानुवंशी, भूतपूर्व संपादक, हैहय-क्षत्रिय-मित्र]

पहले-पहल रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी के दर्शन का सौभाग्य मुझे स्वजातीय हैहय-क्षत्रिय महासभा के अधिवेशन पर कानपूर में मिला। डरते डरते उनकी सेवा में उपस्थित हुआ, परंतु उनके सद्व्यवहार और मधुरवाणी के प्रभाव से भय काफ़ूर हो गया। जैसी कीर्ति सुनने में आई थी उससे भी बढ़ कर पाया। उनकी वह मधुरवाणी मुझे आजन्म स्मरण रहेगी। इसके बाद मुझे उनके दर्शन का सौभाग्य कई बार हुआ। जबलपुर की महासभा के अवसर पर सौभाग्य से मुझे वहीं ठहरने का स्थान मिल गया जहाँ श्री० काशीप्रसाद जी जायसवाल और रायबहादुर साहब दोनों धुरंधर विद्वान् ठहरे थे। वहां पर रायबहादुर जी ने मध्यप्रदेश के अनेक शिलालेख व ताम्रलेख, जिन्हें वे जंगलों में प्राप्त किए थे, हम लोगों को दिखलाए, जिनमें हैहयवंशी कलचुरी राजाओं के महान दान व यश का वर्णन था। मिर्ज़ापूर महासभा के अवसर पर उनके साथ मुझे चुनारगढ़ देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

कलकत्ता महासभा के अवसर पर महासभा का प्रधान पद आपने ही सुशोभित किया था। संयोग से इसबार भी मुझे उसी कोठी में ठहरने का स्थान मिला जिसमें आप ठहरे थे और तीन दिन आप के सहवास का गौरव प्राप्त हुआ। इस बार मेरे साथ मेरा चिरंजीव बालक वीरेंद्र भी था। आपने उससे प्रेमपूर्वक उसका नाम व जाति पूछा और उसकी तोतली वाणी में वीलेंद सिंह, छतिरी, सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। उस समय उसकी अवस्था ५-६ वर्ष की थी। फिर तो बराबर वह उसके साथ विनोद किया करते थे।

अंतिम बार उनके दर्शन का सौभाग्य डाक्टर गोरखप्रसाद जी के यहाँ आई बारात में हुआ। वर्ग-बंधन तोड़ कर राय वर्ग और जायसवाल वर्ग का यह पहला संबंध हुआ, जिसमें रायबहादुर जी के भतीजे का संबंध गोरखप्रसाद जी की पुत्री के साथ हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बारात में किसी प्रकार का आडंबर न था और महासभा के नियमानुसार बहुत थोड़े से बाराती आए थे। इस बारात में मैंने एक विशेषता यह देखी कि वर-पक्ष में भी नम्रता पराकाष्टा को पहुँच गई थी।

इस बारात में भी चि० वीरेंद्र मेरे साथ गया था। रायबहादुर जी उसे देखते ही पास बिठा कर बातें करने लगे। मुझे तो स्वप्न में भी ध्यान न था कि आप उसे पहचानेंगे, परंतु इस बार भी वही कलकत्ता वाला प्रश्न सुन कर मेरे आश्चर्य और आनंद का ठिकाना न रहा। यह उनके वात्सल्य-प्रेम का एक जीता-जागता नमूना है, वरन् कहाँ मैं और कहां वे।

यों तो कई बार मुझे उनसे पत्र-व्यवहार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, परंतु एक बार जब मैंने उनके प्रिय कनिष्ठ भ्राता श्री गोकुल प्रसाद जी असिस्टैंट इनकमटैक्स-कमिश्नर के स्वर्गवास पर शोक-पत्र लिखा था, आपने ऐसा करुणामय पत्र लिखा कि पढ़ने सी जी भर आया। अंतिम वाक्य था 'हाय! मेरा लक्ष्मण खो गया!' वास्तव में दोनों भाइयों में राम-लक्ष्मण के समान ही प्रेम था, छोटे भाई बिना बड़े की आज्ञा लिए कोई भी महत्वपूर्ण काम आरंभ न करते थे। इसी से तो भरी जवानी में पत्नी, पुत्र, और कन्या के स्वर्गवास होने पर आप छोटे भाई के संतानों से ही संतुष्ट रहे, और इष्ट मित्रों के बहुत आग्रह करने पर भी दूसरा विवाह न किए। हम लोगों को चाहिए कि उनके जीवन-चरित्र से शिक्षा लें। रायबहादुर जी का जीवन आदर्श जीवन था। उच्च पदासीन होते हुए अहंकार नाममात्र को न रखना, क्या यह साधारण व्यक्ति का काम है! अखंड ब्रह्मचर्य-पालन और भ्रातृ-प्रेम का ऐसा उदाहरण कहां मिल सकता है! हाय!

इक हीरा* लंदन गयो, इक हीरा सुरधाम।
भारत-माता रो रही, दोनों ही के नाम।

---

* कोहेनूर

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ संस्मरण

[श्री बलदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०, दीवान, रायगढ़ स्टेट]

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल साहब सी० पी० के एक अमूल्य रत्न थे । उनके उठ जाने से यहाँ की विद्वमंडली में एक ऐसा बड़ा अभाव हो गया है जिसकी पूर्ति के लिए निकट भविष्य में कोई लक्षण नहीं दिखाई देते । उनके हटने से तो हम सब उनके कृपापात्रों और मित्रों का एक प्रकार से सर्वस्व ही छिन गया है । यहाँ के प्रायः सब विद्वान् उन की योग्यता के क़ायल थे । जिस समय नागपुर विश्वविद्यालय में उन्हें डाक्टर की पदवी प्रदान करने का प्रश्न विचारार्थ उपस्थित था उस समय उस संस्था की एक सभा के सभापति महोदय ने भरी सभा में उनकी प्रशंसा करते हुए कहा था कि रायबहादुर साहब की योग्यता और उनकी पांडित्यपूर्ण कृतियों का उल्लेख करने की कोई आवश्यकता नहीं । डाक्टर की उपाधि के लिए केवल उनका नाम ले देना ही पर्याप्त है । इसी प्रकार एक बार मध्यप्रांत के एक बड़े उच्च पदाधिकारी अँग्रेज़ महोदय ने कहा था कि संसार में ऐसी कोई भी "लॉजी" नहीं है जो रायबहादुर साहब को भली भाँति न विदित हो । उन बेचारों ने पहिले तो अक्योलॉजी, फ़िलॉलॉजी, एथनॉलॉजी सरीखे दस पाँच नाम गिनाने की चेष्टा की थी, परंतु जब वे पूरी सूची बताने में असमर्थ हुए तब संक्षेप में उपर्युक्त वाक्य कह मारा था ।

रायबहादुर साहब जितने बड़े विद्यादिग्गज थे उतने ही विनम्र, साधु-प्रकृति के और विनोद-प्रिय भी थे । एक बार 'अमर-कंटकी लंका' के संबंध में वे मुझ से बात-चीत कर रहे थे । उस सिलसिले में उन्होंने कहा "देखिए, जब राम-वन-गमन के समय सड़ी नदी तक का वर्णन नहीं छूटने पाया है तब कृष्णा, कावेरी, तुंगभद्रा आदि कैसे छूट गईं ? क्या इससे यह नहीं जान पड़ता कि ये नदियां उन्हें रास्ते में न मिली होंगी ?" मैंने पूछा " 'सड़ी नदी' कौनसी है ?" उन्होंने कहा "अजी-वही 'सई' नदी, जिसको पार करके तमसा पार करने की बात कही गई है !" उनकी छोटी छोटी बातों में भी इसी प्रकार काव्य का मज़ा आ जाता था ।

अपने सामान्य पत्रों में भी वे अपनी ऐसी प्रकृति का स्वच्छंदता पूर्वक परिचय दिया करते थे । बड़ौदा के प्राच्य महासम्मेलन (ओरियंटल कानफ़रेंस) के बाद आप

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की इच्छा हुई कि अखिल भारतीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन मध्यप्रांत के रायपुर ज़िले में कराया जाय। उन्होंने मुझसे सम्मति मांगी। मैंने स्वभावतः रायगढ़ को प्राधान्य दिया। आप को यह बात पसंद आ गई और उत्तर में आपने अग्रलिखित पंक्तियाँ लिख भेजी—"बड़ौदा महाराज ने बट के उदर में बैठ कर अखिल भारत की विद्वत सभा करवाई तो क्या असल रायगढ़ में बैठ कर हमारे राजा साहब हिंदी का स्वागत न करेंगे! आपने पत्रों में देखा ही होगा कि हाल ही में महाराजा बड़ौदा ने गुजराती के बदले अपने राज्य में हिंदी का प्रचार कर दिया है; महाराजा ओड़छा ने कवि-सम्मेलन किया है, तो हिंदी के ग्रंथकर्त्ता, महाकोशल के नरेश, अपने यहां हिंदी का सम्मेलन न करेंगे! आप तो लिखना-पढ़ना शुरू ही कर दीजिए। चाहे सम्मेलन रायगढ़ या रायपुर में हो। दोनों एक राशि हैं। किसी जगह सम्मति-राशि जुड़ ही जायगी।" बड़ौदा अथवा बड़ोदरा को बट का उदर मानना और रा अक्षर वाले रायपुर तथा रायगढ़ को एक राशि बता कर वहां सम्मति राशि का आयोजन कराना उन्हीं के समान प्रतिभासंपन्न कविहृदय का काम था।

जब वे रियासतों में स्कूल इंस्पेक्टर थे उस समय ये एक बार रायगढ़ आए। यहां गढ़उमरिया की देहाती पाठशाला में उड़िया पढ़ाई जाती थी। रायबहादुर साहब को न तो उड़िया भाषा आती थी न उड़िया लिपि। इन स्कूलों के निरीक्षण में संबलपुर के डिप्टी इंस्पेक्टर उनकी सहायता कर देते थे। उस दिन संयोगवश वे उपस्थित न हो सके। संध्या समय रायबहादुर साहब को यह हाल मालूम हुआ। दूसरे दिन प्रातः काल उड़िया विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी थी। रायबहादुर साहब ने रात ही को वर्णमाला की एक पुस्तक मँगाई और रात ही को चौथी कक्षा के एक पाठ की हिंदी नक़ल किसी उड़िया भाषा-भाषी से पूछ कर लिख ली। इसके बाद उसी रात को उन्होंने वह भाषा और वह लिपि काम चलाऊ ढंग पर सीख डाली, तथा दूसरे दिन लड़कों की परीक्षा ही नहीं ली, बल्कि उनकी पठन-पाठन संबंधी अशुद्धियाँ भी पकड़ीं। स्कूल के उड़िया भाषी मेंबर उनकी इस योग्यता को देख कर दंग रह गए।

रायबहादुर साहब के जीवन से इसी प्रकार की न जाने कितनी घटनाएं संबद्ध हैं। अब उनका स्मरण करके हम लोग केवल आँसू बहाने के अतिरिक्त और क्या कर सकते हैं!

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की स्मृति

[आयुर्वेदपंचानन पंडित जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, वैद्यभिषङ्मणि, प्रयाग]

संसार में ऐसे मनुष्यों की संख्या अधिक है जो अपनी पैत्रिक संपत्ति, प्रभाव या प्रसिद्धि के कारण बढ़ते अथवा नाम पैदा करते हैं। किंतु ऐसे मनुष्य थोड़े होते हैं, जो अपने परिश्रम, उद्योग और योग्यता के कारण क्रमशः नीचे से चढ़ते हुए ऊपर तक पहुँचते हैं। मध्यप्रदेश के पुरुषरत्न रायबहादुर बाबू हीरालाल जी ऐसे ही पुरुष सिंहों में थे। आप आरंभ में शिक्षा विभाग के डिप्टी इंसपेक्टर हुए, फिर बढ़ते हुए ज़िलाधीश—डिप्टी कमिश्नर हो गए। आप अपनी शिक्षा और शासनपटुता की योग्यता दिखा कर ही चुप न हुए बल्कि प्राचीन ऐतिहासिक खोज में आपने वह काम किया जो मध्य-प्रदेश में अब तक किसी ने नहीं किया था।

यह स्वाभाविक है कि मनुष्य अपनी उन्नति की अभिलाषा रक्खे, उसके लिए उद्योग करे और उस में सफलता प्राप्त कर अपनी उद्देश्य सिद्धि कर ले; धन, पद-गौरव, मानमर्यादा, और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करे। परंतु ऐसे पुरुषरत्न विरले ही मिलेंगे जिन में यह उच्च सदाशयता भी विद्यमान हो कि हम अकेले ही उन्नत न हों बल्कि अपने साथ बहुतों की उन्नत कर सकें। अपनी योग्यता, अधिकार और सुविधा का लाभ देकर बहुतों को ऊंचे उठावें। अपने साहचर्य या संसर्ग में आनेवालों को भी उनकी योग्यता और रुचि के अनुसार उत्साहित कर उन्हें ऊंचा उठने और उठाने का अवसर दें। उनकी उन्नति से प्रसन्न हों और उनकी सफलता से अपनी भी कृत-कृत्यता समझें। कहना होगा कि ऐसे महानुभाव हज़ारों-लाखों में विरले होते हैं और रायबहादुर बाबू हीरालाल उन्ही में एक थे।

रायबहादुर बाबू हीरालाल से मेरा भी किंचित संपर्क रह चुका है और वह मधुर स्मृति अब तक भी मुझे उनकी गुणग्राहकता और उदारता का स्मरण करा कर उनके प्रति कृतज्ञता से मेरा हृदय भर देती है। सन् १८९८ का समय था। रायपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नार्मल स्कूल में आप पारितोषिक वितरण के उत्सव में पधारे थे। उस समय आप उस डिवीज़न के स्कूलों के इंसपेक्टर थे। मैंने भी जूनियर श्रेणी के अध्यापकों की परीक्षा उत्तीर्ण की थी। सब से पहले मेरा सर्टिफ़िकेट आपके हाथों में दिया गया, क्योंकि मध्यप्रदेश में मेरा सर्वप्रथम नंबर आया था। आपने मेरी पीठ ठोंकी और विद्यार्थियों का उत्साह बढ़ाने के लिए मेरा ज़िक्र करते हुए एक समयोचित वक्तृता दी। बड़ी प्रसन्नता से आपने सर्टिफ़िकेट में "फ़र्स्ट डिवीज़न फ़र्स्ट इन सी० पी०" लिख कर अपना हस्ताक्षर कर दिया। यही नहीं, ५०) रुपयों की पुस्तकों का प्रथम पुरस्कार देते हुए भविष्य में अधिक परिश्रम कर नाम प्राप्त करने और उन्नति करने का प्रोत्साहन दिया। उस समय आपके स्वागत में विद्यार्थियों ने एक गाना गाया था। चलते समय उस गान को आपने फिर सुनना चाहा और सुन कर हेडमास्टर साहब से उसके बनाने वाले का परिचय पूछा। जब उस कविता के बनाने वाले के रूप में मैं फिर उनके सामने उपस्थित किया गया तब उन्होंने मेरा हाथ पकड़ कर हाथ मिलाया और पीठ ठोंकी।

आपको कविता से प्रेम था। कभी कभी आप मुझे बुलवाते और नई बनाई हुई कविता सुनाने को कहते, कविता करने का प्रोत्साहन देते और उसमें कुछ संशोधन भी सुझाते। हम लोगों का एक "टीचर्स ऐसोसियेशन" था, उसकी बातें पूछते और उस में कैसे विषयों की चर्चा होनी चाहिए यह भी बतलाते। अपनी अफ़-सरी का अभिमान तो आप में कभी देखा ही नहीं गया। होली के समय हम लोगों से आपने खुल कर होली खेली। सीनियर टीचर्स परीक्षा में भी जब मेरा नंबर मध्यप्रदेश में प्रथम आया तब आपने मुझे छाती से लगा लिया और बिदाई के भाषण में छत्तीस-गढ़ी अध्यापकों को बढ़ावा देते हुए बहुत सी बातें कहीं। अपने प्रांत से बाहर भी जाकर नाम करने का प्रोत्साहन दिया। मुझे अपनी लिखने की शक्ति बढ़ाते रहने का आदेश दिया।

कुछ दिनों के बाद मैं मध्यप्रदेश से चला आया और एक पत्र के संपादकीय विभाग में काम करने लगा। आप तब तक शासन विभाग में पहुँच गए। किंतु फिर भी मेरे संबंध में मालूम पड़ता है आप जानकारी रखते थे। क्योंकि जिस समय मैं श्री-वेंकटेश्वर-समाचार में संपादक था उन दिनों आप बंबई घूमने गए और यह देख कर मैं दंग रह गया कि आप ढूंढ़ते हुए मिलने के लिए मेरे घर पहुँचे! एक अध्यापक से

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संपादक बनने पर आपने बधाई दी और काम देखकर प्रसन्नता प्रकट की। अभी पिछले समय जब मैं हिंदी साहित्य-सम्मेलन का प्रधान मंत्री था, तब आप "मंगलाप्रसाद-पारितोषिक" के इतिहास विषय के निर्णायक बनाए गए थे। किंतु नेत्रों के कष्ट के कारण आप उस कार्य को स्वीकार नहीं कर रहे थे। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उन से इस प्रकार का अनुरोध करनेवाला वही जगन्नाथ है जिस पर मध्यप्रदेश में आप कृपा करते थे, तब तो आपने बड़ी प्रसन्नता प्रकट करते हुए पत्र लिखा कि अब तो मैं किसी प्रकार अनुरोध अस्वीकार कर ही नहीं सकता। बीमार और नेत्रों का कष्ट रहने पर भी आपने दूसरों से पढ़वा कर पुस्तकें सुनीं और अपनी सम्मति भेज दी।

प्राचीन ऐतिहासिक खोज के काम से आपने अपनी कमाल की योग्यता तो प्रकट ही की; किंतु उससे आपने मध्यप्रदेश का सिर बहुत ऊंचा किया। मध्यप्रदेश के इतिहास की बहुत सी छिपी हुई बातें प्रकट हुईं। इस काम में भी आपने मध्य प्रदेश के कितने ही होनहार लेखकों को उत्साहित किया। मध्यप्रदेश के ज़िले का पृथक-पृथक इतिहास आप लिखा रहे थे। कुछ काम प्रसिद्ध भी हो चुका है। यदि आप के बाद भी इस काम की पूर्ति हो सकी तो बड़ी ही प्रसन्नता और गौरव की बात होगी। रायबहादुर बाबू हीरालाल अब नहीं हैं। किंतु आपका उच्चाभिलाष, उदारतापूर्ण व्यवहार, प्रेमपूर्ण परस्पर मिलने का ढंग, योग्यों की योग्यता बढ़ाने और उनकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की महानुभावता, परिश्रमशीलता, और समता के भाव अब भी लोगों को उपदेश देकर ऊँचे उठा सकते हैं। उन्हें अपनी और अपनी सहयोगियों की उन्नित के लिए प्रेरित कर सकते हैं। आदर्श पुरुषों के आदर्श को ग्रहण करने से ही देश में आदर्श की स्थापना हो सकती है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी के कुछ संस्मरण

[सरदार माधव विनायक किबे, इंदौर]

स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी से मेरा परिचय प्रथम उनके विद्य-प्रेम और सत्यान्वेषण-प्रेम के कारण हुआ। रावण की लंका नर्मदा के उद्गम के पास बिंध्याचल में है, ऐसा अनुमान मैंने उपस्थित किया। इसका आपने हार्दिक स्वागत किया और अनेक भौगोलिक तथा ऐतिहासिक उदाहरणों से इसकी पुष्टि की। इतना ही नहीं; सरकार की ओर से छपी हुई पुस्तकों में भी आपने उसका समर्थन किया। आपने मेरे पास पुच्छ-युक्त मनुष्यों के छायाचित्र भी भेज दिए। मेरे सिद्धांत के समर्थन करने के कारण कई विद्वानों का उपहास भी आप को सहन करना पड़ा। परंतु आपने अपना आग्रह नहीं छोड़ा और आख़ीर तक उसकी पुष्टि में अनेक प्रमाण देते रहे। आपके दूसरों के अल्पकार्य की भी सराहना करने के स्वभाव के दो-एक अन्य उदाहरण भी मुझे याद हैं। सन् १९३० में ओरियंटल कॉनफ़रेंस का जो अधिवेशन पटना में हुआ उसके आप अध्यक्ष थे। श्री भगवद्गीता के एक श्लोक पर मेरा जो अनुमान था उसे विद्वानों के सामने मैं रक्खूँ या नहीं, इस चिंता में मैं पड़ा था। मेरे अत्यंत सन्मान्य मित्र श्री काशीप्रसाद जी जायसवाल की अनुमति से मैंने अपना लेख हीरालाल जी को दिखलाया। उसको कॉनफ़रेंस के सामने उपस्थित करने के लिए उन्होंने मुझे वाध्य किया। इसी प्रकार जब उपरोक्त परिषद का आगामी अधिवेशन बड़ोदा में हुआ तब मैंने द्वारका के स्थल-निर्णय पर एक लेख लिख कर श्रीमान् के पास भेजा। इस लेख के संबंध में आपने मुझे लिखा कि द्वारका में इस लेख के कारण आपको बड़ी सहायता मिली। "परगुण परिमाणु पर्वतीकृत्य, नित्यं निजहृदि विकसति संत संतः"—यही आप का स्वभाव-विशेष था।

श्रीमान् से मेरी प्रथम भेंट पटना में हुई। उसके बाद जब मैं एक समय इलाहाबाद से स्वस्थान को जा रहा था तब कटनी स्टेशन पर भेंट हुई थी। उस समय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिन की गाड़ी से मैं आने वाला था और यही ख़बर मैंने श्रीमान् को दी थी, लेकिन कारणवश मैं ऐसा नहीं कर सका और जो गाड़ी रात को १०॥ बजे कटनी पहुँचती है उससे आया। इसकी ख़बर मैंने श्रीमान् को नहीं दी थी। परंतु जब मैं कटनी के स्टेशन पर पहुँचा तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि श्रीमान् मुझसे मिलने के लिए स्टेशन पर पधारे हैं। यह सौजन्य देख कर मैं आप के ऋण में डूब गया। श्रीमान् जब बड़ौदा पधारे थे तब कटनी वापस जाते समय मेरे स्थान पर आकर मेरा तुच्छ स्वागत स्वीकार करना कबूल किया था और उदारतापूर्वक पधारे भी थे, लेकिन घर से एक ज़रूरी तार आजाने से श्रीमान् तुरंत घर चले गए और मुझे उनके साथ का सौभाग्य नहीं प्राप्त होसका। इसे मैं बड़ा दुर्भाग्य समझता हूँ। नागपुर में युनिवर्सिटी के कोर्ट की कुछ बैठकों में मैं भी उपस्थित था; वहां भी आप से दो एक बार मुलाक़ात हुई थी।

श्रीमान् के विख्यात और प्रकांड विद्वत्ता के बारे में मेरा कुछ लिखना अनुचित होगा। यह तो विद्वानों का ही काम है।

स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी, डी० लिट०

[रायबहादुर अवधवासी लाला सीताराम]

फ्रांस के सुप्रसिद्ध विद्वान सिलवान लेवी ने एक बार कहा था कि साहित्य-सेवियों का एक गोत्र होता है और वह गोत्र सरस्वती-गोत्र है। सच्चा साहित्यिक जब दूसरे साहित्यिक से मिलता है तो वह इस बात को भूल जाता है कि हम लोगों में पहले की जान पहचान नहीं है।

हमारे मित्र स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी उन अमूल्य रत्नों में हैं जो पंडितों में अग्रगण्य थे और जो अपनी नीति-निपुणता और सुप्रबंध-कुशलता से केवल ऊंचे पदों ही पर नहीं पहुँचे, परंतु जिन्होंने अपनी विद्वत्ता का भी सिक्का जमा दिया। हम उनकी कीर्ति ही सुना करते थे। एक बार वे प्रयागराज आए और बाबू मसुरिया-दीन जायसवाल के साथ हमारे मकान पर पहुँचे। "संबंधमाहभाषण पूर्वमाहू" की कहावत तुरंत ही चरितार्थ हो गई। पहली ही भेंट में ऐसा प्रतीत हुआ मानों बरसों की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जान-पहचान थी। दूसरे दिन अपने मकान से मिले हुए 'हैहय-आश्रम' में उनका सारगर्भित व्याख्यान सुना। व्याख्यान क्या था उनके ऐतिहासिक ज्ञान की तरंगिणी लहरें मार रही थी।

हम अनेक साहित्यसेवियों और ऐतिहासिकों से मिले हैं परंतु हमको आज तक ऐसा कोई न मिला जो प्रत्येक विषय में कोई न कोई बात निकाल दे। चित्रकूट के विषय में उन्होंने छूटते ही कह दिया कि चित्र का अर्थ अशोक भी है; कदाचित् उस पहाड़ी पर अशोक वृक्षों की बहुतायत से इसका नाम चित्रकूट पड़ गया है। प्रयागराज में हम उन्हें गंगा जी के उत्तर तट पर हंसतीर्थ दिखाने गए थे। रास्ते में समुद्रगुप्त के भग्नावशेष दुर्ग दिखाया गया। उस समय अवकाश न था परंतु आप संध्या समय फिर वहीं पहुँचे और दुर्ग को ध्यान से देखकर उस पर एक लेख लिख डाला।

हम बहुत दिनों से रामायण-संबंधी तीर्थस्थानों की जाँच कर रहे थे। पंचवटी के विषय में उन्होंने एक विस्तृत लेख हमारे पास भेजा जिसमें उन्होंने यह सिद्ध किया कि पंचवटी गोदावरी के मुहाने से कुछ दूर निज़ाम राज्य में है और यह भी कहा कि हमने उस स्थान पर जाकर जाँच की है। यह प्रांत मद्रास हाते में है और अगर उनकी जाँच मान ली जाय तो बंबई प्रांत में नासिक के सामने जो पंचवटी मानी जाती है उसका 'दावा रद्द' हुआ जाता है।

यह डाक्टर हीरालाल जी की विद्वता और सूझबूझ के नमूने हैं। मनुष्य विज्ञान के विषय में उनके लेखों के पढ़ने से हमारे अनेक संदेह दूर हो गए। बड़े शोक की बात है कि उनकी अकाल मृत्यु से ऐतिहासिक खोज करनेवालों की बड़ी हानि हो गई। उनके जीवन की विशेष बातें अन्य लेखों से विदित हो जाँयगी। हम उनके विषय में और क्या लिख सकते हैं; केवल अपने मृच्छकटिक भाषा की एक घनाक्षरी को कुछ समयानुकूल बदल कर इस लेख को समाप्त करेंगे।

दीन काज कल्पवृक्ष सुवन झुके से नित्य,
सज्जन के हेत सगे बंधु के समान थे।
सभ्यता के दर्पण, चरित्र के कसौटी सम,
शील के तरंगन के सागर महान थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कीन्ही ही भलाई चित काहू को दुखायो नाहि,
सरल उदार गुण मनि के निधान थे।
पुरातत्व ज्ञान इतिहास के परम विज्ञ,
रतनन में हीरालाल हीरा से प्रधान थे॥

———

ख्याति-भीरु इतिहासवारिधि रायबहादुर डाक्टर हीरालाल

[डा० हरदत्त शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी०]

'सरस्वती की उपासना में किसी प्रकार की बाधा नहीं पड़नी चाहिए—क्या कहें हमको तो घर के झंझटों ने ऐसा घेरा है कि पढ़ने को समय ही नहीं मिलता। रही शास्त्रीय गवेषणा की बात, यह तो वही कर सकता है जिसे संसार के कामों से फ़ुर्सत हो, किसी प्रकार का विघ्न न हो। जो रोटी कमाने की चिंता रही और उसके लिए धंधा रोज़गार करना पड़ा, तो बताइए सरस्वती की सेवा क्योंकर हो।'

जब कभी विद्या-व्यसन का प्रश्न हमारे देशवासियों के सामने उठता है, उस समय वे इसी प्रकार के बहाने द्वारा अपनी अकर्मण्यता का समाधान किया करते हैं। औरों की बात जाने दीजिए; यहाँ वे लोग भी जिनकी प्राणयात्रा अध्ययनाध्यापन पर ही निर्भर है, ऐसे ही बहाने करते हैं और ३ या ४ घंटे पढ़ा कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझते हैं। किन्तु शास्त्रचर्चा तथा ज्ञान की ओर जिसकी सच्ची लगन होती है, उसे किसी प्रकार के विघ्न अपने ध्येय की ओर अग्रसर होने में रुकावट नहीं डाल सकते। वह चाहे जिस काम में लगा हो, भोजन-व्यवस्था के लिए उसे चाहे कोई भी धंधा करना पड़े, तो भी वह शास्त्रविनोद के लिए समय निकाल ही लेता है। इसी प्रकार के विद्याव्यसनी हमारे रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी थे।

कलचुरि राजवंश पर आप सर्वोपरि प्रमाण माने जाते थे। हैहयवंशी क्षत्रियों की एक शाखा का नाम कलचुरि है। इस राजवंश की पुराने काल में त्रिपुरा (जबलपुर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में स्थापना हुई। यद्यपि इस वंश का उद्भवकाल २४८ ई० के लगभग माना जाता है, तथापि इतिहास-गगन में इसका उदय सन् ८५० ई० के लगभग राजा कोक्कलदेव के समय में हुआ। १०२० ई० के आस पास राजा गांगेयदेव के काल में इस वंश का मध्याह्न था। सन् १२४१ ई० में यह राजपूतवंश अस्त को प्राप्त हुआ। इस महत्वपूर्ण राजवंश को अज्ञान के अंधकार से निकाल कर ज्ञान के प्रकाश में रखने का श्रेय राय-बहादुर साहब को है। इसको तथा ऐसी अनेक ऐतिहासिक गवेषणाओं की साक्षी २५ वर्ष तक की एपिग्रैफ़िया इंडिका की पुरानी फ़ाइलें हैं।

हिंदी भाषा से आप का बहुत ही घनिष्ठ संबंध था। आपने अनुसंधान द्वारा हिंदी की मातृभाषा को खोज निकाला जिसका स्थान प्राकृत तथा आधुनिक हिंदी के मध्यभाग में है। इस काल के (ई० ९०० से १४०० तक) साहित्य पर आपने बहुत-कुछ प्रकाश डाला है। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के सभापति पद पर स्थित रह कर हिंदी-साहित्य को जो उन्नति आपने प्रदान की है उससे नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका के पाठक पूर्णतया परिचित हैं। इतना होते हुए भी आप अत्यंत सौम्य तथा ख्याति-भीरु थे।

यों तो रायबहादुर साहब के नाम तथा विद्वत्ता से मैं बहुत काल से परिचित था किंतु आपके दर्शन का प्रथम सौभाग्य मुझे पटने की ओरियंटल कानफ़रेंस १९३० ई० में प्राप्त हुआ। आप कानफ़रेंस के सभापति थे। श्यामवर्ण, लंबा क़द, भारी शरीर, हँसमुख, शिशु जैसे सरल, साफ़ा बांधे हुए आपको देख कर यह गुमान भी न होता था कि आप विद्या के समुद्र हैं। इतने लोगों के जमाव में रायबहादुर साहब कुछ संकुचित से भी प्रतीत होते थे। किंतु जिस समय आपने अपनी वक्तृता प्रारंभ की तो लोगों को आपकी ठोस विद्वता का पता चला। इस भाषण में रायबहादुर साहब ने इतिहास, भाषा तथा साहित्य के क्षेत्र में भूतपूर्व उन्नति पर एक विवेचनात्मक दृष्टिपात ही नहीं किया, किंतु गवेषणा के नये नये प्रश्नों की ओर संकेत भी किया है जिनका अध्ययन भावी नवयुवकों का कर्तव्य है। आप से बातचीत करने में एक नवीन उत्साह का संचार होता था।

आपसे दुबारा मिलने का सौभाग्य मुझे बड़ोदे की ओरियंटल कानफ़रेंस १९३३ में हुआ। दोनों बार आप मुझसे बड़े प्रेम से मिले। इस बार बहुत देर तक साहित्य-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चर्चा रही। मुझे यह बड़ा आश्चर्य होता था कि जिस विषय को मैंने छेड़ा उसी पर रायबहादुर साहब ने अपने सरल ढंग पर कुछ न कुछ नवीन प्रकाश डाला।

नागपुर विश्वविद्यालय ने आप को १९३३ में डी० लिट० की मान-पदवी देकर अपना ही मान बढ़ाया। खेद है आप इतने शीघ्र ही इस संसार को त्याग कर चल बसे। आप की मृत्यु से भारतीय इतिहास शास्त्र की जो हानि हुई है उसका पूरा करना यदि असंभव नहीं तो अत्यंत कठिन अवश्य है। किंतु यद्यपि आप का नश्वर देह अब इस लोक में नहीं है तो भी आप की ग्रंथों में आप का यशःशरीर सदा के लिए अमर है। जब कभी भारतीय इतिहासज्ञों का प्रसंग उठेगा तब डाक्टर हीरालाल का नाम बड़े सम्मान तथा बड़ी श्रद्धा से लिया जायगा।

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल डी० लिट०

[रायबहादुर पंडया बैजनाथ, काशी*]

इस लेख के लेखक को डाक्टर हीरालाल की मित्रता का सौभाग्य छोटेपन ही से हुआ था। सन् १८८१ ई० में हम दोनों ने एक ही साथ इंगलिश मिडिल स्कूल की परीक्षा दी, उन्होंने कटनी से, और मैंने नरसिंहपुर ज़िले की तहसील गाडर वाडा से। दोनों एक साथ ही पास होकर कई बार एक साथ ही एक कमरे में रहे। सन् १८८८ में एक साथ ही दोनों बी० ए० पास हुए और एक ही दिन एक ही कालेज में नौकर होकर फिर इकट्ठे रहे। वे शिक्षा-विभाग से बढ़े और मैं महकमें माल से बढ़ा और दोनों एक ही समय एक्स्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर (यहाँ के डिप्टी-कलेक्टर) पद पर नियत हुए। इस प्रकार इस लेखक को उनकी मित्रता का लाभ और सौभाग्य बहुत काल तक

*इस लेख के साथ वाले पत्र में आप ने लिखा था "मेरी मित्रता उनसे आजीवन ही नहीं, संभव है कि वह किसी पूर्व जन्म की ही मित्रता का तार चला आया हो।"—सं०।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रहा और उनके प्रति उसके हृदय में सदैव प्रेम और भक्ति के भाव बने रहे। इसलिए इस लेख के लिखने का प्रसंग पाकर उसे अति आनंद और उपकृत भाव प्राप्त होते हैं।

डाक्टर हीरालाल के सारे कुटुंब का स्वभाव बड़ा सरल, शांतिप्रिय, मानसूचक और सत्यपरायण रहा। इनके पिता ईश्वरदास को भी मैंने कई बार देखा। इनके भाई स्वर्गवासी गोकुलप्रसाद असिस्टैंट कमिश्नर इनकमटैक्स थे। सभी सरल स्वभाव के थे। डाक्टर हीरालाल की पत्नी का देहांत बहुत वर्ष पूर्व हो चुका था पर डाक्टर साहब के ब्रह्मचर्य को देख कर उनके मित्रों को आश्चर्य होता था। अपने एकमात्र यौवनप्राप्त पुत्र के देहांत होने पर इन्होंने उस दुःख को ऐसा सहा कि उसका प्रभाव बाहर झलकने न पाया। अपने व्यक्तिगत जीवन में भी ये सदैव न्यायप्रिय, पक्षपातरहित और उपकार करने वाले रहे। विद्याप्रेम छोटेपन से ही बहुत था। बी० ए० पास होने पर एम० ए० की अंग्रेज़ी की पुस्तकें घर में पढ़ डालीं और हिंदी साहित्य का भी तभी से गाढ़ अध्ययन आरंभ किया।

१९०१ की जनसंख्या होने पर वे सहायक सेंसस सुपरटेंडेंट नियत किए गए और इस काम को कई वर्षों तक करते रहे। उसी कार्य के संबंध में उन्हें सारे प्रांत की ऐंथ्रोपॉलोजी अर्थात् मनुष्यजातिशास्त्र का अध्ययन करना पड़ा; जिसका परिणाम यह हुआ कि इनकी सहायता से बना अथवा विशेष भाग में इनका लिखा ग्रंथ चार भागों में मध्यप्रांत-सरकार द्वारा छापा गया। उस विषय में इन्हें इतना ज्ञान हो गया कि कई विश्वविद्यालयों में वे इस विषय के परीक्षक कई वर्षों तक होते रहे। इन्हें सारे मध्यप्रांत के शिलालेखों और ताम्रपत्रों का तथा पुरातत्त्व विषयों का भी अध्ययन करना पड़ा। इस कारण इन विषयों का भी उन्हें पूर्ण ज्ञान हो गया। मध्यप्रांत के शिलालेखों पर लिखी इनकी पुस्तक सरकार द्वारा प्रकाशित हुई है। वैसी पुस्तक और किसी प्रांत की देखने में नहीं आई। लार्ड कर्ज़न की आज्ञा के अनुसार हर एक ज़िले के गैज़ेटियरों का बनना निश्चित हुआ था। मध्यप्रांत में वह भार इन्हीं के ऊपर पड़ा और इन्होंने उसको बड़ी योग्यता से पूर्ण किया।

जब १९२१ में नागपुर में साइंस कांग्रेस हुई तो मध्यप्रांत की सरकार ने उसका सारा भार इन्हीं के ऊपर डाला था। इसी प्रकार जब संस्कृत और हिंदी ग्रंथों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की खोज करने का निश्चय हुआ तो वह कार्य भी सरकार ने इन्हीं के ऊपर डाला। इन्होंने उसे बड़ी योग्यता से किया। उसी खोज के परिणाम में कारंजाजैन पुस्तकालय का महत्व प्रगट हुआ जहां बहुत पुरानी हिंदी के आदि रूप में लिखे ग्रंथ भी पाए गए। उस पुस्तकालय की आज पुराने सटीक जैनग्रंथ प्रकट हो रहे हैं। यह इन्हीं की प्रेरणा और उत्साह देने का फल जान पड़ता है।

मध्यप्रांत की सरकार की श्रद्धा इनमें बहुत अधिक थी। इस कारण जब कोई विशेष कार्य ऐसी शोध का आन पड़ता तो वह सरकार इनकी मंत्रणा अवश्य लेती थी और इनके पेंशन लेने के पश्चात् भी लेती रही।

इतने महत्व को पाकर भी ये सदैव निरभिमान और परहितरत रहे। "परोपकारायसतांविभूतिः" यह कथन इनको लागू होता था। इनका जीवन तो आदर्श था ही पर ये अपने कुल का भी आदर्श बना गए। एक अंग्रेजी कवि ने सत्य कहा है। बड़े व्यक्तियों की जीवनियों से हमें भी अपना जीवन सुन्दर और दिव्य बनाने का प्रोत्साहन मिलता है। उनका मार्ग हम लोगों के लिए भी अनुकरणीय बन जाता है।

——

रा० ब० डा० हीरालाल जी के पत्रों से कुछ अंश

[पं० लोचन प्रसाद पांडेय, एम० आर० ए० एस०]

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल पत्र-व्यवहार में कभी शिथिलता आने नहीं दिया करते थे। पत्रों के उत्तर वे जल्दी से जल्दी दिया करते थे। वैसा ही कोई कारण उपस्थित हो जाय तभी उन्हें पत्रोत्तर देने में सप्ताह, दो सप्ताह रुकना पड़ता था—अन्यथा वे चिट्ठियों के पाते ही जवाब लिख भेजते थे।

सन् १९११ से सन् १९३४ के जुलाई मास तक उनका और मेरा पत्रव्यवहार निरन्तर चलता रहा है। कभी कभी मैं पद्यों में भी कुछ लिख भेजता था तो वे भी पद्यबध उत्तर भेजा करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(१)

ताः २२-५-३४ को मैंने उनके किंचित मौनावलंबन को लक्ष्य करके एक तुकबंदी लिखी थी। जो उन्हें शिमला में मिली थी।

पत्रों के पाते ही उत्तर देने वाले पंडित-राज।
जीवन की संध्या में ऐसे उदासीन बन बैठे आज॥
नहीं उलहना अथवा चुटकी, विश्व प्रेम के संयोगी।
बने रहो ऐ मौजी, खोजी* मौन-व्रत-धारी योगी॥

यह पद्य मेरे ताः २४-५-३४ के पत्र के साथ उनके 'कटनी' के पते पर भेजा गया था। मेरा पत्र ताः १७-६-३४ को शिमला में उन्हें मिला। शिमला पोस्ट आफिस वालों की कृपा कहनी चाहिये कि वहां पहुँचने के बाद १७ दिनों तक मेरा पत्र पोस्ट आफिस वालों के पास पड़ा रहा। इस पर रायबहादुर साहब ने लिखा थाः—

I have just received your letter of 24th May, which as you will see from the cover enclosed took 17 days in Simla to find me out although during this period I was receiving 4 or 5 letters every day!.....So these are the ways of Indian post offices with our quondam Deputy Commissioner of Chanda as Director General of Post and Telegraphs†

हिन्दी तुकबन्दी पर आपका वक्तव्य सुनिएः—

.....Your complaint, therefore, is justified though I wish with all my heart to be a मौनव्रतधारी योगी especially on the

---

*इन नामों से रा० ब० साहब 'हितकारणी' में कभी २ लेख लिखा करते थे—ले०।

† अर्थात्, मुझे आपका २४ मई का पत्र अभी मिला है। उस लिफाफे से जो साथ में भेजते हैं आपको विदित होगा कि शिमला में मुझे ढूंढ पाने में इस पत्र को १७ दिन लग गये। मज़ा यह कि इन दिनों मेरे पास चार पांच पत्र प्रति दिन मिला करते थे! यह है भारतीय डाकखानों की करतूत, जब हमारे भूतपूर्व चंदा के डिप्टी कमिश्नर पोस्ट और टेलिग्राफ़ विभाग के डायरेक्टर जनरल हैं। —सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

heights of the Himalayas—a most suitable place for such a vrata*

यही पत्र रायबहादुर डाक्टर हीरालाल साहब का मेरे निकट अंतिम पत्र है।

(२)

सन् १९१६ के दिसंबर में दमोह में प्रथम वार हम लोग उनके अतिथि हुए थे। उनके स्वागत विधान, सरल व्यवहार एवं आतिथ्य से आप्यायित होना पड़ा था। घर आकर मैंने उन्हें एक पत्र लिखा जिसमें नीचे की पंक्तियां भी थीं।

धनी मानी राज्य-शासक आप प्रभुतावान।
मैं अकिंचन ग्रामवासी एक अपढ़ किसान॥
किंतु मेरे हेतु भी यों दिव्य आदर मान !
पूज्य हो पंडित प्रवर इस देश के अभिमान॥

इस पर आपने मेरे पद्य के शब्दों में ही यह उत्तर लिख भेजा था:—

पाय 'अकिंचन' कंचनहि सत्य भयो 'धनवान'।
संगति 'ग्रामनिवासितें' क्यों न बढ़े मम 'मान'।
'अपढ़' नीति पढ़के पुनः 'शासक' भयो सुजान।
को 'किसान' की सान सों होय न प्रभुतावान॥

Therefore†

तव असीस मैं सीस धर गहत सहित अभिमान।
चहत देश में बहुत इति, बाढ़त जाहि 'किसान'॥
लोचन कोशल देश के रोचन कुशल कवीश।
राजिव लोचन कृपातें राजहु सहस बरीस॥

---

*अर्थात्, आपकी शिकायत, इसलिए वाजिब है, यद्यपि मेरी हार्दिक इच्छा यही है मैं "मौनव्रतधारी योगी" बन जाऊँ, विशेष कर हिमालय की ऊँची चोटियों पर, जो ऐसे व्रत के लिये नितांत योग्य है। —सं०

† इसलिए—

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Excuse me for my venturing a doggerel but that is not my fault because*

एक घरी आधी घरी आधीहू में आध ।
कीन्हें संगति कविन की उपजत कविता-ब्याध ॥

इस पर यह सूचना देने पर कि 'ब्याध' के स्थान पर 'साध' शब्द क्यों न रख दिया जाय। आपने बड़े विनोद पूर्ण तथा युक्ति युक्त शब्दों में लिखा था:—

As regards your substitution of साध for ब्याध I would point out that the former exhibits an emulative spirit but when I wrote I wanted to communicate that poets are contagious and infect to those who happen to associate with them. The person affected is therefore helpless and has per force to follow the example of the contagion-giver†

(३)

एक बार सन् १९१७ के जनवरी महीने में मैं ने प्रिय भाई मुरलीधर और मुकुटधर विरचित 'पूजा-फूल' नामक कविता संग्रह उनकी सेवा में भेजा था। उसकी प्राप्ति सूचना में आपने लिखा था:—

Let me first congratulate your brothers, who have presented me with a beautiful bouquet of flowers, which

---

* छंद बनाने की धृष्टता करने के लिए मुझे क्षमा कीजिएगा, परंतु यह तो मेरा अपराध नहीं है, क्योंकि—

† आप "व्याध" के बदले जो 'साध' रखना चाहते हैं उसके बारे में मुझे कहना है कि साध से स्पर्धा (हौसला) का भाव टपकता है परंतु जब मैंने 'ब्याध' लिखा तब मैं यह जताना चाहता था कि कवि गण [छूत के रोगों की तरह] स्पर्श संचारी होते हैं और जिनका उनसे संपर्क हुआ उन्हें छूत लग ही जाती है। छूत ग्रसित व्यक्ति इस लिए लाचार हो जाता है और विवश होकर छूत लगाने वाले के उदाहरण का अनुचर बनना पड़ता है।— सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

must have been presented prior to this to the God whose names they bear and I can easily imagin as to what that Murlidhar must have done when the 'पूजा-फूल' were presented to him*. That sylvan deity was very fond of flowers of the picture that presents itself to me is

शुचि सुगन्धमय 'फूल' जो कवियन किय गलहार ।
मुरलीधर सो मुकुटधर कीन्हों निज श्रृङ्गार ॥

And अर्थांतरे these 'Phulas' (flowers) are really a श्रृंगार to the authors Murlidhar and Mukut Dhar and they have made them so†

पाठकों को इन उद्धरणों से ज्ञात हो सकता है कि एक बहुधन्धी प्रकांड-पंडित और जिलधीश में कैसी सरलता, सुहृदयता और सुहृदता के पवित्र भाव ओतप्रोत भरे हुए थे और NO TIME की शिकायत का नितांत अभाव था ।

---

* संग्रह का समर्पण रसेश्वर रासेश्वर को किया गया था । ले०

† पहले मुझे अपने भाइयों को बधाई देने दीजिए, जिन्होंने 'फूलों' का सुंदर गुच्छ मुझे प्रदान किया है । इनके पहले वह गुच्छ उस देवता को अर्पण किया गया होगा जिसके नाम पर उनका नाम पड़ा है और मैं आसानी से इस बात की कल्पना कर सकता हूँ कि उस मुरलीधर ने क्या किया होगा जब "पूजा फूल" की भेंट उसे चढ़ाई गई होगी [संग्रह का समर्पण रसेश्वर रासेश्वरको किया गया था—ले०] उस अन्य देवता को फूल बड़े प्रिय थे और जो चित्र मेरे सम्मुख उपस्थित होता है वह यह है—

शुचि सुगंधमय 'फूल जो, कवियन किय गलहार ।
मुरलीधर सो मुकुटधर, कीन्हों निज श्रृंगार ।

और अर्थांतरे, ये फूल वस्तुतः लेखकों—मुरलीधर और मुकुटधर—के श्रृंगार हैं । और इन लोगों ने उसे ऐसा बनाया है । —सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जातीय सेवाएँ

[श्री हजारी लाल जायसवाल, मंत्री, हैहय-क्षत्रिय महासभा]

विद्वद्वर स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी साहब का हृदय जातीय प्रेम से ओतप्रोत था। जातीय कार्य में आप अपना बहुमूल्य समय देने को हर समय प्रस्तुत रहते थे।

महासभा के द्वितीय अधिवेशन के अवसर पर सन् १९२४ ई० में आप स्थायी परिषद के सदस्य चुने गए। इसके पूर्व ही से आप जाति के इतिहास के खोज में संलग्न थे। स्थायी परिषद के सदस्य बनने के पश्चात् जाति जगत को आपके विद्वत्ता तथा जातीय प्रेम का पता लगा। महासभा के अधिवेशन में सर्व प्रथम आप कानपुर महासभा में सम्मिलित हुए। प्रयाग में जो समिति सन् १९२४ ई० में जाति का इतिहास निर्माण करने के लिए बनी थी उसमें आप भी सदस्य चुने गए थे। आपने जाति का इतिहास निर्माण करने में अथक परिश्रम किया। यह खोज इतनी ठोस थी कि स्वजाति बंधुओं और अन्य जाति के धुरंधर विद्वानों ने भी इस खोज का हृदय से आदर किया।

आप के जातीय प्रेम को देख कर सी० पी० प्रांत की जनता ने जबलपुर महासभा के स्वागत कारिणी समिति का आप को स्वागताध्यक्ष चुना था। स्वागताध्यक्ष के पद से आपने अपने भाषण में जनता को अनेकों उपदेशामृत पान कराए। महासभा की सभी जटिल समस्यायें आप क्षण मात्र में हल कर देते थे। इसके पश्चात् आप की जातीय सेवाओं के उपलक्ष में जनता ने आप को अ० भा० हैहय-क्षत्रिय महासभा, कलकत्ता का सभापति निर्वाचित किया। इस अवसर पर भी सभापति के भाषण में आपने जाति के उन्नति के लिए अनेकों मार्ग बताए।

आप भागलपुर महासभा में भी सम्मिलित हुए। महासभा के प्रस्ताओं का आप अक्षरशः पालन करते थे। वर्ग बंधन की संकुचित प्रथा को मिटाने वालों में रायबहादुर महोदय प्रमुख व्यक्ति थे। इस बंधन से जाति को मुक्त करने के विचार से ही राय वर्ग के रत्न होते हुए भी आपने अपने भतीजे श्री० वीरभानु जी राय का शुभ विवाह

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रीमान डाक्टर गोरख प्रसाद जी की कन्या से किया। डाक्टर साहब जायसवाल वर्ग के रत्न हैं। इस शुभ विवाह के अवसर पर भी रायबहादुर साहब ने महासभा के प्रस्तावों का पालन अक्षरशः किया। बरात बिल्कुल सादगी से आई। बराती भी २५ से अधिक नहीं थे। दहेज भी नहीं लिया। यदि रायबहादुर महोदय की तरह धनी और उच्च पदाधिकारी कोई दूसरा व्यक्ति होता और उसका लड़का बी० ए०, एल-एल० बी० होता तो शायद हज़ारों रुपये दहेज में वसूल करता। आपने दूसरा संबंध भी जायसवाल वर्ग में ही स्थिर किया है*।

अपने वसीयतनामे में भी आपने जाति के हित और उन्नति का ध्यान रक्खा है। अन्य दानों के साथ ही आपने दस हजार रुपया जबलपुर रावर्टसन कालेज को इसलिए दिया है कि इस रुपए के सूद से जाति के किसी ग्रेजुएट विद्यार्थी को छात्रवृत्ति मिलती रहे। इस छात्रवृत्ति के समितियों में एक जातीय सज्जन भी सदैव रहेंगे। इसके अतिरिक्त रायबहादुर साहब एक हज़ार रुपए अखिल भारतवर्षीय हैहय-क्षत्रिय महासभा को भी दान दिया है।

इस प्रकार रायबहादुर साहब सदैव जाति के हित का ध्यान रखते थे। उपरोक्त दानों से पता लगता है कि उन्हें जाति में शिक्षा के प्रचार का बहुत ध्यान था।

उपरोक्त बातों के अतिरिक्त रायबहादुर महोदय के अनेकों कार्य ऐसे है जिनका किसी को पता तक नहीं है। क्योंकि वे अपने जीवन काल में जाति के हित कामना का ध्यान हर समय रखते थे। उदाहरणतः वे कई स्वजाति के विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देते थे, जिसका किसी को पता तक नहीं था।

रायबहादुर महोदय ने अपने दानों द्वारा धनिकों के लिए एक आदर्श उपस्थित कर दिया है। वस्तुतः जो जो कार्य जाति के उन्नति के लिए रायबहादुर साहब ने किए वे सभी विचारवान जाति बंधुओं के लिए आदर्श रूप हैं।

*रायबहादुर साहब के चतुर्थ भतीजे रामेश्वर सिंह जी राय बी० एस-सी० का विवाह जो इस समय बनारस विश्वविद्यालय में इंजीनियरिंग कालिज में अध्ययन कर रहे हैं। श्री हजारीलाल जायसवाल की पुत्री से होना निश्चय हुआ है।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रद्धांजलि

[श्री तुलसीराम कटकवार, गुरारी (सी० पी०)]

संबंधी होने के कारण रायबहादुर साहब की सेवा में जाने और उनके घर ठहरने का सुअवसर मुझे कई बार प्राप्त हुआ है। अंतिम बार मैं उनके यूरोप-यात्रा से लौट आने पर कटनी में उनसे मिला था। यात्रा-संबंधी अन्य रोचक घटनाओं के साथ उन्होंने यह भी बतलाया कि एक दिन मध्य प्रांत के भूतपूर्व गवर्नर सर आरथर नेलसन ने उनको लंडन में अपने घर पर आमंत्रित कर किस हार्दिक रीति से स्वागत किया था।

इतने में संयोगवश उनका नौकर 'बंशी' चाय लाया। रायबहादुर स्वयं मुझे चाय परसने लगे। मैंने कहा भी कि आप क्यों तकलीफ करते हैं। आप मेरे पूज्य हैं। मुझसे आप आयु और पद में बड़े हैं। फिर अस्वस्थ होने पर भी आप क्यों कष्ट उठाते हैं। मैंने चाय का बरतन उनके हाथ से छीनना भी चाहा, पर वे न माने; कहने लगे जानते नहीं हो, गृहपति को ही अपने हाथ से चाय पिलानी चाहिए। मेरा जब लंडन में नेलसन साहब के घर निमंत्रण था तो उन्होंने अपने हाथ से मुझे चाय परसी थी?

आपका अतिथि सत्कार वस्तुतः अद्वितीय था।

अंतिम बीमारी के समय रायबहादुर साहब के बंबई जाने की सूचना जब मुझे मिली तब मैं बंबई के लिए प्रस्थान कर ही रहा था कि डाक्टर चंद्रभानु राय का हृदय विदारक तार मिला।

शोक, मुझ अभागे को अंतिम दर्शन भी प्राप्त न हो सके।

———

१ से १० फर्मा तक अजंता आर्ट प्रेस में छपा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर बाबू हीरालाल तथा खोज

[श्री० ब्रजरत्न दास, बी० ए०, एल एल० बी०, बनारस]

प्रायः बारह वर्ष हुए जब मुझे पहिले-पहिल बाबू हीरालाल जी के नाम से परिचय मिला था और वह परिचय नागरी-प्रचारिणी सभा द्वारा की जाने वाली हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज के कारण हुआ था। यह खोज प्रांतीय सरकार की आर्थिक सहायता से सन् १८९९ ई० में आरंभ हुई थी और अब तक जारी है। इस कार्य के लिए अवैतनिक निरीक्षक नियत होते रहे तथा वैतनिक एजेंट नगर, ग्राम आदि में घूम-घूम कर हस्तलिखित प्रतियों को खोजते तथा उनका नोट लेते थे। इन्हीं नोटों के आधार पर निरीक्षक-गण रिपोर्ट तैयार करते थे।

प्रथम नौ वर्ष की पाँच वार्षिक तथा एक त्रैवार्षिक रिपोर्ट बाबू श्यामसुंदर दास साहब ने लिखी थीं। इसके अनंतर सन् १९०९ ई० से बारह वर्ष तक राय-बहादुर पं० श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० निरीक्षक रहे और उनके बाद पं० शुकदेव बिहारी जी मिश्र दो वर्ष तक। उनके पद त्याग देने पर बाबू श्यामसुंदरदास जी को यह भार पुनः लेना पड़ा और उन्होंने इस कार्य में मुझसे सहायता लेने का निश्चय किया। उस समय बहुत से नोट पड़े हुए थे। बाबू साहब के कथना-नुसार मैंने कार्य आरंभ कर दिया था, पर रायबहादुर बाबू हीरालाल जी से इस कार्य-भार को लेने के लिए सभा लिखा पढ़ी कर रही थी। अंत में उनके स्वीकार कर लेने पर वह कार्य उन्हें सौंपा गया। इन्होंने शीघ्र ही पुरानी पड़ी हुई फ़ाइलों को ठीक कर एजेंटों की सहायता से दो त्रैवार्षिक रिपोर्ट तैयार कर सभा में भेज दीं। इसी समय से रायबहादुर बाबू हीरालाल जी से मेरा परिचय है।

बाबू हीरालाल जी द्वारा लिखित रिपोर्टों के विषय में यहाँ इतना ही लिखना आवश्यक है कि वे पहिले की लिखी गई रिपोर्टों से कई बातों में विशेष उपयोगी हुईं। इनमें ऐतिहासिक तथ्यों की अधिक छानबीन की गई है और पुस्तकों के निर्माण-काल पर विशेष प्रकाश डाला गया है। बाबू हीरालाल जी की राय से गवर्नमेंट द्वारा प्रकाशित विशद ग्रंथ एफ़ीमेरिस मँगवाया गया था और उससे मितियों के संशोधन तथा विवेचन में बहुत सहायता मिली थी। इन रिपोर्टों में लेखकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तथा कवियों की जीवनी, समय आदि की बड़ी विद्वत्ता तथा खोज के साथ विवेचना की गई है। भूमिका भाग में पूरी रिपोर्ट का जो संक्षिप्त विवरण दिया गया है वह तथा जो साधारण आलोचना की गई है वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

इनके अनंतर कोषोत्सव के समय पर जब बाबू हीरालाल जी काशी पधारे थे तब उनसे विशेष परिचय हुआ और उनकी असाधारण विद्वत्ता का भी मुझे अनुभव हुआ था।

संपादन कार्य में कवि-समय निर्णय करने के लिए मुझे प्रायः 'एफ़ीमेरिस' की आवश्यकता पड़ती थी, पर वह थी रायबहादुर साहब के पास। परंतु इस कार्य के लिए पत्र द्वारा उन्हें जब जब मैंने लिखा, उन्होंने तुरंत लौटती डाक से तिथि, वार, अँग्रेज़ी तारीख़ आदि सब ब्योरेवार बराबर लिख भेजी। यह उनकी सज्जनता का एक साधारण परिचय है।

रायबहादुर हीरालाल जी का स्वभाव तथा विद्या-प्रेम

[डाक्टर प्राणनाथ, विद्यालंकार, पी-एच० डी०, डी० एस-सी०,
काशी विश्वविद्यालय]

रायबहादुर हीरालाल जी की विद्वता तथा सज्जनता पर कुछ भी लिखना सूर्य को दीपक दिखाना है। वह प्राचीन शिलालेखों के संशोधन में बहुत ही दक्ष थे। उन्होंने इस संबंध में जो निस्वार्थ भाव से काम किया है वह उस क्षेत्र के विद्वानों से छिपा नहीं है।

मेरा पहिले-पहिल परिचय उनसे मंसूरी में हुआ था। मुझको सबसे बड़ा आश्चर्य तो तब हुआ जब कि उन्होंने मेरे ग्रंथ A study in the economic condition of ancient India के प्रूफ़ों को स्वयं निःस्वार्थ भाव से देखा तथा उसका संशोधन किया। यहाँ पर ही बस नहीं। मुझ पर कष्ट आ पड़ने पर बिना कहे अपनी ओर से जो कुछ उनसे हो सका उन्होंने किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९२९ में मैं दार्जिलिंग गया। वह भी अपने एक भतीजे के साथ वहां आ गए। उनको किसी प्रकार का कष्ट न हो इसलिए उनके ठहरने का प्रबंध सैनिटोरियम में किया गया। अभाग्यवश वहां का भोजन उनकी रुचि का न था। शनैः शनैः उनको मंदाग्नि हो गई। जब मुझको यह पता चला कि वह कुछ भी खाते पीते नहीं हैं, तब मैंने उनसे आग्रह किया कि वे हम लोगों के साथ रहें। बहुत ज़िद करने पर ही उन्होंने माना। उनको वहां पर बुख़ार भी आ गया। जब उनकी तबियत अच्छी हुई तब हम लोग दार्जिलिंग से लौटे।

मेरा रायबहादुर हीरालाल जी के साथ गरमी की छुट्टियों में अकसर साथ होता था। मृत्यु के एक महीने पूर्व वे शिमले में थे। वहां मैं भी था। उस समय उनको ऐसा कोई विशेष कष्ट न था जिससे हम लोगों को स्वप्न में भी उनके स्वर्गवास का आभास होता। एक बात ज़रूर थी। उनके एक मित्र की धर्मपत्नी का सहसा ही देहांत हो गया था। उन्हीं का एक नौ-जवान लड़का भी कुछ ही समय पहले गुज़र गया था। उनको इससे बहुत ही धक्का लगा था। जब कभी मिलते थे, वे बराबर अपने मित्र के दुःख के लिए चिंतित दिखाई पड़ते थे और कई बार कहते थे कि अब मुझको अपनी भी आयु का कुछ भरोसा नहीं है।

मेरी समझ में तो उनके जैसे विद्वान् तथा सज्जन व्यक्ति इस देश में इने-गिने ही हैं। उनके लिए जो कुछ भी प्रशंसात्मक शब्द कहे जायँ सब थोड़े हैं। हैहय जाति, जिसने एक समय इस जंबूद्वीप पर अपना प्रभुत्व बनाया था और जिसके गौरव के किस्सों से पुराण भरे पड़े हैं उसी जाति के वे वर्तमान युग में मुकुट थे। वे इस भूमि में अपना नाम सार्थक कर गए। सचमुच ही वे 'हीरा' थे और हैहय जाति के सबसे प्यारे बहुमूल्य 'लाल' थे। भगवान् उनकी आत्मा को सदा शांति दे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्रद्धांजलि

[श्री चेतसिंह जायसवाल, बार-एट-ला]

रायबहादुर साहब मेरे पूज्य पिता जी+ से ज्येष्ठ थे और उसी तुल्य वह मेरे आदरणीय थे। पिता जी और उनमें बड़ी घनी मित्रता थी, परंतु मुझे उनसे पूरा परिचय पाने का सौभाग्य सन् १९३२ में प्राप्त हुआ। कार्यवश बाबू हीरालाल जब पटना आए, उसी समय एक दिन बाद, मैं विलायत से लौटने वाला था। कार्य भार होते हुए भी उन्होंने अपना लौटना एक दिन के लिए टाल दिया। मेरे पहुँचने पर आशीर्वाद दे दूसरे दिन वे बिदा हुए। फिर अनेक बार भेंट होती रही। अखिल भारतीय ओरियंटल कानफरेंस के सातवें अधिवेशन में मैं उनके साथ ही ठहरा था। उस समय हमें स्वप्न में भी न आशा थी कि यह हमारी उनकी अंतिम भेंट थी।

बड़ौदा से द्वारका, नाथद्वारा, उदयपुर, चित्तौरगढ़, माउंट आबू इत्यादि स्थानों में तीर्थ व दर्शन करते, और प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों एवं शिलालेखों का निरीक्षण करते हम सब लौटे। रायबहादुर साहब मानवशास्त्र और पुरातत्त्व के विद्वान थे, अतः इन स्थानों में उनके साथ जाने से मुझे अनेक नवीन वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त हुआ।

इस यात्रा में दिन रात बाबू हीरालाल जी के साथ रहने से इनके स्वभाव का परिचय पाने का अच्छा अवसर मिला। यात्रा की असुविधायें, कष्ट और नाना प्रकार के झंझट होते हुए भी बाबू हीरालाल जी अपने साथियों के भोजन, शयन इत्यादि का पूर्ण प्रबंध करने के बाद अपनी व्यवस्था करते। सर्वदा हँसमुख, उल्लसित, और युवकों के साथ हँसते-बोलते देख किसी को इनकी वृद्ध अवस्था का ज्ञान न रहता। उनका मधुर भाव, सहनशीलता, और साधुस्वभाव आदर्शमीय थे। इतने उच्चकोटि के पंडित में रत्ती भर का भी अभिमान न था। विद्वान अनेक हैं, पर उनके समान अहंकार रहित सुशील विद्वान पुरुष किंचित ही मिलते हैं। He was a man "for a, that" and what a lovable man !

ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

+श्री० काशीप्रसाद जी जायसवाल।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर हीरालाल साहब की अंतिम बीमारी

[डाक्टर चंद्रभानु राय, एम० बी० बी० एस०, रायपुर]

यूरोप भ्रमण के पश्चात्, अर्थात् अगस्त सन् १९३३ से ही, दद्दा जी का स्वास्थ्य गिर गया* —यूरोपीय जलवायु उनके प्रकृति के अनुकूल प्रतीत नहीं हुई; दूसरे वहां सात्विक शाकाहारी भोजन की असुविधा से बड़ा कष्ट रहा। भारत लौटने पर आंव-रक्त का प्रकोप हो गया। दवा करने से एक महीने में स्वास्थ्य बहुत कुछ सुधर अवश्य गया, पर एक प्रकार की मंदाग्नि बनी ही रही। यों तो उनका कार्यक्रम पूर्ववत नियमानुसार चलने लगा, पर उन्हें कुछ थकावट सी जान पड़ने लगी थी और वे बहुधा कहा करते थे कि अब बुढ़ापे का असर मालूम होता है। वे कटनी ही में इन दिनों रहते थे, परंतु ग्रीष्म ऋतु आ जाने पर उन्हें फिर किसी ठंढे स्थान में जाने की आवश्यकता हुई। इसकी आवश्यकता उन्हें सन् १९२६ से पड़ती थी जब उन्हें लू लग गई थी। डाक्टरों ने कह रक्खा था कि वे गर्मी भर ठंढे पहाड़ों पर अवश्य रहें, नहीं तो दुबारा लू लगने से वह प्राण-घातक होगी। इसी कारण वे सन् १९३४ के मई महीने में शिमला चले गए। क्या जाने उन्हें आगामी मृत्यु की भावना कैसे हो गई थी; वहां वे सारा समय परलोक की बातों में और वैसे ही साहित्य के अध्ययन में बिताते रहे। शिमला से वे जुलाई में लौटे, पर रेल-यात्रा में भी बड़ा कष्ट रहा। कई घंटे बैठे रहने के कारण कमर में असहनीय पीड़ा भी हो गई। कटनी किसी तरह पहुँचे। अब कुछ जीर्णज्वर भी रहने लगा। यह प्रायः दो सप्ताह तक बना रहा और साथ ही कोष्ठ-बद्धता रहने लगी। २६ जुलाई को एकाएक उन्हें फिर शरीर में बड़ी पीड़ा मालूम हुई और कमज़ोरी भी बहुत आ गई, यहां तक कि उठना-बैठना मुश्किल हो गया। दो चार दिन में स्वास्थ्य के कुछ सुधरते ही उन्हें नागपुर इलाज के लिए ले आए, क्योंकि मध्य-प्रांत में डाक्टरी इलाज के लिए और कोई दूसरा उत्तम स्थान नहीं है। यहां

---

* रायबहादुर डा० हीरालाल जी को उनके घर वाले 'दद्दा जी' कहा करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रायः १० दिन तक उनकी तबियत अच्छी रही और ऐसा जान पड़ता था कि कुछ समय में वे स्वस्थ व नीरोग हो जायँगे। पर तारीख़ १० अगस्त को फिर एकाएक कमज़ोरी बढ़ गई; यह अंत समय तक बनी रही। नागपुर में सभी इलाज व्यर्थ हुए। रायबहादुर साहब को आख़िर कौन सा रोग है इस संबंध में डाक्टरों का मतभेद बना ही रहा। अधिकांश की राय थी कि अँतड़ी में ज़हरबाद हो गया है, परंतु यह भी निश्चित नहीं था। उनका रक्त-भार अधिक अवश्य हो गया था। अंत में मैं उन्हें बंबई इलाज कराने के लिए ले गया। ता० १७ अगस्त को हम लोग रवाना हुए और दूसरे ही दिन बंबई के डाक्टरों ने उनकी परीक्षा की। सब की राय यह हुई कि रायबहादुर साहब के पेट में खून की एक नली फूल गई है और उसमें से कभी-कभी कुछ स्राव होता है। इसी के कारण ही इतनी कमज़ोरी है। फिर भी एकाएक अंत आ जायगा इसकी धारणा किसी को न थी। किंतु प्रारब्ध में तो कुछ और ही था। बंबई में पहुंचने के केवल ४ घंटे बाद ही एक बार फिर कमज़ोरी बढ़ गई। दौड़-धूप बहुत की, पर उससे कोई लाभ न हुआ। दशा क्षण क्षण बिगड़ने लगी और अंत में ता० २० अगस्त को तीन बजे प्रातःकाल इस नश्वर शरीर को त्याग वे स्वर्गधाम सिधारे। दद्दा जी को अंतिम सप्ताह भर शारीरिक पीड़ा बहुत थी। कभी कभी तो वे कह उठते थे कि परमेश्वर! कष्ट दे दे कर प्राण न ले। अंत समय में हम लोगों ने उन्हें दवाओं के प्रभाव से प्रायः बेहोश कर रक्खा था। यह बेहोशी फिर हटी नहीं। फलतः उनके अंतिम उद्गार व विचारों के प्रगट होने का अवसर ही न आया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय डाक्टर रायबहादुर हीरालाल साहब के विषय में फुटकर संस्मरण

[श्री अमनाप्रसाद जैन, एम० ए०, एम० आर० ए० एस०, एल-एल० बी०,
बार-एट-ला०, सबजज, हरदा (सी० पी०)]

पूज्य रायबहादुर डाक्टर हीरालाल साहब से मेरी प्रथम भेंट सन् १९२३ के दिसंबर में जबलपुर में हुई थी। उस समय वे अपने भाई (अब स्वर्गीय) गोकुलप्रसाद साहब इनकमटैक्स असिस्टैंट-कमिश्नर के साथ सरकारी बँगले में रहते थे। उनकी सहृदयता, उदारता और सादगी इतनी चित्ताकर्षक थी कि उस दिन से ही मैं उन्हें अपने पिता-तुल्य आदर भाव से देखने लगा। मैं उनके पास इसलिए गया था कि वह मुझे सरकारी नौकरी दिला देने में सहायता कर दें। उन्हें भी मेरे प्रति विशेष सहानुभूति होने लगी, क्योंकि मैंने एम० ए० पुरातत्त्व विषय में पास किया था। रायबहादुर साहब के जीवन का बहुत सा भाग पुरातत्त्व की खोज में ही लगा है और उन्हीं की कृपा से कई पुरातत्त्व-प्रेमियों की अच्छे अच्छे पदों पर नियुक्ति हुई है। मेरे वास्ते भी उन्होंने बहुत कुछ प्रयत्न किया—एक समय तो वे इरविन साहब कमिश्नर से मेरे पीछे बहुत लड़े। वे अपने परिचितों को सदैव बढ़ाने का प्रयत्न करते थे और पत्र-व्यवहार के विषय में विशेष दिलचस्पी रखते थे। हरएक के पत्र का उत्तर अवश्य देते थे। आतिथ्य भी उन्हें खूब आता था।

विलायत जाने की उनकी बहुत उत्कट इच्छा बहुत दिनों से थी और क़रीब ७ या ८ साल हुए इसके लिए सब तैयारी उन्होंने कर ली थी। पासपोर्ट मंगा लिया था। जहाज तै हो गया था और रवानगी की कई एक पार्टियां भी हो गईं थीं।

इसी क़िस्म की एक पार्टी में उन्हें इस बात के लिए मजबूर किया गया कि वे पान खा लें—वे पान कभी नहीं खाते थे। ख़ैर, आग्रहवश उन्होंने पान खा लिया। नतीजा यह हुआ कि उन्हें चक्कर आगया, उनका स्वास्थ्य ख़राब हो गया और उनकी विलायत यात्रा रुक गई।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इसके पश्चात् सन् १९३३ में इलाहाबाद के एक व्यक्ति ने विज्ञापन निकाला कि वे एक यात्री-दल यूरोप ले चलने वाले हैं और इतने पैसे में इतने दिन और इतनी जगहों की यात्रा इस ढंग से करा देंगे। रायबहादुर साहब को यात्रा का प्रबंध स्वयं करना अच्छा नहीं लगता था और दूसरों पर विश्वास भी जल्दी कर लिया करते थे*। अतः इस विज्ञापनबाज़ी में फँसकर उन्होंने विलायत-प्रस्थान की तैयारी कर ली। कुछ वर्षों से पं० ओंकारप्रसाद जी मिश्र से ऐसी मित्रता हो गई थी कि जहाँ जहाँ वे जाते थे वहाँ वहाँ यथासंभव इनको भी साथ ले जाते थे। काशमीर, बड़ौदा, मद्रास आदि उनके साथ गए थे।

केवल मिश्र जी व रायबहादुर साहब ही इस विज्ञापन में फँसे। जहाज़ पर चढ़ने तक वह इलाहाबादी 'सज्जन' इन्हें झांसा देते रहे और कहते रहे कि बाक़ी काफ़ला पीछे आ रहा है, पोर्ट सैयद में साथ हो जायगा। कुछ दिनों के बाद सच्चा हाल बतलाया कि अब कोई नहीं आएगा। फँस तो गए ही थे। दोनों मित्रों को उस इलाहाबादी सज्जन ने बड़ा कष्ट दिया। मैं उन दिनों यूरोप में था। इसलिए फ्रांस में पहुँचते ही रायबहादुर साहब ने मुझे लंदन के पते से अपने आने का समाचार दिया। पर संयोग ऐसा हुआ कि मैं उन दिनों लंदन से पेरिस आगया था। चिट्ठी मुझे पेरिस में मिली। मैंने उनसे मिलने की कोशिश भी की पर मिल न सका। मैं शीघ्र ही लंदन लौटकर आगया और रायबहादुर साहब तथा मिश्र जी से मिला। अब तो इलाहाबादी 'सज्जन' ने इन का बिलकुल ही साथ छोड़ दिया। मुझे उन दिनों में फ़ुरसत थी। इसलिए हम तीनों मिलकर साथ घूमते। कभी कभी साथ में बिलासपुर के श्रीयुत अग्निहोत्री जी वकील और नागपुर के वज़नवार साहब वकील भी साथ हो जाते थे। इस वृद्धावस्था में भी रायबहादुर साहब बहुत ज़्यादा चलते थे और उत्साहपूर्वक सब जगह सब चीज़ें देखने का प्रयत्न करते थे। पार्लियामेंट के सेक्रेटरी को जब मालूम हुआ कि राय बहादुर साहब आए हैं, तब वे उनसे मिलने आए और कहा कि आप गोंडों और भीलों के विषय में गवाही ज्वाइंट सिलेक्ट पार्लियामेंटरी

---

* रायबहादुर साहब ने उक्त इलाहाबादी सज्जन के बारे में मुझसे पूछा था, परंतु खेद है मैं भी धोखा खा गया। —सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कमिटी के सामने अवश्य दीजिए, पर रायबहादुर साहब तो उस इलाहाबादी सज्जन के चक्कर में फँसे थे और समय ठीक नहीं बैठ पाया। इसलिए मजबूरी हो गई। रायबहादुर साहब को शूवर्ट साहब डिप्टी कमिश्नर व उनके पिता विलसन साहब डी० सी० व भूतपूर्व चीफ़ कमिश्नर सर बेंजमिन राबर्टसन, डाक्टर टामस आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने घर पर बुलाकर निमंत्रित व सम्मानित किया था।

हाँ, एक छोटी सी मज़ेदार बात याद आई। जन्म के संस्कार बड़ी मुश्किल से छूटते हैं। रायबहादुर साहब को पैंट के नीचे धोती पहिनने की आदत थी और रोज़ नहाने की भी, वह भी धोती पहिनकर। विलायत के होटलों में हिंदुस्तानी ढंग से नहाने और कपड़ा सुखाने का सुभीता नहीं रहता। इस बात से होटल के नौकर और रायबहादुर साहब दोनों को कष्ट प्रतीत होने लगा। रायबहादुर साहब से तो होटल की नौकरानी की यह कहने की हिम्मत नहीं पड़ी कि धोती सुखाने से उनका 'वालपेपर' ख़राब होता है; वह मुझसे आकर कहने लगी कि साहब से आप कह दें। मैंने रायबहादुर साहब से कहा तो उन्हें बड़ा अफ़सोस हुआ और फिर उस नौकरानी से भी अफ़सोस ज़ाहिर किया। एक समय हम सब लोग ज़ूलाजिकल गार्डेंस, लंदन, में गए। कुछ रमणियाँ भी साथ थीं। मैंने देखा कि वे दूसरे बुड्ढों की तरह मुहर्रमी सूरत बनाकर नहीं बैठते थे। वे हम सब लोगों के आमोद-प्रमोद में शरीक रहते थे और बहुत से अँग्रेज़ युवक और युवतियों को भारतवर्ष की बहुत सी बातें बताते थे। उनको इस बात का भी ख़्याल था कि युवक और युवतियों की कैसी विचार धारा रहती है। इस पर भी ध्यान रखते थे कि उनके आमोद-प्रमोद में कोई बाधा न पड़े। इसीलिए कभी कभी कह देते थे "भाई हम तो थक गए हैं; यहाँ घंटे आध-घंटे बैठेंगे; आप लोगों को घूमने जाना हो तो घूम आवें।" उनका व्यवहार-चातुर्य इतने उच्च-कोटि का था कि उनके पुराने साथी और नवपरिचित सभी उनसे बहुत ख़ुश रहते थे और उमर में अधिक अंतर रहते हुए भी किसी का जी उनसे ऊबता नहीं था।

सन् १९३१ में रायबहादुर साहब और मिश्र जी मेरे साथ काश्मीर भी गए थे। मैं सकुटंब गया था। रावलपिंडी से साथ हो गया था। मरी की पहाड़ी, बारामुला, श्रीनगर, गुलमर्ग, खिलनमर्ग, अलपाथर, अच्छनल आदि स्थान सब जगह साथ रहा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हम सब ख़ूब घूमते थे। डाक्टर ने उन्हें पहाड़ी पर पैदल चढ़ने से मना कर दिया था। श्रीनगर में एक दिन मैं अपने छोटे बच्चों सहित शंकराचार्य पहाड़ी पर चढ़कर वापिस लौट आया और मैंने रायबहादुर साहब से कहा "देखिए, चंद्रकुमारी पैदल पहाड़ी पर चढ़ गई थी"। चंद्रकुमारी मेरी चार वर्ष की लड़की थी। तब वे कहने लगे "भाई अब चाहे कुछ भी हो। चाहे डाक्टर ने मना किया हो चाहे नहीं। मैं तो ज़रूर ही पहाड़ी पर जाऊँगा"। दूसरे दिन वह गए और बिना कहीं बैठे ही धीरे-धीरे पहाड़ी पर होकर वापस आ गए। इस पहाड़ी पर चढ़ना ज़रा मुश्किल है और जवान आदमी को भी बीच में बैठना पड़ता है। सरल स्वभाव से वे कहने लगे "देखो, दुनिया में कोई मुश्किल बात नहीं है, प्रबल इच्छा डाक्टरी मत को भी झूठा कर सकती है।" छोटे बच्चों को वह इतना प्यार करते थे कि उनसे वे शीघ्र ही हिल-मिल जाते थे।

उनका स्वभाव बहुत उदार भी था। मैं रायबहादुर साहब से एक हफ़्ते पहिले ही विलायत से लौट आया था। इसलिए मेरी रवानगी के उपलक्ष में उन्होंने एक भोज दिया और स्टेशन पर आकर भारतीय तरीक़े से एक पाउंड का नोट हज़ार मना करने पर भी मेरे कोट के पाकिट में डाल दिया।

उन्हें पद की लालसा बिलकुल ही नहीं थी। सन् १९३१ में नागपुर यूनिवर्सिटी की वाइसचैंसलरी इन्हें सहज में मिल सकती थी। पर एक शर्त थी कि वे नागपुर उतने वक्त के लिए अपना स्थायी स्थान बना लें। रायबहादुर साहब को अपने भतीजों से व कटनी से इतना प्रेम था कि उन्होंने इतने बड़े पद को अस्वीकार किया। कटनी की म्यूनिसिपैलटी की प्रेसीडेंटी के लिए कई वक्त उनसे प्रार्थना की गई, पर उन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। अंत तक वे अपना समय साहित्य-सेवा में लगाते रहे। जल्दी सोना और जल्दी उठना उनका सिद्धांत था। सूर्य निकलने के पहिले या निकलते निकलते वे ठंढ के दिनों तक में भी घूम कर आ जाते थे। जबलपुर में वह मेरे यहाँ ही ठहरा करते थे। मैं जब सोकर उठता तो उन्हें कुछ पढ़ते हुए देखता था। देखकर मुझे अपने पर बड़ी शरम मालूम होती थी। उन्हें शब्दों का अनुप्रास बहुत पसंद था, इसीलिए उन्होंने अपनी पुस्तकों के नाम सागर-सरोज, दमोह-दीपक, दुर्ग-दर्पण, मंडला-मयूख, नरसिंह-नयन, जबलपुर-ज्योति आदि रक्खे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

थे। मैं विलायत से लौटकर बेमेतरा तैनात हुआ तो मुझे कुछ दिनों के बाद उन्होंने लिखा, मैं समझा कि तुम 'बेमित्र' (मित्र-रहित) जगह में गए हो पर तुमने तो उस जगह को बामित्र (मित्र-सहित) बना लिया है। आर्केलाजिकल डिपार्टमेंट रायबहादुर साहब से प्रार्थना कर रहा था कि कलचुरी ट्रंसक्रिपशंस की किताब का संपादन आप कर दीजिए। उक्त विभाग ने कई हज़ार रुपया पुरस्कार देने का वचन भी दिया था। पर दुर्भाग्य है कि यह रत्न हमारे हाथ से छीन लिया गया।

स्व० बाबू हीरालाल जी

[पंडित रामनरेश त्रिपाठी, प्रयाग]

बाबू हीरालालजी से मेरा परिचय जब वे वर्धा के डिप्टी कमिश्नर थे, उन्हीं दिनों सेठ जमनालाल बजाज के यहाँ एक विवाह के अवसर पर हुआ था। सेठ जी के मित्र और अन्य निमंत्रित व्यक्ति एक शामियाने के नीचे बैठे थे। मैं भी था। यकायक सेठ जी बाबू हीरालालजी को साथ लेकर आए और मेरा उनसे परिचय कराया। हम दोनों कुछ समय तक पास ही बैठकर साहित्य-संबंधी बातें करते रहे। मेरे मन पर उनकी इस निरभिमानता का गहरा प्रभाव पड़ा कि उस समय वर्धा के सब से उच्च पदाधिकारी होते हुए भी वे कितने प्रेम से स्वयं आकर, मेरी खोज करके, मुझसे मिले।

उनके सरल और सरस स्वभाव का अनुभव उनके सब मित्रों को एकसा है। पुरातत्व उनका मुख्य विषय था। वे बाग्वीर नहीं थे, दृढ़ परिश्रमी और सच्चे थे। जिस विषय पर वे जो कुछ लिखते थे, पूरी ज़िम्मेदारी के साथ लिखते थे। यहाँ इसका एक उदाहरण मनोरंजक होगा।

बाबू हीरालाल जी ने रामचरितमानस के भूगोल पर एक लेख लिखा था। उसका प्रारंभिक अंश यह है—

"रामायण में भौगोलिक नाम ५० से अधिक नहीं हैं। कुछ नाम बार-बार आते हैं। अवध या उसके पर्यायवाची अवधपुर, अवधपुरी, अयोध्या, कोशल, कोशला, कोशलपुर, कोशलपुरी, रामपुर, रामपुरी या दशरथपुर—ये नाम १०० से अधिक बार आए हैं। अकेले अयोध्याकांड में अवध का नाम ५४ बार आया है। सुरसरि और

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसके पर्यायवाची सुर-सरिता, देव-सरि, देव-धुनी, विबुध-नदी और गंग या गंगा का नाम ५० बार से अधिक मिलता है। ३५ बार लंका, २६ बार हिम-गिरि, २३ बार प्रयाग, १८ बार चित्रकूट, १६ बार सरयू, ११ बार यमुना, १० बार कैलाश, ८ बार मिथिला, ७ बार काशी और त्रिवेणी, ६ बार दंडक और पंचवटी, ५ बार शृंगवेरपुर या सिंगौर, ४ बार मंदाकिनी, विंध्याचल और गोदावरी, ३ बार तमसा, गोमती प्रवर्षणगिरि, त्रिकूटगिरि और अशोकवन और २ बार से अधिक कर्मनाशा, मेकलसुता, सई, नीलगिरि, सेतुबंध और सुबेल के नाम नहीं आये।"

इस उद्धरण से आप सहज ही में अनुमान कर सकते हैं कि वे जिस काम को हाथ में लेते थे, उसे कितने परिश्रम और कैसी सचाई से करते थे। फिर उसमें दूसरों के लिए कुछ बाक़ी वे नहीं छोड़ते थे। उनके लेखों में उनकी तन्मयता की गहरी छाप सर्वत्र मिलती है। हिंदी में पुरातत्व से प्रेम रखने वाले विद्वान् यों ही इने गिने हैं। उनमें से भी एक की कमी हिंदी संसार की एक बहुत बड़ी क्षति है।

कुछ संस्मरण

[श्री चंद्रिकाप्रसाद जी जिज्ञासु, भूतपूर्व संपादक "हैहय-क्षत्रिय" (साप्ताहिक)]

अगाध जाति-प्रेमी, सौजन्य-मूर्ति, जाति के वयोवृद्ध माननीय नेता रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी का पार्थिव शरीर अब इस संसार में नहीं है; वह १९ अगस्त १९३४ को जर्जरित होकर पंचतत्व को प्राप्त हो गया। परंतु शरीर ध्वंस हो जाने पर भी उनका सुंदर और श्लाघनीय यशःशरीर हम लोगों की कल्पना की आँखों के आगे हर समय विद्यमान है। उनका यशःशरीर जीवित ही नहीं है, अपितु अपने पूर्ण विकास में है। भौतिक शरीर में अंतर्हित रहने के कारण उसके पूर्णत्व में जिन बाधाओं की आशंका थी, उनसे मुक्त होकर अब वह अपने पूर्ण-रूप में देदीप्यमान हो रहा है, चिरकाल तक देदीप्यमान रहेगा और वर्तमान एवं भविष्य-संतान के संसार-पथ में प्रदीप की भाँति मार्ग-दर्शन कराता रहेगा। अतएव, वे हमारे बीच में अप्रत्यक्ष रूप में भी वर्तमान हैं और हम चाहें तो उनसे लाभान्वित हो सकते हैं।

वे सामान्य मनुष्य नहीं थे, मनुष्य-तन-धारी मूर्तिमान देवता थे। वे विद्या के भंडार, ज्ञान के समुद्र, सदाचार के अवतार, दया के आगार, प्रेम की प्रतिमा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुणों की खान, मनुष्यत्व की मंजुमूर्ति, दीनों के भगवान् तथा जातीय-नौका के कर्णधार थे। वे धनियों में धनेश, गरीबों के सखा, विद्वानों में बृहस्पति, खोजियों में तत्त्वदर्शी, हाकिमों में डिप्टी-कमिश्नर, दानियों में कर्ण, बिरादरी में एक प्रियबंधु, बालकों में कन्हैया और वृद्धों में पितामह भीष्म के समान थे। वे असामान्य मेधावी, अतुलित प्रतिभा-संपन्न और विश्व-विख्यात विद्वान् थे। उन्हें खोकर जाति-जननी की, नहीं-नहीं, भारत-माता की जो क्षति हुई है, उसके रत्न-भंडार से जो अनमोल "हीरा-लाल" लुट गए हैं, उसकी पूर्ति होना अत्यंत दुर्लभ है। उनकी गुणावली का वर्णन उनकी जीवनी का लेखक ही कर सकता है, और उसके लिए एक बड़ी पुस्तक की आवश्यकता होगी। दो एक संस्मरण उनके जाति-प्रेम और सादगी के संबंध में यहाँ लिखे जाते हैं जो उनके गुण-समुद्र के बिंदु के समान है।

सन् १९२४ में, मैं अपने एक मुक़दमे के संबंध में, सागर गया था। लौटते समय मैं जबलपुर होकर आया। जबलपुर में मैं इसलिए उतर पड़ा कि रायबहादुर साहब के दर्शन कर लूं। जिस समय मैं आपके बँगले पर पहुँचा, तो आप बरामदे में टहल रहे थे। इससे पूर्व उन्होंने मुझे देखा नहीं था। टाँगे से उतर कर मैं अंदर गया, और सामने खड़ा होकर अपना परिचय दिया, तो रायबहादुर साहब ने बड़े तपाक से बरामदे से नीचे उतर कर अपने दोनों हाथों से मेरे हाथों को पकड़ लिया, और बड़े प्रेम के साथ पकड़े हुए बरामदे से कमरे के भीतर ले गए। एक सुंदर कोच पर बिठाकर मुझसे कुशल-प्रश्न और आने का कारण पूछने लगे। फिर उन्होंने मुझसे केवल इतना पूछा कि टाँगे पर कौन-कौन सामान है?—उसके बाद मुझे अपना सामान उसी तरह बँधा हुआ तीसरे दिन तब देखने को मिला जब मैं स्टेशन जाने के लिए उनके मोटर पर सवार हुआ। वे दो दिन तक चौबीसों घंटे मेरे साथ रहे। भोजन, स्नान, वार्तालाप के अतिरिक्त, रात में भी उन्होंने अपने ही सोने के कमरे में अपने पलंग के पास मेरे लिए पलंग बिछवाया। केवल वे ही नहीं, उनके भ्राता स्वर्गीय बा० गोकुलप्रसाद जी भी प्रेम और सज्जनता की मूर्ति थे। जिस समय रायबहादुर साहब ने उनसे मेरा परिचय कराया, तो वे दोनों हाथ बढ़ाकर हृदय से लिपट गए। इतने बड़े आदमी होकर उन्होंने मुझ जैसे सामान्य व्यक्ति का इतना आदरपूर्ण प्रेम-परिपूरित आतिथ्य किया, इसे देख मैं दंग रह गया। उन्होंने जाति-विषयक

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वार्तालाप करते समय हैहय-वंश के संबंध में कितनी ही महत्त्वपूर्ण बातें बताईं। आज उन बातों को स्मरण करने से कलेजा मुँह को आता है, इसलिए कि अब उनका बताने वाला जाति में कोई नहीं रहा। मेरी यह उत्कट इच्छा रही कि राय-बहादुर महोदय के तत्त्वावधान में हैहय-वंश का एक इतिहास लिख जाता। मैंने इस संबंध में डाक्टर सीताराम साहब तथा श्री० एम्० डी० जायसवाल साहब से बहुत कुछ लिखा-पढ़ी भी की, परंतु वह काम अपूर्ण ही रह गया, और आज रायबहादुर साहब अनंत धाम चले गए!

हमारे रायबहादुर साहब में अत्यंत अधिक जाति-प्रेम था। जिस समय आप कानपुर की महासभा में पधारे, तो आप ला० तुलाराम रघुवरदयाल के मकान में सब भाइयों के साथ ही ठहरे और एक सामान्य कमरे के फ़र्श पर पड़े हुए क़ालीन पर ही सब भाइयों के साथ रात में लेटे। तीनों रात आपने इसी तरह सोकर बिताईं। भोजन भी आप सब भाइयों के साथ एक पंक्ति में बैठ कर करते रहे। ख़ास-ख़ास लोगों के सिवा जो कि उन्हें जानते थे, दूसरे लोग पहचान ही न सके कि ये कौन हैं। चलते समय शायद अतिथि-सेवा का धन्यवाद देने के ख़्याल से वे मालिक-मकान से मिलने गए। कानपुर के ला० तुलाराम रघुवरदयाल बहुत बड़े रईस हैं, उनके यहां हाकिम-हुक्काम आते ही रहते हैं और हाकिमों के ठहराने तथा उनके आदर-सत्कार के लिए उनकी ख़ास कोठी है जिसके कमरों में आला दर्जे का फ़र्निचर तथा अंगरेज़ी ढग की फ़ेरनेचुल आराम की चीज़ें हैं। उन्होंने यह तो सुना था कि इस सभा में सी० पी० से कोई बिरादरी के डिप्टी कमिश्नर आए हैं, पर उन्हें यह नहीं मालूम हो सका कि वह डिप्टी-कमिश्नर साहब उन्हीं के घर साधारण बिरादरी के साथ भूमि पर लेटते और पंक्ति में खाते हैं। बिदाई के समय जब रायबहादुर साहब उनसे मिलने गये, तो उन्हें पहचान कर ला० तुलाराम जी बहुत ही पछताए और यथायोग्य आतिथ्य न कर सकने पर बड़े अफसोस के साथ अपना मानसिक दुःख प्रकाश करने लगे। उस समय हमारे रायबहादुर महोदय ने अत्यंत सरल भाव से हँसकर जी अगाध जातीय प्रेम से परिपूर्ण उत्तर दिया, वह प्रत्येक जाति-प्रेमी के लिये सोने के अक्षरों में लिख रखने योग्य है। आपने कहा था—"बँगले में अँगरेज़ी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Provincial Museum Lucknow

ढंग से तो रोज़ ही रहते हैं, पर इस तरह भाइयों के साथ रहने का सुख तो आप ही के यहाँ प्राप्त हुआ।"

इसी तरह मिरज़ापुर-महासभा के समय जिस समय आप मिरज़ापुर पधारे, तो वहाँ के भाइयों का उत्साह और शाहाना तरीक़े से आदर-सत्कार तथा महासभा की रौनक़ देखकर आपने कहा था "इस शहर का नाम 'मिरज़ापुर' नहीं, बल्कि "मीरजापुर" है। तात्पर्य यह कि यह "मीर" अर्थात् "अमीरों" के रहने का नगर है। इस बात को सुनकर लोग बहुत ही प्रसन्न हुए थे।

राजापुर-कांड होने पर उसके प्रतिकार के लिए इलाहाबाद में वर्किंग कमेटी की जो बैठक हुई थी, उसमें रायबहादुर साहब भी पधारे थे। आप सारे दिन नीचे के कमरे में एक साधारण कुर्सी पर बैठे हुए हम सब लोगों की बातें सुनते और पूछताछ करते रहे। सुख से रहने वाला उनका वृद्ध शरीर इतना कष्ट सहने के योग्य न था। गरमी भी बहुत अधिक थी। बातें करते करते लगभग ४ बजे उन्होंने अपने सिर पर हाथ रक्खा। मैंने पूछा, "आपका चित्त कैसा है?" "आपने अत्यंत साधारण रीति से कहा, "मस्तक में कुछ पीड़ा होती है।" मैंने बिना तकल्लुफ़ उनके मस्तक को छूकर देखा तो वह गरम था, उनके शरीर में ज्वर था। पर उसकी उन्हें तनिक भी परवा नहीं थी। उसी समय एम० डी० जायसवाल साहब आगए और ज़रा देर बाद वे उनके साथ घूमने चले गए। मैंने कहा, "आप का शरीर अस्वस्थ है, आप आराम कीजिए।" आपने कहा, "ओह? शरीर ठीक हुआ करेगा, भाइयों को (राजापुर में) जो तकलीफ़ हुई है उससे ज़्यादा तो यह नहीं है।" यों कह कर हँसते हुए वे टांगे पर बैठ कर घूमने चले गए।

ये सब बातें तब सामान्य-सी दिखाई देती थीं। किंतु इन पर गंभीर दृष्टि से विचार करने से हमें आश्चर्य में डूब जाना पड़ता है, कि हमारे रायबहादुर साहब असामान्य जाति-प्रेमी और साधुता एवं सज्जनता की प्रतिमूर्ति थे। मनुष्य की पहचान उसके चरित्र तथा उसके व्यवहार से होती है। ज़बानी बातें बनानेवाले बहुत हैं, किंतु अपने व्यवहार और चरित्र से मनुष्य जो कुछ परिचय देता है वही उसका असली परिचय है। वे यथा नामः तथा गुणः थे। वे सचमुच मनुष्यों में "हीरा-लाल" थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाक्टर हीरालाल की कुछ महत्वपूर्ण गवेषणाएँ

[पंडित रामबहोरी शुक्ल, एम० ए०, काशी]

पंडितों के मध्य रायबहादुर हीरालाल जी के आदर का कारण उनके दो प्रकार के कार्य थे : एक तो उनके ऐसे लेख और ग्रंथादि थे जो उन्होंने अपने सरकारी पदों के कर्तव्य-पालन करने के निमित्त लिखे थे और दूसरे उनकी ऐसी रचनाएँ थीं जो उनके विद्या-व्यसन के परिणाम समझने चाहिए। उनकी 'स्वान्तःसुखाय' की गई साहित्य-सृष्टि में एक तो काशी की नागरी-प्रचारिणी-सभा के तत्त्वावधान में की गई एवं संयुक्त प्रांतीय सरकार द्वारा प्रकाशित प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की तीन बृहदाकार रिपोर्टें, *नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से दिए हुए कलचुरि-सम्राट विषयक व्याख्यान आदि के अतिरिक्त अनेक स्वतंत्र लेखों की गिनती की जा सकती है। यहाँ पर उनके केवल एक स्वतंत्र अनुसंधान का परिचय देकर लेखनी को अनिच्छापूर्वक रोकने की चेष्टा की जायगी।

डाक्टर हीरालाल की खोज, जिसका उल्लेख यहां किया जायगा, रावण की लंका का स्थल-निर्देश करती है। देशों, स्थानों आदि के नाम समय के साथ-साथ बहुधा परिवर्तित तो हुआ ही करते हैं, प्रायः वे नष्ट भी हो जाते हैं। इसी से प्राचीन स्थलों का ठीक ठीक पता लगाने में बहुत-सी अड़चनें आया करती हैं। यद्यपि श्रीरामचंद्र का वृत्तांत इतना अधिक प्रसिद्ध है और साथ ही उनके जीवन से संबंध रखने वाले स्थानों के साथ हम लोगों का परंपरागत संबंध बराबर बना हुआ है

---

*रायबहादुर (बाद में डाक्टर) हीरालाल जी सन् १९२३ से आमरण (अर्थात् १९ अगस्त सन् १९३४ तक) सभा के खोज-विभाग के निरीक्षक रहे। उनके निरीक्षण-काल में हज़ारों प्राचीन ग्रंथों का पता लगा। तत्संबंधी केवल तीन त्रैवार्षिक रिपोर्टें ही सरकार छाप सकी थी। उनके बाद की बहुतसी सूचनाएं अब तक अप्रकाशित हैं। आजकल डा० हीरालाल के सहायक-निरीक्षक एवं अब सभा के खोज-विभाग के निरीक्षक डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, एम० ए०, डा० लिट्०, उनका प्रेस में भेजने के लिए उपयुक्त रूप से संपादन कर रहे हैं—लेखक।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फिर भी उनमें से कुछेक की प्राचीनता असंदिग्ध नहीं। ऐसे संदिग्ध स्थलों में से एक लंका भी है। सभी रामायणों के अनुसार रावण की लंका की स्थिति अयोध्या के दक्षिण मानी जाती है। और लंका पहुँचने के लिए श्रीराम द्वारा समुद्र पर पत्थरों के पुल का निर्माण होना भी स्वीकार किया जाता है। इस कारण आधुनिक सीलोन को, जो सिंहल का भाषांतर मात्र है, मयनिर्मित सुवर्ण की लंका अधिक समय तक निश्चित-सा माना जाता रहा। कुछ लोग उसे सीलोन के पश्चिमोत्तर मालद्वीप को और कुछ उसके पूर्व मलाया प्रायद्वीप के समीप मानते हैं; किंतु कुछ लोगों का कहना है कि रावण की लंका तो अरब समुद्र के गर्भ में है। इन सब अनुमानों एवं विचारों के लिए इनके मानने वाले अपना-अपना तर्क भी उपस्थित करते हैं। उनका विवरण प्रस्तुत करने से विषयांतर होने की आशंका है। इससे उन्हें न बतलाकर हम स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल की गवेषणा का निष्कर्ष लिखेंगे। उनके अनुसार लंका विंध्यगिरि के अमरकंटक नामक पार्वत्य प्रदेश पर थी। उन्होंने लिखा है कि अमर-कंटक की तली में आज तक एक बड़ा भारी दलदल है *। यही दलदल उनके अनुमान से उस सागर का अवशिष्ट है जो रामायण के अनुसार हनुमान को पार करना पड़ा था और जिस पर पुल बाँधा गया था। सागर पार करने के पूर्व, रामायण के अनुसार, श्रीराम ने शिव जी की पूजा आर श्रीरामेश्वर नाम से उनकी स्थापना की थी। डाक्टर हीरालाल का कहना है कि अमरकंटक के समीपवर्ती प्रदेश में खरौर नाम के गाँव में 'लक्ष्मणेश्वर' नाम्नी शिव की मूर्ति है। इसके साम्य पर उन्होंने अटकल लगाई कि वहीं कहीं रामेश्वर जी भी रहे होंगे, जिनका अस्तित्व अब किसी कारण से नहीं रहा।

अमरकंटक-प्रांत में आज भी राक्षसों और वानरों आदि के वंशज नामांतर से विद्यमान हैं—डाक्टर हीरालाल ने यह भी सिद्ध किया है। आधुनिक गोंडों को वे राक्षसों की परंपरा में मानते हैं। ऐसा करने के लिए उन्होंने नये और पुराने प्रमाण भी दिए हैं। वे कहते हैं कि सन् १८९१ की मनुष्य-गणना में गोंडों ने अपने को रावण-वंशी लिखवाया था और गोंडों के सब से प्रतापी राजा संग्रामशाह के सिक्कों में

* कोशोत्सव स्मारक संग्रह, पृ० १९।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उसके नाम के आगे 'पौलस्त्यवंश' खुदा पाया जाता है। उन्होंने बिलासपुर ज़िले की 'केंदा' नाम की पुरानी ज़मीदारी को बालि-सुग्रीव की 'किष्किंधा' और उसके आसपास रहनेवाली 'उरांव' जाति को श्रीराम के सहायक 'वानर' वर्ग के वंशज होने की कल्पना की है। विंध्य-पर्वत पर बसने वाले जंगली शबरों की संज्ञा, उनके अनुमान से, कदाचित् प्राचीन काल में ऋक्ष रही होगी। डाक्टर साहब ने पंचवटी के निकटस्थ 'गोदावरी' का, जिसके किनारे श्रीराम-सीता ने दंडकारण्य में कुछ वनवासकाल बिताया था यह कहकर समाधान किया है कि बस्तर रियासत के आसपास के निवासी जंगली लोग अब भी नदी के लिए 'गोदारि' शब्द का प्रयोग करते हैं। यही जातिसूचक गोदारि शब्द संभवतः रामायण में व्यक्ति-सूचक 'गोदावरी' हो गया होगा और जब उनको अपने हीरापुर (बंधा) नामक गांव में, जो जबलपुर से १३ मील पर नर्मदा के किनारे पर है, एक अपढ़ किसान से यह विदित हुआ कि वहां 'ऊंचे टीले' के लिए अब भी 'लंका' शब्द प्रयुक्त होता है तब तो उन्होंने यह निश्चय-सा समझ लिया कि रावण की लंका सचमुच अमरकंटक के इर्दगिर्द अवश्य रही होगी; कारण, उसके अपने समीपवर्ती प्रदेश से ऊँचे पर्वत-शिखर पर स्थित होने से ही, बहुत संभव है, प्रत्येक ऊँचे टीले के लिए 'लंका' कहने की चाल पड़ गयी हो।

अभी तक डाक्टर महोदय की उक्त खोज सर्वमान्य नहीं हुई, परन्तु उसने पुरातत्वान्वेषकों के सम्मुख एक तर्क पूर्ण तथ्य अवश्य उपस्थित किया है। इस तथ्य का आधार मुख्यतया उनका अपना अनुसंधान और अनुमान है, जो परंपरागत धारणा में नितांत परिवर्तन कर डालने के कारण लोगों को भले ही खटकता हो, परंतु है विचारणीय अवश्य। और एक युक्तियुक्त विचार, जो किसी महत्वपूर्ण निष्कर्ष का आधार बनने की क्षमता रखता हो, ज्ञान के भंडार का एक अमूल्य रत्न माना जाता है। डाक्टर हीरालाल का उक्त अनुसंधान ऐसा ही है।

डाक्टर हीरालाल विद्वानों एवं जाति के द्वारा अपने जीवनकाल में प्रतिष्ठित थे ही, भविष्यत् में भी सदैव श्रद्धा और सम्मान-पूर्वक स्मरण किए जायंगे। जिन लोगों को ऐसा सौभाग्य प्राप्त होता है, सचमुच, उन्हीं का जीवन सार्थक और धन्य होता है।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरे संस्मरण

[श्री० वासुदेव प्रसाद मिश्र, बी० ए०, एल-एल बी०, वकील, रायपुर, सी० पी०]

प्रांतवासी होने के कारण मैं हीरालाल जी के नाम से बहुत दिनों से परिचित था। प्रथम साक्षात् परिचय के कई वर्ष पहले से उनके लेख और ग्रंथ पढ़ता था, और उनसे परिचय का इच्छुक भी था। एक बार कटनी गया। मेरे एक मित्र घर ढूँढ़ रहे थे। मैं भी उनके साथ था। पता लगा कि एक घर ख़ाली है और हम लोग उसे देखने जा रहे थे। उधर से हीरालाल जी आ रहे थे। मित्र से उनसे परिचय था। उन्होंने मेरा परिचय हीरालाल जी से करवा दिया।

फिर तो यह परिचय मिलना शीघ्र बढ़ा और धीरे-धीरे वे मेरे मित्र, गुरु, और पथप्रदर्शक हो गये, और यही संबंध अंत तक रहा। उनसे मेरी भेंट जब सितंबर १९३३ में हुई तो ४ बजे शाम से ८ बजे रात तक बातें हुईं—रात हुई—लालटेन जल गई—भोजन भी तैय्यार हुआ—और हम लोगों की बातें समाप्त ही न हुईं। इन घड़ियों को मैं कभी नहीं भूल सकता, क्योंकि तभी मुझे हीरालाल जी के मुख से भारतीय इतिहास—भारतीय पुरातत्व और भारतीय संस्कृति पर अंतिम बार विस्तार से सुनने का अवसर मिला था। वैसे तो उनसे एक बार फिर रायपुर स्टेशन पर भेंट हुई जब वे दुरुग जाते समय मुझे पत्र द्वारा वहाँ बुला भेजा था। यही अंतिम भेंट थी। थोड़े दिन बाद ही उनका देहांत हो गया।

डा० हीरालाल जी में अदम्य उत्साह, अथक परिश्रम, सतत प्रयत्न, ज्ञान-प्राप्ति की तीव्र लालसा और नर और नृपति दोनों के कल्याण की अविरत हित-चिंतना की भावना थी।

उनकी छान-बीन करने की प्रवृत्ति बहुत तीव्र थी। लेखक एक बार सबेरे ही चलने वाला था जब यह बात छिड़ पड़ी कि सागर, रायपुर और बुरहानपुर, तीनों में जनसंख्या में कौन बड़ा है" वे कहने लगे अनुमान मत लगाओ। मैं अभी देखकर बतलाए देता हूँ। उसके बाद उन्होंने अलमारी में से सेंसस रिपोर्ट निकाली और कहने लगे 'देखो सच्ची बात यह है। अब अपना मत निर्धारित करो। बिना भली भाँति जाँच किए कभी मत सिद्धांत बनाया करो।' इस प्रकार का सूक्ष्म निरीक्षण उनका स्वभाव ही बन गया था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हीरालाल जी का अतिथि-सत्कार प्राचीन भारत के आतिथ्य-वर्णन का स्मरण कराता था। वे नवागत के सुभीते पर पूर्ण ध्यान रखते थे। लेखक को एक बार उनका आतिथ्य भरपूर देखने को मिला था। मैं और हीरालाल जी भोजन के लिए साथ बैठे। वे निरंतर कहते रहे, 'अरे! इन्हें और दो।' मेरे आनाकानी करने पर वे कह देते कि 'देखो जी। तुम जवानी में इतना खाओगे तो हमारी उमर में क्या करोगे।" दूसरे दिन सवेरे ७ बजे मुझे बिलासपुर पैसेंजर से जाना था। मैंने उनसे निवेदन किया कि आप क्यों कष्ट करते हैं। इतना सवेरे प्रबंध भी न हो सकेगा, किंतु वे न माने। उन्होंने तड़के ही मुझे इतना खिला दिया कि रात को ९ बजे तक कुछ भी मार्ग में खाने की आवश्यकता न हुई।

हीरालाल जी वृद्ध थे किंतु उनके विचार प्राचीन न थे। वे आधुनिक युग की उन्नतिशील प्रगति से सहानुभूति रखते थे।

उनसे बातें करने में बड़ा आनंद मिलता था। उनकी बातें इतनी ज्ञातव्य रहती थीं, उनमें विद्वत्ता का इतना समावेश रहता था, वे उनके जीवन के अनुभव से इतनी ओत-प्रोत रहती थीं कि घंटों बीत जाते थे और पता ही न लगता था कि कितना समय बीत गया। हीरालाल जी को हिंदी कविता से विशेष प्रेम था। वे रहीम, कबीर, तुलसीदास, सूरदास आदि प्रसिद्ध हिंदी कवियों की पंक्तियों को बहुधा बातों में उद्धृत किया करते थे। उनकी स्मरणशक्ति बहुत तीव्र थी।

वे प्रकृति के प्रेमी थे। उन्होंने पुस्तकालय के नीचे के भाग में एक ओर बगीचा लगवाया था। वह बहुत सुहावना था। पुस्तकालय से दृष्टि उसी बगीचे की सघन लताओं और पुष्पान्वित वल्लरियों पर पड़ती थी। वे उसमें कुछ देर तक टहला भी करते थे। उसका नाम उन्होंने 'हीरा वाटिका' रक्खा था।

नामकरण से उन्हें विशेष प्रेम था। उन्होंने अपने वंश के निवास-स्थान का नाम रायबाड़ा रक्खा था। मुहल्ले का नाम 'ईश्वरपुरा' अपने पिता के नाम पर रक्खा था। इसी प्रकार गोकुल-दरवाज़ा, केदार-बैठक, और अन्य सुहावने नाम भी रक्खे थे।

हीरालाल जी विद्वान् थे, किंतु विनोद-प्रियता से शून्य नहीं थे। उनका विनोद बहुत चुभता और चुटकीला रहा करता था। एक बार हम लोग कई मि

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बैठे बातें कर रहे थे। इतने ही में हीरालाल जी आ गये और बोले "अरे भाई! एक बात मैं पूछनेवाला था सो भूल जाता था। यह तो बतलाओ कि क्या तुम पहले मिस्र देश से आये थे!" मैं चकराया। मैंने कहा 'कैसे'? उन्होंने उत्तर दिया 'अरे! यदि मिस्र देश से नहीं आए तो मिस्र कैसे हुए। लोग कहते हैं जो ब्राह्मण पहले मिस्र देश से आ गए थे, वही अब मिस्र कहलाते हैं।' मैंने इस पर कहा, 'रायबहादुर साहब, हम लोग अफ्रीका के मिस्र देश से न आकर भारत ही के मिस्र देश से—दोआब से—मध्यप्रांत में आए हैं।' इतना सुनकर हीरालाल जी ज़ोर से हँसने लगे और हम सब लोग भी उसी हँसी में शामिल हो गए।

उनका घर विद्वानों और मित्रों की अतिथिशाला था। भारत के भिन्न-भिन्न भागों से आए हुए विद्वान् रास्ते में कटनी में ठहर जाया करते थे, उनके दर्शन कर अपने को कृतकृत्य मानते थे। उनके मित्र और परिचित सज्जन भी इसी प्रकार कटनी होकर जाते समय उनसे मिलने की लालसा को न रोक सकते थे।

हीरालाल जी का ध्यान मध्यप्रांत के पुरातत्त्व और इतिहास की उन्नति की ओर सर्वदा रहता था। लेखक बड़ौदे के ओरियंटल कानफ़रेंस के अधिवेशन में गया हुआ था। हीरालाल जी महाराज गायकवाड़ के 'गेस्ट-हाउस' (अतिथिशाला) में ठहरे हुए थे। सब विद्वानों के ठहरने का प्रबंध वहीं पर था। लेखक उनसे मिलने गेस्ट-हाउस गया हुआ था। १० बजे दिन का समय था। कानफ़रेंस की कार्य्यकारिणी की बैठक हो रही थी। २ घंटे तक उसके समाप्त होने की आशा न थी। हीरालाल जी लेखक के नाम की 'स्लिप' पाकर तुरंत आए और बोले, 'देखो जी, बैठना, जाना मत। और कोई मध्यप्रांत के आए हैं या नहीं।' लेखक से यह निश्चितरूप से जानकर कि केवल विश्वंभरप्रसाद जी गौतम और कृष्णसेवक जी, रिटायर्ड ई० ए० सी० ही और आए हुए हैं उन्होंने कहा 'देखो, मध्यप्रांत में कितनी उदासीनता है।' इस वृद्ध विद्वान् के हृदय में कितनी तीव्र अभिलाषा थी कि मध्यप्रांत की उन्नति होवे।

मैंने देखा कि उनकी सम्मति की प्रतिष्ठा प्रत्येक विभाग में की जाती थी। उनका हाथ प्रत्येक कार्य्यवाही में पूरा था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रतिनिधियों में उनकी प्रशंसा अकसर हुआ करती थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय के एक प्रतिनिधि को मैंने कहते सुना "निस्संदेह वे पंडितों में अग्रगण्य हैं और उनका स्थान सब से ऊँचा है"।

उनका शरीर अब इस संसार में नहीं है, परंतु पुरातत्त्व और इतिहास के वेत्ता हीरालाल अमर हैं।

स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी का स्वजातीय प्रेम

[शांतिबाई सराफ़, नासिक]

हमारे समाज-सम्राट रायबहादुर डाक्टर हीरालाल ने लेखिका की शादी में गुरारी सरीखे छोटे से ग्राम में मेहमान होकर मेरे पिता के झोंपड़े में प्रसन्नता के साथ आतिथ्य स्वीकार किया था। यह आप का स्वजातीय प्रेम ही था। कहाँ तो एक साधारण किसान की झोंपड़ी और कहाँ इतने लब्धप्रतिष्ठ और ऐश्वर्यशाली आप इतना ही नहीं, शादी की प्रत्येक छोटी-बड़ी रस्म में आप सम्मिलित होकर प्रत्येक स्वजातीय और विजातीय से इस प्रकार मिलते थे मानो कोई निहायत मामूली आदमी हों। आप हमेशा ऐसे प्रसन्न रहते मानों आप किसी बड़े नगर में राजा-रईस के घर पर ठहरने का सुख भोग कर रहे हों। मेरी शादी में एक विशेष बात यह हुई कि मेरे पिता जी ने नक़द दहेज न देकर उसके बदले में एक छोटा सा पुस्तकालय दिया। इसकी श्रीमान् ने बहुत ही प्रशंसा की। इस पुस्तकालय का नामकरण आपने किया और इसका नाम 'शांति-सुमन पुस्तकालय' रख दिया। आपने मुझको अपनी लिखी पुस्तकें भी प्रदान करने की कृपा की, और उस समय एक अत्यंत शिक्षाप्रद भाषण पुस्तकालय के महत्त्व पर दिया, जिसका प्रभाव जनता पर बहुत पड़ा।

उनके देहांत का समाचार वज्रपात के समान आया, परंतु आँसू बहाने के सिवा और क्या किया जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रोत्साहन

[श्री गंगाप्रसाद जायसवाल, डुमराँव]

अभी कुछ ही वर्ष हुए (दिसंबर, सन् १९२७ ई० में) मिरज़ापुर महासभा में आपकी तेजोमय सौम्य मूर्ति का दर्शन एवं वार्त्तालाप तथा कर-कमलों में स्वरचित "राष्ट्रीय-मधुर-वंशी" समर्पित करने का शुभ अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। पुस्तक समर्पित करते समय मैंने कहा था—"भगवन्! आपकी सेवा में यह तुच्छ सेवक स्वरचित पुस्तक सादर एवं सभक्ति समर्पित करता है। आशा है, आप इसे स्वीकार करेंगे।" यह सुनते ही अति आह्लादित भाव से अपने युगल कर-कमलों को बढ़ाकर सहर्ष स्वीकार करते हुए, आपने दो बार धन्यवाद कहा था। पश्चात् आपने एक कृपा-पत्र द्वारा उत्साहित करते हुए शुभाशीर्वाद दिया था, जो आप ही के शब्दों में इस प्रकार है—

श्रीयुत गंगाप्रसाद जी,

आप की रम्य रचना पढ़ी। आपने लिखा है "कवित्वं दुर्लभं" वह अक्षरशः सत्य है। परन्तु आशा है "शक्ति" क्रमशः आजावेगी।

कटनी } भवदीय

ताः १५—१—२८ } हीरालाल

ऐसे सर्व शुभगुणालंकृत, अनेकानेक भाषाओं के प्रकांड पंडित से मैं शुभाशीर्वाद एवं उत्साह पाकर कृतार्थ हो गया और द्विगुण उत्साहित होकर "सत्य श्रमाभ्याम् सकलार्थ सिद्धि" अर्थात् सच्चे परिश्रम से सब मनोरथ सिद्ध होते हैं, ऐसा समझ कर मैं कर्त्तव्य-पथ पर अटल रहा। उस शुभाशीर्वाद की महान-महिमा से मेरे हृदय में उसी समय उत्कट अभिलाषा उत्पन्न हो गई कि मेरी तीन-चार पुस्तकें जो अप्रकाशित हैं उन्हें भी शीघ्र प्रकाशित करा कर सर्वप्रथम डाक्टर साहब की सेवा में सादर एवँ सभक्ति समार्पित करूं और शुभाशीर्वाद पाकर पुनः कृतार्थ हो जाऊँ! हमारी इन शुभ आशाओं पर, हाय! विकराल-काल ने पानी फेर दिया!

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हा ! हीरालाल

[श्री सरयूप्रसाद वर्मा, 'आशुबोध', काशी]

कैसे समझाएँ कुछ सूझ पड़ता ही नहीं,
भारत की वह महान प्रतिमा कहाँ गई।
सत्तर बरस तक उत्तरोत्तर प्रकाशमान,
विद्या-अध्ययन की मधुरिमा कहाँ गई।
जो व्याप्त हो रही थी 'आशुबोध' बसुधापै,
पुरा-तत्व-विज्ञता की महिमा कहाँ गई।
फहराती जिनकी थी विजय पताका कभी,
हैहयों की गुण-गान-गरिमा कहाँ गई॥
मिलता न जीवन का पथ था दुरूह हमें,
रवि सा उदय हुआ तम के हटाने को।
हम अस्तप्राय हुए जा रहे थे 'आशुबोध',
ललकारा उसने ही ऊपर उठ जाने को।
उसने ही फूका स्वाभिमान का महान मंत्र,
'हम भी हैं कुछ' यह जग के बताने को।
वह तो परिश्रम सदैव करता ही रहा,
मरकर स्वयं हमें अमर बनाने को॥
कैसा था कौन था और वह कहाँ का था,
जिसके निमित्त ब्याल बना क्रूर काल था।
धन निर्धनों का या कि बंधु बंधु-हीनों का,
या कि जाति-जननी का उर-मणि-माल था।
वह विनम्र सेवक या सच्चा सिपाही था,
या कि वह विश्व की विभूति सुविशाल था।
कौन विधि 'आशुबोध' उसका बधावे बोध,
हीरालाल वास्तव में हीरा था कि लाल था॥

———

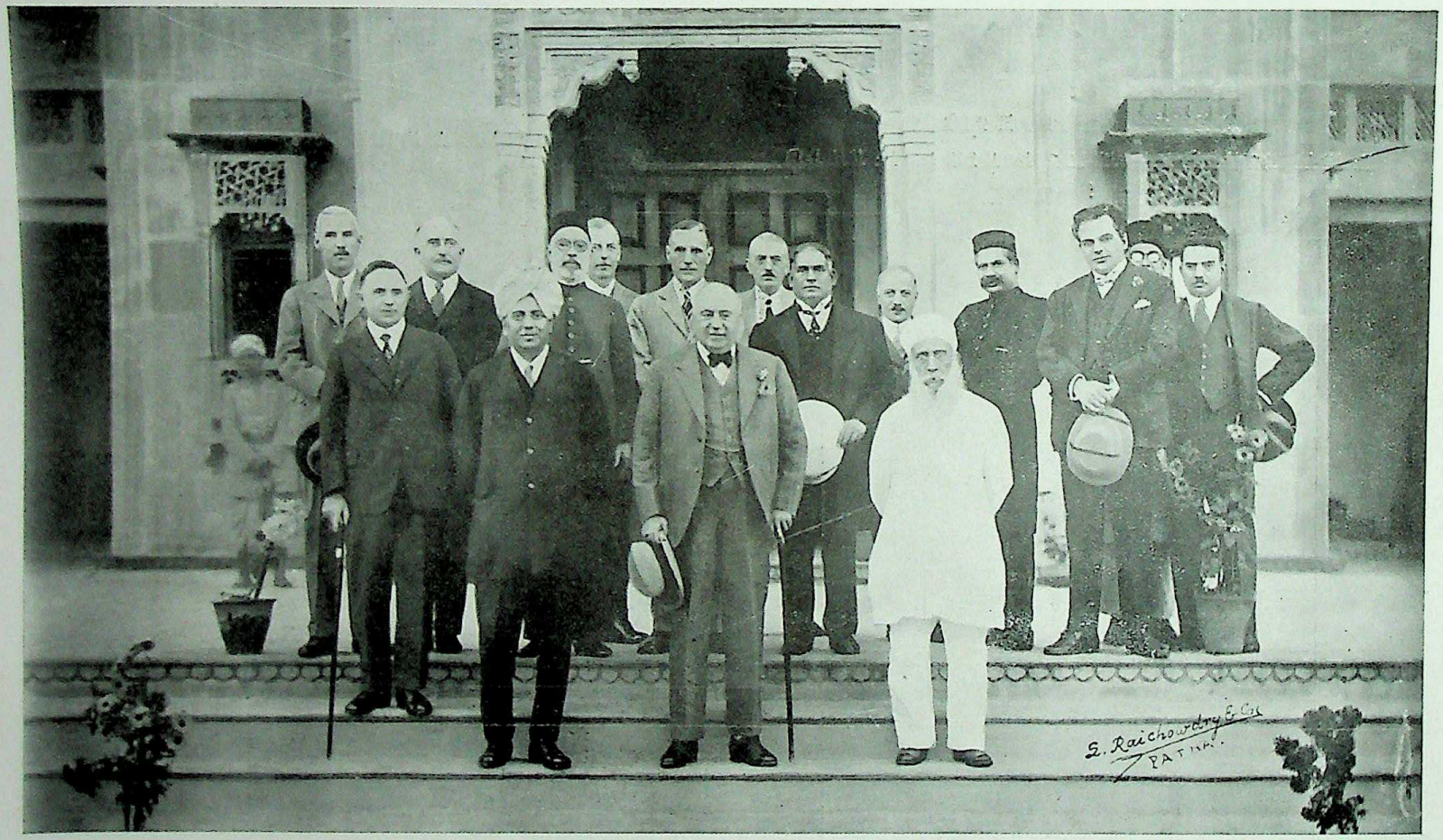

षष्ठम ओरियंटल कानफ़रेंस, पटना

बीच में गवरनर, एक ओर हीरालाल जी (सभापति) और दूसरी ओर सर जीवनजी मोदी (पूर्व वर्ष के सभापति) हैं। पीछे की पंक्ति में गवरनर और मोदी जी के बीच में श्री काशीप्रसाद जायसवाल हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

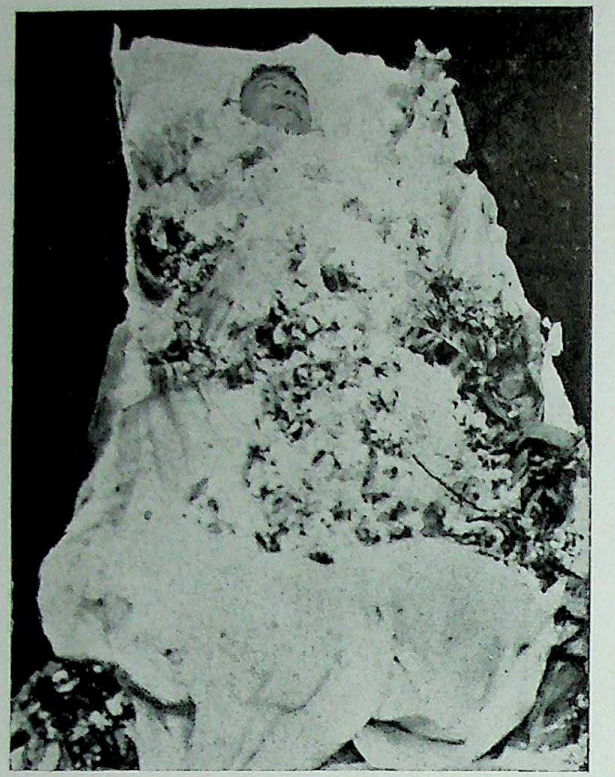

स्वर्गीय हीरालाल जी का शव
(कटनी में लिया गया चित्र)

हीरा-वाटिका; पटना-द्वार
हीरालाल जी ने अपनी वाटिका का नाम हीरावाटिका रक्खा था
और इसके द्वार का नाम "पटना-द्वार"।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हैहय-क्षत्रिय-मित्र

अखिल भारतवर्षीय हैहय-क्षत्रिय-महासभा तथा हैहय-क्षत्रिय-सभा,
प्रयाग, का सचित्र मासिक मुख-पत्र

हीरालाल अंक

भाग ३२ फ़रवरी १९३६ अंक २

क्या कहें !

[श्री बलदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी०]

वह मधुर मोहिनी मूर्ति कहाँ,
श्रीमुख का भोला भाव कहाँ।
छलहीन रसीली वे बातें,
वह वर विनोद का चाव कहाँ।

वह संयम, वह मुनि सा जीवन,
वह विद्या का भंडार कहाँ।
क्या कहें, कहें भी तो किससे,
वह वाणी का शृंगार कहाँ।

भारत ही क्यों, संसार सभी,
प्रतिभा से मुग्ध बनाया था।
उत्कर्ष चरम पाकर भी, बस,
सादा व्यवहार सुहाया था।

सी० पी० के मोती थे तुम ही,
तुम गए रत्नहीना है यह।
हा, हीरा लाल—सभी खोकर,
देखो कैसी दीना है यह।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कितनों का हाथ पकड़ तुमने,
उन्नति का पथ दिखलाया था।
कितनों को पूर्वज अग्रज सा—
बन कर तुमने अपनाया था।

वह वत्सलता, निश्छल मैत्री,
वह कृपा कहाँ हम पायेंगे।
वह मौन महत्ता लखने को,
हम किसके सन्मुख जायेंगे!

तुम अंतर्धान हुए हो क्या,
नंदन-वन-सौरभ पाने को?
अमरों के बीच गये हो क्या,
यों अमर स्वयं कहलाने को?

तुम अमर यहीं थे, मित्रों का—
मन ही न निवास तुम्हारा है;
ग्रंथों में आज सर्प-मणि सा,
संरक्षित बास तुम्हारा है।

फिर क्यों हम सब को यों छोड़ा,
क्या आवश्यकता हुई वहाँ?
आदर्श कहाओगे निश्चय,
जाओगे 'साहब'! जहाँ जहाँ।

हैं विवश वियोगाकुल हम सब,
तुम रहो वहाँ सुख शांति गहे।
बस इतनी विनय हमारी है,
हम सब का भी कुछ ध्यान रहे।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्मृति के पथ पर

[श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव]

छः-सात वर्ष के वय की बहुत-सी बातें याद नहीं हैं, परंतु वह दिन आज भी स्मृति-पटल पर स्पष्टरूप से अंकित है जब रायबहादुर डाक्टर हीरालाल के प्रथम-दर्शन मुझे उसी आयु में प्राप्त हुए थे। इस बात में औरों को बनावट का संदेह हो सकता है, पर इस स्मृति के कतिपय विशिष्ट कारण हैं। उस समय हम लोग राजनाँदगाँव में रहते थे। यह रियासत छत्तीसगढ़ में है। यहाँ हम लोग 'परदेशी' कहे जाते थे। उस समय, लगभग सन् १९०७ में, वहाँ 'परदेशियों' की संख्या अत्यंत न्यून थी। जो दो-चार घर थे, उनमें तो आपसी हेल-मेल अत्यंत घनिष्ट था ही, जो दो-चार 'परदेशी' भूले-भटके वहाँ आ जाते थे, उनका स्वागत इन घरों में आत्मीयों के समान होता था। इन्हीं भूले-भटकों में रायबहादुर हीरालाल—तत्कालीन 'हीरालाल साहब'—थे। वे उन दिनों एजेंसी इंस्पेक्टर थे। राजनाँदगाँव के स्कूलों का मुलाहिज़ा करने आये थे। उस दिन मेरे यहाँ उनका निमंत्रण था। निमंत्रण का दिन बालकों के लिए उत्सव का दिन तो होता ही है परंतु विशेष तैयारी के कारण यह विशेष उत्सव का दिन था। उस पर एक आश्चर्यजनक घटना घट गई। मेरी माँ किसी के सामने नहीं निकलती थीं क्योंकि उन दिनों और उसके बहुत दिनों बाद तक भी हम लोग कट्टर परदा-पंथी थे। परंतु ज्यों ही हीरालाल साहब आए, मेरी माँ ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और उन्होंने भी पुत्रवत् मेरी माँ का अभि-वादन किया। इसके बाद वार्तालाप में जब हीरालाल साहब ने ठेठ कटनी की स्थानीय भाषा का प्रयोग किया, तब हम बालकों को निश्चय हो गया कि ये अवश्य हमारे कोई घनिष्ट संबंधी हैं। परन्तु केवल इन्हीं बातों से स्मृति अटल न बनी रहती यदि 'रायबहादुर डाक्टर हीरालाल, बी० ए०, एम० आर० ए० एस०' मेरे नाम के पीछे एक पूँछ न लगा जाते। भोजन के उपरांत मुझ से उन से न जाने कैसे यह बहस छिड़ गई कि मेरा नाम—'रामानुज लाल'—उनके नाम 'हीरालाल' से बड़ा है। यह तो उन्होंने मान लिया कि मेरा कहना सच है परंतु यह पख लगा दी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कि 'रामानुज लाल' भी बहुत बड़ा नाम नहीं है; इससे भी बड़े-बड़े नाम उन्होंने सुने हैं और यदि मैं चाहूँ तो वे इसी नाम को और भी बढ़ा सकते हैं। मेरे आग्रह करने पर उन्होंने कहा कि यथार्थ में नाम यह होना चाहिए—'रामानुज प्रसाद सिंह लाल बहादुर'। इन दिनों तो मैं अपने नाम और नाम द्वारा सांकेतिक लक्षणों से जितना परेशान हूँ, वह मैं ही जानता हूँ; परंतु उस समय यह परिवर्धित नाम कुछ ऐसा जँचा कि मैंने तत्काल उसका प्रयोग आरंभ कर दिया और जब तक दो-चार वर्ष में मुझे अपनी मूर्खता का ज्ञान नहीं हो गया, तब तक अपने पिता तथा बड़े भाई के मित्रों में लगातार इस विशालकाय नाम का प्रचार करता रहा।

इसके बाद दीर्घ काल तक मेरा जीवन 'रायबहादुर-हीरालाल-विहीन' रहा। हाई-स्कूल-जीवन के प्रारंभ में 'हितकारिणी' में रायबहादुर का नाम देखकर, या पुस्तकालय में उनकी पुस्तकें अवलोकन कर, संगी-साथियों से यह डींग भले ही मार लिया करता था कि रायबहादुर साहब मेरे पिता के विद्यार्थी और मेरे घनिष्ठ मित्र हैं, परंतु प्रत्यक्ष संबंध के नाते एक शून्याकार के अतिरिक्त और कोई वस्तु न थी।

सन् १९२० के लगभग जब मैं कटनी के लब्ध-प्रतिष्ठ पत्रकार और लोक-सेवी श्रीमान् जार्ज फ़ारेस्टर के पास काम करने लगा, तभी रायबहादुर साहब भी डिपटी कमिश्नरी से अवकाश ग्रहण कर कटनी में शांत-जीवन व्यतीत करने की इच्छा से आ पधारे। कटनी उनकी जन्म-भूमि थी। वे उन बड़े आदमियों में से थे जिनके जीवन में प्राचीन संबंध एक विशेष महत्त्व रखता है। सच पूछा जाय तो कटनी रायबहादुर के लिए अधिक उपयुक्त स्थान नहीं था। उनके अमित ज्ञान-पिपासा का निवारण कटनी के समान छोटे स्थान से नहीं हो सकता था। परंतु यह तर्क-प्रणाली हम जैसे संकीर्ण हृदय वालों के लिए है। रायबहादुर के स्नेही हृदय में कटनी का क्या महत्त्व था, यह वही जान सकता है जो कृष्ण और व्रज का संबंध समझता हो।

मेरे कुछ मित्रों ने मेरी चर्चा रायबहादुर साहब से कर दी थी; परंतु एक समय नाम का वितंडावाद खड़ा कर देने वाले मेरे वीर हृदय में अब इतना साहस नहीं था कि उनके सम्मुख जा खड़ा होता। एक दिन टेनिस ख़तम होते न होते रायबहादुर साहब श्रीयुत जार्ज फ़ारेस्टर के यहाँ आ पहुँचे। अन्य अपरिचित सज्जनों के साथ-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

साथ मेरा भी उनसे परिचय कराया गया। नाम सुनकर उन्होंने मेरी आधी वंशावली कह डाली और फिर कुछ बनावटी क्रोध दिखलाकर बोले कि वे मुझ से बहुत नाराज़ हैं, क्योंकि मैं तब तक उनसे मिलने नहीं गया था।

इस प्रकार एक दिन संध्या के पश्चात् मैं रायबहादुर साहब की सेवा में पहुँचा। अब तो रायबहादुर साहब के निवास-स्थान 'रायबाड़ा' में अनेक इमारतें बन गई हैं, परंतु उस समय उनके अध्ययन-कक्ष के अतिरिक्त कोई प्रमुख स्थान न था। दूसरी मंज़िल में एक लंबा सा कमरा था, एक ओर मेज़ पर लिखने-पढ़ने का सामान, अलमारियों में पुस्तकें और इधर-उधर पाँच-छः कुर्सियाँ—यही उनका 'अध्ययन-कक्ष' था। खिड़की के पास एक पीपल की डाल थी और खिड़की के नीचे एक छोटी सी फुलवारी थी। काम से थक जाने पर रायबहादुर फुलवारी में टहलने लगते थे। दिया-बत्ती हो चुकी थी। रायबहादुर मेज़ के पास बैठे कुछ कागज़-पत्र देख रहे थे। पहुँचते ही हँसकर स्वागत किया और एक कुर्सी पर बैठने का इशारा किया। कुछ देर तक सब लोगों का कुशल-समाचार पूछते रहे। फिर अचानक मेज़ पर के कागज़ों की ओर देखकर कहने लगे—'मैंने सुना है कि तुम बड़े साहित्य-प्रेमी हो। इधर मैं हिंदी-कवियों की एक परिचयात्मक सूची तैयार कर रहा हूँ। क्या इसमें कुछ सहायता दे सकते हो?'

साहित्यिक तो मैं अपने को तब भी समझता था और अब भी समझता हूँ, परंतु रायबहादुर के समान सज्जनों के सम्मुख साहित्यिकता की डींग हाँकने में उतनी सुविधा नहीं होती जितनी लेख छपाने के लिए उत्सुक नौसिखियों के सम्मुख होती है। अतएव गंभीर मौन का आश्रय ले मैंने अल्प-ज्ञान को महत्त्व देने का प्रयत्न किया, परंतु रायबहादुर के मंदिर में बिना भजन गाए छुटकारा कहाँ! उन्होंने कुछ कागज़-पत्र और कुछ नसीहतें मेरे गले बाँध ही दीं और इस प्रकार मेरा उनका रोज़ रोज़ का सम्मिलन प्रारंभ हुआ। यह कार्य लगभग तीन मास में समाप्त हुआ।

कवियों की परिचयात्मक सूची में तो मुझे बहुत उत्साह था नहीं—आज यदि परीक्षा ली जाय तो सिवाय अपने किसी कवि का परिचय नहीं दे सकता—वह भी निष्पक्ष भाव से नहीं—परंतु रायबहादुर का घनिष्ट परिचय प्राप्त करके यह विश्वास

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हो गया कि मैं कभी बड़ा आदमी नहीं हो सकता। मुझ नवयुवक काहिल से (यदि वर्षों की गणना से मनुष्य नवयुवक होता है तो उस समय मेरी अवस्था बीस-बाइस वर्ष की थी) चौगुना काम तो वे उस समय करते थे जब वे ऐक्टिव-सर्विस से अवकाश ले चुके थे। उनकी विचार-शक्ति इतनी प्रबल और उज्वल थी कि एक प्रमाण से बात की बात में पचीसों तथ्य की बातें निकाल लिया करते थे। उनका साहित्यिक-ज्ञान इतना गंभीर था कि सूची बनाने में एक ठोस कवि-सम्मेलन का सुख मिल जाता था।

परंतु मैं यदि रायबहादुर के ज्ञान की चर्चा करने लगूंगा तो विद्वद् समाज मेरे ज्ञान की हँसी उड़ाने लगेगा—अतएव यह विषय तो मैं अधिकारी-वर्ग पर छोड़ता हूँ और अपने को केवल व्यक्तिगत परिचय की सीमा में निबंधित रखने का प्रयत्न करता हूँ।

मेरे हृदय में यह भाव बहुत उछल-कूद मचाता था कि रायबहादुर स्त्री-शोक, पुत्र-शोक को भूल कर एकांत जीवन किस प्रकार व्यतीत करते हैं। अकस्मात् उस समय मेरा भी जीवन एकांत था, परंतु शांतिपूर्ण नहीं था। धीरे-धीरे मुझे यह पता चला कि रायबहादुर इतनी आयु, अनुभव और अधिकार का भार लेकर भी व्यवहारिक जीवन में निरे शिशु हैं। संयोग-वश मुझे कई बड़े आदमियों से घनिष्ठ परिचय प्राप्त करने का मौका मिला है, परंतु जो सरलता रायबहादुर में देखी, वह अतुलनीय है। यों तो वे पंडितोचित मत-मतांतर में भी कभी उत्तेजित नहीं होते थे, परंतु साधारण जीवन में और साधारण लोगों से व्यवहार करने में उनकी आँखें कुछ ऐसा भाव धारण कर लेती थीं और उनकी हँसी कुछ ऐसी सरलता प्राप्त कर लेती थी, कि मुझे हर बार उनकी आयु में संदेह होने लगता था। स्पष्ट पूछने की तो कभी हिम्मत नहीं पड़ी, परंतु कभी-कभी वे अपनी पेटेंट हँसी हँस कर कहा करते थे कि 'विद्या' उनकी एक मात्र सहचरी है।

इस प्रकार रायबहादुर के जीवन के दो विभाग थे—एक में वे 'चिर-साकार' शिशु थे और दूसरे में 'चिर-कुमार' प्रेमी। यही कारण था कि वे संसार की क्षुद्रताओं से, वैमनस्य से, विद्वेष से, संकीर्णताओं से बहुत दूर थे।

एक उदाहरण लीजिए। इस बुढ़ौती में दो चार मित्रों ने मिल कर उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में जा ढकेला। उनके सम्मुख ऐतिहासिक सत्य को असत्य

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रमाणित कर देना जितना कठिन था, व्यावहारिक असत्य को सत्य प्रमाणित कर देना, उतना ही सरल था। उन को यह लालच दिलाया गया कि यदि वे प्रांतीय-व्यवस्थापिका-सभा में पहुँच गए, तो शिक्षा-विभाग की बागडोर उनके हाथों में पहुँच जायगी। बेचारे शिक्षा के तो क्रीत-दास थे—क्या जानते थे कि राजनीति वह शासन-नीति नहीं है जिसका वे डिपुटी कमिश्नरी के ज़माने में सम्भोग कर चुके थे, वरन् वह कटु-नीति है जिसमें संसार की तमाम अजीबो-ग़रीब उच्छृंखलता तांडव करती रहती है। आगए चक्कर में, और मुझे भी रायबहादुर के कैनवैसिंग-एजेंट बनने का दुर्भाग्य प्राप्त हुआ।

पहले कुछ दिन तो मज़े में कैनवैसिंग होती रही, परंतु जैसे-जैसे चुनाव के दिन समीप आए वैसे-वैसे राम-बाण 'पोलिटिकल-स्टंट्स' का प्रयोग होने लगा। इनके विरोधी थे जबलपुर के प्रख्यात वक्ता बाबू ज्ञानचंद्र वर्मा, बैरिस्टर एट-ला। एक सुंदर संध्या में उक्त बाबू साहब कटनी पधारे और जनता की एक वृहद् सभा में मेज़ पर 'रसल और हीरालाल' कृत 'ट्राइब्स ऐंड कास्ट्स ऑफ़ सेंट्रल प्राविंसेज़' की एक जिल्द पटक कर कुछ इस प्रकार बोले—'भाइयो! जिस धुरंधर विद्वान की विद्वत्ता की दुहाई देकर मेरे चुनाव का विरोध किया जा रहा है, उसकी विद्वत्ता का एक उदाहरण देख लो! वह अपनी इस पुस्तक की अमुक पृष्ठ पर लिखता है कि वनवास-काल में जब सीता जी ने, राम और लक्ष्मण के साथ, गंगा पार किया तब बीच धार में पहुँच कर उन्होंने यह स्तुति की—हे गंगा मैया! यदि मैं अपने पति और देवर के साथ ससुराल लौट कर फिर तुम्हारे दर्शन करूँगी तो तुम्हें इतने घड़े शराब के और इतना मांस चढ़ाऊँगी।'

जैसे फूस के झोपड़े में आग लग जाय, वैसे ही इस वक्तव्य से जन-साधारण के हृदय का कोना-कोना भभक उठा। बड़े-बड़े व्याख्यान हुए, बड़े-बड़े शास्त्रार्थ हुए, परंतु रायबहादुर का पाया जो गिरा सो गिरा। अंत में कटनी के स्वर्गीय बाबू विश्वनाथ दास जी वकील ने, जो लंबे व्याख्यान देने के लिए दो-चार ज़िलों में बदनाम थे, रायबहादुर की ओर से जनता को एड्रेस किया और जैसे-तैसे जनता का कुछ समाधान भी किया। परंतु एक तो उस दिन भरी सभा में बरसात ने ज़ोर-शोर से दौरा कर दिया, और दूसरे जबलपुर के स्वनामधन्य बाबू गोविंददास जी आ धमके

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और उन्होंने कहा—'भाई, हमसे और रायबहादुर साहब से कोई लड़ाई नहीं है। रायबहादुर साहब तो हमारे बड़े सन्मानीय मित्र हैं और हमें उनका गर्व है, परंतु हम यह चाहते हैं कि व्यवस्थापिका सभा में केवल ऐसे दल के लोग जावें जो पूर्णरूप से संगठित हों और जो एक स्वर में राष्ट्र की माँग अधिकारियों के सम्मुख पेश कर सकें। इस समय ऐसा संगठित दल केवल कांग्रेस-दल है और बाबू ज्ञानचंद्र उस दल के प्रतिनिधि हैं। अतएव समय और परिस्थिति को देखते हुए बाबू ज्ञानचंद्र का ही चुनाव उचित होगा।'

दो-चार मित्रों के अनुरोध से रायबहादुर के जिस राजनैतिक जीवन का श्री-गणेश हुआ था, इस व्याख्यान से उस जीवन की इति हो गई। इसके बाद राय-बहादुर ने इस क्षेत्र में फिर कभी पैर नहीं रक्खा।

जब जनता में इतनी हलचल मची हुई थी तब भी रायबहादुर के हृदय में पूर्ण शांति का साम्राज्य था। इन दिनों मैं प्रतिदिन, और कभी-कभी दिन में कई बार, उनसे मिलने जाया करता था। यद्यपि मैं थप्पड़ का जवाब थप्पड़ और पत्थर का जवाब पत्थर समझता हूँ और तत्कालीन उत्तेजना के कारण मैं अपना उपदेश प्रकट भी कर दिया करता था, परंतु रायबहादुर के माथे पर कभी शिकन नहीं पड़ी। उनकी शब्दावली में निंदा और अपशब्द का कहीं स्थान ही न था। वे केवल इतना ही कहते थे कि उक्त ग्रंथ तथा उक्त कथन का उत्तरदायित्व केवल उन पर या मिस्टर रसल ही पर नहीं वरन् महर्षि वाल्मीक पर भी है जिन्होंने ऐसे महत्त्वपूर्ण स्थान पर ऐसे द्वैआर्थिक शब्दों का प्रयोग किया और यदि टीकाकार उन शब्दों के अर्थ-विशेष को प्रमाणित कर सकें तो उन्हें अपना मत बदलने में कोई आपत्ति नहीं होगी। अन्य उछल-कूद में उन्हें कोई दिलचस्पी ही नहीं थी। उन्होंने शोर मचाने का भार उन मित्रों पर छोड़ दिया था जो इस परिस्थिति के उत्तरदायी थे और स्वयं अपने अध्य-यन-कक्ष में बैठे, मानो पीपल की डाल पर बैठी चिड़ियों के स्वर में स्वर मिला, किसी प्राचीन युग के प्राचीन संगीत में योग देते रहते थे।

यह इसलिए कहता हूँ कि इसके बाद ही 'झारखंड झंकार' का जन्म हुआ। मेरे भाई, रायसाहब रघुबीर प्रसाद, उस समय कोरिया स्टेट के सुपरिंटेंडेंट थे। एक दिन राय बहादुर ने कहा कि कोरिया तथा उसकी पड़ोसी रियासतें मुग़ल-

स्वर्गीय श्री ईश्वरदास जी
(हीरालाल जी के पिता)

स्वर्गीय श्री गोकुलप्रसाद जी
(हीरालाल जी के छोटे भाई)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय श्री केदारनाथ जी राय

आप हीरालाल जी के पुत्र थे; आपका देहांत २२ वर्ष की आयु में (सन् १९१२ में) ही हो गया।

डा० चंद्रभानु जी राय

आप हीरालाल जी के सब से बड़े भतीजे हैं और इस समय सी० पी० प्रॉविंशियल सरविस में डाक्टर हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काल में झारखंड के नाम से प्रसिद्ध थीं। यदि उनका ऐतिहासिक, भौगोलिक तथा राजकीय वर्णन पुस्तक-रूप में प्रकाशित हो जाय तो अन्य राजनैतिक विभागों के अनुसार इस विभाग पर भी काफ़ी प्रकाश पड़ेगा। उसी समय भाई साहब को पत्र लिखा गया और रायबहादुर के प्रयत्न तथा प्रोत्साहन से यह पुस्तक कुछ ही दिनों में तैयार हो गई।

इस पुस्तक की तैयारी में मैं मध्यस्थ था। भाई साहब के काग़ज़-पत्र रायबहादुर के पास ले जाता और उनके उत्तर भाई साहब तक पहुँचाता। रायबहादुर इस विभाग के इतिहास से तो परिचित थे ही, इस समूचे भूमि-खंड का निरीक्षण भी कर चुके थे। इस विभाग के मूल-निवासी, उनके रहन-सहन, उनकी भाषा इत्यादि का ऐसा रोचक वर्णन करते थे कि मुझ जैसे पुरातत्व-द्वेषी को भी कुछ कौतूहल हो आता था। कुछ दिनों बाद जब मैं श्रीमान् कोरिया-नरेश का प्राइवेट सेक्रेटरी होकर गया तब रायबहादुर के शब्द-चित्र नेत्रों के सम्मुख आए। बाद में ज्ञात हुआ कि श्रीमान् कोरियाधिपति अपने राज्य के मूलनिवासियों के जीवन पर समुचित प्रकाश डालने के इच्छुक हैं। अतएव उनकी सम्मति से मैंने रायबहादुर को इस संबंध में एक पत्र लिखा। उसके उत्तर में रायबहादुर ने एक अत्यंत प्रोत्साहन-पूर्ण पत्र भेजा और ऐसी सब सामग्री की सूची भी भेज दी जिससे शृंखलाबद्ध खोज में सहायता मिल सकती थी। इस कार्य के लिए श्रीमान् राजा साहब ने एक कार्य-क्रम भी तैयार किया परंतु कतिपय राजकीय प्रतिबंधों के कारण इस दिशा में उस समय कोई काम न हो सका। मेरे आने के बाद यह कार्य प्रारंभ हुआ या नहीं, इसका मुझे पता नहीं है, परंतु कोरिया के पड़ोसी राज्य-सुरगुजा में, हाल ही में, एक प्राचीन रंगांगण का पता लगा है जो ऐतिहासिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण खोज माना गया है। इससे रायबहादुर का यह कथन और भी सत्य प्रमाणित हो जाता है कि झारखंड विभाग में महत्त्वपूर्ण खोज की पर्याप्त सामग्री है।

कोरिया के लगभग तीन वर्ष के जीवन के पश्चात् मैं फिर से रायबहादुर के पड़ोस अर्थात् जबलपुर में आगया और इस बार हिंदी के एक विनम्र सेवक के रूप में मैंने उनका द्वार खटखटाया। मेरा तो रायबहादुर से प्राचीन परिचय था, परंतु मैं जानता था कि वे उन इने-गिने डिपुटी कमिश्नरों में थे जिनके गोल-कमरे में हिंदी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का टिकट दिखला कर कोई भी प्रवेश पा सकता था। उस समय रायबहादुर 'सी० पी० और बरार लिटरेरी ऐकैडेमी' की स्कीम तैयार कर रहे थे। सजीवता और उत्साह का बाज़ार एकदम गर्म हो रहा था। ऐकैडेमी के हिंदी पुस्तकालय के लिए ग्रंथ-संचय का भार मुझे सौंपा गया। ग्रंथ एकत्रित किए गए परंतु उन्हें रखने को स्थान न मिला। बहुत सोच-विचार के बाद वे जबलपुर की डिस्ट्रिक्ट लायब्रेरी में ही रखवा दिए गए। फल यह हुआ कि एक प्रति के स्थान में अधिकतर ग्रंथों की दो प्रतियाँ प्रतिलब्ध हो गईं। इसके अतिरिक्त ऐकैडेमी की सेवा का और कोई भार प्रांत के कंधों ने अनुभव नहीं किया। इन सब कारणों से रायबहादुर ऐकैडेमी की ओर से उदासीन हो गए थे। उन्हें आशा थी कि अन्य प्रांतीय ऐकैडेमियों की भाँति यह भी कुछ अच्छा-ख़राब काम कर गुज़रेगी, परंतु इस संस्था का जीवन सदैव मृतप्राय ही रहा। सुनते हैं कि अब भी ऐकैडेमी वर्तमान है, परंतु—कहाँ है, किस तरह की है, किधर है? पता नहीं।

'प्रेमा' से रायबहादुर की आंतरिक सहानुभूति थी। बहुत व्यस्त रहने पर भी वे 'प्रेमा' की सहायता करने के लिए समय निकाल लिया करते थे। रायबहादुर के अंतिम दर्शन मुझे 'प्रेमा' ही के संबंध में प्राप्त हुए थे। उस समय 'प्रेमा' के 'करुण-रसांक' की तैयारी थी, जिसके संपादक पंडित केशवप्रसाद जी पाठक थे। राबर्टसन कालेज के सोशियल गैदरिंग के वार्षिक-उद्घाटन के लिए रायबहादुर जबलपुर आए थे। व्याख्यान के बाद पाठक जी के साथ मैं उनकी सेवा में पहुँचा। पाठक जी से पहली भेंट थी। मैंने उनका परिचय कराना चाहा पर नाम लेते ही रायबहादुर ने उनके कुटुंब का पूरा परिचय दे दिया और उनसे बोले—"भाई, तुम्हारा तो कुटुंब का कुटुंब साहित्यिक है। यदि तुमने 'उमर ख़य्याम' का सफल अनुवाद कर लिया तो आश्चर्य ही क्या?" मैंने कहा "अब पाठक जी 'करुणरसांक' का सफल संपादन करना चाहते हैं और आप के पास रचना माँगने आए हैं।" उन्होंने कहा—"अब आख़िर मुझे छुट्टी भी दोगे या नहीं? सरकार तो तीस साल में ही पेंशन दे देती है पर आप लोग तो चालीस पैंतालीस में भी नहीं छोड़ते।" पाठक जी ने कहा कि छुट्टी तो सेवकों की होती है, स्वयंसेवकों की नहीं। रायबहादुर हँसने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लगे और बहुत कुछ प्रोत्साहन देकर उन्होंने हम लोगों को बिदा किया। उचित समय पर 'करुणाजनक एक ऐतिहासिक घटना' शीर्षक लेख भेज दिया।

कटनी में प्रांतीय साहित्य-सम्मेलन का अधिवेशन हुए अभी पंद्रह दिन भी नहीं हुए। किसी सज्जन ने कहा था कि चूना-पत्थर रह गया और हीरालाल उठ गया। कितना कारुण्य था इस कथन में और जो लोग हीरालाल का मूल्य जानते थे उनके सम्मुख कितना बड़ा शून्यस्थल था!

सर जार्ज ग्रियर्सन का पत्र

मुझे अत्यंत खेद है कि अस्वस्थ होने के कारण आजकल मैं कोई साहित्यिक काम नहीं कर सकता। अतएव मैं आपके निमंत्रण को स्वीकार करने से मजबूर हूँ। स्वर्गीय रायबहादुर साहब की योग्यता और महान विद्वत्ता का मूल्य मुझसे अधिक कोई नहीं आँक सकता। उनके दुःखद निधन से प्राच्य-खोज के क्षेत्रमें जो स्थान रिक्त हुआ है उसकी पूर्ति होना कठिन है।

AN APPRECIATION

I much regret that owing to illness, I am unable to do any literary work at present, and I must therefore decline your offer. No one can appreciate the value of the late Rai Bahadur's ability and wide learning more highly than I, and his lamented death has created a void in Oriental research which it will be difficult to fill.

Yours faithfully,

GEORGE A. GRIERSON

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ संस्मरण

[रायबहादुर बाबू श्यामसुंदर दास, काशी]

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल से मेरा पहले पहल साक्षात् जबलपुर में हुआ था, जब मैं वहां शारदा भवन के वार्षिकोत्सव पर गया था। उस समय उन्होंने देवनागरी अक्षरों की उत्पत्ति पर एक व्याख्यान दिया था। इसके अनंतर कई बेर मुझे उनसे मिलने तथा उनके साथ रहने का अवसर प्राप्त हुआ। पटना की ओरियंटल कानफरेंस में हम लोग प्रायः साथ ही रहे। एक वर्ष शिमले में भी बहुत दिनों तक हम लोगों का साथ रहा। वहाँ प्रायः हम लोग सबेरे और संध्या को साथ ही घूमने निकलते थे। कई बेर वे काशी भी आए और मुझे उनके आतिथ्य का सत्कार प्राप्त हुआ। इन भिन्न भिन्न समयों पर मुझे उनकी प्रकृति को समझने और उनसे पूर्णतया परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ। बाबू हीरालाल सौजन्य की साक्षात् मूर्ति थे। उनकी विद्या और जानकारी अगाध थी जिसे प्रदर्शित कर दूसरों को प्रभावित करने की उनकी प्रवृत्ति नाममात्र भी न थी। वे किसी की भलाई या सहायता करके फिर उसका नाम लेना नहीं जानते थे। मैंने जब जब उनसे किसी काम के लिए प्रार्थना की उन्होंने कभी नाहीं नहीं की। काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से उनको अत्यंत प्रेम था। वे सदा उसकी सहायता के लिए उद्यत रहते थे और जहाँ कहीं उसके किसी काम के लिए जाने की आवश्यकता होती थी वहाँ निःसंकोच चले जाते थे। हस्तलिखित पुस्तकों की खोज का निरीक्षण उन्होने कई वर्षों तक किया था, तथा उस संबंध में उनकी लिखी कई रिपोर्टें छप चुकी हैं और वे उनकी विद्या, बुद्धि, अनुसंधान तथा कार्य-तत्परता की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। एक बेर की बात है कि सभा की प्रबंध-समिति को यह ज्ञात हुआ कि पुस्तकालय की बहुत सी पुस्तकें सभासदों के पास हैं और वे उन्हें लौटाने में आनाकानी करते हैं। समिति ने आज्ञा दी कि सब से पुस्तकें वापस लौटा ली जाँय। इस निश्चय के अनुसार अनजान में बाबू हीरालाल को भी पत्र लिखा गया। उनके पास जो पुस्तकें गई थीं वे सब खोज के काम के लिए थीं। उन्होंने सब पुस्तकें लौटा दीं और एक क्रोधपूर्ण पत्र लिखा। जब यह पत्र मुझे देखने को मिला तब ज्ञात हुआ कि हम लोगों ने कितनी भारी भूल की थी। अस्तु, मैंने उन्हें पत्र लिखकर शांत किया। यही एक ऐसा अवसर था जब मैंने उन्हें क्रोध करते देखा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक बात और याद आगई। सन् १९२७ की पहली जनवरी का दिन था। संध्या समय मैं अपने मित्र 'रत्नाकर' जी के साथ कहीं घूमने गया था। उन दिनों काशी में 'लीडर' पत्र प्रायः संध्या समय बँटता था। जब मैं घर लौटकर आया तो मेरे लड़कों ने पत्र दिखाया और कहा कि आपको 'रायसाहब' की उपाधि मिली है। मैंने इस पर विश्वास नहीं किया। मैंने कहा कि भारतवर्ष में मैं ही तो अकेला श्यामसुंदरदास नहीं हूँ। और भी अनेक लोग होंगे। पर अपने नाम के आगे पूरा पता देखकर मुझे विश्वास हो गया। अस्तु, यथासमय बाबू हीरालाल का भी बधाई का पत्र आया। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और लिखा कि मुझे इसकी कामना न थी। यह पुछिल्ला क्यों मेरी पीछे बाँध दिया गया। इस उपाधि को उपयोग में लाने में मुझे संकोच होता था और मैंने अपने मित्रों को लिख दिया कि वे इसका प्रयोग न किया करें। बाबू हीरालाल को भी यही लिखा। न मालूम यह बात किस तरह मिस्टर मैकेंज़ी के कानों तक पहुँची। उसी वर्ष के अप्रैल मास में मैं प्रयाग गया था। वहाँ मिस्टर मेकेंज़ी से भेंट हुई। उन्होंने मुझसे कहा कि तुम इस टाइटिल से असंतुष्ट हो और इसको काम में नहीं लाते। मैंने कहा कि मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है और न मैंने कभी इसकी कामना की। उन्होंने कहा कि नहीं, ऐसा मत करो। तुम्हें दूसरी उपाधि शीघ्र मिलेगी। अस्तु, इसके बाद मुझे रायबहादुर की उपाधि मिली। सब रहस्य पीछे खुला। पहली उपाधि के भी मूल कारण बाबू हीरालाल थे। उन्होंने ही मिस्टर मैकेंज़ी को मुझे उपयुक्त उपाधि देने के लिए लिखा था और इस सिफ़ारिश पर मुझे रायसाहब की उपाधि मिली थी। जब मैंने उस उपाधि से अरुचि प्रकट की तब उन्होंने पुनः मिस्टर मैकेंज़ी को लिखा कि तुम्हारे दिए टाइटिल का कोई मूल्य नहीं है। तुम्हें आदमी के काम को समझ कर उसके उपयुक्त ही उपाधि देनी चाहिए। इस चिट्ठी के पहुँचने के बाद मैं मिस्टर मैकेंज़ी से प्रयाग में मिला था। ये सब बातें मुझे बहुत दिनों के बाद बाबू हीरालाल से ज्ञात हुईं। इस कथा का तात्पर्य इतना ही है कि वे अपने मित्रों के आदर-सत्कार के लिए कितना उद्यत रहते थे और अपने उद्योग को प्रदर्शित नहीं करते थे। ऐसे लोग संसार में कम होते हैं। बाबू हीरालाल मनुष्यों में रत्न थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर डा० हीरालाल जी की कुछ स्मृतियाँ

[प्रोफ़ेसर हीरालाल जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०, अमरावती]

सन् १९२२ की बात है। गर्मी की छुट्टियों के कारण मैं अपने घर गांगई ग्राम में था। एक दिन सुना कि वहाँ के ज़िलाधीश का दौरा हुआ है और पास ही के एक ग्राम चीचली में उनका मुक़ाम है। गांगई के राजा साहब डोलनसिंह जू देव को उनकी भेंट के लिये जाना था। उन्होंने मुझसे भी साथ चलने के लिए आग्रह किया और मैं बिना पूछे कि ज़िलाधीश साहब कौन हैं उनके साथ हो लिया। 'बड़े साहब' चीचली के स्कूल में ठहरे हुए थे। बाहर चपरासी ने मुझे अंग्रेज़ी ढंग की पोशाक पहने हुए देखकर मेरा नाम झट से साहब के पास पहुँचा दिया और उन्होंने फ़ौरन ही मुझे अपने पास बुला लिया। मुझे इसकी उम्मेद नहीं थी, क्योंकि बाहर कई राजा और ज़मीदार उनकी भेंट की प्रतीक्षा कर रहे थे। इतने बड़े बड़े अफ़सरों से भेंट करने का उस समय तक मुझे अवसर कम मिला था, इससे चित्त में कुछ भय था। पर भीतर जाते ही मैंने देखा कि एक बहुत ही सौम्य और प्रसन्नचित्त सज्जन कुर्ता और धोती पहने एक कुर्सी पर बैठे हैं। उन्होंने बड़ी अच्छी तरह से मिल कर मुझे पास की कुर्सी पर बिठाया और प्रेम से मेरे विषय में पूछ-ताछ की। मैंने उन्हें बताया कि इसी वर्ष मैंने इलाहाबाद यूनीवर्सिटी की एम० ए० परीक्षा पास की है, मेरा विषय संस्कृत तथा भारतीय पुरातत्व और लिपिविकास था, तथा मेरा दर्जा सफलता में सर्वप्रथम आया है, इत्यादि। मैंने सोचा कि अपनी विद्वत्ता की धाक उन पर जमाने का यह अच्छा अवसर है। अतएव मैंने भारतीय प्राचीन इतिहास व शिलालेख-संबंधी लंबी चौड़ी बातें बताना प्रारंभ कर दिया और सोचा कि ज़िलाधीश साहब भला ऐसे गूढ़ विषय क्या जानते होंगे? वे यह सब सुनकर अवाक् रह जांयगे। किंतु हुआ इसके विपरीत। मेरी बातें बड़ी शांति से सुनकर उन्होंने मुझसे कुछ गहरी बातें पूँछीं जिनसे मैं तुरंत समझ गया कि साहब का भारतीय पुरातत्व संबंधी ज्ञान विशाल है। अब मैं उनसे बातें भी करता जाता था और यह भी अनुमान करने का प्रयत्न कर रहा था कि पुरातत्व के मर्मज्ञ ये साहब कौन हो सकते हैं। आख़िर सोचते सोचते मुझे ध्यान आया कि वे मध्य प्रांत के लब्धप्रतिष्ठ पुरा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तत्वज्ञ हीरालालजी ही न हों जिनके संपादित कुछ शिलालेख मैंने 'एपीग्राफ़िया इंडिका' में पढ़े थे। इसी बीच साहब ने मुझसे प्रश्न किया 'तुमने कोर्स के अतिरिक्त और कहाँ कहाँ के शिलालेख पढ़े हैं?" मैंने साहस करके कह ही दिया "मैंने आपके संशोधित महत्वपूर्ण शिलालेखों में से कुछ 'एपीग्राफ़िया इंडिका' में देखे हैं। साहब बड़ी मधुरता से मुसकराये। मुझे विश्वास हो गया कि मैं केवल एक ज़िले के डिप्टी कमिश्नर से ही नहीं किंतु भारत के एक प्रतिष्ठित पुरातत्ववेत्ता से बातचीत कर रहा हूँ। मन में विचारा—धन्य हैं वे महापुरुष जो इतनी प्रभुता और इतना यश पाकर भी इतने सरल स्वभावी बने रहते हैं।

उपर्युक्त भेंट के पश्चात् मेरा रायबहादुर साहब से अच्छा परिचय होगया। उन्होंने मुझे नरसिंहपुर आकर मिलने के लिए आग्रह किया। जब मैं उनसे वहाँ जाकर मिला तो क्या देखता हूँ कि उनका निजी कमरा पुरातत्व संबंधी सामग्री से भरा पड़ा है—पुरातत्व विभाग की रिपोर्टों व तत्संबंधी पुस्तकों का ही वहाँ बाहुल्य है। कुछ टेबुलों पर शिलालेखों के ठप्पे बिछे हुए हैं जिन्हें वे पढ़ने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस कमरे में आकर कोई नहीं कह सकता था कि वह किसी डिप्टी कमिश्नर की बैठक है। वहाँ पहुँच कर स्वयं हीरालाल जी भूल जाते थे कि वे एक ज़िले के शासक हैं। इसी कमरे में बैठे बैठे एक बार उन्होंने मुझे सुनाया था कि वे किस प्रकार पुरातत्वज्ञ बन गये। मैं उस कथा को उन्हीं के शब्दों में वर्णन करने का प्रयत्न करूंगा।

"छोटे साहब के पद पर नियुक्त हुए मुझे कुछ ही दिन हुए थे। मैं दौरे पर गया था। एक ग्राम में मुझे पता लगा कि वहाँ के मंदिर के पुजारी के पास कुछ ताम्रपट हैं जिन पर बड़ी विलक्षण भाषा में कुछ लिखा है। लोगों का विश्वास था कि वे किसी धन के ख़ज़ाने के बीजक हैं। पुजारी भी उन्हें बड़ी सावधानी से रखता था। मूर्तियों के साथ उनका भी पूजन होता था। मैंने उन्हें देखना चाहा, पर मुझे बतलाने की उस पुजारी की बिलकुल इच्छा न थी। वह समझता था कि बीजक को पढ़कर सरकार उस ख़ज़ाने को ले लेगी और शायद उस पर भी कुछ विपत्ति आ पड़ेगी। पर मैंने उसे सब प्रकार आश्वासन दिया और विश्वास करा दिया कि यदि उस बीजक में कुछ धन का पता होगा तो वह पहले उसे ही बताया जायगा। निदान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुजारी ने वे ताम्रपट मेरे हवाले कर दिये। मैं उन्हें ले तो आया, पर स्वयं नहीं जानता था कि उनका क्या करूं, उन्हें कैसे पढ़ूँ। उनकी लिपि बड़ी प्राचीन थी जिसका मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं था। पर उसे पढ़ने का मुझे कौतूहल बहुत था। रोज़ उन ताम्रपटों को हाथ में लेता और घंटों तक उनकी ओर घूर घूर कर उन्हें फिर रख देता। मुझे उनकी ओर देखने का एक व्यसन सा हो गया। सरकारी काम जल्द निपटा कर, बस, उन्हीं ताम्रपटों को लेकर एकांत में बैठ जाता, दिन रात उन्हें ही पढ़ने की धुन थी। निरंतर देखते रहने पर इधर उधर कोई कोई अक्षर मेरी समझ में आने लगे। मैंने इन्हें लिख लिया। भाषा संस्कृत समझ पड़ी जिसके ज्ञान के आधार पर मैंने बीच के अक्षरों का अनुमान करके धीरे धीरे उन ताम्रपटों का पाठ तैयार कर लिया और उनमें जो ऐतिहासिक वार्ता मिली उसका भी विवेचन लिख डाला। अब इन ताम्रपटों के संबंध में कौतुक कुछ शांत हुआ। इसी समय मेरे ऊपर सरकारी काम विशेष आ पड़ा, और मैंने वह सामग्री टेबुल के एक दराज़ में रख दी। कई दिन पश्चात् अकस्मात मेरे हाथ में 'एपीग्राफ़िया इंडिका' का एक अंक पड़ गया। उसमें मैंने कई ताम्रपटों की नकलें और अनुवादादि देखे। उससे पूर्व मैं यह नहीं जानता था कि ऐसी चीज़ें कहीं छपती भी हैं। अब मैंने अपने उस ताम्रपट के लेख को निकाला और कुछ सुधार-बढ़ाव करके उक्त पत्रिका के संपादक के पास भेज दिया। वहां से मुझे उसके लिए बड़ा अभिनंदन मिला। वह ऐतिहासिक वार्ता राष्ट्रकूट राजवंश के संबंध में बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई। वह उस पत्रिका में प्रकाशित हो गई और उसके पुरस्कार-स्वरूप मेरे पास चालीस रुपये का मनीआर्डर आया। मैंने उसको लेने से इनकार कर दिया और संपादक को लिख भेजा कि मैंने वह लेख धन कमाने की दृष्टि से नहीं लिखा था, अतएव मुझे क्षमा करें। उसपर बहुत पत्र व्यवहार हुआ परंतु मैंने वह रुपया स्वीकार नहीं ही किया।

"इस घटना के कई दिन पश्चात् एक दिन पोस्ट द्वारा मुझे 'एपीग्राफ़िया इंडिका' के संपादक के यहां से एक पत्र और एक बड़ा सा पार्सल मिला। पार्सल में कुछ ताम्रपट थे और पत्र में मुझसे प्रेरणा की गई थी कि मैं उन ताम्रपटों को पढ़ कर उनका संपादन करूं। मैं इसे पढ़ कर बहुत घबराया। मुझे अभी भी प्राचीन लिपि का कोई ज्ञान नहीं था। मैंने उस पत्र का उत्तर लिखा कि मैं उस कार्य के सर्वथा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अयोग्य हूँ। मैं प्राचीन लिपि अच्छी तरह नहीं जानता, इसलिए उस कार्य से क्षमा चाहता हूँ। पर उस पत्र का पुनः उत्तर मिला 'नहीं तुम्हें यह कार्य अवश्य करना पड़ेगा और मुझे विश्वास है कि यह कार्य तुम्हारे हाथ से अच्छी तरह पूर्ण होगा।' साथ ही पुरातत्त्व विभाग की ओर से प्राचीन लिपि का अध्ययन करने के लिए कुछ ग्रंथ भी मेरे पास आ गए। मैंने परिश्रम करके उन ताम्रपटों को पढ़ा, उनका अनुवाद किया और संपादक महोदय के पास भेज दिए। साथ ही पत्र लिख दिया कि आपके अनुरोध मात्र से ही मैंने इन्हें पढ़ने का प्रयत्न किया है, पर यह बहुत त्रुटिपूर्ण अवश्य रह गया होगा, इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे। कुछ समय पश्चात् मुझे उत्तर मिला 'आपका ताम्रपटों का पाठ बहुत अच्छा तैयार हुआ है। इससे अच्छा तो यह शायद मेरे कुशल हाथों द्वारा भी न हो सकता था।"

कहना न होगा कि इसके पश्चात् ही रायबहादुर साहब ने प्राचीन लिपि का व्यवस्थित रूप से अध्ययन करके पुरातत्त्वान्वेषकों में अमर नाम कमाया।

एक बार रायबहादुर साहब ने मुझे अपने स्कूल इंसपेक्टर के पद पर से शिक्षाप्रचार के कार्य का कुछ वृत्तांत सुनाया था। वे दमोह ज़िले में थे। उन्होंने देखा कि बहुत से ग्रामों में स्कूल नहीं हैं और शिक्षा का साधन न मिलने से बच्चे अशिक्षित रहे जाते हैं। सरकारी स्कूल खुलवाना असंभव था। निदान उन्होंने अनेक ग्रामों में वहां की जनता के सहयोग से स्कूल खुलवाए। ये स्कूल 'सीधा-स्कूल' कहलाते थे क्योंकि इनमें शिक्षक का वेतन छात्रों के यहां से 'सीधा' अर्थात् आटा दाल आदि के रूप में दिया जाता था। गांव के पटेल मालगुज़ार के दालान में स्कूल लगता था। इनमें से अनेक स्कूलों ने पीछे इतनी उन्नति की कि उन्हे डिस्ट्रिक्ट कौंसिल ने अपने हाथ में ले लिया। वे आज तक व्यवस्थित रूप से चल रहे हैं और ग्रामवासी उनके स्थापक का यश गा रहे हैं।

रायबहादुर साहब अद्भुत प्रतिभाशाली थे। उन्होंने अनेक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। मध्यप्रांत के मूलनिवासी गोंड-भीलों की भाषाएँ भी उनके अध्ययन से नहीं बची थीं। उड़िया भाषा उन्होंने कैसे एक रात में सीखी यह मैंने एक बार उनके मुख से सुना था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर साहब की दिनचर्या बहुत ही व्यवस्थित रहती थी। यही कारण था कि वे न जाने कितना पढ़-लिख लेते थे और साथ ही सब से मिलने-जुलने आदि के लिए भी सदा तैयार रहते थे। वे अपना समय व्यर्थ तो खोते ही न थे। इसी कारण वे अपना सब काम ठीक समय पर कर सकते थे और उन्हें जल्द-बाज़ी या घबराहट में पड़ने का कभी अवसर न आता था। उनकी व्यवस्थित कार्य-शैली देखने का मुझे अवसर उस समय मिला जब सन् १९२४ में, नौकरी से पेंशन हो जाने के पश्चात उन्होंने मध्यप्रांत के हस्तलिखित संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों की सूची तैयार करने का भार अपने ऊपर लिया था। इस कार्य में मुझे भी उन्हें योग देने का सुअवसर मिला था। सरकार की ओर से इस कार्य के लिए बहुत ही थोड़ा धन और बहुत अल्प समय की अवधि मिली थी। मेरी इच्छा थी कि इनमें वृद्धि कराने का प्रयत्न किया जाय; कम से कम, समय की अवधि तो अवश्य बढ़वा ली जाय। किंतु उन्होंने कहा 'नहीं, कार्य की व्यवस्था ही ऐसी करनी चाहिए कि उसी अवधि में काम पूरा हो जाय'। निदान तीन चार मास के भीतर ही आठ हज़ार से ऊपर हस्तलिखित प्राचीन संस्कृत और प्राकृत ग्रंथों की सूची तैयार की गई। यह सूची मध्यप्रांत की सरकार की ओर से सन् १९२६ में प्रकाशित हुई।

इसी अवसर पर एक दिन मैं उनके यहां नागपुर में ठहरा हुआ था। कार्या-तिरेक के कारण सायंकाल को भी हम लोग बाहर नहीं निकल सके। उन्होंने मुझसे पूँछा 'सायंकाल में तुम क्या किया करते हो?'

मैंने उत्तर दिया 'घूमने जाता हूं।'

'कितनी दूर तक?'

'कोई दो मील चल लेता हूंगा। क्यों?'

'अच्छा, अब बाहर जाने का तो समय नहीं रहा, किंतु घर के सामने यह जो छोटा सा बगीचा है उसके एक बार चारों तरफ़ जाने में २०० गज हो जाते हैं। १७-१८ बार इसके चक्कर लगा लो, दो मील हो जायगा।'

मैंने पूछा 'आपने क्या इसे नाप रक्खा है?'

उत्तर मिला 'हाँ। जब मैं किसी कारण से प्रातःकाल घूमने नहीं जा पाता तब यहीं अपना कार्यक्रम पूरा कर लेता हूँ!'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वे भोजन और शयन में भी समय की बड़ी पाबंदी रखते थे। एक बार नागपुर में यूनीवर्सिटी के हिंदी-साहित्य-मंडल का वार्षिक अधिवेशन हो रहा था। आप सभापति थे। रात के साढ़े नौ बज गए और कार्यक्रम पूरा नहीं हो पाया। आपने उठ कर कहा "बड़ी कृपा होगी यदि आप लोग मुझे यह आज्ञा दे दें कि मैं किसी अन्य व्यक्ति को सभापतित्व सौंपकर बिदा हो सकूं। मेरे सोने का समय हो गया है। आशा है आप मुझे अपने चालीस वर्ष के नियम को तोड़ने के लिए बाध्य न करेंगे।"

वृद्धावस्था में भी जब वे लिखने पढ़ने या किसी के साथ तत्वविवेचन करने बैठते थे तो चार चार छै छै घंटे एक साथ परिश्रम करने पर भी उनमें कोई थकावट का चिह्न दिखाई पड़ता था। मुझे भी दीर्घ समय तक अविश्रांत कार्य कर सकने की अपनी क्षमता पर कुछ अभिमान था, किंतु उनके समक्ष अपनी क्षमता की अंतिम अवधि का पता चल जाता था।

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी से प्रत्यक्ष अनुभव की अनेक बातें मुझे याद आती हैं जिनसे उनकी विद्वत्ता, प्रतिभा, कार्य-परायणता, सरलता तथा सहानुभूति और परोपकार-बुद्धि का पता चलता है। इन्हीं गुणों के कारण वे सरकारी नौकरी में एक पद से दूसरे पद पर चढ़कर डिप्टी कमिश्नर तक बन गए, 'रायबहादुर' की उपाधि से विभूषित किये गए, पुरातत्व विभाग, नागरी-प्रचारिणी सभा, भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों तथा अन्य अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं को अपनी सेवाओं से सदैव उपकृत करते रहे और अंततः नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा डी० लिट० की उपाधि से सम्मानित हुए। उनकी मृत्यु से संसार का एक बड़ा भारी विद्वद्रत्न खो गया, भारतवर्ष का एक अद्वितीय पुरातत्ववेत्ता उठ गया तथा मध्यप्रांत का एक अनुपम दीपक बुझ गया।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल (संस्मरण)

[प्रोफ़ेसर हरिहरनाथ टंडन, एम० ए०, आगरा]

सन् १९२७ में जब मैं हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ता था तो एक दिन राय बहादुर श्यामसुंदर दास जी के घर पर मिलने गया। बाबू श्यामसुंदर दास जी घर के भीतर थे और उनके बैठक में आने में अभी देर थी—ऐसा निश्चित हो जाने पर मैंने उनकी बैठक में लगे हुए चित्रों को देखना आरंभ किया। इनमें एक चित्र रायबहादुर हीरालाल जी का था जिसे मैं पहचान न सका। थोड़ी देर में जब बाबू साहब आए तब मैंने इस चित्र का परिचय पूछा। बाबू साहब ने रायबहादुर हीरालाल साहब का नाम बताते हुए मुझ से पूछा कि मैंने आज विशेषकर क्यों इस चित्र के विषय में जानने की इच्छा की है। मैंने अपराधी की भाँति, किंतु सरल हृदय से, स्वीकार किया कि आज कमरे में अपने को अकेला पाकर मैंने इसके चित्रों को देखा है और जिस चित्र का परिचय आप से पूँछा है उस व्यक्ति में दृढ़ता और शक्ति कूट कूट कर भरी है ऐसा अनुमान होता है। श्यामसुंदर दास जी मेरी इस बात से प्रसन्न हुए और बड़े प्रेम से मुझे हीरालाल जी के संबंध में बहुत सी बातें बताईं। भारतीय संस्कृति और इतिहास के लिए बाबू हीरालाल जी ने जो भगीरथ-प्रयत्न किए थे उनका भी उल्लेख किया। अंत में सगर्व कहा कि यही बाबू हीरालाल जी आजकल काशी-नगरी-प्रचारिणी सभा के प्रधान हैं। इन बातों ने स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल के प्रति मेरे हृदय में श्रद्धा का भाव उत्पन्न कर दिया।

सन् १९२८ के जुलाई मास में जब मैं आगरे आया तो रायबहादुर श्यामसुंदर दास जी ने मुझे हस्त लिखित हिंदी पुस्तकों की खोज में सहायता देने की आज्ञा दी और मुझ से कहा कि इस काम के लिए यह आवश्यक है कि तुम रायबहादुर हीरालाल से इस विषय की शिक्षा लो। अस्तु, दशहरे की छुट्टी होते ही मैं कटनी गया और वहां रायबहादुर हीरालाल जी ही के पास ठहरा। वहां मैं केवल तीन दिन रहा, पर स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल की विद्वता, सरलता और सबसे अधिक उनकी सौजन्यता से मैं बड़ा प्रभावित हुआ। कटनी में रायबहादुर साहब ने जिस प्रेम के साथ मेरा अतिथिसत्कार किया और जिस योग्यता के साथ मुझे हस्तलिखित पुस्तकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की खोज के काम को समझाया वह शब्दों द्वारा प्रकट नहीं किया जा सकता। रायबहादुर साहब मुझे बराबर अपने साथ भोजन करने बिठलाते थे। सब कुछ भारतीय ढंग से होता था, परंतु साथ ही मज़ेदार बातें भी होती जाती थीं। भोजन के समय रायबहादुर साहब ने मुझे बहुत सी पुरातत्व संबंधी नई बातें बतलाई थीं। भोजन करने के पश्चात बाबू हीरालाल जी एक बड़ा कटोरा गर्म दूध पिया करते थे और मुझसे भी साथ देने का आग्रह करते थे। मुझे दूध से विशेष प्रेम नहीं था। इस पर रायबहादुर साहब बोले कि भोजन के बाद एक कटोरा गर्म दूध नित्य पीने से साठ वर्ष की आयु में भी मेरी तरह सब बाल काले रहते हैं (रायबहादुर साहब के सब बाल काले थे इस में संदेह नहीं)। मैं इस बात का उत्तर न दे सका और दूध पीना ही पड़ा। तब से अब जब कभी किसी मित्र को भोजन के पश्चात दूध पिलाना होता है तो रायबहादुर साहब की सूक्ति का उल्लेख कर देता हूँ।

इसके पीछे नागपुर विश्वविद्यालय की ओर से रायबहादुर साहब इंटर-यूनीवर्सिटी-बोर्ड की बैठक में दिल्ली पधारे। लौटती बार आगरे आकर वे मेरे साथ ठहरे। आगरे आने के लिए उन्हें कोई विशेष काम नहीं था, केवल मुझ जैसे भक्त पर उनका अनुग्रह ही था।

रायबहादुर साहब की सब से बड़ी विशेषता यह थी कि वे नवयुवकों को उत्साहित करना जानते थे और हृदय से उनका सम्मान करते थे। बड़ौदे की ओरियंटल कानफ़रेंस में एक विद्वान ने एक सिद्धांत उनको समझाया। रायबहादुर साहब को वह ठीक जँचा। पीछे उस विभाग की बैठक में जब कुछ विद्वानों ने उस सिद्धांत को भ्रमात्मक बताने की चेष्टा की और आविष्कारक महोदय कुछ गड़बड़ाए तो फिर रायबहादुर साहब से न रहा गया। वे स्वयं खड़े होगए और उन्होंने उसे बड़ी योग्यता से समझाया।

बड़ौदे की ओरियंटल कानफ़रेंस में रायबहादुर साहब, राहुल सांकृत्यायन तथा जायसवाल जो एक साथ बड़ौदा होटल में ठहरे थे। मैं भी प्रधान भवन के पास एक रावटी में ठहर गया। पर जैसे ही रायबहादुर साहब के दर्शनार्थ मैं गया, उन्होंने तुरंत वहीं ठहरने का मुझसे आग्रह किया। मैंने कहा भी कि मुझे किसी प्रकार की असुविधा नहीं है। आप के कमरे में चौकी चारपाई के लिए स्थान भी नहीं है। पर वे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

न माने और उन्होंने अपने नौकर को मेरा असबाब उठा लाने की आज्ञा दी। इस पर महाराजा साहब की ओर से नियुक्त प्रबंधकों ने उस कमरे में एक और पलंग बढ़ाने में आपत्ति की; पर रायबहादुर साहब उनकी भी न माने और पलंग डलवा ही लिया।

सत्य है, जो छोटों का मान रखना जानता है वही बड़ा है और उसी की कीर्ति अमर है।

अजयगढ़ के शिला-लेख

[श्री० ठाकुर दिलीपसिंह, गहरेंदा]

ऐतिहासिक अनुसंधानों के कार्यों से विशेष प्रेम होने के कारण एक समय ता० २८-१२-१९१६ ई० को स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी अजयगढ़ के प्राचीन ऐतिहासिक खँडहरों का अनुसंधान करने गए थे। वहां के प्राचीन दुर्गक्षेत्र के खँडहरों में आपको १९ शिला-लेख देखने को मिले। इनका निरीक्षण करके आपने अजयगढ़ संबंधी अनेक ऐतिहासिक अनुसंधान किए, जो अत्यंत रोचक थे। इसका भी पता चला कि अजयगढ़ का प्राचीन नाम जयपुर दुर्ग था।

वर्तमान समय में अजयगढ़ बुंदेलखंड की एक सनदी रियासत है और यहाँ के शासक बुंदेल-क्षत्रिय हैं। आपने अपने ऐतिहासिक अनुसंधान का परिणाम तत्कालीन अजयगढ़ नरेश सवाई महाराजा सर रणजोरसिंह जी देव बहादुर की सेवा में दोहों द्वारा प्रगट किया था, जिसमें एक दोहा यह भी था—

जयपुरपति जयदुर्ग यह, भीषण और अजेय।
निज पति को जय, अरिन को अजय अजयगढ़ देय॥

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

AN APPRECIATION

[*Prof. D. R. Bhandarkar, Calcutta*]

I had been knowing the late Rai Bahadur Dr. Hira Lal ever since 1905, when he first came to Poona to visit Henry Cousins, who was then Superintendent, Archæological Survey, Bombay Circle. I was then Assistant Archæological Surveyor of that circle. Even then I was very much struck with the keen and genuine enthusiasm which he displayed for the Epigraphy and Ancient History of Central Provinces. It went on ever increasing and manifesting itself into a number of interesting papers which he contributed from time to time to the various learned journals. He also wrote some booklets, the most noteworthy of which is "Inscriptions in the Central Provinces and Berar". This booklet is of such importance to epigraphists that it has been pretty frequently referred to by me in " A list of the Inscriptions of Northern India" which is being published by the Government of India in their journal, "*The Epigraphia Indica*". In fact, his work was being so much appreciated on all hands that it was no wonder that he was elected President of the All India Oriental Conference which was held a short time ago at Patna.

As regards the private character of Hira Lal ji, there were many points and incidents connected with his life which could be told with unflagging interest. The chief trait in his character in my opinion was his eternal sense of gratitude for any small favour conferred upon him. Some years ago Sir Charles Lowe, who was for many years a big officer in the C. P. Government, was doing business in Calcutta after his retirement from the Government service. One winter season he was here, and just about that time the

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

late Rai Bahadur happened to come to Calcutta and see me. Casually in our conversation I referred to Sir Charles being here. As soon as his name was uttered, his face brightened up with enthusiastic gratitude. "Sir Charles saved my life," burst out Hira Lal ji, "when I was laid up with a violent attack of cholera. I must go and see him any how." He left my place abruptly, but came to see me again the next day. His face was again lit up with grateful joy when he told me that he was able to find Sir Charles out, though with extreme difficulty, and do his humble duty to the man who was his saviour. Such instances of gratitude, I am afraid, are very rare these days, even in India. May the soul of this great man ever rest in peace !

———

प्रशंसा में

[प्रोफ़ेसर डी० आर० भंडारकर, कलकत्ता]

स्वर्गीय रायबहादुर डा० हीरालाल को मैं सन् १९०५ से जानता था जब वे हेनरी कज़िंस से मिलने पूना पधारे थे। हेनरी कज़िंस उस समय पुरातत्व अन्वेषण के बंबई मंडल के अध्यक्ष थे। मैं उस समय उसी मंडल का सहकारी पुरातत्व अन्वेषक था। परंतु उस समय में भी मध्य प्रांत के प्राचीन इतिहास और शिला-लेखों में स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी का सच्चा और तीव्र उत्साह देख कर मैं बहुत प्रभावित हुआ। उनका यह उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता रहा और इसके प्रमाणस्वरूप उनके बहुत से सुंदर लेख हैं जो उन्होंने समय-समय पर उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक पत्रिकाओं में प्रकाशित कराए हैं। स्वर्गीय रायबहादुर जी ने कुछ छोटे-छोटे ग्रंथ भी लिखे हैं, जिनमें विशेष रूप से उल्लेखनीय पुस्तक "मध्यप्रांत और बरार के शिला-लेख" है। यह पुस्तक प्राचीन लेखों के प्रेमियों के लिए विशेष रूप से इतने महत्व की है कि मैंने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अपने "उत्तरीय भारत के शिलालेखों की सूची" शीर्षक लेख में इसका बाहुल्य से उल्लेख किया है। उक्त लेख को भारत सरकार अपनी 'एपिग्रैफ़िया इंडिका' नामक पत्रिका में प्रकाशित कर रही है। सच बात तो यह है कि रायबहादुर साहब का काम सभी को इतना पसंद आया कि हाल में उनका अखिल भारतीय प्राच्यपरिषद् के पटना-अधिवेशन का सभापति चुना जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं थी।

स्वर्गीय हीरालाल जी के चरित्र के विषय में उनके निजी जीवन की छोटी-छोटी अनेक बातें और घटनाएं ऐसी हैं जिनका बराबर अक्षुण्ण उत्साह से स्मरण किया जा सकता है। मेरी राय में उनके चरित्र का मुख्य लक्षण था—उनकी चिर-कृतज्ञता, चाहे उनके प्रति किसी ने छोटा ही उपकार क्यों न किया हो। कुछ वर्ष हुए सर चार्ल्स लो जिन्होंने कुछ वर्ष पहले मध्यप्रांत में अनेक वर्षों से एक उच्च सरकारी पद को सुशोभित किया था, अवकाश ग्रहण कर कलकत्ते में अपना व्यवसाय कर रहे थे। एक साल जाड़ों में वे यहीं थे और उन्हीं दिनों संयोग से स्वर्गीय रायबहादुर साहब कलकत्ते आए और मुझसे मिलने पधारे। यों ही बातों बातों में मैंने सर चार्ल्स के कलकत्ते में वर्तमान होने की बात चला दी। उनका नाम सुनते ही उनका चेहरा हार्दिक कृतज्ञता से खिल उठा। "सर चार्ल्स ने तो मुझे मृत्यु के मुख से बचाया है"—उन्होंने तुरंत कहा, "उस समय मैं घातक विसूचिका का ग्रास बन रहा था। चाहे जैसे हो मैं उनके दर्शन अवश्य करूँगा।" और वे तत्क्षण उनसे मिलने चल पड़े। दूसरे दिन वे फिर मुझसे मिलने आए। उनका मुख उस क्षण पुनः कृतज्ञता प्रदर्शक-प्रसन्नता से चमक रहा था, और उन्होने मुझे बतलाया कि यद्यपि बहुत कठिनाई उठानी पड़ी थी पर सर चार्ल्स का पता उन्होंने लगा लिया और अपने प्राण-रक्षक के दर्शन कर उन्होंने अपना कर्त्तव्य पालन किया था। इस युग में कृतज्ञता के ऐसे उदाहरण, मुझे संदेह है कि भारत जैसे देश में भी दुर्लभ हैं। ईश्वर ऐसे महापुरुष की आत्मा को शांति प्रदान करे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनन्य हिंदी-प्रेमी डाक्टर हीरालाल

[पंडित उदयनारायण त्रिपाठी, एम०, ए० साहित्यरत्न]

आज यद्यपि एक दृश्य को देखे हुए पाँच वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, तो भी ऐसा जान पड़ता है जैसे वह अभी कल की बात है।

भाषा-विज्ञान के मुख्य सिद्धांतों का मनन कर रहा हूँ। डाक्टर सुनीति-कुमार चटर्जी-लिखित बँगला भाषा की उत्पत्ति तथा विकास नामक पुस्तक मेरे सामने है। उसका प्रथम भाग समाप्त कर चुका हूँ। दूसरा भाग पढ़ने के लिए उसका प्रथम पृष्ठ आँखों के समक्ष अभी आया ही है कि मेरी चटुल दृष्टि, अनायास ही एक समाचार-पत्र में मुद्रित, पटना में होने वाली ओरियंटल कानफ़रेंस की सूचना पर, जा पहुँची। फिर क्या था? भाषा-शास्त्र के प्रकांड पंडित चटर्जी महोदय के दर्शन करने की उत्सुकता मेरे मानस में तैरने लगी। "वैसे चटर्जी महोदय का दर्शन करने के लिए मुझे कलकत्ते जाना पड़ता। अब यहाँ पटना में ही उनका दर्शन पा जाऊँगा" यह सोचकर और भी अधिक उत्साह आ गया। निदान, चटर्जी महोदय को बिना किसी प्रकार की सूचना दिए ही मैं उनके दर्शनार्थ पटना जा पहुँचा।

उस दिन पटना कालेज के ह्वीलर हॉल में ग्यारह बजे से प्राच्यविद्या प्रेमियों का अधिवेशन प्रारंभ हुआ। पहले ही से जानता था, इस महाधिवेशन के अध्यक्ष भाषा-पुरातत्व विद् रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी हैं। बिहार-प्रांत के अधिकाधिक गण्यमान्य सज्जन उपस्थित थे। थोड़ी देर में गवर्नर महोदय भी पधारे। अभिवादन स्वीकार करने के पश्चात् उन्होंने सभामंडप के बीच में अपना स्थान ग्रहण किया। दक्षिण ओर अध्यक्ष महोदय का आसन था। पुरातत्व के अतुल विद्वान् स्वनामधन्य काशीप्रसाद जी जायसवाल ने अध्यक्ष महोदय का, अत्यंत ललित भाषा में, अभिनंदन किया। आपने बतलाया कि डाक्टर हीरालाल जी की इतिहास तथा भाषा-विज्ञान-संबंधिनी गवेषणाएँ हमारे लिए कितने गौरव की हैं। मैं मन में कहने लगा—इसी को कहते हैं महाभाग्य। मैं चला था डाक्टर चटर्जी महोदय के दर्शनों के लिए; और यहाँ उनके अतिरिक्त इस महापुरुष के भी दर्शन अनायास हो गए।

डाक्टर हीरालाल महोदय अपना अभिभाषण पढ़ रहे थे। जनता मंत्रमुग्ध

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

होकर उसे सुन रही थी और मैं डाक्टर साहब की मुखाकृति के भीतर, उनकी सरलता में गंभीरता और साधुता में महानता का संदर्शन कर रहा था। वह खुले कालर का कोट, वह उसको गौरव देने वाला अपना भारतीय ढंग का साफ़ा! ओह! इनमें भारतीयता की कैसी छाप है! प्राच्य पांडित्य और पाश्चात्य संस्कृति का कैसा समन्वय है!

दूसरा दिन आया। आज ओरियंटल कानफ़रेंस की विभागीय सभाओं के अधिवेशन थे। ललित कला, इतिहास, पुरातत्व, संस्कृत, हिंदी, बँगला, फ़ारसी आदि भाषाओं के अधिवेशनों के लिए पृथक्-पृथक् आयोजन थे। बिहार प्रांतीय स्थानीय महत्व के कारण उड़िया भी सम्मिलित कर ली गई थी। मैं एकबार सभी शाखा-सभाओं का चक्कर लगा आया। घूमता-घामता हुआ मैं अपने हिंदी-विभाग में आ पहुँचा। बँगला तथा उड़िया विभाग के अधिवेशन की उपस्थिति देख ही आया था। मैं समझता था, अपनी हिंदी भाषा के अधिवेशन की उपस्थिति और भी संतोषप्रद होगी। परंतु वहाँ पहुँचकर बड़ी निराशा हुई। टिकट के संदेह से साधारण जनता ने तो कोई विशेष सहयोग दिया नहीं था। जिन लोगों ने उपस्थित होने की महत्ता तथा उपयोगिता का अनुभव करके इस अधिवेशन की शोभा बढ़ाई भी थी, वे लोग अपनी-अपनी अभिरुचि के अनुसार विविध विभागों में बँट गये थे, और इसी लिए हिंदी भाषा के विभाग की उपस्थिति अत्यंत अल्प थी। इस विभाग के सभापति थे हिंदी-भाषा-साहित्य के आचार्य बाबू श्यामसुंदर दास और श्रोताओं में? श्रोताओं में आसीन थे संपूर्ण ओरियंटल कानफ़रेंस के मनोनीत सभापति, हमारे देश के गौरव, डाक्टर हीरालाल। मैंने अनुभव किया यह है अपनी राष्ट्रभाषा और उसके साहित्य का प्रेम! यह है डाक्टर महोदय का महान व्यक्तित्व; यह है उनको अमर रखने वाला उनका अपनी भाषा के प्रति अटूट ममत्व! उन्होंने—ललित कला, इतिहास और संस्कृत को जाने दीजिए—पुरातत्व-विभाग में भी न जाकर हिंदी-विभाग में ही आकर उसी की सुधि ली! ओह! वे कितने महामहिम हैं!!

आज डाक्टर साहब हम में नहीं हैं, तो भी मैं उस सभा में, उनको देख रहा हूँ!

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मेरी स्मृति

[श्री गुलाबचंद चौधरी, बी० ए० (कैंटब), बार-ऐट-ला, छिंदवाड़ा]

आज करीब २३ साल हुए—सन् १९१३ की बात है—कि मेरा प्रथम परिचय डाक्टर हीरालाल साहब से हुआ। मैं उन दिनों में कालेज में पढ़ता था और हमारे "हीरालाल साहब" (आप अभी भी इसी नाम से इस ज़िले में याद किए जाते हैं) छिंदवाड़ा में एक्स्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर (याने डिप्टी कलेक्टर) थे।

पूज्य पिता जी के साथ आप के बँगले पर गया। मुझे अभी भी वह दृश्य आँखों के सामने आता है। वही हँसमुख सरल स्वभाव, वही गंभीर दिव्य मूर्ति दिखती है।

यथोचित नमस्ते के बाद मुझे आप ने अपने समीप बैठा लिया और बड़ी प्रसन्नता प्रगट की कि इस पिछड़े प्रांत के पिछड़े ज़िले में भी कालेज में पढ़ने वाला एक जातीय विद्यार्थी मौजूद है, क्योंकि उन दिनों में कालेज में पढ़ने वाले स्वजातीय भाई बहुत कम थे। मेरे जीवन का वह एक सौभाग्यशाली एवं शुभ दिवस था। मुझ में उसी समय से एक नवीन जीवन का संचार हुआ। उस दिन की अनुपम-स्मृति मेरे हृदय पटल पर इतने स्पष्ट-रूप से अंकित हो गई है कि अब वह इस जीवन में कभी भी धुँधली नहीं हो सकती।

हम लोगों के बैठते ही शिक्षा देते हुए वे मुझ से प्रसन्नतापूर्वक बोले—"बेटा पढ़ो और ख़ूब पढ़ो और पढ़ कर अपनी इस असहाय जाति के लिए जो कुछ कर सकते हो सच्चे हृदय से करो। इस बेचारी को कभी मत भूलना"। कह नहीं सकता क्यों, उनके मुख से निकले हुए इन शब्दों का मुझ पर इतना प्रभाव कैसे हुआ। यह उन्हीं की प्रभावशालिनी शिक्षा का असर है कि मैं इंगलैंड गया और विदेश भ्रमण कर कुछ योग्यता प्राप्त कर अपनी जाति की सेवा करने के योग्य बन सका।

आपने मुझ से वार्तालाप करते हुए यह भी पूछा कि क्या तुम्हें पहिली हिंदी कक्षा में पढ़ाया जाने वाला १५वाँ तख़्ता याद है। मैं उस समय कालेज में अध्ययन करता था, परंतु यह सोच कर कि संभवतः मुझ से यह प्रश्न मेरी याद-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दाश्त की परीक्षा के लिए पूछा गया हो, मैंने तुरंत ही उत्तर दिया कि जी हाँ, मुझे अच्छी तरह से स्मरण है।

" अच्छा तो बताओ " उन्होंने कहा।

मैं अपनी स्मरणशक्ति पर ज़ोर देता हुआ धीरे धीरे बोला, " श्रम, अवकाश, ज्ञानवान, अधिकारी; चीफ़ कमिश्नर— — — "

" क्या तुम इसका अर्थ बता सकते हो ?" उन्होंने पूछा। पहिली हिंदी कक्षा में अंतिम तख़्ता कठिन शब्दों का था। उपरोक्त शब्द उसी तख़्ते के थे। उस समय हमें उसका शब्दार्थ ही बताया गया था, परंतु उसका वास्तविक अर्थ हमें डाक्टर साहब के श्रीमुख ही से प्रथम बार अवगत हुआ।

मैं उनके इन छोटे छोटे शब्दों के अर्थ पूछने का कारण न समझ सका। मुझे स्तब्ध देख आप स्वयं ही बोले " अच्छा क्या तुम यही बता सकते हो कि श्रम के पश्चात् अवकाश, अवकाश के पश्चात् ज्ञानवान, ज्ञानवान के पश्चात् अधिकारी तथा अधिकारी के पश्चात् चीफ़ कमिश्नर क्यों लिखा गया है।

"शब्दों की क्रमशः कठिनता के कारण " मैंने उत्तर दिया। " नहीं, नहीं" उनके मुख से उद्गार निकले। फिर उनका अमृततुल्य ज्ञानोपदेश प्रारंभ हुआ — "बेटा सुनो, सर्वप्रथम प्रत्येक व्यक्ति को श्रम करना चाहिए, बिना श्रम किए कुछ भी लाभ नहीं मिल सकता। श्रम करने से ही आर्थिक लाभ होता है। इसीसे धन पैदा होता है जो जीवननिर्वाह का मुख्य साधन है। धन संचित होने से अपने उदर-पोषण की झंझट निकल जाती है और तत्पश्चात् मनुष्य को अवकाश प्राप्त होता है। इसी अवकाश के समय मनुष्य अपनी मानसिक उन्नति कर ज्ञानवान होता है। ज्ञानवान होने से वह अधिकारी होता है। उसे उच्च पद प्राप्त होता है और इसी प्रकार बढ़ते बढ़ते वह चीफ़ कमिश्नर हो जाता है।" (मध्य-प्रांत में उन दिनों चीफ़ कमिश्नर ही सबसे बड़े अधिकारी होते थे। कुछ ही दिनों से ' गवर्नर ' नियुक्त किये जाते हैं।)

यह कितनी उच्च शिक्षा है ! इसमें कितना दार्शनिक एवं शास्त्रीय तत्व भरा हुआ है ! क्या यह किसी प्रकार पुरातन ऋषियों की विद्वता से कम है ?

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी

[श्रीशिवपूजनसहाय, लहेरियासराय]

रायबहादुर हीरालाल जी का जीवन शुद्ध स्वावलंबन का वस्तुपाठ है। साधारण स्थिति से उठ कर उच्च पद को पहुँचने वाले महापुरुष की आत्मशक्ति परमात्मा ने उन्हें दी थी। किंतु सामान्य शिक्षक से अत्युच्च शासनाधिकारी होने पर भी वह आदर्श विनय की विभूति से विभूषित थे। उनकी नम्रता में ही उनकी महत्ता थी।

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा का वार्षिकोत्सव था। लगभग सात-आठ साल पहले की बात है। उसी महोत्सव में महामना मालवीय जी द्वारा भारत-कला-भवन की आधार-शिला रक्खी गई थी। शिलान्यास-महोत्सव के दिन महामहोपाध्याय रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचंदजी ओझा सभापति थे। किंतु वार्षिकोत्सव के सभापति रायबहादुर हीरालालजी थे। उस अवसर पर प्रयाग विश्वविद्यालय के यशस्वी इतिहासाचार्य डाक्टर राम प्रसाद जी त्रिपाठी ने 'सम्राट् अकबर' पर बड़ा महत्त्वपूर्ण भाषण दिया था। हिंदू-विश्वविद्यालय के पुरातत्त्वाचार्य (अब स्व०) श्रीराखालदास बंद्योपाध्याय ने 'मोहन-जो-दड़ो' की अद्भुत कहानियाँ सुनाकर सबको चकित कर दिया था। विद्वद्वर श्रीजयचंद विद्यालंकार जी का भी भाषण हुआ था। मैंने उस वार्षिकोत्सव का विस्तृत विवरण 'मतवाला' (कलकत्ता) में लिख भेजा था, जो 'मतवाला' के दो-तीन अंकों में छपा था। पर रहता था मैं काशी में ही। वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से चार-पाँच दिनों तक होता रहा। मैं उसकी सब बैठकों में शामिल हुआ, और देखता रहा कि प्रधान सभापति श्री हीरालाल जी कितनी शांति और गंभीरता से सभा-संचालन कर रहे हैं। उसी अवसर पर श्रद्धेय बाबू श्यामसुंदर दास जी को 'कोशोत्सव-स्मारक-ग्रंथ' अर्पित किया गया था। कोश (हिंदी-शब्दसागर) के अन्य सपादकों को भी घड़ी, फाउंटेन पेन, दुशाला आदि दिया गया था। प्रधान कोश-संपादक बाबू साहब को जब ग्रंथ अर्पित हो चुका तब हीरालाल जी और बाबू साहब में कुछ विनोद भी हुआ। पर उस विनोद का रस दोनों अभिन्न मित्रों में ही रह गया। मैं केवल दोनों वयोवृद्ध साहित्य-सेवियों की मुसकान का

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ही आनंद ले सका। जान पड़ा कि हीरालाल जी की गंभीरता में विनोदप्रियता का भी पुट है। उनकी शीतल हँसी में साहित्य की मंद सुगंध थी। उनकी वाणी की मंथर गति इस बात को सिद्ध करती थी कि वह सच्चे 'रिसर्च स्कालर' हैं—अपनी ही लगन में लीन रहने वाले पुरातत्त्वान्वेषी हैं। वह अपने साथ फ़ोनोग्राफ़ के बहुत-से रेकर्ड लाए थे, जिन्हें सुनाकर उन्होंने उपस्थित सज्जनों का बड़ा मनोरंजन किया था। प्रत्येक रेकर्ड सुनाने से पहले वह उसका पूर्ण विवरण कह देते थे। मध्य-प्रदेश की जंगली जातियों की बोलियों का अनुसंधान, संग्रह और विश्लेषण करने में उन्होंने कितना परिश्रम किया है—यह उस सभा में उपस्थित सज्जनों की विस्मय-वृद्धि का कारण बन गया। गोंड जाति की स्त्रियों के गीतों का जब वह भाव समझाने लगते थे तब मंडप में अट्टहास गूँज उठता था; पर स्वयं वह केवल मुस्करा कर रह जाते थे।

काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा के वह कई साल तक सभापति थे और उसकी प्राचीन शोध-संबंधिनी त्रैमासिक पत्रिका के संपादक भी। उसमें उनके गवेषणा-पूर्ण लेखों को जिसने पढ़ा है उसके हृदय में आज भी उनका अभाव खल रहा है। 'मध्यप्रदेश में रावण की लंका' नामक उनकी प्रसिद्ध लेखमाला के अनेक अंश विविध पत्र-पत्रिकाओं में छपकर हिंदी-पाठकों के कौतूहल की वृद्धि करते रहे। कई पत्रों में उनके लेखों का कुछ विरोध भी देखने में आया; पर वे अपने विरोधियों को भी बड़ी ही संयत भाषा में उत्तर देते थे और अपनी खोज को सप्रमाण सिद्ध करने में हृदयग्राही एवं युक्तिसंगत तर्कों को उपस्थित करते थे।

जब मैं 'माधुरी' के संपादकीय विभाग में काम करता था तब श्रीदुलारे-लाल जी भार्गव के पास आए हुए उनके पत्रों को पढ़कर आश्चर्य होता था। जिस अध्ययनशील विद्वान् को अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त थी, जो पुरातत्त्वेतिहास का मर्मज्ञ माना जाता था, वह इतना नम्र था कि हम आधुनिक लेखकों को उससे सबक़ लेना चाहिए। मुझे आज तक उनके एक पत्र का यह वाक्य याद है—"मेरे ऐसे एकांतप्रिय ग्रंथकीट से अच्छी लिखावट की आशा न कीजियेगा।" अब ऐसा कौन लिखेगा?

जिस समय मैं इंडियन प्रेस में रहकर द्विवेदी-अभिनंदनग्रंथ का काम करता

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

था, उस समय उस ग्रंथ में छपने के लिए आये हुए उनके एक लेख के विषय में उनसे पत्र-व्यवहार करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह लेख शायद उनके क्लर्क या नक़ल-नवीस का लिखा हुआ था। उसे पढ़ने पर मुझे कुछ भ्रम हुआ। किंतु पत्र लिखने पर उस भ्रम का उन्होंने संशोधन कर दिया। फिर एक पत्र लिखकर पूछा कि और कोई भ्रम हो तो सूचित कीजिये अथवा बाबू श्यामसुंदर दासजी से शंका समाधान कर लीजिये। उनका वह लेख—'ठाकुर जगमोहन सिंह'—अभिनंदन-ग्रंथ में छपा है। उसमें उन्होंने अपने बालपन की एक बात लिखी है। प्रसंगवश उतना ही अंश यहाँ उद्धृत करता हूँ—

"जब आप [ठाकुर जगमोहनसिंह] काशी से लौटकर अपने घर जाते समय कटनी (मुड़वारा) में ठहरे, तब वहाँ के मिडिल स्कूल के शिक्षकों ने आप को अपनी शाला के अवलोकन के लिए निमंत्रित किया। निमंत्रण स्वीकार कर आपने केवल निरीक्षण ही न किया, वरन् प्रत्येक कक्षा की परीक्षा भी ली। जब आप हिंदी की तीसरी कक्षा में पहुँचे और उसकी परीक्षा ली तब इन पंक्तियों के लेखक को पारितोषिक प्रदान कर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की। उस कक्षा के शिक्षक संस्कृतज्ञ थे। वे ठाकुर साहब की रुचि से अनभिज्ञ न थे। अकस्मात् बोले—"होनहार बिरवान के होत चीकने पात।'—यह लड़का संस्कृत अच्छी पढ़ेगा।" मैंने तबतक संस्कृत का नाम भी न सुना था। मैंने समझा, कदाचित् भूगोल आदि के समान ही संस्कृत भी कोई विषय होगा। इस लिए छुट्टी पाते ही एक पैसे का कागज खरीद लाया। शिक्षक के पास जाकर निवेदन किया—"आप इस पर संस्कृत लिख दीजिए, मैं उसे दो-एक दिन में पढ़ डालूँ।" शिक्षक बड़े कृपालु थे, उत्साह भंग न किया। बड़ी चतुराई के साथ समझा-बुझाकर अपना पिंड छुड़ाया। तात्पर्य यह कि ठाकुर जगमोहन सिंह के प्रथम तथा अंतिम दर्शन उसी समय हुए थे। ठीक स्मरण है, वे बड़े तेजस्वी पुरुष थे। उस समय वे बीस वर्ष के रहे होंगे।"

ऊपर के उद्धरण से रायबहादुर हीरालाल जी से जीवन पर कैसा प्रकाश पड़ता है, यह सहृदय संवेद्य है। वह अपनी जाति और अपने प्रांत की विभूति तो थे ही, भारत और उसकी राष्ट्रभाषा हिंदी के भी गौरव थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नागपुर विश्वविद्यालय-संबंधी संस्मरण

[प्रोफ़ेसर काशीदत्त पांडे,एम० ए० ,अमरावती]

राय बहादुर हीरालाल साहब सन् १९२३ में सरकारी नौकरी से पेंशन लेकर जबलपुर में रहने लगे थे। १९२४ में उनसे प्रथम परिचय हुआ, परंतु बिशेष परिचय तब हुआ जब मैं विश्वविद्यालय का रजिस्ट्रार होकर उसी वर्ष नागपुर चला गया। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का परिचय उनके साथ भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में हुआ करता था और ऐसा कोई विरला ही होगा जिसको उनके सरल स्वभाव, उदार हृदय, कर्त्तव्य-परायणता और प्राचीन भारत के इतिहास के पांडित्य का ज्ञान न हुआ हो।

विश्वविद्यालय का कार्य १९२३ में प्रारंभ हुआ और उसी समय से राय-बहादुर साहब ऐकैडेमिक काउंसिल और आर्ट्स फ़ैकलटी के बड़े प्रातिष्ठित सदस्य थे। उसी समय यह प्रश्न उठा कि हिंदी, मराठी और उर्दू बी० ए० और एम० ए० की परीक्षाओं के लिए विषय रक्खे जाँय या नहीं। रायबहादुर साहब और राम प्रताप जी शास्त्री ने हिंदी के विषय में रिपोर्ट लिखी थी। जिन लोगों का यह विचार था कि हिंदी में विश्वविद्यालय संबंधी परीक्षाओं के लिए अधिक सामग्री नहीं है उन को यह दिखा दिया कि नागरी-प्रचारिणी-सभा ने २० वर्षों से जो काम किया है उससे प्रत्यक्ष है कि केवल अध्ययन के लिए ही नहीं, परंतु अनुसंधान और अन्वेषण तक के लिए भी प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथों में सामग्री पाई जाती है। उनकी इस रिपोर्ट से नागपुर विश्वविद्यालय में हिंदी की नींव पड़ी, जिसका अंतिम परिणाम यह हुआ कि राबर्टसन कालेज जबलपुर में हिंदी के मुख्य अध्यापक की नियुक्ति सन् १९२७ में हुई।

उस समय सर विपिनकृष्ण बोस नागपुर विश्वविद्यालय के वाइसचैंसलर थे और नवीन विश्वविद्यालय के कार्य के संचालन तथा उत्तरी मध्यप्रांत की सहानुभूति को भली भाँति प्राप्त करने के लिए वे सदैव रायबहादुर साहब और मनोहर पंत जी गोलवेलकर से सम्मति लिया करते थे। जब तक रजिस्ट्रार मैं रहा तब तक किसी न किसी स्वरूप में रायबहादुर साहब से मेरा काम पड़ा ही करता था। एक बार अतिरिक्त व्याख्यानों की एक योजना की गई और अपने अपने विषयों के अच्छे

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अच्छे ज्ञाता अन्य प्रांतों से व्याख्यान देने के लिए बुलाए गए। इसी संबंध में आचार्य सर पी० सी० राय नागपुर विश्वविद्यालय में पहले-पहल आए। इसी संबंध में राय बहादुर हीरालाल जी ने भी कलचुरि और हैहय वंशों के विषय में व्याख्यान दिए थे। रायबहादुर साहब के प्राचीन भारत-संबंधी इतिहास का पांडित्य अत्यंत गंभीर था और मुझे एक अवसर तो ऐसा पड़ गया जब मैंने उनसे जाकर कहा कि यदि इस समय आप तुरंत अपना अन्य काम बंद करके विश्वविद्यालय में व्याख्यान देने का भार न उठा लेंगे तो बहुत हानि होगी, क्योंकि उस विषय के आप ही अकेले वेत्ता हैं। उस समय रायबहादुर साहब ने अपना सब काम छोड़कर हम लोगों को अनुग्रहीत किया।

मैं १९२६ में नागपुर से लौट कर जबलपुर फिर आया। उस समय मैं गोल बाज़ार में रायबहादुर साहब का पड़ोसी था। वे अपने भाई गोकुलप्रसाद जी के साथ रहा करते थे। उस समय की उनकी दिनचर्या देखने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। रायबहादुर साहब अपना समय अधिकतर अध्ययन ही में व्यतीत करते थे। नागरी-प्रचारिणी-सभा का काम उनके पास अधिक रहता था। लेखों का लिखना, अनुसंधान, और अनुसंधान करने वाले अन्य विद्वानों का स्वागत, यही उनके काम उन दिनों थे।

१९२६ में भाई की मृत्यु से उनका चित्त जबलपुर से उचट गया और वे थोड़े ही दिन बाद कटनी में जाकर रहने लगे। सार्वजनिक कार्यों में सम्मिलित होने से भी अरुचि हो गई। कुछ दिनों बाद उन्होंने विश्वविद्यालय की कमिटिओं से भी अपना संबंध तोड़ लिया। नागपुर विश्वविद्यालय ने सन्मानार्थ डी० लिट्० की उपाधि उनको १९३३ में उनकी विद्वत्ता के कारण प्रदान की। यदि इस उपाधि के प्रदान करने में एक वर्ष की देर और हो जाती तो यह महत्कार्य होने न पाता। यह भी विश्वविद्यालय के भाग्य की बात रही कि वह उपाधि प्रदान कर सकी।

रायबहादुर साहब उस प्रांत में जो बीज प्राचीन सभ्यता और प्राचीन ऐतिहासिक अनुसंधान का बो गए हैं, उसके फल का उपभोग इन विषयों के अनेक प्रेमी कर रहे हैं।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

REMINISCENCES

[*Prof. V. V. Mirashi, M. A., Nagpur*]

I first came to know the late Rai Bahadur Dr. Hira Lal, while he was living in Nagpur for a few months after his retirement from Government service. He was then engaged in compiling a catalogue of Sanskrit and Prakrit manuscripts in the Central Provinces and Berar. When I went to see him I was at first apprehensive as to how he would receive me; for he had just then retired as a high Government Officer ; but the cordial manner in which he talked to me at once dispelled all apprehensions. Soon after he left Nagpur owing to the transfer of his brother and later on settled down at Katni ; but I never lost an opportunity to see him, and to derive inspiration, enthusiasm and information from his talk whenever he came, to Nagpur to attend University meetings.

Before the late Rai Bahadur began his selfless work, our knowledge of the ancient history of the C. P. & Berar, was very meagre, as can be seen from the earlier editions of the C. P. Gazetteers. The advance that has been made in that knowledge in recent years is mainly due to his strenuous efforts. He sometimes used to talk of the difficulties that he had to contend with. During his college career he had studied Sanskrit only up to the Intermediate standard. "This," he said, "was a great handicap to my work." There was, again, no well-stocked library in the province and his own official work lay in another field. Still, with his characteristic energy and enthusiasm he overcame all difficulties, and achieved marvellous success in this as in other fields, which he worked in.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

R. B. Hiralal always encouraged young scholars, specially Sanskritists, to take to historical and linguistic research. His advice and encouragement have been mainly responsible for the little historical and linguistic research that is being carried on in our province. When he was convinced of the correctness of any view, he put it forth with characteristic force ; yet like a true scholar, he was not slow to admit his error, even when it was pointed out by a junior worker. I had occasion once to read out to him one of my articles (which has been subsequently published in the Indian Historical Quarterly) in which I had criticised a certain view held by him in common with Fleet, C. V. Vaidya and R. D. Banerjee. I was at first very apprehensive as to how he would receive my criticism, and thought of even omitting all reference to him while reading my article. But I was mistaken. He frankly admitted that he had reiterated Fleet's view without verifying the reference for himself and commended the soundness of my reasoning. How few indeed are such noble souls !

संस्मरण

[प्रोफ़ेसर वी० वी० मीराशी, एम्० ए०, नागपुर]

स्वर्गीय रायबहादुर डाक्टर हीरालाल से मेरा प्रथम परिचय उस समय हुआ जब कि वे सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण कर नागपुर में कुछ महीने से रह रहे थे। उन दिनों वे मध्यप्रांत और बरार के संस्कृत तथा प्राकृत के हस्तलिखित ग्रंथों की सूची बनाने में संलग्न थे। उन्होंने थोड़े ही दिन पहले एक उच्च सरकारी पद से अवकाश ग्रहण किया था; अतः जब मैं पहली बार उनसे मिलने गया तो मेरे हृदय में यह आशंका थी कि न जाने वे मुझसे किस प्रकार मिलेंगे। लेकिन उनके सहृदयता-पूर्ण व्यवहार ने मेरी सब आशंकाओं को तुरंत निर्मूल सिद्ध कर दिया। कुछ ही काल-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परांत अपने भाई के तबादले के कारण वे नागपुर छोड़कर कटनी जा बसे . लेकिन जब कभी वे विश्वविद्यालय की समितियों में सम्मिलित होने के लिए नागपुर पधारते तो मैं उनकी बातों से स्फूर्ति, ज्ञान और उत्साह प्राप्त करने का अवसर हाथ से न जाने देता।

जैसा कि मध्यप्रांतीय गज़ेटियर के आरंभिक संस्करणों से प्रकट है, स्वर्गीय रायबहादुर साहब की निःस्वार्थ सेवा से पूर्व हमारा मध्यप्रांत और बरार का प्राचीन इतिहास-संबंधी ज्ञान अति अल्प था। हाल में जो तद्विषयक ज्ञान में वृद्धि हुई है वह मुख्यतः उन्हीं के अथक परिश्रम का फल है। वे कभी-कभी अपनी कठिनाइयों का उल्लेख किया करते थे। अपने विद्यार्थी-जीवन में उन्होंने संस्कृत एफ़० ए० क्लास तक ही पढ़ी थी। इसे वे अपने काम में एक भारी बाधा मानते थे। एक दूसरी बात यह भी थी कि समस्त प्रांत में कहीं एक भी सुसंपन्न पुस्तकालय न था, और उनके सरकारी कार्य का क्षेत्र भी भिन्न था। इतने पर भी अपनी स्वभावानुरूप शक्ति और उत्साह के सहारे उन्होंने समस्त कठिनाइयों पर विजय प्राप्त कर, अन्य क्षेत्रों की भाँति इसमें भी आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की।

रायबहादुर हीरालाल नवयुवक विद्वानों को, विशेषकर संस्कृतज्ञों को, ऐतिहासिक और भाषा-संबंधी खोज के लिए सदैव प्रेरित करते रहते थे; और हमारे प्रांत में जो इतिहास और भाषा-संबंधी खोज का थोड़ा बहुत काम हो रहा है उसका श्रेय मुख्यतः उन्हीं के सत्परामर्श और प्रोत्साहन को है। जब उन्हें किसी मत की सत्यता का निश्चय हो जाता था तो उसका प्रतिपादन वे बड़े ज़ोर से करते थे। फिर भी एक सच्चे विद्वान की भांति वे अपनी भूल स्वीकार करने को सदैव तैयार रहते थे चाहे उस भूल की ओर उनका ध्यान किसी नौसिखे द्वारा ही क्यों न आकर्षित हुआ हो। एक बार मुझे अपना एक लेख उनके सम्मुख पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ (यह लेख बाद में 'इंडियन हिस्टारिकल क्वारटर्ली' में छपा था)। इसमें मैंने एक ऐसे मत का खंडन किया था जिसके वे तथा फ़्लीट, सी० वी० वैद्य और आर० डी० बनर्जी पक्षपाती थे। पहिले मुझे इस बात की बड़ी आशंका थी कि न जाने वे मेरी आलोचना सुनकर क्या ख़याल करेंगे और लेख पढ़ते समय मेरे जी में यह भी आया कि उस अंश को जिसमें उनके मत का खंडन था, छोड़ दूँ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लेकिन मेरी धारणा ग़लत थी। उन्होंने निःसंकोच भाव से स्वीकार किया कि फ़्लीट के मत को उन्होंने विना स्वयं जाँचे हुए दुहरा दिया था और मेरा युक्ति की परिपक्वता की सराहना की। ऐसी महान आत्माएं कितनी कम हैं!

कटनी में एक मास

[साहित्यरत्न पं० भागीरथ प्रसाद दीक्षित, लखनऊ]

हमारे चरित नायक उन महान् पुरुषों में से एक थे जिनकी ओर केवल भारतवासियों का ही नहीं, अन्य देशवासी विद्वानों का भी ध्यान आकर्षित हो गया था। संवत् १९७९ वि० में सब से प्रथम मेरा आप से परिचय हुआ था। नागरी-प्रचारिणी सभा, काशी, की त्रैवार्षिक अन्वेषण-संबंधी रिपोर्ट तैयार करनी थी। मैं अन्वेषण-कार्य पर नियुक्त था, और रायबहादुर महोदय के तत्वावधान में खोज का कार्य हो रहा था। मुझे रिपोर्ट तैयार कराने के लिये आपने कटनी बुलाया। पत्र पाते ही मैं वहां आप की सेवा में उपस्थित हुआ। इस समय यहाँ एक मास तक रहा। उस से पूर्व ही आप के पत्र-व्यवहार से आप की सहृदयता और साहित्य-मर्मज्ञता का परिचय मिल चुका था। इस काल में आप ने जो सहानुभूति-पूर्ण एवं आत्मीयता का व्यवहार किया, उसने मेरे हृदय में उनके प्रति एक अटल श्रद्धा उत्पन्न कर दी। इस एक मास के आप के सहवास में मैंने अन्वेषण-संबंधी अनेकों नई बातें सीखीं। जहाँ कहीं विचारों में मतभेद होता था, वहां सदैव आप सहृदयता एवं विवेचनात्मक प्रणाली से विचार कर स्वीकार या अस्वीकार करते थे। जब कभी आप प्राचीन खोज-रिपोर्टों में अशुद्धियाँ पाते, तो उसकी तीव्र आलोचना करते और उस पर विस्तार-पूर्वक विवेचनात्मक नोट लिखते। आप प्रमाणों द्वारा ही निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयत्न करते थे; विना प्रमाण की बात स्वीकार करना उनके मंतव्य के विरुद्ध था। आप सदैव अपने छोटे परिचितों का भी कितना ध्यान रखते थे इसका यही प्रमाण है कि कटनी में जब तक मैं रहा, आप स्वयं प्रतिदिन प्रातः सायं देख लिया करते थे कि मुझे कोई असुविधा तो नहीं है। उनके मधुर शब्द आज भी ज्यों-के-त्यों मेरे कानों में सुनाई-से पड़ रहे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब मैंने भूषण और मतिराम पर लेख लिखने का अपना विचार आप से प्रकट किया, तो आप ने सहर्ष मुझे अनुमति दे दी। यही नहीं, उत्तम मंत्रणा देकर मुझे प्रोत्साहित किया। इसके अतिरिक्त खोज-रिपोर्ट की अप्रकाशित सामग्री के उपयोग की आज्ञा प्रसन्नता-पूर्वक प्रदान की। इस प्रकार 'कटनी का एक मास' मेरे जीवन की चिरस्मृति बन गया।

सब से मनोहर बात यह हुई कि बिना मुझ से एक शब्द कहे खोज-रिपोर्ट में मेरी सेवाओं का भी सहानुभूति-पूर्ण उल्लेख आप ने कर दिया। इसके पूर्व किसी अन्वेषक का किसी रिपोर्ट में नाम तक नहीं है!

स्वर्गीय बाबू साहब में अनेक गुण थे। आप समय के बड़े पाबंद थे। जिस प्रकार एक सच्ची घड़ी नियमित रूप से कार्य करती है, उसी प्रकार वे सदैव नियमित रहते थे। क्रोध का उनमें नाम तक नहीं था। मैंने इस एक मास में एक बार भी किसी पर उन्हें क्रुद्ध होते नहीं देखा। आप सदा मिष्टभाषी थे और सब के साथ आप का व्यवहार सहानुभूति-पूर्ण होता। कटनी के प्रतिष्ठित जन बहुधा आपसे अपने कार्यों के संबंध में सम्मति लेने आया करते थे। उन्हें बड़े प्रेम से उचित राय द्वारा आप अनुग्रहीत करते थे।

जब सन् १९२३ में मेरा प्रथम लेख 'कौशांबी' शीर्षक 'माधुरी' में निकला तो उसको पढ़ कर आपने तुरंत पत्र द्वारा मुझे बधाई दी। इसी प्रकार समय-समय पर आप के प्रोत्साहनद्वारा मेरा उत्साह बढ़ा और अनेकों लेख भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकाओं में मैं प्रकाशित कर सका।

सन् १९२५ में जब मैं अपने भतीजे के विवाह में जबलपुर गया, तो आप भी उसमें सम्मिलित हुए और मुझ से जिस प्रेम और हर्ष से मिले, वह आप के ही अनुरूप था। मैं उस समय जबलपुर में कई दिन तक ठहरा था। उन दिनों रायबहादुर महोदय अवकाश ग्रहण कर त्रिपुरी गाँव में रहते थे, जो जबलपुर से ९ मील दूर भेड़ाघाट जाने के मार्ग पर है। उसे आपने क्रय कर लिया था। एक दिन मैं आप से मिलने त्रिपुरी गया। उस समय वह एक बहुत छोटा गाँव था। उसमें आप कृषक-रूप में वर्तमान थे। मज़दूरों-द्वारा गल्ले की ओसाई करवा रहे थे। मैं उनके उस जीवन को देख कर हर्ष और आश्चर्य में भर गया। कुछ देर में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आप मुझे अपने बँगले पर ले गये, और मिष्ठान्न आदि से सत्कार किया। बड़ी देर तक आप से बातचीत हुई। आप ने त्रिपुरी का विस्तृत इतिहास और उसके क्षय करने का कारण समझाया, जिससे आपकी इतिहास-प्रियता, जातीयता और उत्साह की भूरि-भूरि प्रशंसा करनी पड़ती है।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, से सन् १९२४ में मेरा संबंध-विच्छेद हो जाने के बाद भी आपकी कृपा व प्रेम मेरे ऊपर बराबर बना रहा, और जब कभी आवश्यकता होती थी, आप मुझे याद कर लिया करते थे। मृत्यु से कुछ काल पूर्व ही आपने मुझे लखनऊ की पब्लिक लाइब्रेरी के संबंध में एक पत्र लिखा था और एक हस्त-लिखित पुस्तक की विषय-सूची माँगी थी, जिसे मैंने आपकी सेवा में लिखकर भेज दिया था।

श्रद्धेय रायबहादुर महोदय केवल मध्यप्रांत के ही रत्न न थे, वरन् देश की एक विशेष विभूति थे।

———

संस्मरण

[श्री रायकृष्ण दास, काशी]

श्री० हीरालाल जी की प्रशंसा तो मैं बहुत दिनों से सुना करता था और उनके परिचय की इच्छा भी रखता था किंतु उनके व्यक्तित्व के विषय में मेरा कल्पित चित्र उनके पांडित्य से संबंध रखता था। स्वयं हीरालाल जी के लेखों से वा भाई काशीप्रसाद जी की ज़बानी मैंने कभी उस व्यक्ति की कल्पना न की थी जिसका मुझे साक्षात् हुआ।

१९३० ई० की बात है। गर्मी के दिन थे और उस समय हीरालाल जी शिमले गए हुए थे। बाबू श्यामसुंदर दास जी को भी उन्होंने वहाँ आने के लिए लिखा था। इसी बीच में भारत कला-भवन का कुछ कार्य निकल आया और बाबू श्याम-सुंदर दास जी, प्रोफ़ेसर केशवप्रसाद जी मिश्र तथा मैं एक पंथ दो काज के लिए, शिमला पहुँचा। वहीं पहिले-पहिल मुझे हीरालाल जी के दर्शनों का सौभाग्य हुआ

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

और आश्चर्य की बात यह है कि वहाँ मैंने एक शुष्क पुरातत्वज्ञ और पंडित नहीं पाया, किंतु एक प्रसन्न और सजीव मूर्ति जिससे प्रसन्नता और सजीवता की ऐसी निर्मल किरणें फूटती थीं जो अपने पार्श्ववर्ती व्यक्तियों को अपने विमल आलोक से पूर्णतः आलोकित करती थीं। इन्हीं स्वास्थ्यप्रद गुणों के कारण हीरालाल जी अपनी अवस्था से अपेक्षाकृत बहुत अल्पवयस्क जँचते थे। मैंने उन्हें पचास-पचपन के ऊपर नहीं आँका था। उनकी प्रसन्नता ऐसी कठिन कसौटी पर चढ़ चुकी थी कि भगवान् शत्रु को भी वैसा अवसर न दिखावे। अपने एकलौते लाल को खोकर भी उन्होंने अपनी प्रसन्नता क़ायम रक्खी थी, यह एक बड़ी कठिन तपस्या थी। अस्तु।

एक दिन शिमला से आठ दस मील पर स्थित तारादेवी के मन्दिर के लिए हम लोग रवाना हुए। शिमले की खिलौने-जैसी रेल पर तो समय किसी प्रकार कट गया, पर जब हम लोग लौटे तो पैदल लौटे। एक तो चढ़ाई, दूसरे इस कारण रास्ता कठिन हो गया कि दल के कई आदमियों की अशक्तता-वश हम लोग बिना तारादेवी तक पहुंचे ही लौट पड़े थे। किंतु हीरालाल जी की प्रसन्नता एवं सजीवता ने हम लोगों को वह मार्ग ज़रा भी खलने न दिया और हम लोग बिना थके-थकाए अपने अपने डेरों तक पहुँच गए। अस्तु।

हीरालाल जी के जिस दूसरे गुण का मुझे अनुभव हुआ वह उनकी कार्य-तत्परता थी। दो वर्ष तक मुझे इसका अवसर मिलता रहा, जब तक मैं नागरी-प्रचारिणी सभा का मंत्री रहा। वे सभा की ओर से हस्तलिखित पुस्तकों की खोज के निरीक्षक थे। इस पद को वे ऐसी क्षमता और तत्परता से निभाते थे कि वाह वाह किए बिना न रहा जाता था। कोई पत्र गया कि तुरंत उसका उत्तर और समुचित उत्तर। कार्य संचालन की उनमें ऐसी अद्भुत शक्ति थी कि यदि वे एक पराधीन देश में न जनमे होते तो अवश्य बहुत ऊंचे पद पर पहुँचे होते।

इसी गुण के साथ साथ उनकी मितव्ययता भी सराहनीय थी। मैं सदैव पाता था कि सभा से उनका जो पत्र व्यवहार होता था वह ऐसे कागदों पर होता था जो साधारणतः रद्दी की टोकरी में स्थान पाते हैं। इससे मुझे भी प्रसन्नता होती थी, क्योंकि कागद का व्यवहार आजकल ऐसी शाहखर्ची से किया जाता है कि उसका पुनः उपयोग न करना एक पाप है। सुना है हीरालाल जी जीवन के सभी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पत्रों में इस प्रकार की मितव्ययता के अभ्यासी थे। उनका यह गुण सर्वथा आदरणीय है।

ऊपर मैंने उनकी कार्यतत्परता और कुशलता की चर्चा की है। बिना एक घटना का उल्लेख किए वह अधूरी रह जायगी—

भारत कला-भवन को उन्होंने ब्रह्मा की एक विशाल एवं प्राचीन मूर्ति प्रदान की थी और अपने स्वभाव के अनुसार बार बार लिख रहे थे कि वह काशी मँगा ली जाय। उसकी विशालता के कारण यह आवश्यक था कि कोई चतुर आदमी उनके यहाँ जाय और उसे हिफ़ाज़त से ले आवे। ऐसे आदमी को उन तक भेजने में कई कारणों से देरी हो रही थी और वे बार बार तगादा कर रहे थे। इसी बीच, एक दिन क्या देखता हूँ कि उन्होंने उसकी रेलवे बिल्टी भेज दी है! बिल्टी पाकर मुझे जितनी प्रसन्नता न हुई उससे अधिक इस बात का भय हुआ कि मूर्ति यदि ठीक ठीक चलान न की गई होगी तो मार्ग में अवश्य खंडित हो गई होगी। किंतु जब वह पारसल छूट कर आया तो मैं उसकी पैकिंग देख कर दंग रह गया। उससे अच्छी पैकिंग हमारे देश में हो ही नहीं सकती थी। इस प्रकार उन्होंने सुचारु-रूप से अपना कार्य ही नहीं पूरा किया बल्कि कला-भवन को उस अतिरिक्त व्यय से भी बचा लिया जो आदमी भेजने में पड़ता।

हीरालाल जी के पांडित्य और अनुशीलन के संबंध में कुछ कहना वितंडा-मात्र है क्योंकि उनके ये गुण देश विख्यात हैं; अतएव, मुझे तो उनके उक्त उच्च गुणों की स्मृति अधिक प्रिय है और उनका अनुकरण ही विशेष श्लाघ्य प्रतीत होता है।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

'साहब'* के संस्मरण

[पंडित विश्वंभरप्रसाद गौतम, एम० ए०, एल-एल० बी०, कटनी]

"कहेंगे सबै नैनन नीर भरि-भरि पाछे,
प्यारे 'हरिचंद' की कहानी रह जायगी।"

मेरे स्कूल के दिन थे। मध्यप्रांत में 'हितकारिणी' पत्रिका की अच्छी धाक जमी थी। उसमें समय समय पर 'खोजक' महाशय के पुरातत्त्वसंबंधी लेख प्रकाशित हुआ करते थे। स्वभावतः हृदय में यह कुतूहल उत्पन्न हुआ करता था कि यह कौन महान लेखक है जो अतीत में छिपी अनेकों महान् विभूतियों के समान सम्प्रति में भी अपने आप को कीर्त्ति के रंगमंच पर नहीं लाना चाहता है। बहुत पूछ-ताछ की, पर पता न लगा। एक दिन अचानक स्वर्गीय द्विवेदी जी के घर जा पहुँचा, जो 'हितकारिणी' के सुयोग्य संपादक थे। वे उस समय 'हितकारिणी' के 'प्रूफ़' देख रहे थे। संयोगवश उनमें 'खोजक' महाशय का भी लेख था। उसे देखते ही मैंने द्विवेदी जी से पूछा कि ये महाशय कौन हैं? उन्होंने हँसते हुए कहा, "दिया तले अँधेरा? तुम, अपने कटनी के नामी विद्वान हीरालाल साहब को नहीं जानते?"†

उन दिनों कटनी में हाई स्कूल नहीं था। इसलिए मैं जबलपुर ही में पढ़ता था। दिसंबर की छुट्टी आई और मैं सीधा घर पहुँचा। पिता जी से पूछा, "आप हीरालाल साहब को जानते हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "उन्हें कौन नहीं जानता? आज संध्या-समय चलना; उनसे भेंट करा देंगे।" इस पर मेरी ख़ुशी

---

* रायबहादुर डाक्टर हीरालाल, बी० ए० को उनके आत्मीय 'साहब' कह कर संबोधित किया करते थे। —लेखक

† षष्ठम ओरियंटल कानफ़रेंस के स्वागताध्यक्ष ने ठीक कहा था—

"सब कुछ योग्यता रखते हुए भी रायबहादुर हीरालाल को एक बात नहीं आती। उन्होंने अपना विज्ञापन करना सीखा ही नहीं। उन्होंने अपने व्यक्तित्व को मध्यप्रांत के जंगलों में छिपा रक्खा है, और छिपा रक्खा है उन विद्वतापूर्ण ग्रंथों में जिनसे सर्व-साधारण में किसी को ख्याति नहीं मिलती।" —सं०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

का ओर छोर न रहा। संध्या-समय, डट कर ड्रेस किया और पिता जी के साथ साहब के यहां पहुँचा। मार्ग में कल्पनाएँ उठ रही थीं कि हैट-धारी सज्जन मिलेंगे। उनके मुख में चुरुट भी अवश्य दबा होगा। पर, साक्षात्कार होते ही वे कल्पनाएँ निरी कल्पनाएँ निकलीं। मैंने हीरालाल साहब के रूप में सादगी, सज्जनता, सहृदयता और प्रसन्नता की साक्षात् मूर्त्ति देखी।

कहते हैं, शेक्सपियर की पीठ ठोंक कर बालपन में किसी ने नहीं कहा था कि यह महान कवि होगा। पर मध्यप्रांत के ख्यातनामा कवि जगमोहन जी ने प्राथमरी कक्षा के 'हीरा' की सर्वतोमुखी प्रतिभा देखकर, यह भविष्यद्वाणी की थी कि यह बालक बड़ा होनहार निकलेगा। सच है, "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"।

स्वावलंबन विद्यार्थी हीरालाल का जीवन-व्रत था। कालेज में भी आप को जो छात्र-वृत्ति मिलती थी उसीसे आप अपना निर्वाह ही नहीं कर लेते थे, वरन् आप उसमें से कुछ बचा भी लेते थे। 'सीधा-जीवन और उच्च-विचार' की लगन आपकी जीवनचर्या में पग पग पर मिलती है। आपका सिद्धांत था कि "पैसों की रक्षा करो, रुपये अपनी रक्षा आप कर लेंगे।"

आपका ईश्वर में अटल विश्वास था। स्कूल-मास्टरी से आप जब योग्यता-क्रम के अनुसार नार्मल स्कूल के 'सुपरिंटेंडेंट' नहीं बनाए गए, तब आपके स्नेही बहुत खिन्न हुए, पर आपके हक़ों पर अधिकारियों द्वारा ऐसा कुठाराघात होने पर भी आप रत्ती भर दुखी नहीं हुए। आपने अपने क्षुब्ध मित्रों का समाश्वासन यह कह कर कर दिया कि, "ईश्वर जो कुछ करता है, सब अच्छे के लिए।" हुआ भी ऐसा ही। थोड़े ही दिनों में, आप सुपरिंटेंडेंट के ग्रेड से बढ़कर ग्रेड के अफ़सर याने स्कूलों के सर्किल इंस्पेक्टर नियुक्त हो गये। आपकी ऐसी बढ़ती देख कर, आपके प्रतिद्वंदियों के द्वेष की आग ऐसी भड़की कि वे आपकी जान के ग्राहक बन गये। आपके पास रोज धमकियों से भरे पत्र आने लगे कि आप क़त्ल कर दिये जावेंगे! पर, साहब इन गीदड़-धमकियों से कब दबने चले थे? उन्होंने अपना काम दिन दूने और रात चौगुने उत्साह से किया। परिणाम यह हुआ कि आप एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर बना दिये गये और फिर डिप्टी कमिश्नर के पद पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आरूढ़ हुए। जबलपुर ज़िले के आप प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने केवल अपनी योग्यता के बल पर यह पद प्राप्त किया था।

आप की दिनचर्या बड़ी नियमित रहती थी। रिटायर होने के पश्चात् जब आप कटनी रहने लगे तब आप प्रातःकाल चार बजे उठकर, गीता-पाठ किया करते थे और फिर घूमने को निकलते थे। घूमकर वापिस आने के बाद आप ग्रंथों के अवलोकन और लेखन के कार्य में लग जाते थे। विद्या-व्यसन आपका स्वभाव हो गया था। आपके मित्रों में से अनेकों सरकारी उच्च पदाधिकारियों ने रिटायर होने पर आप से प्रार्थना की कि वे राजनैतिक क्षेत्र में कुछ कार्य करें। पर, आपने सदैव यही उत्तर दिया कि "यदि मुझे कोई व्यक्ति मेरा काम करने के लिए मिल जावे, तो मैं सहर्ष राजनैतिक क्षेत्र में काम करने को तैयार हूँ। आपकी इस माँग की पूर्ति बड़े से बड़े सरकारी अफ़सर आपके जीवन-पर्यंत न कर सके। आप यदि किसी को समय व्यर्थ खोते देखते, तो कह उठते थे, "अमोल काल जात है", और नवयुवकों को उत्साहित करने के लिए एक अँग्रेजी विद्वान की कार्य-तल्लीनता का उदाहरण दिया करते थे। वह विद्वान जरमन महायुद्ध के अवसर पर, जब भीषण बम के गोलों की वर्षा उसके समीप ही हो रही थी, तब भी अपने कार्य से विचलित नहीं हुआ था। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे, जे आचरहिं ते नर न घनेरे', इस लोकोक्ति के अनुसार आप 'नर न घनेरे' में से थे। पटना भूकंप के प्रभाव से जब कटनी की विशाल अट्टालिकाएं व झोपड़ियाँ हिल रही थीं, उस समय आप अपने ग्रंथालय में बैठे लेख लिख रहे थे।

आप में जन्मभूमि का प्रेम कूट कूट कर भरा था। नागपुर विश्वविद्यालय स्थापित हो जाने पर आपके गुण-ग्राही मित्रों ने यह इच्छा प्रगट की कि आप नागपुर में ही आकर रहिए, जिससे आप विश्व-विद्यालय के 'वायसचैंसलर' बन सकें। पर आपने वह बात स्वीकार नहीं की। इसी प्रकार महामना मालवीय जी ने आप से प्रार्थना की थी कि काशी-विश्वविद्यालय में पुरातत्व-विभाग के अध्यापक हो जाइये। पर उसे भी आपने खेद के साथ इसीलिए अस्वीकार कर दिया था कि आप कटनी नहीं छोड़ना चाहते थे। इससे कोई यह न समझे कि आप बाहर जाना बिलकुल पसंद ही न करते थे। बात ऐसी नहीं थी। आप यात्रा-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रेमी थे। भारतवर्ष का कदाचित् ही कोई प्रसिद्ध स्थान हो जिसे आप न देख आए हों। इतना ही नहीं, वृद्धावस्था व डाक्टरों की राय की परवा न कर, आप विलायत भी गए थे। वहाँ के विद्वानों ने आपका अच्छा स्वागत किया था। डाक्टर ग्रियर्सन तो आपकी भेंट से इतने मुग्ध हो गए थे कि उन्होंने नेत्रों की ज्योति खो जाने से अपने दर्शन-सुख की कमी को आपके शरीर-स्पर्श से पूर्ण कर अपने को कृतकृत्य समझा था।

लोकोक्ति है कि जन्मभूमि में लोग तुलसीदास जैसे महान कवियों को भी तुलसिया कह कर संबोधित करते हैं; अर्थात् जन्मभूमि में प्रतिष्ठा पाना बड़ा कठिन है। पर विलायत से वापिस आने पर कटनी ने जन बच्चे से अपने 'साहब' का जो अपूर्व स्वागत किया था उसके स्मरणमात्र से आपकी सर्वप्रियता का चित्र आँखों के सामने खिंच जाता है।

आप में पिता और बंधु-प्रेम की अत्याधिक मात्रा थी। वार्तालाप में उनकी याद आतेही आप गद्गद हो उठते थे। पूज्य पिता की स्मृतिरक्षार्थ आपने ईश्वरी संस्कृत पाठशाला का निर्माण किया व ईश्वरीपुरा बसवाया। आपके भव्य-भवन में प्रवेश करना तब तक असंभव है जबतक आप विशाल 'गोकुल दरवाज़ा' से न निकलें। इसका नाम अपने स्वर्गीय बंधु की स्मृति-रक्षा के लिए आपने ऐसा रक्खा था।

आपके जीवन की सबसे विलक्षण बात यह थी कि प्रौढ़ावस्था में ही आपकी पत्नी का देहांत हो चुका था। आपके मित्रों ने विशेष आग्रह किया था कि आप दूसरा विवाह कर लीजिए। पर आप जैसे एक-पत्नी-व्रतधारी संयमी व्यक्ति को यह कैसे स्वीकार हो सकता था? आप मित्रों को यह उत्तर देकर निरुत्तर कर दिया करते थे कि विवाह की इच्छा अब मुझे केवल संतानोत्पत्ति की लालसा से हो सकती है, परंतु ऐसी इच्छा मुझे नाममात्र भी नहीं है, भतीजे मुझे पुत्रों से भी प्यारे हैं। आप जीवन पर्यंत इस विचार से नहीं डिगे।

ग्रामीण कहावत है कि 'सोना जाने कसे और आदमी जाने बसे'। इस कसौटी में कसे जाने पर भी साहब आदर्श मित्र सिद्ध होते हैं। आप के साथ ओरियंटल कांफरेंस में सम्मिलित होने के लिए बड़ौदा जाने का सौभाग्य प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हुआ। साथ में एक और मित्र थे। हम लोग उज्जैन देखने के लिए उतर पड़े। उस दिन आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं था। हम लोगों ने बहुतेरा चाहा कि आप उज्जैन घूमने का कष्ट न उठावें, पर आप नहीं माने और यह कह कर साथ हो लिए कि "यदि मैं तुम लोगों के साथ न रहूँगा तो यहाँ पथ-प्रदर्शक का काम कौन करेगा ?" उज्जैन से जब हम लोग बड़ौदा स्टेशन पर पहुँचे, तो वहाँ आप बड़े असमंजस में पड़े। वहां की स्वागत समिति के अनुसार परिषद् व उसकी उपसमितियों के भूतपूर्व तथा वर्तमान सभापतिवृंद महाराज के मेहमान होकर रहने वाले थे और शेष प्रतिनिधि अन्यत्र ठहराये जाने वाले थे। स्वयं-सेवकों ने जब आप से यह कहा कि आप के मित्र और आप एक साथ न ठहर सकेंगे उस समय आप की मुख-मुद्रा से दुःख टपका पड़ता था। हम लोगों के विशेष अनुनय विनय के बाद आप कहीं अलग ठहरने के लिए राज़ी हुए। उस पर भी आप नित्य एक बार हम लोगों के निवास-स्थान में केवल इसलिए हो जाया करते थे कि हम लोगों को किसी प्रकार की असुविधा तो नहीं है।

बड़ौदा से वापिस आने पर एक बड़ी विनोदपूर्ण घटना हुई। बड़ौदा के शाही विश्राम-गृह की ओर से आप के पास क़रीब १००) का बिल 'सुरा' का पहुंचा। उसे देखते ही आप खिलखिला कर हँस पड़े और मुझसे कहने लगे कि, "तुम मज़े में रहे जो प्रतिनिधियों के साथ ठहरे। मुझे १००) देने में तो कोई उज्र नहीं है, पर ज़बरदस्त आपत्ति इस बात की है कि जिस शराब को मैंने जीवन-पर्यंत पास नहीं आने दिया उसके बिल का भुगतान मैं कैसे करूं ?" निदान, आप ने विश्राम-गृह के अध्यक्ष महाशय को लिखा कि कृपया देखिये कि बिल भेजने में कहीं ग़लती तो नहीं हो गई। शीघ्र ही उत्तर में ग़लती के लिए क्षमा-प्रार्थना का पत्र आ गया।

आप आदर्श मित्र थे। मित्रों ने आपको बड़े से बड़ा धोखा भी दिया। पर, आप उनसे रुष्ट नहीं हुए। आपके एक ठाकुर मित्र ने आपके नाम से एक अच्छी संपत्ति का सस्ता सौदा कर, अपने नाम पर लिखा-पढ़ी करा ली। पर उसके गाढ़े वक्त में फिर भी आप उसके यहां तक सहायक हुए कि आप उसकी बीस हज़ार रुपये की ज़मानत देने में नहीं हिचके। इसके बाद आप मित्रों के साथ रुपयों का लेनदेन करने से बहुत डरते थे। आपके एक मित्र के लिए जो बीमार थे रुपयों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की आवश्यकता हुई। यह जानते हुए कि आप मित्रों से रुपयों का लेन-देन नहीं करना चाहते, मैंने कहा कि दूकान से अमुक व्यक्ति को कुछ रुपयों का क़र्ज़ दिला दीजिए। आप ने तत्काल कहा "आप इस विषय पर मेरी नीति जानते हुए भी मुझसे ऐसी बात क्यों करते हैं?" मैंने कहा, "मित्र ही यदि मित्र की सहायता न करेगा, तो फिर कौन उसके पास खड़ा होगा?" इस पर आप बोल उठे "यदि सहायता करने की बात है, तो क़र्ज़ का बहाना क्यों किया जाता है?" और अंत में कोरा चेक इंपीरियल बैंक के नाम काट दिया और कहा कि जितने रुपयों की ज़रूरत मित्र को हो उतने रुपये उनको आप तुरंत भेज दीजिए।

आप कैसे शिक्षा-मर्मज्ञ थे, इसकी बानगी इसी बात से मिल जाती है कि आपने अपने भतीजों को उनकी प्रवृत्ति के अनुसार, डाक्टर, व्यवसायी, वकील और इंजीनियर बनाया। आप स्त्री-शिक्षा के भी बड़े हिमायती थे। मध्यप्रांत के सागर ज़िले में स्त्री-शिक्षा का जितना प्रचार है उतना इस प्रांत में अन्यत्र नहीं पाया जाता है। उसका कारण यही है कि रायबहादुर साहब ने वहाँ के डिप्टी इंस्पेक्टर की हैसियत से इस शिक्षा की नींव डाली थी। आपके 'सीधा' स्कूल तो प्रांत भर में प्रसिद्ध ही हैं। यहां की सरकार ने जब यह निश्चय किया कि स्कूलों की बढ़ती की जावे तब बात की बात में आपने सैकड़ों ग्रामीण स्कूलों की स्थापना करा दी। यह देख कर सब अधिकारी स्तंभित रह गये; तब आपने बतलाया कि मैं इन स्कूलों को अपनी पाकेट-बुक में लिए फिरता था। कहने का मतलब यह था कि सरकारी सहायता मिलने के पूर्व ही आपने गाँवों में सीधे इकट्ठे कर और इस प्रकार शिक्षकों की जीविका-निर्वाह का प्रबंध कर ऐसे स्कूलों को स्थापित कर रक्खा था और उनकी सूची अपने पास सदैव रखते थे।

सामाजिक सेवा का भाव आप में इतना प्रबल था कि उसके लिए आप प्राणों की बलि करने को भी प्रस्तुत रहते थे। एक बार आप भेड़ाघाट के सुंदर जल-प्रपात व संगमरमर की चट्टानों की मनोरम शोभा देखने के लिये अपने मित्र के साथ नाव पर रवाना हुए। इतने में कहीं से चीखती हुई आवाज़ सुनाई पड़ी कि बचाओ, मरे! आपने नज़र फैला कर देखा, तो मालूम हुआ कि मधुमक्खियाँ उन बेचारों का पीछा कर रही हैं और वे अपने आपको बचाने के लिए पानी में डूबते-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उतराते हैं। जिस जगह पर वे थे वहाँ नर्मदा की गहराई काफ़ी है। उनके क्रन्दन को सुनकर, आप अपने प्राणों की परवाह न कर, अपने साथी मित्र को किनारे पर छोड़कर, मधुमक्खियों से दंशित मित्रों को नाव में लेने के लिए आगे बढ़े और उन्हें सकुशल उसमें ले आए। जो इन मक्खियों का स्वभाव जानते हैं वे सहज में अनुमान कर सकते हैं कि इनके शिकार को बचाने की कोशिश करना ख़ुद अपने आपको आफ़त में डालना है।

आपके साथ घूमने जाने में विशेष फ़ायदा यह रहता था कि मीलों चले जाइये, पर थकावट नहीं मालूम होती थी। रोज़ एक न एक नई बात सुनने को मिलती थी।

आपको प्रातःकाल इस प्रकार कड़ी से कड़ी ठंड में घूमते हुए देख कर नव-युवकों को भी आश्चर्य होता था। आपके उदाहरण का उन पर इतना प्रभाव पड़ता था कि प्रातःकाल उनकी भी टोलियाँ घूमने को निकलती थीं। आप इतिहास और पुरातत्व विषयक बातें बहुत किया करते थे। यदि कहीं कोई भग्नावशेष दीख पड़ता था तो आपके पैर उसकी ओर बड़ी तेज़ी से बढ़ जाते थे, और जब तक उसके संबंध की ज्ञातव्य बातों का पता आप नहीं लगा लेते थे, तब तक चैन नहीं लेते थे।

आप अपने मनोरंजन के लिए कभी सिनेमा, नाटक या ताश, शतरंज की शरण नहीं लेते थे; वे हीरा-वाटिका में घूम घूम कर उसके प्रत्येक पौधे और फूल की हिफ़ाज़त करने में ही अपना मनोरंजन समझते थे। बगीचे में आप कतरनी उसी ख़ूबी से चलाते थे जिस ख़ूबी से काग़ज़ पर क़लम। खिन्न-चित्त तो आप कदाचित ही कभी रहते थे। सदैव प्रसन्नमुख रहना आपकी बान थी। इसीलिये आपका स्वास्थ्य इतना अच्छा था कि उसे देखकर, कोई आपकी अवस्था का अनुमान वृद्धावस्था तक में ठीक ठीक नहीं लगा सकता था। आपके एक अंग्रेज़ मित्र ने तो यहां तक कह डाला था कि जैसे जैसे आप उम्र में बढ़ते जाते हैं वैसे वैसे और जवान होते जाते हैं।

आपके अगाध संस्कृत-ज्ञान की धाक बड़े बड़े सरकारी कर्मचारियों पर इस प्रकार पड़ी थी कि जहां कहीं संस्कृत का नाम आया कि उन्हें रायबहादुर साहब का स्मरण हो आता था। एक बार मध्यप्रांत के गवर्नर साहब जब नये नर्मदा के पुल का उद्घाटन करने आए तो उनका स्वागत एक संस्कृत पद्य द्वारा किया गया। बस अब-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सर पर प्रांत के सभी प्रतिष्ठित विद्वान, सेठ-साहूकार, उपस्थित थे। वहाँ 'साहब' किसी अत्यंत आवश्यक कार्य के कारण न पहुँच सके थे। जब कुछ दिन बाद आप की गवर्नर साहब से भेंट हुई, तो उन्होंने कहा कि संस्कृत पद्य जब मेरे स्वागत में पढ़ा गया, तब मेरी आँखें उस भीड़ में तुम्हें अनायास ही खोजने लगीं !

मध्यप्रांत के दुर्भाग्य से वहाँ हिंदी और मराठी भाषा-भाषियों में जैसा मेल-जोल होना चाहिए वैसा शिक्षित समाज में भी नहीं पाया जाता ; पर रायबहादुर साहब के पांडित्य के सब क़ायल थे। आपको "डाक्टर आफ् लिटरेचर" (साहित्याचार्य) की उपाधि देने का प्रस्ताव जब नागपुर विश्वविद्यालय के कोर्ट के सम्मुख रक्खा गया था, तब वह उसमें महाराष्ट्र बंधुओं का बहुमत होते हुए भी एकमत से पास हुआ था। जब नागपुर विश्वविद्यालय द्वारा इस प्रकार सम्मानित किए जाने पर मैं आपको बधाई देने गया तो आपने सदा की भाँति हँसते हँसते कहा कि एक बात इस उपाधि के संबंध में मैं तुमसे कहे देता हूँ। वह यह है कि नागपुर विश्वविद्यालय ने जिन जिन सज्जनों को इस उपाधि से विभूषित किया वे अधिक दिन इस संसार में नहीं रह सके। मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि उपाधि का मिलना मानो ईश्वरीय संकेत है कि मुझे अधिक दिन नहीं जीना है।" मैंने तुरंत उत्तर दिया कि, "आप इस नियम के अपवाद सिद्ध होंगे।" पर दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं हुआ।

प्रसंगवश जब कभी मृत्यु की चर्चा छिड़ जाती थी तब आप एक हिंदी कवि की इस पंक्ति को बड़े गंभीर स्वर से दुहराया करते थे—"सब यहीं पड़ा रह जावेगा, जब कूच करेगा बंजारा।"

कहते हैं, 'साहब' नहीं हैं। पर, मुझे तो यह बात अविश्वसनीय मालूम होती है। मैं तो जीवन में प्रति पल उनकी भव्य मूर्त्ति का अनुभव करता हूँ। मुझे तो वे 'ट्राइब्स ऐंड कास्ट्स आफ़ इंडिया' के प्रत्येक पन्ने में दीखते हैं। 'भौगोलिक नामार्थ परिचय' में उनका पता मिलता है। 'संस्कृत की हस्तलिखित पुस्तकों की सूची' में उनका श्वासोच्छ्वास संचित है। कलचुरियों के गौरव को अमर कर वे स्वयं अमर हैं। वस्तुतः विश्व में जिसकी कीर्ति है वही जीवित है—"कीर्तिर्यस्य स जीवति।"

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हां, एक बात की कमी अवश्य है और वह है उनके पार्थिव शरीर की। हमें उनकी उस पंचभौतिक प्रतिमूर्त्ति के दर्शन दुष्प्राप्य हैं जो जबलपुर में विश्वविद्यालय स्थापित करने का भगीरथ-प्रयत्न करने में जुटी थी। हमें वह लेखनी कागज़ पर चलती नहीं दीखती जिसने बाबू श्यामसुंदरदास जैसे विद्वान की हिंदी पुस्तक की भूमिका लिखी थी। हमें उस मेधावी पंडित के प्रत्यक्ष दर्शन नहीं होते जिसे अपनी इतिहास की पुस्तक प्रकाशित करने के पूर्व दिखलाने के लिए श्री काशीप्रसाद जी जायसवाल जैसे विलक्षण विद्वान पटना से सीधे कटनी चले आते थे। हमें अभाव खटकता है डाक्टर प्राणनाथ की लिपिसंबंधी खोजों पर गवेषणापूर्ण निर्भीक सम्मति देने वाले सज्जन का। हमें रिक्त दृष्टिगोचर होता है वह स्थान जिस पर बैठ कर भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण 'कलचुरी-काल' का मर्मज्ञ इतिहास का भारत के प्रामाणिक इतिहास-निर्माण में ठोस सहायता देने वाला था। हमें नज़र नहीं आता काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा का भूतपूर्व सभापति जो नवयुवकों के उत्साह को मात करने वाले जोश से वृद्धावस्था में भी उसकी मार्मिक रिपोर्ट लिखा करता था। हम जानते हैं कि अनेक विद्यार्थी द्रव्याभाव के प्रतिबंध को अपने मार्ग से हटाने के लिए ढूँढ़ते फिरते हैं उस 'हीरे' को जिसकी कांति तो व्याप्त है देश-देशांतर में, पर वह नहीं है।

विद्यार्थी जीवन की एक बात

[मिश्रीलाल जायसवाल, कटनी]

बी० ए० परीक्षा में रायबहादुर हीरालाल साहब प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए। यह वह समय था जब कटनी में शायद ही किसी ने कालेज की शिक्षा पाई थी। तिस पर रायबहादुर साहब ने इस परीक्षा को प्रथम श्रेणी में पास किया। इसके उपलक्ष में कटनी में एक विराट जलूस निकाला गया जिस में आप फूलों से लदे हुए हाथी पर शोभायमान थे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाक्टर हीरालाल

[डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, डी० लिट०, काशी]

डाक्टर हीरालाल जी के दर्शनों का सौभाग्य मुझे एक ही बार प्राप्त हुआ है और वह भी बहुत थोड़ी देर के लिए। परंतु वह अनुभव भूलने का नहीं। दिसंबर १९३० की बात है। 'शब्दसागर' के पूर्ण होने की ख़ुशी में नागरी प्रचारिणी सभा कोशोत्सव मनाने जा रही थी। उसीमें सम्मिलित होने के लिए वे आये थे और बा० श्यामसुंदरदास जी के यहाँ ठहरे हुए थे। वहीं मैंने उनके दर्शन किए थे। उनकी कीर्त्ति मैंने बहुत पहले से सुन रक्खी थी। पुरातत्त्व के क्षेत्र में उनके कार्य का बहुत आदर होता था। वे बहुत ऊंचे सरकारी पद पर भी रह चुके थे। परंतु अहम्मन्यता और रूखापन उनको छू नहीं गया था। वे आदमी के हृदय में बैठ कर उसे अपने पास खींच लेते थे। मुझसे इस पहली ही मुलाक़ात में उन्होंने वैसा ही व्यवहार किया जैसा किसी मित्र के साथ किया जाता है। उनके व्यवहार में न बनावट थी, न बेरुखापन। मुझे उनका व्यक्तित्व सरलता, सहृदयता तथा उदारता के संयोग से निर्मित जान पड़ा।

इस थोड़ी सी देर की बात-चीत से मुझे पता लग गया कि उनको युवकों पर भारी भरोसा है। युवकत्व उनके लिए अभिनव उत्साह, उद्दाम साहस और अनवरत अध्यवसाय का प्रतीक था। युवकों में आत्म-विश्वास, उत्साह, साहस और परिश्रम की ओर अभिरुचि भरना भी वे ख़ूब जानते थे। वे स्वयं बड़े परिश्रमी थे; आयु के उस भाग में भी जो सामान्यतया विश्राम के लिए प्रयोजित समझा जाता है, वे परिश्रम करते ही रहते थे, उन लोगों का सा काग़ज़ी-परिश्रम नहीं जो सरकारी पेंशन फटकारते हुए भी सैकड़ों रुपये मासिक बड़े आराम से डकारते रहते हैं। ना० प्र० सभा के खोज-विभाग का निरीक्षण-कार्य बहुत परिश्रमसाध्य है। उसे वे कई वर्षों से कर रहे थे। परंतु उस समय उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। आँखें तो बहुत ख़राब हो गयी थीं। इसलिए वे इस काम से धीरे धीरे अवकाश ग्रहण करना चाहते थे। मुझे उन्होंने खोज-विभाग में लेने की इच्छा प्रकट की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की। पर मुझे अपनी शक्ति पर भरोसा न था। अधिक परिश्रम से भी डरता था। परंतु उनके उत्साह-वर्धक शब्दों में कुछ ऐसी शक्ति थी कि मुझे कुछ काम कर लेना स्वीकार ही करना पड़ा, यद्यपि बहुत जल्द पिंड छुड़ाने की अंदरूनी इच्छा बनी ही हुई थी। इसके बाद उनका साक्षात् फिर कभी नहीं हुआ, किंतु उनकी चिट्ठियों में उनके दर्शन कभी कभी मिलते रहे।

कुछ समय बाद उन्होंने मुझे दिल्ली-प्रांत में हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के संबंध में रिपोर्ट लिखने को लिखा। उसके तैयार हो जाने पर उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करने के लिए सभा में उसकी बड़ी तारीफ़ लिख भेजी और मुझे अपना सहकारी बना डाला। यद्यपि मुझे मालूम था कि मेरे एक मित्र ने जो पहले उनके सहकारी बनाए गए थे खोज के काम को कूड़ा बता कर खोज-यात्रियों के विवरण पत्रों को वापिस कर दिया था; फिर भी उनकी स्नेहपूर्ण आज्ञा का उल्लंघन करने में मैंने अपने को असमर्थ पाया। मुझे यह भी डर था कि अपने उत्साह-दान को व्यर्थ गया समझ कर वे दुखी न हों। समय के अभाव का तो तथ्य के बिना भी जब चाहो तब बहाना दिया जा सकता है, परंतु साधार होने पर भी उनके सामने यह बहाना करने की मेरी हिम्मत न हुई।

उनको सन् १९३३ में नागपुर विश्वविद्यालय ने डाक्टर आफ़ लेटर्स की आनरेरी डिगरी प्रदान की। उसी साल मैंने काशी विश्वविद्यालय की डाक्टर आफ़ लेटर्स की परीक्षा पास की। इस संयोग पर उन्होंने कुछ विनोद के ढंग पर लिखा था—

"It is just in the fitness of things that both the Superintendent and the Asstt. Superintendent of the Search Department should simultaneously become Doctors."

मुझ पर उनका बड़ा स्नेह था। जबसे उन्होंने सुना था की मुझे डाक्टरी मिलना निश्चित हो गया है तबसे मुझको डाक्टर लिखने के लिए वे बहुत उत्सुक थे। जैसा बाद को उनके पत्र से मालूम हुआ, हमारे विश्वविद्यालय के उप साल के कनवोके-

---

*अर्थात्, यह उचित ही है कि खोज-विभाग के निरीक्षक और सहायक निरीक्षक दोनों एक साथ ही डाक्टर हो जाँय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाक्टर हीरालाल

[डाक्टर पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, डी० लिट०, काशी]

डाक्टर हीरालाल जी के दर्शनों का सौभाग्य मुझे एक ही बार प्राप्त हुआ है और वह भी बहुत थोड़ी देर के लिए। परंतु वह अनुभव भूलने का नहीं। दिसंबर १९३० की बात है। 'शब्दसागर' के पूर्ण होने की ख़ुशी में नागरी प्रचारिणी सभा कोशोत्सव मनाने जा रही थी। उसीमें सम्मिलित होने के लिए वे आये थे और बा० श्यामसुंदरदास जी के यहाँ ठहरे हुए थे। वहीं मैंने उनके दर्शन किए थे। उनकी कीर्त्ति मैंने बहुत पहले से सुन रक्खी थी। पुरातत्त्व के क्षेत्र में उनके कार्य का बहुत आदर होता था। वे बहुत ऊंचे सरकारी पद पर भी रह चुके थे। परंतु अहम्मन्यता और रूखापन उनको छू नहीं गया था। वे आदमी के हृदय में बैठ कर उसे अपने पास खींच लेते थे। मुझसे इस पहली ही मुलाक़ात में उन्होंने वैसा ही व्यवहार किया जैसा किसी मित्र के साथ किया जाता है। उनके व्यवहार में न बनावट थी, न बेरुखापन। मुझे उनका व्यक्तित्व सरलता, सहृदयता तथा उदारता के संयोग से निर्मित जान पड़ा।

इस थोड़ी सी देर की बात-चीत से मुझे पता लग गया कि उनको युवकों पर भारी भरोसा है। युवकत्व उनके लिए अभिनव उत्साह, उद्दाम साहस और अनवरत अध्यवसाय का प्रतीक था। युवकों में आत्म-विश्वास, उत्साह, साहस और परिश्रम की ओर अभिरुचि भरना भी वे ख़ूब जानते थे। वे स्वयं बड़े परिश्रमी थे; आयु के उस भाग में भी जो सामान्यतया विश्राम के लिए प्रयोजित समझा जाता है, वे परिश्रम करते ही रहते थे, उन लोगों का सा काग़ज़ी-परिश्रम नहीं जो सरकारी पेंशन फटकारते हुए भी सैकड़ों रुपये मासिक बड़े आराम से डकारते रहते हैं। ना० प्र० सभा के खोज-विभाग का निरीक्षण-कार्य बहुत परिश्रमसाध्य है। उसे वे कई वर्षों से कर रहे थे। परंतु उस समय उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। आँखें तो बहुत ख़राब हो गयी थीं। इसलिए वे इस काम से धीरे धीरे अवकाश ग्रहण करना चाहते थे। मुझे उन्होंने खोज-विभाग में लेने की इच्छा प्रकट की

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की। पर मुझे अपनी शक्ति पर भरोसा न था। अधिक परिश्रम से भी डरता था। परंतु उनके उत्साह-वर्धक शब्दों में कुछ ऐसी शक्ति थी कि मुझे कुछ काम कर लेना स्वीकार ही करना पड़ा, यद्यपि बहुत जल्द पिंड छुड़ाने की अंदरूनी इच्छा बनी ही हुई थी। इसके बाद उनका साक्षात् फिर कभी नहीं हुआ, किंतु उनकी चिट्ठियों में उनके दर्शन कभी कभी मिलते रहे।

कुछ समय बाद उन्होंने मुझे दिल्ली-प्रांत में हिंदी हस्तलिखित ग्रंथों की खोज के संबंध में रिपोर्ट लिखने को लिखा। उसके तैयार हो जाने पर उन्होंने मुझे प्रोत्साहित करने के लिए सभा में उसकी बड़ी तारीफ़ लिख भेजी और मुझे अपना सहकारी बना डाला। यद्यपि मुझे मालूम था कि मेरे एक मित्र ने जो पहले उनके सहकारी बनाए गए थे खोज के काम को कूड़ा बता कर खोज-यात्रियों के विवरण पत्रों को वापिस कर दिया था; फिर भी उनकी स्नेहपूर्ण आज्ञा का उल्लंघन करने में मैंने अपने को असमर्थ पाया। मुझे यह भी डर था कि अपने उत्साह-दान को व्यर्थ गया समझ कर वे दुखी न हों। समय के अभाव का तो तथ्य के बिना भी जब चाहो तब बहाना दिया जा सकता है, परंतु साधार होने पर भी उनके सामने यह बहाना करने की मेरी हिम्मत न हुई।

उनको सन् १९३३ में नागपुर विश्वविद्यालय ने डाक्टर आफ़ लेटर्स की आनरेरी डिगरी प्रदान की। उसी साल मैंने काशी विश्वविद्यालय की डाक्टर आफ़ लेटर्स की परीक्षा पास की। इस संयोग पर उन्होंने कुछ विनोद के ढंग पर लिखा था—

"It is just in the fitness of things that both the Superintendent and the Asstt. Superintendent of the Search Department should simultaneously become Doctors."

मुझ पर उनका बड़ा स्नेह था। जबसे उन्होंने सुना था की मुझे डाक्टरी मिलना निश्चित हो गया है तबसे मुझको डाक्टर लिखने के लिए वे बहुत उत्सुक थे। जैसा बाद को उनके पत्र से मालूम हुआ, हमारे विश्वविद्यालय के उप साल के कनवोके-

---

*अर्थात्, यह उचित ही है कि खोज-विभाग के निरीक्षक और सहायक निरीक्षक दोनों एक साथ ही डाक्टर हो जाँय।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शन का विवरण उन्होंने अख़बारों में बड़े चाव से पढ़ा था, परंतु उसमें उसका कोई उल्लेख न पाकर वे विस्मित हुए। कुछ दिन तक वे अख़बारों में मुझे डाक्टरी मिलने की ख़बर ढूँढ़ते रहे परंतु जब फिर भी कहीं उसका उल्लेख न मिला तो उन्हें शंका हुई और उन्होंने बाबू श्यामसुंदरदास जी को एक व्यग्रता और उत्कंठापूर्ण पत्र लिखा। शंका दूर हो जाने पर वे बड़े प्रसन्न हुए। और एक लंबा बधाई-पत्र लिख भेजा।

मेरे प्रति उनके स्नेह का बंधन मुझे अब भी नागरी प्रचारिणी सभा के खोज-विभाग के साथ बाँधे हुए है।

हाय ! हीरालाल

[श्री राधाकृष्ण जायसवाल 'घनश्याम', ग्वालियर]

(१)

अहो आज यह घोर घटा कैसी घिरि आई।
चम-चम चमकत बिज्जु हृदय में शंका छाई॥
बुंद बाण सम लगत बात कछु कही न जाती।
मेघ-गरज सुनि अरे धड़कती है क्यों छाती॥
भारत माता दुख भरी बोली ठोंक कपाल को।
हाय ! काल विकराल ने निगला "हीरालाल" को॥

(२)

घटा नहीं, यह चिता धूम धुंधरि नभ छाई।
अथवा देव विमान धूम घन दुंदुभि लाई॥
देखो अंबर सकल त्रिदश*-गण—सत्वर आये।
चम-चम चमकत वस्त्र चपल चंचला लजाये।
स्वागत "हीरालाल" के रतननि की झर लावहीं।
सोई वर्षा-बुंद सम तुमहिं कठोर जनावहीं॥

---

* त्रिदश = देवता।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(३)

कहाँ मिलैगी ओजमई वाणी वह प्यारी ।
हैहय-कुल की कीर्त्ति-लेख-माला सुखकारी ॥
बिना "जबलपुर-ज्योति" मिटै कैसे अँधियारी ।
को प्रगटावे बिनु "दमोह-दीपक" उजियारी ॥
"सिवनि-कमलिनी"* की प्रभा तुम बिनु को प्रगटाइहै ।
श्रीयुत हीरालाल बिनु "भक्त-चरित" को गाइहै ॥

(४)

भारत माँ के लाल मातृ-भाषा के पंडित ।
पुरातत्व के सूर्य, सरलता गुण से मंडित ॥
जाति-जगत के कर्णधार, निर्भ्रांत खेवैया ।
तुम बिनु है मँझधार बंश-हैहय की नैया ॥
देवों से मिलि देव ! फिर शीघ्र देश में आइए ।
जाति-नाव को डाँड़ गहि, उसको पार लगाइए ॥

(५)

परम शांति पा अगर आप पुनि यहाँ न आवैं ।
तौ विनती "घनश्याम" ईश सों यही सुनावैं ॥
प्यारा भारत-देश भूमि का मुकुट सुहावन ।
बनै वीरता-युक्त वंश-हैहय जग-पावन ॥
बली तुम्हारे तनय हों, विद्या बुद्धि बढ़ावहीं ।
सकल कला सिरमौर ह्वै, देवोपम यश पावहीं ॥

---

*"सिवनि-कमलिनी"=रायबहादुर साहब के आदेश से लिखित "सिवनी-सरोजनी" नामक पुस्तक ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मध्यप्रांत-मरीचिका की भूमिका

[श्री प्रयागदत्त शुक्ल, नागपुर]

स्व० डा० हीरालाल से मेरा प्रथम परिचय सन् १९१९ में हुआ। उस समय मैं "संकल्प" पत्र का संपादक था। उसी समय मैंने उनके पास "नागपुर के भोंसले" नामक एक पुस्तक की पांडुलिपि भेजी थी, जिसका उन्होंने संशोधन किया था। सन् १९२४ के आरंभ में आप अपने अनुज स्व० गोकुलप्रसाद जी के साथ नागपुर में रहा करते थे। इसी समय आप के प्रोत्साहन से मैंने मध्यप्रांत मरीचिका नामक एक पुस्तक लिखी थी।

१९२४ में आपने रायबहादुर छोटेलाल वर्मा (डिप्टी कमिश्नर) के साथ पूरा सहयोग देकर नागपुर में हिंदी-भाषी-संघ की स्थापना की। इस का उद्देश यही था कि मराठी मध्यप्रांत में हिंदीभाषी जनता संगठित रहे। इस संघ के द्वारा एक हाई स्कूल खोला गया, जिस में हिंदी माध्यम द्वारा अंग्रेजी शिक्षा का प्रबंध है। मराठी मध्यप्रांत में यही एक मात्र हिंदी हाई स्कूल है।

जिस समय आप दमोह के डिप्टी कमिश्नर थे, प्रांताधिपति सर बेंजामिन राबर्टसन के प्रोत्साहन से आपने ज़िला गज़ेटियरों के ढंग पर एक ग्रंथावली की नींव डाली। आपने स्वयं 'जबलपुर-ज्योति', 'सागर-सरोज', 'दमोह-दीपक', 'मंडला-मयूख' अदि पुस्तकें लिखीं, प्रांत के अन्य लेखकों से भी कई अन्य पुस्तकें लिखवाईं। देहांत के कुछ समय पूर्व जब आप औषधोपचार के लिए कटनी से नागपुर में अपने भतीजे डा० राय के पास आए, उस अवसर पर लेखक को उनसे ३-४ बार मिलने का सौभाग्य मिला था। उस समय उन्होंने लेखक से ज़िला-ग्रंथावली पूरी कर डालने का अनुरोध किया था। उनकी प्रेरणा से ही मैंने 'हुशंगाबाद-हुंकार' प्रकाशित की थी। 'नागपुर-नेत्र' भी शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा।

मैं स्वर्गीय डाक्टर साहब के भतीजों से एक प्रार्थना करूंगा कि वे शीघ्र ही स्व० रायबहादुर हीरालाल जी का स्मारक स्थापित करने का प्रयत्न करें, जिससे उनके पास के संग्रहित अमूल्य साहित्य का उपयोग विद्वान लोग कर सकें।

अंत में एक शिष्य के नाते उस महान आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करके मैं यह छोटा सा लेख समाप्त करता हूँ।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर डा० हीरालाल जी की यूरोप-यात्रा

[पंडित ओंकार प्रसाद मिश्र, रिटायर्ड सबजज]

हमारा और रायबहादुर डा० हीरालाल जी का साथ काश्मीर-प्रवास में सन् १९३१ के मई महीने में हुआ था। उस समय उनके भतीजे बाबू वीरभानु राय भी साथ थे। हम लोग रावलपिंडी होकर गए थे। वहां से तक्षशिला, पेशावर, ख़ैबर-पास आदि लंडीकोटाल लंडीखाना, आदि देखते 'अफगान' सीमा के फाटक तक पहुँचे। वहाँ का फ़ोटो वीरभानु जी ने लिया था, वह अभी तक हमारे पास मौजूद है। रावलपिंडी से लौट कर हम सब लोग कुछ रोज़ मरी में रहे और वहां से श्री जमुना प्रसाद जी जैन सबजज भी साथ हो गए। श्रीनगर पहुँचने पर गुलमर्ग और अनेक रमणीय स्थान देखते रहे। चूँकि रायबहादुर साहब से घनिष्ठ परिचय हो गया था, इसलिए जब आपने यूरोप के सफ़र का इरादा फ़रवरी १९३३ के शुरू में किया तब उन्होंने हमको लिख भेजा। हमारा इरादा इस साल मई में मद्रास की तरफ़ जाने का था। परंतु जब हमने आपको अपना इरादा लिख भेजा तब आपने लिखा कि मद्रास पीछे जा सकते हो, इस वर्ष हमारे साथ यूरोप चलो। इस पर हमने छुट्टी की दरख़्वास्त भेज दी। उस वक्त हम एलिचपुर (ज़िला अमरावती) में थे। हम लोगों ने एक 'इन्टरनैशनल' टूरिंग कंपनी के मार्फ़त सफ़र का प्रबंध किया। ता० ११ मई को विक्टोरिया नामक इटैलियन जहाज़ से हम दोनों जने तथा उक्त टूरिंग कंपनी के मैनेजर मिस्टर गिरधर गोपाल गुप्त रवाना हुए। एडन पहुँचने पर जहाँ तहाँ चिट्ठियाँ भेजी गईं वहां से रात को जब सुएज़ पहुँचे तब जहाज़ ही के मार्फ़त कैरो के पिरामिडों को भी देख लेना ठीक समझा गया। इसलिए हम लोग सुएज़ में उतर कर किनारे पर पहुँचे और वहां से मोटर से ८५ मील सफ़र करने के पश्चात् कैरो बहुत तड़के पहुँचे। कांटिनेंटल सैवाय होटेल में ब्रेक-फ़ास्ट के पश्चात् यह तै हुआ कि पिरामिड और शहर देखा जाय। म्युज़ियम और पिरामिड आदि को देख लेने के पश्चात् हम लोग होटल लौट आए। उसके बाद फिर कुछ समय तक घूमते रहे। सायंकाल के रेल से रवाना होकर पोर्ट सईद आए और वहां से अपने जहाज़ पर आ पहुंचे। ता० २१ मई को हम लोग नेपल्स (जिसको इटैलियन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लोग नेपोली कहते हैं) पहुँचे। वहां से जहाज़ हम लोगों ने छोड़ दिया। वहां चार दिन रह कर हम दोनों शहर घूमते रहे और एक रोज़ के लिए विसूवियस ज्वालामुखी पर्वत और पांपेई के भग्नावशेष वग़ैरह देखते रहे। यह शहर किसी प्राचीन समय में बड़ा संपत्तिशाली था, परंतु एक ही दिन में समीपस्थ ज्वालामुखी पर्वत के फूट पड़ने से नष्ट हो गया। दूसरे रोज़ वहाँ से रोम के लिए रवाना हुए। दोपहर को वहां पहुँचे और पिंशियानी सिलेक्ट नामक होटेल में ठहरे। इस शहर में तीन चार दिन तक रह कर सब देखने योग्य दृश्य देखे। एक रोज़ यह चर्चा छिड़ गई कि 'पिंशियानी सिलेक्ट' का क्या अर्थ है। मैंने कहा कि सिलेक्टेड पेंशनर्स (अर्थात् चुने हुए पेंशन-वालों) के लिए यह होटेल है, इस पर रायबहादुर साहब ख़ूब हँसे। एक रोज़ उसी होटेल में हम और राय बहादुर साहब बड़े सवेरे उठ कर बात चीत कर रहे थे और हँस भी रहे थे। इतने ही में एक नौकर नीचे की मंज़िल में आया और कहने लगा कि आप लोगों की आवाज़ से नीचे के महाशयों की निद्रा भंग हो रही है। तब मिस्टर गुप्ता से पता चला कि यहाँ पर लोग देर तक सोते हैं। हम लोग तो क़रीब साढ़े पाँच बजे ही उठ कर शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करते थे और फिर कपड़े पहन कर तैयार हो जाते थे। हां, गुप्ता महाशय अवश्य ख़ूब सोया करते थे और मुश्किल से लंच के समय हमारा साथ देते थे। इससे अकसर हम लोग अपने समय का पूरा उपयोग नहीं कर पाते थे।

रोम घूमने के बाद मिलान होते हुए हम लोग जिनेवा पहुँचे वहां अन्य दृश्य देखने के अतिरिक्त लीग आफ़ नेशन्स की बैठक में भी शरीक हुए। इसके बाद हम लोग पैरिस गए। यह बहुत ही ख़ूबसूरत शहर है। इसके सामने लंडन भी ख़ूब-सूरती में नहीं जँचा। लंडन में हम लोग २४ रोज़ तक ठहरे और देखने योग्य सब कुछ देखा। मिस्टर जमुना प्रसाद जी जैन जो वहां बैरिस्टरी परीक्षा के लिए गए थे हमारे साथ थे। वे ही हमारे पथ-प्रदर्शक रहे। लंदन में रायबहादुर साहब के कई परिचित सज्जन थे, जैसे सर बेंजामिन राबर्टसन (रिटायर्ड गवर्नर, सी०पी०), सर अर्नेस्ट लो, मिस्टर विलसन, सी० आई० ई०, जो कि अमरावती में एक बार डिप्टीकमिश्नर थे, इत्यादि। रायबहादुर साहब ने इन सब से मुलाक़ात की।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एक रोज़ हम दोनों आक्सफ़र्ड गए। वहाँ पर मिस्टर मदनगोपाल से मुलाक़ात हुई। वे एम०!ए० के लिए थी सिस तैयार कर रहे थे। आर अमरावती के किंग एडवर्ड कालेज में प्रोफ़ेसर थे। आपने आक्सफ़र्ड में जो कुछ देखने योग्य था सब दिखलाया। शाम के वक्त हम लोग सर आर्थर नेलसन, रिटायर्ड गवर्नर, सी० पी०, के मकान पर पहुँचे। उन्होंने हम लोगों का बड़ा सत्कार किया। फिर साथ ही में बस में बैठकर सब कालेजों को दिखलाने के लिए ले गए। इसके पहले हम लोग संस्कृत के प्रोफ़ेसर के यहां बैठे रहे। वहां पर क़रीब आध घंटे तक मज़ेदार बातें होती रहीं। उसी दिन हम लोग लंडन वापस आए*।

---

* इस संबंध में रायबहादुर साहब का निम्नलिखित पत्र अरोचक न होगा।—सं०

लंदन,

ता० २५-६-३३

श्रीयुत रामसुंदर जी तथा श्री हजारीलाल जी,

जय श्रीराम! घर से चले एक महीने से कुछ ऊपर हो गया। ईश्वर की कृपा से स्वास्थ्य अभी तक अच्छा है। जहाज़ में ११ दिन रह कर इटली में उतरे और नेपल्स, रोम, मिलान देखते हुए स्विट्ज़रलैंड में जेनीवा को गए, जिसमें कई मील लंबी एक बड़ी झील है। इसकी तुलना बहुधा काश्मीर से की जाती है। वहां से रवाना होकर फ्रांस की राजधानी पैरिस पहुँचे, जिसे भोगनगर कहना अनुचित न होगा। यहां भोग-विलास का विशेष अड्डा है। हम लोग दस दिन के बदले वहां चार ही दिन ठहरे और शेष दिन लंदन देखने में लगाना उचित समझा। लंदन बड़ा भारी शहर है। जन-संख्या प्रायः पौन करोड़ है परंतु यहां कोई गुम नहीं हो सकता। मिरज़ापुर में चाहे गुम भी [हो] जाय। पुलिस तथा अन्य पुरुष दूसरों की सहायता देने के लिए बड़े उत्सुक रहते हैं और उद्यत [हो] कर पूछते हैं कि आपको क्या चाहिए और यदि उन्हें मालूम न हो तो दूसरे से पूछ कर आपकी समस्या का निवारण कर देते हैं। यहाँ के वैभव का वर्णन करना कठिन है। पद्माकर की लेखनी चाहिए। यहां की आबहवा कष्टकर नहीं हुई। मुझे तो यहां पहुँचने पर पसीना आने लगा था—दो चार रोज़ तो ऊनी कपड़े तक नहीं पहने।

भवदीय,

हीरालाल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रायबहादुर साहब के साथ एक रोज़ ढूँढ़ते ढूँढ़ते बड़ी दिक़्क़त से हम एस० आर० ए० एस० के आफ़िस में पहुँचे। वहाँ कई मूर्त्तियाँ थीं। रायबहादुर साहब ने इन पर लगे हुए लेबलों में कई एक ग़लतियाँ बतलाईं। एक दिन मिस्टर शूबर्ट डिप्टी कमिश्नर, जो उन दिनों में लंबी छुट्टी पर थे, आप से भेंट करने आए और भोजन के लिए निमंत्रण दिया। एक रोज़ मिस्टर ओल्डहम, रिटायर्ड कमिश्नर, जिन्होंने एपिग्रैफ़िया इंडिका का वर्षों तक संपादन किया था, आए। इनसे रायबहादुर साहब का वर्षों से पत्र-व्यवहार था, परंतु कभी साक्षात नहीं हुआ था। इसलिए इन धुरंधर विद्वानों में देर तक वार्तालाप होता रहा।

पचीस दिन के बाद हम लोग लंडन से रवाना हो आस्टेंड पहुँचे। वहां से बस में बैठकर करीब ४६ मील तक रणक्षेत्र देख आए। फिर ब्रसेल्स, अंटवर्प, अम्स्टरडम देखते हुए लाइडेन युनीवर्सिटी गए। वहां के प्रिंसिपल और प्रोफ़ेसर बहुत मिलनसार और परिचित थे। दिन भर वहीं रहे। शाम को फिर अम्स्टरडम वापिस आए जहां से बरलिन पहुँचे। यह नगर भी बड़ा सुंदर है। क्यों न हो, यह तो जरमनी की राजधानी ही है। यहाँ से नाव पर बैठ हम लोग एक दिन पाट्सडम भी गए थे। वियना, और वेनिस देखते हुए जिनोआ पहुंचे। यहां पर हम लोगों ने कोलंबस का गिरा हुआ मकान देखा।

दूसरे रोज़ फिर विक्टोरिया जहाज़ पर रवाना होकर ४ अगस्त को बंबई पहुंचे। रास्ते में पानी ख़ूब बरसता था और हवा भी ख़ूब चलती थी। समुद्र का पानी बहुत क्षुभित था, जिससे जहाज़ बहुत डाँवाडोल था। इस कारण लौटती बार हम लोगों को बहुत तकलीफ़ रही।

बंबई से चलकर रायबहादुर साहब नागपुर में उतर गये और हम रायपुर चले आए *।

---

* इस लेख में उन सब जगहों का नाम नहीं दिया जा सका है जिनको हम लोगों ने देखा। —ले०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय बाबू गोकुलप्रसाद जी के नोट-बुक

[श्री० माधोलाल जायसवाल, एम० एस-सी०, आगरा]

रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी के छोटे भाई श्री गोकुलप्रसाद जी का जन्म सन् १८७६ में हुआ था। आप रायबहादुर साहब से ९ वर्ष छोटे थे। इनका देहांत सन् १९२६ में हो गया। उस समय आप इनकम-टैक्स के असिस्टैंट कमिश्नर थे। दोनों भाइयों में बड़ा प्रेम था। गोकुलप्रसाद जी की इच्छा थी कि वे कभी अपने बड़े भाई की विस्तृत जीवनी लिखें। इस विचार से उन्होंने दो नोट-बुक रक्खे थे जिनमें उन्होंने आवश्यक तिथियाँ आदि टाँक ली थीं। ये नोट-बुक मुझे उनके पुत्रों की कृपा से देखने को मिले हैं। एक तो बड़े आकार का (७½ × ८½") है, दूसरा छोटा (५" × ८") है। दोनों में बहुत सी बातें एक ही हैं। जाँच करने से परिणाम निकलता है कि छोटा नोट-बुक दूसरे की स्वच्छ प्रतिलिपि है और यह सन् १९१७ में तैयार की गई थी। पीछे जब जब कुछ नई बातों के लिखने की आवश्यकता हुई तब तब छोटे नोट-बुक में ही दर्ज की गईं और इस प्रकार बड़ा कहीं कहीं अधूरा ही रह गया।

परंतु बड़ा नोट-बुक अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें कई स्थानों में रायबहादुर साहब के हाथ के लिखे ब्योरे भी हैं। ऐसा जान पड़ता है कि रायबहादुर साहब अपने छोटे भाई के देहांत के पश्चात् इस नोट-बुक का उपयोग कभी कभी अपनी डायरी की तरह करते थे।

उदाहरणार्थ एक स्थान पर रायबहादुर साहब की पदवियों की सूची है जिसमें अंतिम पंक्ति यह है—"रायबहादुर, १९१०"। इसके पीछे रायबहादुर साहब के हाथ का लिखा है "डाक्टर आफ़ लिटरेचर, १९३३"।

इन नोट-बुकों का अधिकांश अँग्रेज़ी में है। पाठकों की कौतूहल-शांति के लिए इन नोट-बुकों का कुछ अंश नीचे दिया जाता है और सुविधा के ख़्याल से उसका हिंदी में अनुवाद ही छापा जाता है।

जन्म

सं० १८२५ गत विक्रमीय; आश्विन शुक्ल चतुर्थी, मंगलवार, तुला राशि, मकर लग्न, प्रभावी नाम संवत्सर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उपाधियाँ

बी० ए०, १८८८; रायबहादुर, १९१०, सदस्य रॉयल सोसायटी (ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड), १९०४; सदस्य, एशियाटिक सोसायटी, बंगाल १९११; सदस्य, पंजाब हिस्टारिकल सोसायटी, १९१२; ऑनरैरी कॉरेसपांडेंट, भारतीय सरकार का पुरातत्व विभाग, १९१३; सदस्य, नागरी-प्रचारिणी-सभा, १८९३; सदस्य, स्कूल टेक्स्ट बुक कमेटी, १९१८; सभापति, एथनोलॉजी-विभाग (सायंस कानफ़रेंस), १९२१; [सभापति, हैहय-क्षत्रिय-महासभा, कलकत्ता; सभापति, कोशोत्सव स्मारक सभा, काशी; सभापति, ओरियंटल कानफ़रेंस, पटना]*

पुस्तकों की भूमिका

इन पुस्तकों की भूमिका लिखी :—

रायबहादुर श्यामसुंदरदास की गद्य कुसुमावली, शिवसहाय चतुर्वेदी का सतीदाह; जगदीश सिंह का मारवाड़ का इतिहास; प्रयागदत्त की मध्यप्रदेश मरीचिका; पं० गौरीशंकर द्विवेदी का बुंदेलखंड वैभव; पं० जयचंद्र विद्यालंकार की भारतभूमि और उसके निवासी।

नौकरी

असिस्टैंट मास्टर† जबलपुर कॉलेज (स्थानापन्न), १८ जून १८८८; सायंस इंस्ट्रक्टर, उत्तरी मंडल (स्थानापन्न), १ दिसंबर १८८८; डिप्टी इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स, सागर, १७ जनवरी १८९१; एजेंसी इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स, छत्तीसगढ़ फ़्यूडेरीज़, २६ मई १८९७; इंस्पेक्टर आफ़ स्कूल्स (स्थानापन्न), पूर्वीय मंडल, रायपूर, २७ मई १८९७ (१४ दिसंबर १८९८ से २८ मार्च तक छुट्टी लेकर फिर एजेंसी इंस्पेक्टर); एक्स्ट्रा-असिस्टैंट-कमिश्नर (स्थानपन्न), बालाघाट, ७ अक्टूबर १८९९; रायपुर, १२ दिसंबर १९००, बालाघाट, २६ मार्च १९०१; प्रांतीय सेंसस सुपरिंटेंडेंट

---

* [ ] कोष्ठों से घिरा हुआ अंश किसी अज्ञात व्यक्ति के हाथ का लिखा है।

† सुविधा के लिए केवल प्रत्येक पद पर नियुक्ति की तिथि दी गई है। कुछ ब्यौरे छोड़ भी दिए गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के सहायक, नागपुर, २५ अप्रैल १९०१; प्रांतीय सेंसस सुपरिंटेंडेंट, नागपुर, १३ जून १९०२; रियायती छुट्टी १ अक्टूबर १९०२; स्थायी एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, नागपुर, १ मार्च १९०३; बिलासपुर, १३ मार्च १९०३; लंबी छुट्टी, १९ जनवरी १९०४; इंपीरियल गज़ेटियर के प्रांतीय सुपरिंटेंडेंट के सहायक, नागपुर, १९ जुलाई १९०४; एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, नागपुर, १३ दिसंबर १९०५; इंपीरियल गज़ेटियर के सुपरिंटेंडेंट, १८ मई १९०६; इंपीरियल गज़ेटियर के सुपरिंटेंडेंट के सहायक, नागपुर, १९ नवंबर १९०६; एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, नागपुर, १ जनवरी १९०८; बैतूल, १० जुलाई १८०९; जबलपुर, १८ अगस्त १९१०; सेंसस-सुपरिंटेंडेंट के सहायक, नागपुर, १ दिसंबर १९१०; मेडिकल छुट्टी, १ अगस्त १९९२; स्पेशल ड्यूटी (शिलालेख-सूची), नागपुर, १ फ़रवरी १९१३; एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, छिंदवाड़ा, २३ जून १९१३; रियायती छुट्टी, १५ नवंबर १९१५; एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, दमोह, २३ जनवरी १९१६; डिप्टी कमिश्नर (स्थानापन्न), दमोह, २२ अप्रैल १९१७; एक्स्ट्रा-असिस्टेंट-कमिश्नर, दमोह, २२ जुलाई; जबलपुर, ६ नवंबर १९१७; स्पेशल ड्यूटी (ग्रामोफ़ोन रेकार्ड), रायपुर, १ दिसंबर १९१७; एक्स्ट्रा-अ०-क०, जबलपुर, १६ जनवरी १९१८; डिप्टी कमिश्नर (स्थानापन्न), दमोह, १ नवंबर १९१९; एक्स्ट्रा-अ०-क०, जबलपुर, १ फ़रवरी; डिपटी कमिश्नर (स्थानापन्न), वर्धा १४ मई १९१९; रियायती छुट्टी, २१ नवंबर १९२२, डिपटी कमिश्नर (स्थापन्न), नरसिंहपुर, २२ मई १९२२; डिपटी कमिश्नर (स्थाई नियुक्ति), नरसिंहपुर, २२ मई १९२२; रियायती और मेडिकल छुट्टी, १८ नवंबर १९२२; पेंशन (५०० रुपया मसिक साधारण तथा १०० रुपया विशेष), १८ मई १९२३।

अफ़सरों के प्रशंसा-पत्र

इस शीर्षक के नीचे ३१ प्रशंसा-पत्रों की प्रतिलिपियाँ हैं। उनका यहाँ देना आवश्यक नहीं है।

विशेष उल्लेख

इस शीर्षक के नीचे लगभग ७५ स्थानों का हवाला है जहाँ रायबहादुर साहब के नाम का विशेष उल्लेख है। इनमें से २३ की प्रतिलिपियाँ भी हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सम्मतियाँ तथा समालोचनाए

यहाँ १०२ सम्मतियों तथा समालोचनाओं का संग्रह है।

कविताएं

यहाँ दस कविताएँ हैं जिन में से पाठकों के मनोरंजनार्थ दो हास्यरस की कविताएँ यहाँ उद्धृत की जाती हैं :—

(१) पंपासुर का वर्णन, १६-१०-१९१२ गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

फटिकशिला अति शुभ्र सुहाई।
सुख आसीन जहाँ दोउ भाई ॥

रायबहादुर साहब ने देखा—

गुरमटिया रँग एक पहारा।
ता पर मंदिर एक सम्हारा ॥
शिला कोल कर गर्भ बनायो।
तहँ श्रीराम सभ्रात बसायो ॥
शिला शिखर पर सोहत कैसे।
धर्‌यो तखत पर ताजिअ जैसे ॥

(२) नोहटा जाते समय माँगी हुई मोटर के बिगड़ जाने पर रायबहादुर साहब ने कहा—

मोटर बोली गैल में साहब तुम हो कौन।
छोटे साहब सुनत ही तुरत भई मचलौन ॥
कही मोर काया बनी सिर्फ़ बढ़न के काज।
याते अब घर लौटिए लात लगत है लाज ॥
छोटे लौटे गेह को लोटे-पोटे खाट।
नोहटे पठये दूति पुनि बैठे जोहत बाट ॥

ग्रंथालय

इस शीर्षक के नीचे ११८ पुस्तकों और पत्रिकाओं की सूची है जो रायबहादुर साहब के ग्रंथालय में हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

यात्रा

यहाँ ४६२ स्थानों की सूची है जिन्हें रायबहादुर साहब ने देखा था।

शिक्षा-प्रचार

जिन पदक, पारितोषिक या शील्ड की रायबहादुर साहब ने स्थापना की, या जिन संस्थाओं की उन्होंने सहायता की उनकी सूची है। कुछ विद्यार्थियों के नाम भी लिखे हैं जिनकी उन्होंने सहायता की।

फुटकर

'हू इज़ हू इन इंडिया' और इंडियन बायोग्रैफ़िकल डिक्शनरी' में छपे विवरणों की प्रतिलिपियाँ हैं। हितकारिणी में छपा लेख और उसी में छपी एक कविता दोनों काटकर रक्खे गए हैं।

लेख-सूची

एपिग्रैफ़िया इंडिका आदि पत्रिकाओं में छपे लेखों की सूची के अतिरिक्त 'हितकारिणी' में छपे १६ लेखों की सूची है।

जीवन-चरित्र

१९१७ की लिखी हुई रायबहादुर साहब की जीवनी भी छोटे नोट-बुक में है। १९२२ में राबर्टसन कालेज मैगज़ीन में छपी जीवनी इसी का परिवर्द्धित रूप है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

इंस्पेक्टर की भविष्यवाणी

[श्री लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी 'मधु', मथुरा]

सन् १८७४ ई० की बात है। जाड़ों के दिन थे। सुबह का वक्त था। वर्नाक्यूलर स्कूल विशेष रूप से सजाया गया था। एक बड़े आदमी का स्वागत था। उसी के अनुरूप सजावट का भी आयोजन हुआ था। स्कूल का वातावरण ही हर्ष से अनुरंजित हो रहा था। लड़के प्रार्थना के गीत गा रहे थे, जिन्हें सुन कर मार्ग के पथिक भी मुग्ध हो जाते थे। प्रार्थना समाप्त हुई। एक अंग्रेज़ महाशय सामने खड़े हुए कुछ विद्यार्थियों से बातचीत करने लगे। ये महाशय ऐजूकेशन के इंसपेक्टर थे और स्कूल का निरीक्षण करने आए थे।

इंसपेक्टर साहब ने विद्यार्थियों से कुछ प्रश्न हिंदी में किए।

सात साल के एक तेज़ विद्यार्थी ने आगे बढ़कर कहा—'जनाब, आप एक ग़लती करते हैं। ठीक शब्द 'तुम' है, 'टुम' नहीं।'

इंसपेक्टर साहब का स्वभाव अच्छा था। उन्होंने इस शब्द को दो तीन बार दुहराया ताकि ठीक उच्चारण कर सकें।

'क्या अब ठीक है ?'—उन्होंने पूछा।

'जी नहीं, क्या आप कभी स्कूल में नहीं पढ़े ?'—उस बालक ने तुरंत जवाब दिया।

'बच्चे ! स्कूल में तो पढ़ा हूँ, लेकिन हिंदी मेरी मातृभाषा नहीं है।'

उस बालक ने चट से उत्तर दिया, 'तो फिर जनाब, आप हमारे हिंदी स्कूलों की जांच क्यों करते हैं ?'

कुछ क्षण के लिए इंसपेक्टर साहब का मुंह बंद हो गया। इस छोटे से बालक की विदग्धता से वे चमत्कृत हो गए और कुछ समय तक कोई उत्तर न दे सके। अपने गले की फूलों की माला उतार कर उन्होंने उस लड़के के गले में पहिना दी, बड़े प्रेम से उसकी पीठ ठोंकी और यकायक उससे पूछ पड़े 'तुम अपने जीवन में क्या बनना चाहते हो ?'

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

बालक ने बड़ी सरलता से छूटते ही जवाब दिया—'अँग्रेजी मदरसे का बड़ा साहब।'

इंसपेक्टर साहब ने स्कूल के अध्यापक से कहा, 'वास्तव में यह लड़का बड़ा चतुर है। इसका भविष्य बड़ा उज्ज्वल है।'

इंसपेक्टर साहब की भविष्यद्वाणी सत्य सिद्ध हुई। रायबहादुर डाक्टर हीरालाल ने देश और विदेश दोनो में वह ख्याति प्राप्त की जिस पर कोई भी आदमी गर्व कर सकता है।

एक बार मैंने संस्कृत के एक जरमन प्रोफ़ेसर से रायबहादुर साहब के संबंध में उनकी सम्मति पूछी। उन्होंने उत्तर दिया 'वे तो साक्षात् विद्या की मूर्ति हैं।' राबर्टसन कालेज, जबलपुर, के एक यूरोपियन प्रोफ़ेसर ने उन्हें एक बार अपने समय के शंकराचार्य कह कर सम्मानित किया था। मैं समझता हूँ रायबहादुर साहब जैसे प्रतिभाशाली व्यक्ति के लिए ऐसा कथन उनके अनुरूप ही था।

रायबहादुर हीरालाल अपने देश की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के उपासक थे। अपने देश की महान् संस्कृति से उनका विशेष परिचय था। वे उसमें सदैव अद्भुत आकर्षण देखते थे। संक्षेप में देखा जाय तो उनके जीवन का उद्देश्य भारतवर्ष की महान् और उत्कृष्ट संस्कृति को पुनर्जीवित करना और उसे अपने देश वासियों तथा पश्चिमी संसार के सम्मुख प्रस्तुत करना था।

अगर आप कभी उनके घर जायँ तो आप उसे एक अजायबघर के रूप में पाएँगें जिसमें दुष्प्राप्य पुस्तकें हैं, हस्तलिखित ग्रंथ हैं और पुरातत्त्व-संबंधी अनेक बहुमूल्य वस्तुएं है। उनकी वाटिका और खोज-पुस्तकालय में प्राचीन वास्तुकला और मूर्त्तिकला की प्रदर्शिनी सी हो रही हैं। कला के इन भग्नावशेषों को उन्होंने प्राचीन ऐतिहासिक स्थानों से प्राप्त करके वहाँ सुरक्षित कर रक्खा है। इस बात को और अधिक स्पष्ट करने के लिए कि वे अपने देश की संस्कृति से कितना प्रेम करते थे, केवल एक घटना का उल्लेख करना पर्याप्त होगा। रायबहादुर साहब के पास एक हिंदू देवता की दो एक-सी मूर्त्तियाँ थीं। एक अमेरिकन विद्वान जो उन्हीं के यहां ठहरे हुए थे, उनमें से एक मूर्त्ति लेने के लिए पागल से हो गए और छै हज़ार पाउंड तक नक़द देने लगे रायबहादुर साहब ने उत्तर दिया, 'मैं अपनी प्राचीन

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मूर्त्तियां आप को दे नहीं सकता। क्या आप समझते हैं कि मैं अपने देश की प्राचीन संस्कृति को बेच दूँगा ?'

रायबहादुर साहब के सिर पर सरकारी काम का काफ़ी भार रहता था, फिर भी वे अपनी साहित्य-सेवा में कभी कमी नहीं होने देते थे। अपनी नौकरी के कामों को सफलतापूर्वक करते हुए वे अपने खोज-कार्य के लिए काफ़ी समय निकाल लेते थे। लेकिन वास्तव में डाक्टर हीरालाल जैसे व्यक्ति के लिए सरकारी काम और साहित्यसेवा दोनों ही अपर्याप्त थे। उनके अंदर वह प्रतिभा थी कि इनके अतिरिक्त वे और भी बहुत सा काम एक ही समय में कर सकते थे।

५५ वर्ष की आयु होने पर जब रायबहादुर साहब ने सरकारी नौकरी से अवकाश ग्रहण किया तो पूज्य पंडित मदनमोहन मालवीय ने उनसे काशी-विश्व-विद्यालय में प्रोफ़ेसरी करने के लिए प्रार्थना की। पूज्य मालवीय जी की प्रार्थना उन्होंने विनम्र शब्दों में अस्वीकार की और चिरकाल के कठिन परिश्रम के बाद शांति से एकांत जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट की। वास्तव में आराम करना उनका उद्देश्य नहीं था, वे तो शांतिपूर्वक खोज करना चाहते थे और इसीलिए उन्होंने एकांतवास की इच्छा प्रकट की थी। परिश्रम करने की उनमें अद्भुत शक्ति थी। काम में उन्हें विशेष आनंद आता था।

रायबहादुर साहब के सद्गुण, ऐतिहासिक समस्याओं को हल करने की उनकी दूरदर्शिता, उनका आदर्श चरित्र, उनकी प्रेरक शक्ति—अब कहीं नहीं हैं। कराल काल ने एक ही बार में उन्हें हमसे छीन लिया। रायबहादुर साहब का पार्थिव शरीर अब इस संसार में नहीं है, लेकिन उनका नाम, उनका यश, सदैव अमर रहेगा।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

श्री रायबहादुर हीरालाल जी

[श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए०, प्रयाग]

कवित्त

हिंदी-हिंद-हिंदू-हित मौति नित राख्यौ चित,
ह्वै सुचित उचित उपाय उर लायौ है।
देश-इतिहास-हास होत देखि, खोजि राखि,
साँचो इतिहास इति हास करवायौ है।
भारतीय सभ्यता कै सत्व कौ महत्व थापि,
तत्व पुरातत्व कौ समुझि समुझायौ है।
जाति जननी कौ जन नीकौ धन्य हीरालाल,
हीरा-लाल नाम चरितारथ बनायौ है।

छप्पय

राजा के प्रिय रहे, प्रजा के रतन अनोखे।
जन्म-भूमि के लाल, रंग-पानी के चोखे॥
परखि परखि पारखी मोल कछु सके न आँकी।
जोहि जोहि बस रहे मोहि लखि बानक बाँकी॥
छटा छबीजी छहरि यौं, छिति छोरनि लौ छै गई।
प्रगटित हीरा-लाल करि, सीपी धन्या ह्वै गई॥

दोहा

दीन देस हीरा रहे, जाति जननि के लाल।
अब मुक्तन के बिच बसे, राजौ हीरालाल॥

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

MORE THAN MY OWN BROTHER

[*Khan Bahadur S. Zakir Ali, I. S. O., Jubbulpore*]

It would have given me a great pleasure to send you an article on the late Rai Bahadur Dr. Hira Lal's life which was really an ideal one, but I regret very much the doctors in whose treatment I am, do not permit me even to write letters. I had the greatest regard for the late Rai Bahadur who was the greatest friend of mine. A self-made man of immeasurable sincerity, ability, perseverance, strong virtuous principles and determinations he was. He had no caste and sectarian prejudices, and no selfishness. He was ever ready to help others even at self-sacrifice. He was a great man with no pride. A scholar throughout his life he was, and was always anxious to learn. He took much interest in everybody he knew.

Cruel death has snatched him away from us. To me he was more than my own brother. My heart is now full and does not permit me to write more about my late friend who is never to meet me again. May his soul rest in peace ? Amen.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सगे भाई से भी बढ़ कर

[खानबहादुर सैयद ज़ाकिरअली, आई० एस० ओ०, जबलपुर]

यदि मैं रायबहादुर डाक्टर हीरालाल के जीवन के संबंध में, जो वास्तव में एक आदर्श जीवन था, एक लेख लिखकर भेज सकता तो मुझे बड़ी खुशी होती। लेकिन अत्यंत खेद है कि जो डाक्टर मेरा इलाज कर रहे हैं, वे मुझे पत्र लिखने की भी आज्ञा नहीं देते। स्वर्गीय रायबहादुर साहब मेरे सब से घनिष्ठ मित्र थे और उनके लिए मेरे हृदय में सब से अधिक श्रद्धा थी। अमित निष्कपटता, योग्यता तथा विश्वसनीयता और शक्तिशाली साधुवृत्त सिद्धांतों तथा प्रतिज्ञाओं वाले अपने संपन्न जीवन का निर्माण उन्होंने अपने ही हाथ से किया था। उनमें न तो जातीय अथवा सांप्रदायिक दुराग्रह था और न स्वार्थपरता का भाव। अपने हित को होम करके भी वे दूसरों की सहायता करने को तैयार रहते थे। एक बड़े आदमी होते हुए भी वे अभिमान-रहित थे। अपने जीवन भर वे एक विद्याश्रमी बने रहे और सदैव कुछ न कुछ सीखने के लिए उत्सुक रहते थे। जिस किसी को वे जानते थे उससे बहुत प्रेम रखते थे। कराल काल ने उन्हें हम से छीन लिया है। मेरे लिए वे मेरे सगे भाई से भी बढ़ कर थे। मेरा दिल अब भर आया है और अपने उस स्वर्गीय मित्र के संबंध में जो मुझ से फिर कभी मिल नहीं सकते, अधिक लिखने नहीं देता। उनकी आत्मा को शांति मिले। तथास्तु।

"रायबहादुर डाक्टर हीरालाल का गोंड जाति के प्रति प्रेम"

[श्री के० बलराम मादवी, प्रधान, गोंड-सभा, नागपुर]

(अनुवादित)

जिस अध्यवसायी विद्वान और अन्वेषक ने गोंडों के विस्मृत प्राचीन इतिहास तथा उनकी सभ्यता का गहन अध्ययन किया हो, वह उनकी वर्तमान उन्नति में विशेष अनुराग रक्खे—यह बिल्कुल स्वाभाविक है। इस जंगली जाति के प्रति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उनका प्रेम और उनकी सहानुभूति पूर्ण-रूप से उस समम प्रकट हुई जब आज से ठीक पचास वर्ष पहिले वे सागर ज़िले में एक सरकारी कर्मचारी थे। एक विचारवान् उदार राजा ने रायबहादुर साहब की योजना में सहयोग दिया और सागर ज़िले की पच्छिमी सीमा पर स्थित अपने बस्सा गांव में ज़िले भर के कोइटरों को लिखना-पढ़ना सिखाने के लिए एक स्कूल स्थापित करना तुरंत स्वीकार कर लिया। स्कूल लोकप्रिय बन गया और विद्यार्थियों की संख्या भी अत्यंत आशाजनक हो गई। मुझे यह संस्मरण लिखते हुए हर्ष होता है कि गांव के गोंड मुखिया ने अपने पुत्र और पुत्रबधू दोनों को स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा था—क्या ही आदर्शमयी सह-शिक्षा, सो भी आज से अर्द्ध शताब्दी पूर्व, और एक जंगली जाति में! सागर ज़िले से अपने तबादले के कुछ काल बाद जब रायबहादुर साहब ने यह सुना कि उनके चले आने पर वह स्कूल धीरे धीरे बैठ गया तो उन्हें बहुत दुःख हुआ। गोंडों के प्रति उनका अनुराग उनके स्वभावानुरूप आडंबरशून्य रीति से बना रहा और वे सरकार से अनुरोध करते रहे कि जंगली जातियों की उन्नति के लिए घोर प्रयत्न किया जाय। उनके शांत लेकिन उत्साहपूर्ण कार्य से प्रभावित होकर आडंबररहित और उत्साही कार्यकर्ताओं की उस संस्था ने जिसका नाम 'सरवैंट्स आफ़ इंडिया सोसाइटी' है, अपने एक सदस्य को नियुक्त किया कि वे मध्यप्रांत की जंगली जातियों की दशा का अध्ययन करें, जिससे उनमें भी उसी ढंग से उन्नति-कार्य किया जा सके जिस ढंग से बंबई प्रेसीडेंसी के भीलों में किया गया था। लेकिन उत्साह और लगन के घोर शत्रु धन्नाभाव ने आप के प्रयत्नों को विफल कर दिया।

फिर भी जब उन्होंने यह सुना कि प्रांतकी राजधानी ही में एक गोंड-स्कूल की स्थापना की गई है तो उनका अनुराग और उनकी सहानुभूति उमड़ पड़ी। इसकी सूचना मिलते ही उन्होंने धन और अपने 'मंडला मयूख' की प्रतियाँ बिना माँगे ही भेज कर अपने हर्ष को प्रकट किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाक्टर हीरालाल जी की साहित्य-सेवा

[महामहोपाध्याय रायबहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, अजमेर]

गवर्नमेंट की सेवा में उच्च पद पर रहने वाले हिंदी-भाषा-भाषियों में ऐसे बिरले ही पुरुष मिलेंगे, जिन्हें सच्चा साहित्य-प्रेम हो। ऐसे पुरुषों में रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी बी० ए० सदा अग्रणी रहे। डाक्टर हीरालाल जी की साहित्य-सेवा एकदेशीय ही नहीं, किंतु भिन्न-भिन्न प्रकार की रही। ये संस्कृत साहित्य के सेवी, पुरातत्त्वानुसंधान के अपूर्व प्रेमी और हिंदी-भाषा के सर्वदा हितैषी रहे।

संस्कृत साहित्य-सेवा के निमित्त हीरालाल जी ने मध्यप्रदेश और बरार के अनेक हस्तलिखित-पुस्तक-संग्रहों का अवलोकन कर ६९२१ ब्राह्मण ग्रंथ, १२९५ जैन ग्रंथ और कई ताड़ पत्रों पर लिखे हुए कनड़ी लिपि के जैन ग्रंथों का पता लगाया। उनमें से कई ग्रंथ तो ऐसे हैं जिनके तथा उनके ग्रंथ-कर्त्ताओं के नाम पहले ज्ञात न थे। आठ सौ तिरसठ पृष्ठ में इन ग्रंथों की एक बृहत् सूची बनाई गई, जिसे मध्यप्रदेश और बरार की सरकार ने ईसवी सन् १९२६ में प्रकाशित किया। यह सूची संस्कृत तथा प्राकृत भाषाओं के विद्वानों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण वस्तु है। इसे देखने पर इसके संपादक के उत्कट साहित्य-प्रेम का अच्छा परिचय मिलता है।

डाक्टर हीरालाल जी को इतिहास तथा पुरातत्व से भी अगाध प्रेम था, जिसका परिचय उन्होंने कई एक शिलालेखों और दानपत्रों के उत्तम संपादन-द्वारा दिया है। ये शिलालेख और दानपत्र नीचे लिखे वंशों व राजाओं आदि के हैं—

हैहयवंशी राजा पृथ्वीदेव, जाजल्लदेव और यशःकर्णदेव।

चंदेलवंशी—परमर्दिदेव, देववर्मदेव, वीरवर्मदेव और हम्मीर वर्मदेव।

परिव्राजक—महाराज संक्षोभ और महाराज भीमसेन दूसरा।

शैलवंशी—जयवर्द्धन।

चंद्रवंशी—सोमवंशी—पंपराजदेव, भानुदेव और कर्णराज।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नागवंशी--मधुरांतकदेव, जयसिंहदेव, सोमेश्वरदेव, हरिश्चंद्र, नरसिंहदेव, सोमेश्वरदेव की राणी धारणदेवी और महाराज धारावर्ष की राणी गुंड महादेवी।

पिछले गुप्तवंशियों में महाशिव गुप्त।

राष्ट्रकूट—नन्नराज।

भंजवंशी—जैत्रभंज, विद्याधरभंज और यशःभंजदेव।

काकतीयवंशी—दिग्पाल देव।

फारुकी आदिलशाह।

जल्लाल खोजा।

महमूद शाह मालवी।

महासुदेव।

उपर्युक्त शिलालेख और ताम्रपत्र आदि जिनकी संख्या ३३ से अधिक है, भारत-सरकार द्वारा प्रकाशित 'एपिग्राफ़िया इंडिका' की भिन्न-भिन्न जिल्दों में प्रकाशित हुए हैं। उनके संपादन में हीरालाल जी ने अक्षरांतर, सारांश और अँग्रेजी अनुवाद के अतिरिक्त जो विस्तृत विवेचन किया है, वह उनके प्रकांड ऐतिहासिक ज्ञान का प्रदर्शक है।

इसके सिवा हीरालाल जी ने नागपुर, वर्धा, भंडारा, चांदा, बालाघाट, जबलपुर, सागर, दमोह, मंडला, सिवनी, होशंगाबाद, नरसिंहपुर, नीमाड़, बेतूल, छिंदवाड़ा, रायपुर, बिलासपुर, द्रुग, अमरावती, अकोला, बुलदाना, येवतमाल जिलों तथा बस्तर, कांकेर, खैरागढ़, कवरधा, शक्ति, सारंगगढ़, सरगूजा, चीग-भक्खर और कोरिया राज्यों में से मिलने वाले ३१४ शिलालेखादि का अँग्रेज़ी सारांश सहित एक बृहत् संग्रह भी तैयार किया है, जिनसे मौर्य, गुप्त, हूण, परिव्राजक, राजर्षितुल्य, उच्चकल्प; मौखरी, महाकौशल के पिछले गुप्त, शरभपुर के राजाओं, वाकाटकों, कलचुरियों (हैहयों), प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चौलूक्य, शैलवंशियों, चंदेलों, नागवंशियों, परमारों, यादवों, गोंडों, भोंसलों, बुंदेलों आदि कई राजवंशों के इतिहास पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उनका यह संग्रह मध्यप्रदेश व बरार की सरकार ने

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशित किया है। यह हर्ष का विषय है कि उनके जीवन-काल में ही इस उपयोगी ग्रंथ के दो संस्करण प्रकाशित हो गए।

इनके अतिरिक्त 'रामटेक की यात्रा', 'चिमूर का घोड़ा', मुक्तगिरी और बुंदेलखंड की त्रिमूर्तियां के लेख जो इंडियन ऐंटिक्वेरी में प्रकाशित हुए हैं, उनमें डाक्टर साहब का प्रकांड पांडित्य प्रतिबिंबित होता है।

रायबहादुर हीरालाल जी की हिंदी-सेवा भी विद्वत् समाज में स्मरणीय है। उन्होंने पहले मध्यप्रदेश के कई ज़िलों के सविस्तर विवरण सहित गज़ेटियर हिंदी में प्रकाशित किए जिनके नाम भिन्न भिन्न जिलों के नामों के अनुसार 'जबलपुर-ज्योति', 'मंडला-मयूख', 'सागर-सरोज', 'सिवनी-सरोजनी' आदि हैं। हीरालाल जी द्वारा प्रस्तुत किए गए ये गज़टियर हिंदी-साहित्य में एक नई वस्तु हैं।

हीरालाल जी हिंदी भाषा की अत्यंत प्रतिष्ठित संस्था काशी की नागरी-प्रचारिणी सभा के सहायक और माननीय सदस्य होने के अतिरिक्त उक्त सभा के सभापति भी रहे थे और सभा की ओर से होने वाले हिंदी के संयुक्तप्रदेश से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथों के शोध संबंधी कार्य में भी आपने पूर्ण परिश्रम किया था। उन्होंने मध्यप्रदेश में बोली जाने वाली भिन्न भिन्न भाषाओं के ग्रामोफ़ोन के रेकार्ड भी भरवाये थे, जो न केवल कालांतर में उन बोलियों का वर्तमान रूप बतलाने में सहायक होंगे, बल्कि अन्य प्रदेश वालों के लिए भी वे इस समय में मनोरंजन का उत्तम साधन हैं। कहना न होगा कि इस प्रयत्न-द्वारा माननीय डाक्टर साहब ने एक नवीन दिशा में मार्गदर्शक का कठिन कार्य संपन्न किया है।

आप भारत सरकार के पुरातत्त्व विभाग के कारेसपांडेंट, रॉयल एशियाटिक सोसाइटी ऑव् ग्रेटब्रिटेन, बिहार-ओरिसा रिसर्च सोसाइटी के मेंबर और नागपुर युनिवरसिटी के शिक्षासंबंधी बोर्ड के भी सदस्य रहे। सरकार अँग्रेज़ी की उन्होंने बड़ी योग्यतापूर्वक सेवा की। इन पर सरकार अँग्रेज़ी का पूर्ण विश्वास था, जिसके फलस्वरूप क्रमशः उन्नति करते हुए यह डिपुटी कमिश्नर के उच्चपद तक पहुँच गए थे। उनकी उत्तम सेवाओं पर प्रसन्न होकर सरकार अँग्रेज़ी ने उनको रायबहादुर की उपाधि देकर सम्मानित किया और देहांत होने के थोड़े ही समय पूर्व नागपुर विश्वविद्यालय ने इनको 'डाक्टर' की उपाधि से भूषित किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डाक्टर हीरालालजी का स्वभाव सरल था और अभिमान तो इन्हें छू तक नहीं गया था। ये बड़े सच्चरित्र, कर्मवीर और मननशील पुरुष थे तथा सदा प्रसन्नमुख रहते थे। विद्यासंबंधी कार्यों में ये सदैव आगे रहते थे और यथाशक्ति सबको सहायता देते थे। मेरा उनसे घनिष्ठ संबंध रहा और उनके साथ कई बार रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। काशी, बड़ौदा और अजमेर में डाक्टर साहब से इन पंक्तियों के लेखक की भेंट हुई, वह मुझे सदा स्मरण रहेगी। ऐसे सर्वतोमुखी प्रतिभावाले प्रकांड विद्वान् के स्वर्गवास से पुरातत्त्व, इतिहास, संस्कृत और हिंदी साहित्य की जो अकथनीय हानि हुई है उसकी पूर्ति होना कठिन है। भारतीय संस्कृति एवं पुरातत्त्व रूपी भवन के हीरालाल जी सुदृढ़ स्तंभ थे और मध्यप्रदेश के इतिहास की तो सजीव मूर्ति थे। इस प्रांत के संबंध में उनके जितना विशाल ज्ञान सभवतः किसी अन्य व्यक्ति को नहीं था। अंत में परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि इस कर्मठ विद्वान् की दिवंगत आत्मा को चिर शांति प्राप्त हो और उसकी प्रेरणा से भारतभूमि में भारतीय इतिहास और संस्कृति के उपासक अनेक मनस्वी नर-रत्न उत्पन्न हों।

रायबहादुर हीरालाल जी की हिंदी सेवाएँ

(डाक्टर धीरेंद्र वर्मा, एम० ए०, डी० लिट्, प्रयाग)

रायबहादुर हीरालाल जी की प्रतिभा अनेकमुखी थी। वे सफल सरकारी अफ़सर थे, प्रसिद्ध इतिहासज्ञ थे, तथा साथ ही अपनी मातृभाषा हिंदी की सेवा की लगन भी उनके हृदय में सदा लगी रहती थी। इस छोटे से लेख का उद्देश रायबहादुर साहब की हिंदी सेवाओं की ओर पाठकों का ध्यान दिलाना है।

एक व्यवहारिक पुरुष के नाते हिंदी की सेवा का कोई भी मार्ग उन्होंने छोड़ा नहीं था। नागपुर विश्वविद्यालय में उन्हीं के उद्योग से बी० ए० और एम० ए० की परीक्षाओं में हिंदी को स्थान मिला और उन्हीं के प्रोत्साहन से साहित्य-परिषद् की स्थापना हुई। अनेक विश्वविद्यालयों में वे हिंदी के परीक्षक रहते थे। नागरी प्रचारिणी सभा के सभापति की हैसियत से उन्होंने कई वर्ष तक इस प्रसिद्ध हिंदी संस्था का संचालन किया। सभा की ओर से होनेवाली हस्तलिखित पुस्तकों

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

की खोज कई वर्ष तक उनकी अध्यक्षता में हुई और इस खोज के इन वर्षों के विवरणों का संपादन रायबहादुर साहब ने ही किया था। इन विवरणों की भूमिका से उनकी नीरक्षीर-विवेक शक्ति का पता चलता है। उनके फुटकर लेख, विशेषतया ऐतिहासिक तथा खोज संबंधी विषयों पर, हिंदी की प्रायः समस्त प्रमुख पत्रिकाओं में निकलते रहते थे।

रायबहादुर हीरालाल जी का हिंदी के संबंध में सब से प्रसिद्ध ठोस काम मध्यप्रांत के हिंदी गज़ेटियरों के प्रकाशन की आयोजना थी। मध्यप्रांत के अँग्रेज़ी ज़िलों और देशी रियासतों के अँग्रेज़ी में लिखे गज़ेटियरों के तैयार करने में रायबहादुर साहब का विशेष हाथ था। यह ज्ञान हिंदी जानने वाली जनता तक भी पहुँच सके इसलिए उनकी यह उत्कट इच्छा हुई कि हिंदी गज़ेटियरों की एक ग्रंथमाला निकाली जावे। यह ग्रंथलाला २५ जिल्दों में रक्खी गई। किंतु उन्हीं के शब्दों में यह "हिंदी विवरणमाला अँग्रेज़ी गैज़ेटियरों का निरा अनुवाद नहीं है। प्रत्येक पुस्तक शोध-पूर्वक स्वतंत्ररूप से लिखी गई है। इसके अतिरिक्त अँग्रेज़ी गैज़ेटियरों के लिखने के पश्चात् जो परिवर्तन हुए हैं उनका समावेश कर दिया गया है।" इस पुस्तकमाला में चार ग्रंथ स्वयं रायबहादुर साहब ने लिखे थे। इनके शीर्षक हैं - दमोह-दीपक जबलपुर-ज्योति, सागर सरोज तथा मंडला-मयूख। इन ग्रंथों का विद्वानों ने कैसा स्वागत किया इसका पता उस समय प्रकाशित हुई लोगों की सम्मतियों से चलता है।

हिंदी के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता मुंशी देवीप्रसाद ने दमोह-दीपक के संबंध में अपनी ललित भाषा में लिखा था कि सूरज का उजाला दीपक से ज़्यादा होता है, पर घर का अँधेरा उससे पूरा पूरा नहीं जाता। वहाँ दीपक ही काम देता है। दीपक से जैसे घर की सब चीजें दिखाई देने लगती हैं वैसे ही दमोह-दीपक से भी मध्यप्रदेश के एक ज़िले की, जिसका नाम दमोह है, सब बातें जानने में आ जाती हैं और इस बात में यह दमोह-दीपक मामूली दीपक से बहुत बढ़ा हुआ है। मामूली दीपक तो उसी घर के रहने वालों के काम आता है और यह जादू का दीपक, जो अलाउद्दीन के चिराग़ से कम नहीं है, काले कोसों पर दूर बैठे हुए हम जैसे लोगों को फ़ायदा पहुँचाता है।" इसी प्रकार जबलपुर-ज्योति के प्रकाशित होने पर लेजि-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्लेटिव ऐसेंबली के मेंबर पंडित प्यारेलाल मिश्र बैरिस्टर-ऐट-ला ने लिखा था कि " 'ज्योति' के प्रकाशन करने में आप के चमत्कारिक उद्योग व परिश्रम की स्तुति करने की मुझे आज्ञा दीजिए। उसके रुचिर चित्र, मनोरंजक लेख, उपयुक्त कहावतें व छंद ज़िले के विविध अंगों को पूर्ण ज्योतिमय कर देते है। यह ग्रंथ अमूल्य है।"

रायबहादुर साहब की हिंदी-शैली सरल, आकर्षक किंतु विषयानुकूल होती थी। जबलपुर-ज्योति की भूमिका में उन्होंने इस विषय पर अपने विचार स्पष्ट शब्दों में दिए हैं। "इस पुस्तक में 'जहाँ जस तहाँ तस' के हिसाब से असमान भाषा का उपयोग किया गया है। यथा इतिहास के अध्याय में भाषा कुछ कठिन मिलेगी क्योंकि इतिहास बहुधा विद्वानों को ही प्रिय होता है, वे मार्जित वस्तु का उपयोग पसंद करते हैं। परंतु खेती का प्रकरण खितहरों ही के योग्य होना चाहिए। इसलिए इस प्रकार के प्रसंगों में उसी प्रकार की भाषा के उपयोग का उद्योग किया गया है जिस प्रकार वे स्वयं बोलते हैं। अतः आशा है कि विद्वद्जन असमानता देखकर रुष्ट न होंगे।" अंत में हम रायबहादुर साहब की शैली का एक नमूना देकर इस छोटे लेख को समाप्त करते हैं। यह उद्धरण उनके 'भूसी' शीर्षक एक लेख का अंतिम अंश है। "जान पड़ता है कि हैहयों के पश्चात् भूसी का ह्रास हो गया। वह किसी ऐसे मूर्ख राजा के हाथ जा लगी जिसके यहां न्याय का स्थान शून्य था। उस समय इसका नाम हरबोंगपुर हो गया। कहते हैं "अंधेर नगरी अनबूझ राजा, टका सेर भाजी टका सेर खाजा" का यही स्थल है। हैहयों के ह्रास-काल में अनार्य लोग उठ खड़े हुए थे। ये अशिक्षित जंगली लोग थे। टका सेर भाजी टका सेर खाजा होने की संभावना इन्हीं लोगों के अमल में हो सकती है। लेखक को एक बार इन लोगों से नमूने के लिए तीर-कमान खरीदने का मौक़ा पड़ा। जंगली विक्रेता ने कीमत तीन बोड़ी कौड़ियाँ माँगी जो एक पैसे के बराबर होती हैं। लेखक ने कौड़ियां न होने के कारण आठ पैसे अर्थात् अठगुने दाम देने को कहा परंतु उस मूर्ख ने लेने से इनकार कर दिया। तब एक बनिए ने वे पैसे लेकर उस जंगली को तीन बोड़ी कौड़ियाँ तुरंत दे दीं और बात की बात में सात पैसे का मुनाफ़ा हासिल कर लिया।"

रायबहादुर साहब के फुटकर लेखों का संग्रह प्रकाशित करने का उद्योग होना चाहिए। मेरी समझ में यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ हो सकता है जिसकी

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

मौलिक विचारावली से इतिहासप्रेमियों को विशेष लाभ की संभावना है। उनकी हिंदी सेवाओं को चिरस्थायी करने में यह संग्रह-ग्रंथ और भी सहायक हो सकेगा।

——

प्राकृत तथा संस्कृत साहित्य-सेवा

[डा० बाबूराम सक्सेना, डी० लिट०, प्रयाग]

श्री रायबहादुर हीरालाल जी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। भारतीय भाषा और साहित्य के कई अंगों की पुष्टि उन्होंने की है। इन सब में, अधिकतर प्राचीन भारतीय इतिहास और पुरातत्व के अन्वेषण में उनका विशेष हाथ रहा। मध्य-प्रदेश की सरकार के विश्वासपात्र अधिकारी होने के कारण उनके सुपुर्द बहुत से कार्य हुए, पर संस्कृत और प्राकृत साहित्य के उद्धार की दृष्टि से उनका 'मध्यप्रदेश तथा बरार प्रांत की संस्कृत व प्राकृत हस्तलिखित पुस्तकों की सूची' तैयार करके प्रकाशित कराना बड़ा महत्व रखता है।

यह सूची १९२६ में मध्यप्रदेश की सरकार द्वारा गवर्मेंट प्रेस, नागपुर, में मुद्रित कराकर प्रकाशित कराई गई। इस पुस्तक में रायबहादुर जी द्वारा लिखित ५५ पृष्ठ की भूमिका है और उसके उपरांत ७१६ पन्ना में संस्कृत तथा प्राकृत ग्रंथों की सूची और परिशेष स्वरूप उपलब्ध जैन ग्रंथों के ५२ पृष्ठों में उद्धरण हैं। इसके अतिरिक्त ग्रंथकारों के नामों की अकारादि क्रम से अनुक्रमणिका भी दी हुई है।

अभी बहुत दिन की बात नहीं है कि जैनमत के आचार्य और भक्त, जैन ग्रंथों को छिपा कर रखते थे। जैनेतर को उनकी गंध भी नहीं मिलती थी। पर जैन भाइयों की यह मनोवृत्ति सौभाग्यवश अब प्रायः लुप्त सी हो रही है। वस्तुतः भारतीय साहित्य अविकल वाङ्मय है; एक धर्म के ग्रंथ दूसरे धर्म के ग्रंथों की अपेक्षा करते हैं। भारतीय इतिहास और संस्कृति के अध्ययन के लिए तो यह नितांत आवश्यक है कि सब ओर की सामग्री उपस्थित की जावे और तब उचित निष्कर्षों पर पहुँचा जावे।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय हीरालाल जी का प्रस्तुत सूची से कुल ८१८५ ग्रंथों का परिचय मिलता है। इनमें से ६९२१ संस्कृत के ग्रंथ हैं। ये प्रायः सभी धर्म, पुराण, अलंकारशास्त्र, ज्योतिष, व्याकरण तथा दर्शन आदि के प्रतिपादन करनेवाले हैं। इन विषयों की पुस्तकें अन्य पुस्तक सूचियों और पुस्तकालयों में भी मिलती हैं। पर हीरालाल जी की सूची के शेष १२६४ ग्रंथ प्राकृत भाषा के हैं।

प्राकृत भाषा के ये ग्रंथ बरार प्रांत के ज़िला अकोला के अंतर्गत कारंजा नामक नगर में जैन मंदिरों में सुरक्षित रक्खे हैं। यहां तीन जैन संप्रदायों के मंदिर हैं—बलात्कारगण, सेनगण और काष्ठासंघ। ये तीनों संप्रदाय दिगंबर शाखावलंबी हैं।

इन मंदिरों के पुस्तकालयों में प्राप्त ग्रंथों में से अधिकांश दिगंबर जैन मत के हैं। इस शाखा के प्रख्यात आचार्य कुंदकुंदाचार्य के प्रथम पांच ग्रंथों की सटीक हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा भंडार में उपस्थित हैं। इनके अतिरिक्त उमास्वामी, समंतभद्र, सिद्धसेन दिवाकर, स्वामी कार्तिकेय, वहकेर—आदि अन्य बहुत से जैन सिद्धों और आचार्यों के ग्रंथ जो बहुधा दुष्प्राप्य हैं, यहाँ सुरक्षित हैं।

प्राकृत भाषा की एक शाखा 'अपभ्रंश' है। अभी पच्चीस वर्ष पूर्व तक अपभ्रंश भाषा का पता केवल प्राकृत व्याकरणों से ही मिलता था। उसके उपरांत हर्मन याकोबी नाम के प्रसिद्ध जर्मन विद्वान ने 'भवि स यत्त कहा' का तथा एक और अपभ्रंश ग्रंथ का संपादन करके प्रकाशित किया। १९२४-२५ में पं० हीरालाल जैन ने कारंजा के भंडारों के ग्रंथों की सूची, स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी की देख-रेख में तय्यार की, और 'अपभ्रंश साहित्य' पर एक निबंध प्रयाग विश्वविद्यालय स्टडीज़ (Allahabad University studies) भाग १ में प्रकाशित कराया। इधर करंजा के संपन्न सेठों की उदारता से तथा पं० हीरालाल जैन के प्रशंसनीय अध्यवसाय से कारंजा से कई सुसंपादित अपभ्रंश ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं और अन्य भी शीघ्र ही प्रकाशित होंगे।

जैन प्राकृत तथा अपभ्रंश ग्रंथों को विद्वत् समाज के सम्मुख उपस्थित करने का संपूर्ण श्रेय स्वर्गीय हीरालाल जी को है। संस्कृत तथा प्राकृत साहित्य की यह सेवा विद्वन्मंडली कभी भूल नहीं सकती।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्व० रायबहादुर डाक्टर हीरालाल और उनकी रचनाएँ

[साहित्याचार्य पंडित रघुवर मिट्ठूलाल, शास्त्री, वेदांततीर्थ, काव्यतीर्थ, एम० ए०,
मास्टर आफ़् ओरिएंटल लर्निंग, प्रयाग]

परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ॥

सदा परिवर्तनशील आवागमन क्षेत्र में मरा हुआ कौन उत्पन्न नहीं होता है ? उत्पन्न होना उसी का सफल है जिस के उत्पन्न होने से वंश उन्नति को पहुंचता है।

स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल ने उस वंश में उत्पन्न हो कर, जिसके जातीय पत्र में हम यह लेख दे रहे हैं, न केवल उसी वंश वा जाति को गौरवान्वित किया है, किंतु वे समस्त मानव-वंश के ज्ञान-भंडार को अपनी कृतियों से अत्यंत समुन्नत कर गए हैं। उनकी रचनाएँ आज न केवल मध्यप्रांत वा भारतवर्ष के लिए महत्त्व रखती हैं, किंतु वे समस्त पाश्चात्य और पौर्वात्य देशों के प्रमुख विद्वानों के मंडल में बड़े आदर से देखी जाती हैं। माननीय सर बेंजमिन राबर्टसन, इंडियन् ऐंटिक्वेरी के सर्वस्वभूत ओल्डहम् साहब, डाक्टर स्पूनर, डाक्टर विंसेंट स्मिथ, प्रोफ़ेसर डाक्टर बार्नेट, इंडिया ऑफ़िस् लंडन वाले डाक्टर टामस, डाक्टर सर जार्ज ग्रियर्सन, ऐतिहासिक-शिरोमणि विद्वन्मूर्धन्य श्रीयुक्त काशीप्रसाद जायसवाल जी, डा० शुभारिङ्, डा० हीरानंद शास्त्री, डा० सर जान मार्शल, प्रोफ़ेसर डाक्टर देवदत्त रामकृष्ण भांडारकर, डाक्टर सर फ्रैंक स्लाई, रायबहादुर सर बी० के० बोस (वाइसचांसलर, नागपुर विश्वविद्यालय), हिज़ एक्सेलेंसी सर मांटेगू बटलर, सर हैरी जांस्टन, इत्यादि जैसे उच्च श्रेणी के पंडितों और पदाधिकारियों ने अपनी समालोचनाओं में उनकी मुक्तकंठ से प्रशंसा की है।

हीरालाल जी की जीवनी पर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डालने वाले अनेक सज्जनों के लेख जो वर्तमान अंक में प्रकाशित हो रहे हैं इस विषय में असंदिग्ध प्रमाण हैं कि उनके चरित्रनायक (डा० हीरालाल जी) की उपयोगिता कितनी विश्वव्यापिनी थी और उनके परलोकगत हो जाने पर भी है और रहेगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्वर्गीय हीरालाल जी से मेरा प्रथम साक्षात्कार और परिचय २२ दिसंबर १९२४ ई० को हुआ था। मैं उन दिनों राजाराम कॉलेज कोल्हापुर (दक्षिण मराठा देश) में संस्कृत का सीनियर प्रोफ़ेसर था। हम लोग तृतीय अखिल भारतीय ओरियंटल कानफ़रेंस में मद्रास गए थे। पंडित हीरानंद शास्त्री (गवर्नमेंट एपिग्राफ़िस्ट, नीलगिरि), रायबहादुर प्रयागदयालु जी (क्यूरेटर, प्राविंशियल म्यूज़ियम, लखनऊ), रायबहादुर हीरालाल जी और मैं घनिष्ठ रूप से मिलते रहते थे। चार दिन के लगभग हम लोगों का साथ रहा। हम लोग पुरातत्त्व-विभाग की बैठकों में सम्मिलित होते और साथ ही साथ आते जाते भी थे। हीरालाल जी की रहन-सहन और बातचीत सादी किंतु अत्यंत आकर्षक होती थी और देखने सुनने वाले को यह बात विस्मृत करा देती थी कि इसी शरीर में एक अतिविस्तीर्ण ज्ञानसागर लहरें मार रहा है। उस कानफ़रेंस के सभापति महामहोपाध्याय पूज्य गुरुचरण डा० गंगानाथ झा थे।

इसके दो वर्ष पीछे ओरियंटल कानफ़रेंस की चतुर्थ बैठक प्रयाग विश्वविद्यालय में हुई। स्व० डा० जीवनजी जमशेदजी मोदी सभापति थे। सौभाग्यवश पुरातत्त्व विभाग का मंत्री मैं ही था। इंदौर के सरदार माधवराव किबे जी के "रावण की लंका मध्य प्रांत में थी" इस विषय के हीरालाल जी बड़े पक्षपाती थे और चिकोड़ी-बेलगाम (मुंबई हाता) के वकील श्रीयुत बी० एच० वडेर जी ने जब उसके खंडन में अपना अत्यंत विद्वत्तापूर्ण लेख पढ़ा और अकाट्य युक्ति-प्रमाणों से यह प्रतिपादित किया कि वर्तमान सीलोन (सिंहल द्वीप) से भी लंका भिन्न थी और भूमध्य रेखा पर स्थित थी तब उसके प्रतिवाद में हीरालाल जी ने जो ओजस्वितापूर्ण भाषण किबे जी के पक्ष के पोषण में दिया उसमें हीरालाल जी का निर्भीक व्यक्तित्व देखने ही से संबंध रखता था।

हीरालाल जी को एक बार फिर किसी कार्य से प्रयाग आना पड़ा था। तब मुझे तीसरा अवसर उनके दर्शन का मिला था।

१९२८ वाली लाहौर ओरियंटल कानफ़रेंस में जाने की आज्ञा मुझे न मिली। तदनुसार दिसंबर १७, १८, १९, २० सन् १९३० वाली पटना ओरियंटल कानफरेंस के सभापति हीरालाल जी ही बनाए गए। यह सम्मान अभी तक जिस

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उच्चतम कोटि के विद्वानों को मिला था उसकी पंक्ति में इन्हें आसन मिलना अत्यंत उचित और आवश्यक था। यदि वह उस वर्ष भी इस पद से विभूषित न किए जाते तो उन्हें इस पद की प्राप्ति के लिए ही यमराज हम लोगों के बीच में (इस लोक में) बहुत काल तक रहने देने की रियायत करते इस में पूरा संदेह है। इस अवसर पर अपना लेख पढ़ने के लिए मैं भी पटना पहुँचा था और मुझे चतुर्थ बार हीरालाल जी के दर्शन का सौभाग्य मिला। वहां से गुलज़ारबाग, राजगृह और नालंदा की यात्राओं में भी मैं उनसे मिलता रहा।

उसके पश्चात् मुझे उन से मिलने का सौभाग्य न मिल पाया और वे उस यात्रा में चले गए जहाँ से फिर कोई उसी शरीर में नहीं लौटता है।

पाठकों के अवलोकन के लिए नीचे एक सूची उन सब पुस्तकों तथा लेखादिकों की दी जाती है जो स्वर्गीय डाक्टर हीरालाल जी के संपादन में उनकी स्वतंत्र अथवा सम्मिलित कृति के रूप में प्रकाशित हुए हैं—

पुस्तकें

(१) Descriptive Lists of Inscriptions in the C. P. and Berar, अर्थात् मध्यप्रांत और बरार के (३१४) लेखों की वर्णनात्मक सूचियाँ—यह पुस्तक नागपुर विश्वविद्यालय के एम्० ए० कोर्स में रक्खी जा चुकी है। यह सन् १९१७ ई० में प्रकाशित हुई थी।

(२) Transcriptions and Translations of the Gramophone Records of Languages and Dialects spoken in the Central Provinces and Berar, अर्थात् मध्यप्रांत और बरार की बोलियों और लिखित भाषाओं के ग्रामोफ़ोन रेकार्डों के अनुवाद।

(३) Catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in the Central Provinces and Berar, अर्थात् मध्यप्रांत और बरार की संस्कृत और प्राकृत (हिंदू और जैन) हस्तलिखित पुस्तकों का सूचीपत्र। यह लगभग पौने नौ सौ पृष्ठों की पुस्तक है और नागपुर से सन् १९२६ में प्रकाशित हुई है।

(४) The Tenth Report on the Search of Hindi Manuscripts for the years 1917, 1918 and 1919, अर्थात् हिंदी हस्तलिखित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुस्तकों की खोज पर १९१७, १९१८ और १९१९ की दशम रिपोर्ट। पृष्ठ संख्या ५११ है जिस में हीरालाल जी की अंग्रेज़ी रिपोर्ट ६६ पृष्ठों में है। यह सन् १९२९ में प्रकाशित हुई है।

(५) The Eleventh Report on the Search of Hindi Manuscripts for the years 1920, 1921 and 1922, अर्थात् हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज पर १९२०, १९२१ और १९२२ की ग्यारहवीं रिपोर्ट। पृष्ठ संख्या ५१३ है जिसमें हीरालाल जी की अँग्रेज़ी रिपोर्ट ११८ पृष्ठों में है। यह भी सन् १९२९ में प्रकाशित हुई है।

(६) The Tribes and Castes of the Central Provinces of India, Vol. I (426 pages), Vol. II (540 pages), Vol. III (589 pages), and Vol. IV (608 pages), अर्थात् भारत के मध्यप्रांतों की जातियाँ, भाग १ (४२६ पृष्ठ), भाग २ (५४० पृष्ठ), भाग ३ (५८९ पृष्ठ) और भाग ४ (६०८ पृष्ठ)। यह बृहद् ग्रंथ आर० बी० रस्सेल् साहब और हीरालाल जी के संयुक्त परिश्रम का फल है और लंडन नगर में १९१६ ई० में छपा है। इस के प्रथम भाग की भूमिका के पृष्ठ ९ पर रस्सेल साहब ने लिखा है—

Rai Bahadur Hira Lal was my assistant for several years in the taking of the census of 1901 and the preparation of the Central Provinces District Gazetteers, अर्थात् रायबहादुर हीरालाल सन् १९०१ ई० की मनुष्यगणना (मर्दुमशुमारी) करने और मध्यप्रांतीय ज़िलों के गज़ेटियरों की तैयारी में कई वर्ष तक मेरे सहायक रहे।

(७) महामहोपाध्याय ओझा जी के लेख से पाठकों को हीरालाल जी के बनाए हुए हिंदी गज़ेटियरों की बात भी ज्ञात होगी।

लेख

(अ) एपिग्राफिया इंडिका की जिल्दों में प्रकाशित

जिल्द ८ (सन् १९०५-६ ई०)—

संक्षोभ (महाराज) के गुप्त संवत् १९९ वाले बेतूल ताम्रपत्र (पृष्ठ २८४ से २९० तक)।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिल्द ९ (१९०७-८ ई०)—

(१) जयवर्धन द्वितीय के रघोलि ताम्रपत्र (पृष्ठ ४१ से ४७ तक)।

(२) भानुदेव के समय का कांकेर लेख (पृष्ठ १२३ इत्यादि)

(३) बस्तर राज्य से प्राप्त लेख—

क—नागवंशी लेख [१. सोमेश्वरदेव की माता रानी गुंडमहादेवी का नारायणपाल शिलालेख। २. सोमेश्वरदेव की पत्नी गंगामहादेवी का बारसूर लेख। ३. सोमेश्वर की द्वितीय रानी (?) धारण-महादेवी का कुरुसपाल लेख। ४. जयसिंहदेव की रानी महादेवी का सुनारपाल शिलालेख। ५. नरसिंहदेव का दंतेश्वरी गुडी लेख] पृष्ठ १६१ से १६४ तक।

ख—काकतीय लेख—[१. (प्रो० कीलहार्न की दक्षिणीय सूची से)—अन्नंदेव के पूर्ववर्ती राजा। २. दंतेवार लेखों के अनुसार दिक्पालदेवपर्यंत अन्नंदेव के परवर्ती राजा। ३. राजवंश के काग़ज़ों के अनुसार वर्तमान राजा पर्यंत दिक्पालदेव के परवर्ती राजा।] पृ० १६४ से १६६ तक।

ग—मुतफ़रिक़ लेख—[पृ० १६६]

(४) पंपराज देव के [कलचुरि] संवत् ९६५ और ९६६ वाले कांकेर ताम्रपत्र (पृ० १६६-१७०)

(५) मधुरांतकदेव के [शक] संवत् ९८७ वाले राजपुर ताम्रपत्र (पृ० १७४-१८१)

(६) शक संवत् १११४ वाला कर्णराज का सिहावा शिला-लेख (पृ० १८२-१८७)

(७) महासुदेव के सारनगढ़ ताम्रपत्र (पृ० २८१-२८५)

(८) पृथ्वीदेव के नक़ली लाफा ताम्रपत्र (पृ० २९३ इ०)

(९) आदिलशाह का बुरहानपुर लेख (पृ० ३०६ इ०)

(१०) गुंडमहादेवी का नारायणपाल लेख (पृ० ३११ इ०)

(११) भीमसेन द्वितीय का गुप्त संवत् २८२ वाला आरंग ताम्रपत्र (पृ० ३४२-३४५)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिल्द १० (१९०९-१०ई०)—

(१) सोमेश्वरदेव का कुरुसपाल शिला लेख (पृ०२५-३१)

(२) सोमेश्वरदेव के समय के धारणमहादेवी के दो कुरुसपाल लेख [अ-तडाग लेख । ब-खंडित शिला०] (पृ० ३१-३४)

(३) जयसिंहदेव का सुनारपाल शिलालेख (पृ० ३५ ३६)

(४) सोमेश्वरदेव का शक संवत् १०:९ वाला कुरुसपाल शिलालेख (पृ० ३७-३८)

(५) शक संवत् १२४६ का तेमरा सती शिलालेख (पृ० ३९-४०)

(६) नागवंशी राजा नरसिंहदेव के समय के दो लेख [अ— दंतेवारा । ब—जतनपाल] (पृ० ४०-४३)

जिल्द११(१९११-१२ई०)—

(१) महाशिवगुप्त के समय का सिरपुर शिलालेख (पृ० १८४-२०१)

(२) राष्ट्रकूट नन्नराज के शक सं० ५५३ वाले तिवरखेड़ ताम्रपत्र (पृ० २७६-२८०)

जिल्द १२ (१९१३-१४ ई०)

(१) संवत् १३८५ वाला बटिहागढ़ शिलालेख (पृ०४४-४७)

(२) यशःकर्णदेव के [कलचुरि] संवत् ८२३ वाले खैरहा ताम्रपत्र (पृ० २०५-२१७)

(३) दिक्पालदेव के संवत् १७६० वाले दंतेवारा संस्कृत और हिंदी लेख (पृ० २४२-२५०)

जिल्द १५ (१९१९-२० ई०)—

मालवा के महमूदशाह द्वितीय का [विक्रम] संवत् १५७० वाला दमोह हिंदी लेख (पृ० २९१-२९३)

जिल्द १६ (१९२१-२२ ई०)—

परमर्दिदेव के [विक्रम] संवत् १२३० वाले महोबा ताम्रपत्र (पृ० ९-१५)

जिल्द १८ (१९२५-२६ ई०)—

चार भंज ताम्रपत्र शासन (दानलेख)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

[ह—नेतृभंजदेव के गंजाम ताम्रपत्र
इ— ,, के ,, ,,
ज—विद्याधरभंजदेव के ,, ,,
क—यशभंजदेव के अंतरीगाम ,,] (पृ० २८२-३०३)

जिल्द १९ (१९२७-२८ ई०)—

(१) हैहय राजा पृथ्वीदेव प्रथम के चेदि संवत् ८३१ वाले अमोदा ताम्रपत्र (पृ० ७५-८१)

(२) हैहय राजा जाजल्लदेव द्वितीय के [चेदि] संवत् ९१२ वाले अमोदा ताम्रपत्र (पृ० २०९-२१४)

जिल्द २० (१९२९-३० ई०)—

चार चंदेल ताम्रपत्र लेख (अ—देववर्मदेव का [विक्रम] संवत् ११०८ वाला चरखारी ताम्रपत्र। ब—परमर्दिदेव के [विक्रम] संवत् १२३६ वाले चरखारी ताम्रपत्र। च—वीरवर्मदेव का [विक्रम] संवत् १३११ वाला चरखारी ताम्रपत्र। द—हम्मीरवर्मदेव का [विक्रम] संवत् १३४६ वाला चरखारी ताम्रपत्र) (पृ० १२५-१३६)

जिल्द २१ (१९३१-३२ ई०)—

राजा जयसिंहदेव के कलचुरि संवत् ९१८ वाले जबलपुर कोतवाली ताम्रपत्र (पृ० ९१-९६)

(आ) इंडियन ऐंटिक्वेरी की जिल्दों में प्रकाशित

जिल्द ३७ (१९०८ ई०)—

(१) रामटेक का दर्शन (यात्रा) (पृ० २०२-२९८)

(२) चिमूर का घोड़ा (पृ० ३३३-३४)। इस जिल्द के पृ० ३५२ के पादटिप्पण ७४ में हीरालाल जी का प्रमाण दिया गया है।

जिल्द ४२ (१९१३ ई०)—मुक्तगिरि (पृ० २२०-२२१)

जिल्द ४७ (१९१८ ई०)—बुंदेलखंड में त्रिमूर्ति (पृ० १३६-१३८)

जिल्द ५२ (१९२३ ई०)—कजली कनोजा के खंडहर (पृ० ३६०-३६२)

जिल्द ५३ (१९२४ ई०)—तुमान की यात्रा (पृ० २६७-२७०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिल्द ५४ (१९२५ ई०)—

(१) सालबर्डी गाँव के प्राचीन चिह्नों पर नोट (टिप्पणी)—पृ० ३३-३५

[यह लेख सन् १९१० ई० का भेजा हुआ इतनी देर से छपा ।]

(२) पृथ्वीदेव द्वितीय के नक़ली घोटिया ताम्रपत्र (पृ० ४४-४५)

जिल्द ५५ (१९२६ ई०)—बाघराज का गुरुर शिलास्तंभ लेख (पृ० ४४)

जिल्द ५६ (१९२७ ई०)—वैद्य सुषेण की जन्मभूमि (पृ० ६०)

जिल्द ६० (१९३१)—

(१) केवट स्त्रियाँ क्यों काली होती हैं [एक छत्तीसगढ़ी गीत] पृ० ३५-३८

(२) स्थानों के नाम (पृ० १९४-१९७ और २०८-२०९)

इसी जिल्द के पृ० १५९-६० में C. E. A. W. O. ने रायबहादुर हीरालाल संपादित सन् १९१७-१९१८ और सन् १९२०-१९२२ वाली हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज की रिपोर्टों की समालोचना की है।

जिल्द ६२ (१९३३)—दक्षिण कोशल की सीमा और राजधानी (पृ० १६१-१६६)

(इ) ओरियंटल कानफ़रेंस की प्रोसीडिंग्स

(१) मद्रास—तृतीय अधिवेशन (२२ से २४ दिसंबर १९२४)—"जिझौती की राजधानियां"

(२) इलाहाबाद—चतुर्थ अ० (५ से ७ नवंबर १९२६)—"श्री मगरध्वज जोगी ७००"

(३) लाहौर—पञ्चम अ० (१९ से २२ नवंबर १९२८)—"हिंदी हस्तलिखित पुस्तकों की खोज"

(४) पटना—षष्ठम अ० (१७ से २० दिसंबर १९३०)—"सभापति का भाषण"

(ई) नागरी-प्रचारिणी-पत्रिका

(१) भाग ४—संवत् १९८०—अर्वाचीन अपढ़ धर्मप्रचारक (पृ० ४५-५७)

(२) भाग ६—संवत् १९८२—(१) हिंदी के शिला और ताम्रलेख (पृ० १-१२)

(२) कलचुरि-सम्राट् (पृ० ४१७-४३५)

(३) भाग ७—संवत् १९८३—(१) हस्तलिखित हिंदी पुस्तकों की खोज(पृ० ९७-१०२)

(२) हस्तलिखित प्राचीन हिंदी पुस्तकों की खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट (पृ० २९३-३१०)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

(४) भाग ८—संवत् १९८४—(१) सागर का बुंदेलखंडी शिलालेख (पृ० ३९५-४००)
(२) हस्तलिखित प्राचीन हिंदी पुस्तकों की खोज की त्रैवार्षिक रिपोर्ट (पृ० ४५९-४७९)

(५) भाग १०—संवत् १९८६—अवधी हिंदी प्रांत में राम-रावण युद्ध (पृ० १५-२७)

(६) भाग ११—संवत् १९८७—देशभाषा (पृ० ४३९-४४३)

स्वर्गीय रायबहादुर डा० हीरालाल

[श्री० यादव माधव काले, प्रेसिडेंट सी० पी० लिटररी ऐकैडेमी, मेंबर सी० पी० लेजिस्लेटिव कौंसिल, बुलडाना (बरार)]

रायबहादुर हीरालालजी से मेरा परिचय नागपुर युनिवर्सिटी में हुआ। आप नागपुर युनिवर्सिटी के अनेक समितियों के प्रधान सदस्य थे। प्राचीन इतिहास, हिंदी-साहित्य आदि विषयों के आप बड़े अधिकारी थे। इस प्रांत में एक विशेषता यह है कि भारतवर्ष का ऐसा कोई प्रदेश नहीं है जहां के लोग इस प्रांत में नहीं आए हैं। उन सबसे प्रेम रखने से रायबहादुर भारतवर्ष के सर्वभाषा-कोविद् बन गए थे। नवीन लेखकों के आप बड़े सहायक थे और आप के प्रोत्साहन से अनेक लेखकों को ग्रंथकार बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप को डी० लिट० बनाने का प्रस्ताव नागपुर युनिवर्सिटी में प्रथम उपस्थित करने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। रायबहादुर वहां उपस्थित नहीं थे; इससे आप को इस का पता नहीं था। परंतु इस बात को सुनते ही आप ने मुझे धन्यवाद देकर, इस काम से परावृत्त करने का भी यत्न किया और कहने लगे कि वास्तविक मान डिगरी से नहीं किंतु काम करने से मिलता है।

आपने ही इस प्रांत में पुरावस्तु के शोधन की नींव डाली। संतोष की बात है कि पं० लोचनप्रसाद पांडेय, प्रो० मीराशी, प्रो० कुलकर्णी आदि विद्वान् रायबहादुर हीरालालजी के पश्चात् उनका काम आगे बढ़ा रहे हैं।

ओरियंटल कानफरेंस का सभापतित्व, नागपुर युनिवर्सिटी की डी० लिट० डिग्री इत्यादि, हीरालालजी की सर्वतोमुखी प्रतिभा का एक अल्पमात्र मान-पत्र है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रियपुत्र का स्वर्गवास

[सेठ हरनारायण जायसवाल, पँचमढ़ी]

रायबहादुर साहब से मेरा परिचय सन् १९१२ से है। आपका पुत्र केदारनाथ बीमार था। उसी के इलाज के लिए आप रोगी के साथ पँचमढ़ी आए थे। दुर्भाग्य से केदारनाथ का देहांत हो गया। जिस दिन यह दुर्घटना हुई थी उसी दिन रायबहादुर साहब ने तहसीलदार के मारफ़त पँचमढ़ी के बिरादरियों को ख़बर दी। थोड़ी देर के बाद बिरादरी के लोग—सेठ गिरिजाचरन, सेठ कँधईलाल, सेठ कालीदीन वग़ैरह—आ पहुँचे। तब शव-संस्कार हुआ। पीछे रायबहादुर साहब ने स्वर्गीय पुत्र की स्मृति में एक स्मारक बनवाने का विचार हम लोगों पर प्रकट किया। स्मारक में उन्होंने वहां एक छतरी बनवाई, जिसमें संगमरमर पर यह खुदा है :—

Sacred to the memory of Kedarnath Rai, student Gray's Inn, London. Son of Rai Bahadur Hiralal. Born 19th Dec. 1881. Died 16 th May 1912.

सवंत ग्रह ऋतु-खंड-शशि, जेष्ठ अमा गुरुवार।
हरि इच्छा हरिधाम को, कियो पयान केदार॥

रायबहादुर साहेब का प्रेम अपने जाति-बिरादरी वालों पर इतना था कि बड़े से बड़े पद पर रहते हुए भी वे ग़रीब भाइयों से सगे भाई की तरह मिलते थे। उन्नति के उच्च शिखर पर पहुँच जाने पर भी वे अपने ग़रीब मित्रों को भूले नहीं। अभी सन् १९३३ में आप नेलसन साहब गवर्नर से मिलने आए थे। जब आप पँचमढ़ी पहुँचे तब आप उन सब व्यक्तियों के मकान पर गए जिन्होंने उनके लड़के के देहांत के समय उनका साथ दिया था। यद्यपि वे अपने अनेक धनी मित्रों में से किसी के यहां भी ठहर सकते थे तो भी वे अपने उन्हीं जाति भाई सेठ गिरजाचरन के यहां दो दिन ठहरे जिन्होंने लड़के के दाहकर्म में आपकी बड़ी सहायता की थी।

रायबहादुर साहब बड़े विद्वान थे और जाति पर बड़ा प्रेम रखते थे। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति दे।

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुछ व्यक्तिगत बातें

[डाक्टर गोरखप्रसाद, डी० एस-सी०, प्रयाग]

यद्यपि रायबहादुर साहब से मेरा संबंध एक प्रकार से बराबरी का था—वे मेरे समधी थे—तो भी मैं उनको सदा पिता की तरह मानता था। उनसे मेरा प्रथम परिचय कानपुर में हैहय-क्षत्रिय-महासभा के वार्षिक अधिवेशन पर हुआ था। यह परिचय उन्हीं की नवयुवकों के प्रति असीम कृपा का फल था, क्योंकि वे स्वयं ही खोजते हुए वहां आए जहां मैं ठहरा था और मुझ से देर तक बातें करते रहे। मैं उसी दिन से उनका भक्त हो गया।

प्रथम बार जब मैं कटनी गया तब न जाने कैसे यह बात छिड़ गई कि हिंदी भाषा उतनी ज़ोरदार नहीं है जितनी अँग्रेज़ी। वे इससे सहमत न हुए। मैंने कहा—'एक सीधा-सा शब्द ले लीजिए, जैसे big; अँग्रेज़ी में huge; tremendous, या gigantic से इसी भाव को किस शक्ति के साथ व्यंजित कर सकते हैं!' रायबहादुर साहब अच्छे अभिनेता थे। बोलते समय अपने अंग-विक्षेप से विषय की सच्ची मूर्ति श्रोता के सम्मुख खड़ी कर देते थे। तुरंत ही वे हाथ फैलाते हुए बोले—"बिस्तार! विशाल! विस्तीर्ण! क्या ये 'ह्यूज' आदि से कम व्यंजक हैं? तुम्हारी धारणा ग़लत है। सुनो"—इतना कहते ही उन्होंने अपनी पुस्तक—शायद 'मंडला-मयूख'—उठा ली और एक अंश पढ़ कर सुनाया। यदि भाषा से नहीं तो उनके पढ़ने के ढंग से अवश्य मैं मंत्र-मुग्ध हो गया। आंखों के सामने गोंडों का सुस्पष्ट दृश्य आ उपस्थित हुआ। मैं क़ायल हो गया।

रायबहादुर साहब का ऐसा मधुर और प्रफुल्ल स्वभाव था कि जब वे मेरे घर ठहरते तो नौकर, बच्चे और बड़े—सभी उनसे मुग्ध रहते। जब वे मध्यप्रांतीय बोलियों के रिकार्ड साथ में लेकर कोशोत्सव में काशी जा रहे थे तो दो एक रेकार्डों को यहाँ भी सुनाया था। 'एक मनई के दुइ ढोटा रहेन' और 'गंगा मोहें भावे तोरी लहरिया' अब भी सब को याद हैं। स्वयं अपनी बोली वाले रेकार्डों को भी सुनाया। बड़ा मज़ा आया। उन दिनों एक गोंड नौकर हमारे घर काम करता था।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आपने जो उसकी जाति सुनी तो उससे गोंडी में बोलने लगे। वह बिचारा गोंडी क्या जाने, वह तो इस प्रांत का गोंड था।

रायबहादुर साहब सौजन्यता की मूर्ति थे। जब जब मैं कटनी गया आप स्टेशन पर, लाख मना करने पर भी, तैयार मिलते। रात वाली गाड़ी कटनी में बड़े तड़के पहुँचती है, और जाड़े के दिनों में उस समय बहुत अँधेरा रहता है; परंतु ऐसे अवसर पर भी वे स्टेशन आ ही जाते थे। उनके यूरोप से आने के कुछ समय बाद जब मैं उनसे मिलने कटनी गया तो मैंने उनकी अस्वस्थता के कारण विशेष प्रार्थना करके उनको स्टेशन आने से मना कर दिया था। मैं वहाँ बंबई मेल से गया। गाड़ी कुछ लेट थी। दो बजे बाद मैं उनके घर पर पहुँचा। स्टेशन पर तो वे मेरे विशेष आग्रह से नहीं आए थे, पर उन्होंने उस समय तक भोजन नहीं किया था; मेरे इंतज़ार में बैठे थे। मैंने तो रास्ते ही में अपने नित्य के समय पर भोजन कर लिया था। उनके इस प्रेम को देखकर मैंने असली बात छिपा रक्खी और तुरंत उनके साथ भोजन करने बैठ गया।

अपनी लड़की के विवाह में परंपरागत 'लगन' या 'शगुन' के बदले आप के पास मैंने एक तुकबंदी बना कर भेज दी थी जिसका आरंभ यों था—

सिद्धि श्री उपमा सकल के योग्य, गुण के खान जो।
विद्या-निधान, स्वजाति-भूषण, सुजन हीरालाल को॥
गोरखप्रसाद विनीत पठवत दंडवत बहु भाँति है।
कर जोरि बिनती करत यह कीजै कृपा इस दास पै॥

फिर उनको आमंत्रित करने के बाद इस का अंत तुलसीदास की एक पंक्ति से किया था—

है भेंट सब बिधि तुच्छ जानत हौं भले अपने हिये।
पर साधु चाहत भाव सिंधु कि तोष जल अंजलि दिये॥

जिस ब्राह्मण के हाथ मैंने यह तुकबंदी भेजी थी उससे मुझे ज्ञात हुआ कि रायबहादुर साहब ने उससे इसे पढ़ कर सुनाने को कहा था। जब वह इसे संतोष-जनक रीति से नहीं पढ़ सका तब वे स्वंय आमंत्रित सज्जनों की उस मंडली में इसे लय से पढ़ कर सुनाने लगे और आनंद में मग्न हो गए।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जब वे बारात लेकर आए थे, मुझे उस समय की उनकी सौजन्यता कभी नहीं भूलेगी। लड़के वालों के कारण दूसरे पक्ष को साधारणतः कितनी परेशानी उठानी पड़ती है—इसका कटु उदाहरण प्रायः सभी को कभी न कभी देखने को मिला होगा। परंतु रायबहादुर साहब सदा इसी चिंता में रहते थे कि मुझे किसी प्रकार का कष्ट न हो। उसी अवसर पर एक दिन उनकी सेवा में रक्खी गई गाड़ी का शोफ़र कहीं चला गया था। इधर से संदेशा गया कि रसोई तैयार है। आप, इस ख़्याल से कि शोफ़र के खोजने में मुझे कष्ट होगा, वर को साथ लिए बड़े प्रेम से पैदल ही जनवासे से मेरे घर चले आए। सच पूछा जाय तो मुझे शोफ़र का पता लगाने की अपेक्षा उनके इस प्रेम से अधिक कष्ट हुआ, परंतु आप ने बार बार मुझे समझाया कि पैर तो ईश्वर ने चलने ही के लिए दिए हैं। भूख लगी हो और रसोई उधर ठंढी हो रही हो तो इसमें क्या अक़्लमंदी है कि शोफ़र के लिए इंतज़ार किया जाय।

विवाह के बाद जब रायबहादुर साहब घर पहुँचे तो वहाँ से लिख भेजा कि आप की लड़की का नाम 'गिरजा' है। यह क्यों? क्या वह पत्थर से—गिरि से—पैदा हुई है? आप तो सुशीलता की मूर्त्ति हैं, इसलिए आज से उसका नाम मैंने 'सुशीला' रख दिया!

जब आप को नागपुर विश्वविद्यालय से डाक्टर की उपाधि मिली तो उन्होंने मज़ाक किया "'सम समधी देखे हम आजू'—मैं भी डाक्टर हो गया!"

———

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संपादकीय

मुझे यह लिखते हुए हर्ष होता है कि प्रस्तुत अंक के संपादन में मुझे लेखकों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है। मैं उनका बड़ा आभारी हूँ। स्थानाभाव के कारण और पुनरावृत्ति बचाने के लिए मुझे कई लेखों में काफ़ी काट-छाँट करनी पड़ी है। आशा है लेखकगण इसके लिए मुझे क्षमा करेंगे।

मैं हैहय-क्षत्रिय-मित्र के स्थाई संपादक बाबू श्यामसुंदर जायसवाल, बी० ए०, एल-एल० बी०, का बड़ा कृतज्ञ हूँ जिन्होंने इस विशेषांक के निकालने में मेरी बड़ी सहायता की है।

जिन सज्जनों ने आर्थिक सहायता देकर इस अंक का प्रकाशन संभव बनाया है, मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। —गो० प्र०

दान-दाताओं की सूची

श्री काशीप्रसाद जायसवाल ५०); डा० चंद्रभानुराय ५०); कटकवार परिवार (गुरारी) ५०); डा० गोरखप्रसाद ५०); स्वागतकारिणी समिति, हैहय-क्षत्रिय-महासभा, अष्टम् अधिवेशन ३०); बाबू हज़ारीलाल जायसवाल २५); मेसर्स रायबहादुर भागीरथीराम गरीबदास, कलकत्ता २५); मेसर्स रामप्रसाद रामकुमार, कलकत्ता २१); मेसर्स मोहनलाल सोहनलाल, देहली २०); मेसर्स जगन्नाथ हेमचंद, देहली २०); श्री सीताराम जायसवाल, प्रयाग २०); मेसर्स गनपतसाह ऐंड को, कलकत्ता १५); मेसर्स रामप्रसाद रामताड़क, कलकत्ता ११); मेसर्स भगवानदास नथोरीमल, देहली १०); श्री नंदलाल जायसवाल, बनारस १०); श्री दुर्गाशरण लाल, कलकत्ता ५); श्री गोपालदास गुप्त, कलकत्ता ५); मेसर्स बंदी प्रसाद सीताराम, कलकत्ता ५); श्री खुन्नूलाल जायसवाल, कानपुर ५); सेठ रामनारायण लाल, हैदराबाद (दक्षिण) ५); श्री मेवालाल, प्रयाग ५); श्री एम० डी० जायसवाल, प्रयाग ५); श्री गुलज़ारी लाल जायसवाल ५); श्री राधाकृष्ण जायसवाल, लश्कर २॥); धर्मपत्नी संतोषी लाल, लश्कर २॥); अज्ञात, हस्ते श्री राधाकृष्ण जायसवाल, लश्कर २॥)

तैयार हो जाने पर हर एक दानदाता की सेवा में हिसाब भेजा जायगा।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संशोधन

विशेष कारणों से दसवें फ़रमे का प्रूफ़ पढ़ा न जा सका। इससे उस फ़रमे में कई एक अशुद्धियाँ रह गई हैं। अन्यत्र भी-दो-एक अशुद्धियाँ रह गई हैं। पाठक-गण कृपया निम्नलिखित संशोधन कर लें। —सं०

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५	१७	"एकपीलव्रत"	"एकपत्नीव्रत"
४३	नीचे से ३	था	थे
७३	११	का	को
,,	नीचे से २	पद्यबध	पद्यबद्ध
७४	नीचे से ३	मिला	आया
७६	६	wrote	wrote व्याध
,,	१०	infect to	infect
,,	नीचे से २	और	और उसे
७७	नीचे से ६	अन्य	वन्य
१६८	नीचे से ६	लात	जात

यदि आप इस उन्नतिशील संसार में पिछड़ना नहीं चाहते तो

विज्ञान

पढ़िए

मंत्री, विज्ञान-परिषद्, प्रयाग] [वार्षिक मूल्य ३)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आप हिंदी के लेखक हैं ?

यदि हैं तो आप को

लेखक

अवश्य पढ़ना चाहिए

लेखक

अपने ढंग का अकेला पत्र है

यह हिंदी लेखकों का अपना पत्र, हिंदी-लेखक-संघ (प्रयाग) का मुख-पत्र, और लेखन-कला-संबंधी एकमात्र मासिक है।

पाँच आने भेज कर नमूने की प्रति मँगा कर देखिए

वार्षिक चंदा ३); छात्रों तथा पुस्तकालयों से २॥); सदस्यों से २)

पता

मंत्री, लेखक-संघ, प्रयाग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पृष्ठ

२६—रायबहादुर डाक्टर हीरालाल की स्मृति—आयुर्वेद पंचानन पंडित जगन्नाथप्रसाद शुक्ल, वैद्यभिषङ्मणि ६३

२७—डाक्टर हीरालाल जी के कुछ संस्मरण—सरदार माधव विनायक किबे ६६

२८—स्वर्गवासी रायबहादुर डाक्टर हीरालाल जी, डी० लिट०—रायबहादुर अवधवासी लाला सीताराम ६७

२९—ख्याति-भीरु इतिहास-वारिधि रायबहादुर डाक्टर हीरालाल—डा० हरदत्त शर्मा, एम० ए०, पी-एच० डी० ... ... ६९

३०—रायबहादुर डाक्टर हीरालाल—रायबहादुर पंडया बैजनाथ ... ७१

३१—पत्रों से कुछ अंश—पं० लोचनप्रसाद, एम० आर० ए० एस० ... ७३

३२—जातीय सेवाएँ—श्री हज़ारीलाल जायसवाल ७८

३३—श्रद्धांजलि—श्री तुलसीराम कटकवार ८०

३४—बाबू हीरालाल तथा खोज—श्री ब्रजरत्नदास, बी० ए०, एल-एल० बी० ८१

३५—रायबहादुर हीरालाल जी का स्वभाव तथा विद्या-प्रेम—डाक्टर प्राणनाथ, विद्यालंकार, पी-एच० डी०, डी एस-सी० ... ८२

३६—श्रद्धांजलि—श्री चेतसिंह जायसवाल, बार-ऐट-ला ... ८४

३७—अंतिम बीमारी—डाक्टर चंद्रभानु राय, एम० बी० बी० एस० ... ८५

३८—फुटकर संस्मरण—श्री जमनाप्रसाद जैन, एम० ए०, बार०-ऐट-ला०,... ८६

३९—स्व० बाबू हीरालाल जी—पंडित रामनरेश त्रिपाठी ... ९१

४०—कुछ संस्मरण—श्री चंद्रिकाप्रसाद जिज्ञासु ९२

४१—डाक्टर हीरालाल की कुछ महत्त्वपूर्ण गवेषणाएँ—पंडित रामबहोरी शुक्ल, एम० ए० ... ... ९६

४२—मेरे संस्मरण—श्री वासुदेवप्रसाद मिश्र, बी० ए०, एल-एल० बी०, ९९

४३—स्वजातीय प्रेम—श्रीमती शांतिबाई सराफ़ १०२

४४—प्रोत्साहन—श्री गंगाप्रसाद जायसवाल १०३

४५—हा ! हीरालाल—श्री सरयूप्रसाद वर्मा 'आशुबोध' ... १०४

४६—क्या कहें !—श्री बलदेवप्रसाद मिश्र, एम० ए०, एल-एल० बी० ... १०५

४७—स्मृति के पथ पर—श्री रामानुजलाल श्रीवास्तव ... १०७

४८—सर जार्ज ग्रियर्सन का पत्र ११५

४९—कुछ संस्मरण—रायबहादुर बाबू श्यामसुंदर दास ... ११६

५०—कुछ स्मृतियाँ—प्रोफ़ेसर हीरालाल जैन, एम० ए०, एल-एल० बी०... ११८

५१—संस्मरण—प्रोफ़ेसर हरिहरनाथ टंडन, एम० ए० ... ... १२४

५२—अजयगढ़ के शिलालेख—श्री ठाकुर दिलीपसिंह ... १२६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

Registered No. A. 290

पृष्ठ

५३—प्रशंसा में—प्रोफ़ेसर डी० आर० भंडारकर १२८
५४—अनन्य हिंदी-प्रेमी—पं० उदयनारायण त्रिपाठी, एम० ए०, साहित्यरत्न १३०
५५—मेरी स्मृति—श्रीगुलाबचंद चौधरी, बी० ए० (कैंटब), बार-ऐट-ला १३२
५६—स्वर्गीय रायबहादुर हीरालाल जी—श्री शिवपूजन सहाय ... १३४
५७—नागपुर विश्वविद्यालय-संबंधी संस्मरण- प्रो० काशीदत्त पांडे, एम० ए० १३७
५८—संस्मरण—प्रोफ़ेसर बी० वी० मीराशी, एम० ए० ... १४०
५९—कटनी में एक मास—साहित्यरत्न पं० भागीरथ प्रसाद दीक्षित ... १४२
६०—संस्मरण—श्री राय कृष्णदास १४४
६१—'साहब' के संस्मरण—पं० विश्वंभरप्रसाद गौतम, एम० ए०, एल-एल० बी० ... ... १४७
६२—विद्यार्थी जीवन की एक बात—श्री मिश्रीलाल जायसवाल ... १५५
६३—डाक्टर हीरालाल—डा० पीतांबरदत्त बड़थ्वाल, डी० लिट० ... १५६
६४—हाय ! हीरालाल—श्री राधाकृष्ण जायसवाल 'घनश्याम' ... १५८
६५—मध्यप्रांत-मरीचिका की भूमिका—श्री प्रयागदत्त शुक्ल ... १६०
६६—यूरोप-यात्रा—पं० ओंकारप्रसाद मिश्र, रिटायर्ड सबजज ... १६१
६७—स्व० बा० गोकुलप्रसाद जी के नोट-बुक—श्री माधोलाल जायसवाल, एम० एस-सी० ... ... १६५
६८—इंस्टपेक्टर की भविष्यवाणी—श्री लक्ष्मीप्रसाद त्रिवेदी 'मधु', १७०
६९—श्री रायबहादुर हीरालाल जी—श्री रामशंकर शुक्ल 'रसाल', एम० ए० १७३
७०—सगे भाई से भी बढ़कर—ख़ान बहादुर सैय्यद ज़ाकिर अली ... १७५
७१—गोंड जाति के प्रति-प्रेम—श्री के० बलराम मादवी, ... १७५
७२—साहित्य-सेवा—महामहोपाध्याय रा० ब० गौरीशंकर हीराचंद ओझा, १७७
७३—हिंदी सेवाएँ—डा० धीरेंद्र वर्मा, एम०ए०, डी० लिट्, ... १८०
७४—प्राकृत तथा संस्कृत साहित्य-सेवा—डा० बाबूराम सक्सेना, डी० लिट्० १८३
७५—डा० हीरालाल और उनकी रचनाएँ—साहित्याचार्य पं० रघुवर मिट्ठूलाल शास्त्री, वेदांततीर्थ, काव्यतीर्थ, एम० ए० ... १८५
७६—स्व० डा० हीरालाल—श्री यादव माधव काले, एम० एल० सी० ... १९३
७७—प्रिय पुत्र का स्वर्गवास—सेठ हरनारायण जायसवाल ... १९४
७८—कुछ व्यक्तिगत बातें—डा० गोरख प्रसाद ... १९५
७९—संपादकीय १९८

मुद्रक—भगवतीप्रसाद श्रीवास्तव, कायस्थ पाठशाला प्रेस, प्रयाग